रानी भी
पढ़ना है समझना

रानी भी
रानी
रमा

रमा और रानी दो बहनें हैं।

रानी हमेशा रमा के साथ रहती है।
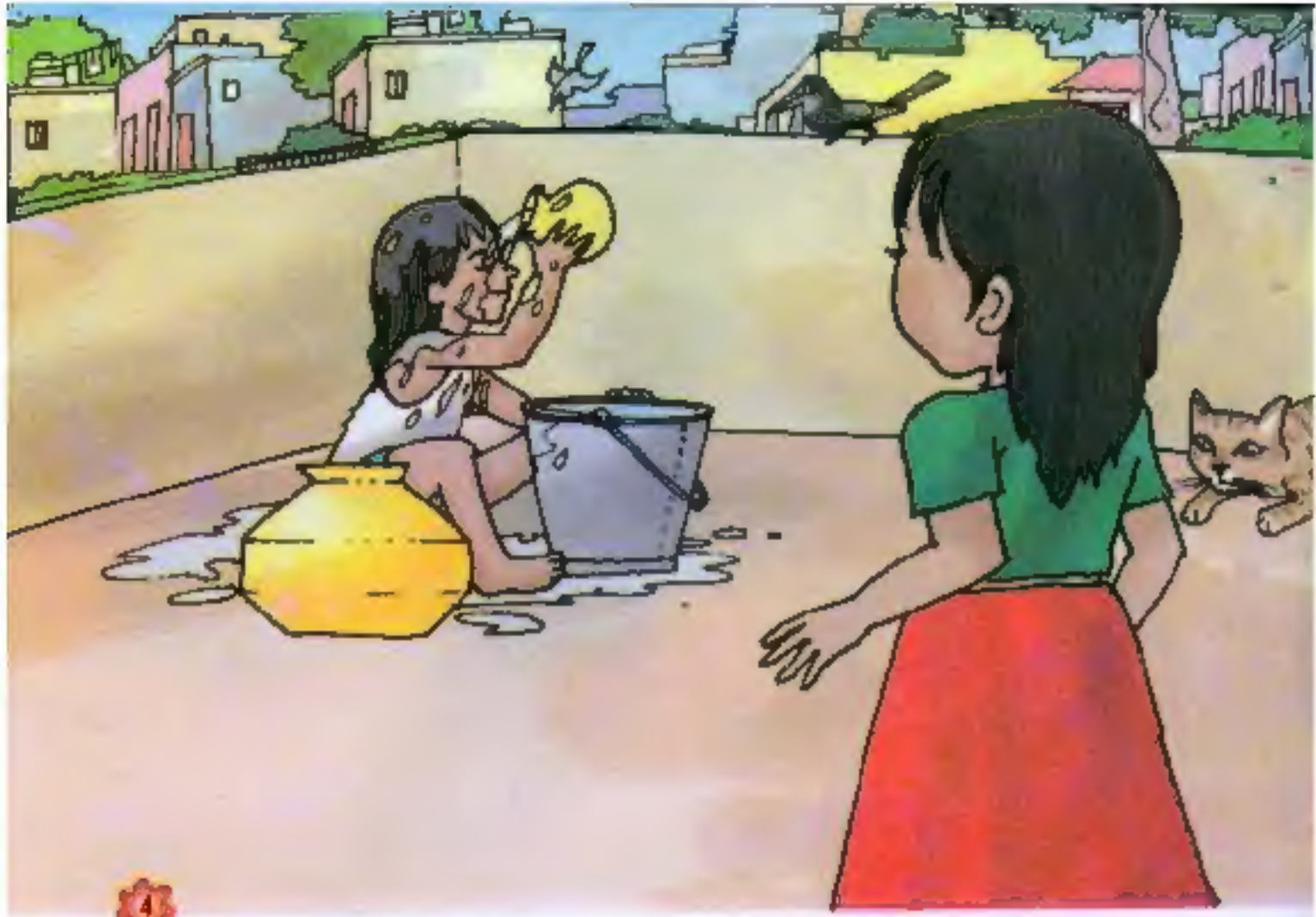
एक दिन रमा नहा रही थी।

रानी भी उसके साथ नहाने लगी।

रमा ने फूलों वाली फ्रॉक पहनी।

रानी ने भी फूलों वाली फ्रॉक पहन ली।

रमा ने अपने बालों में कंघी की।
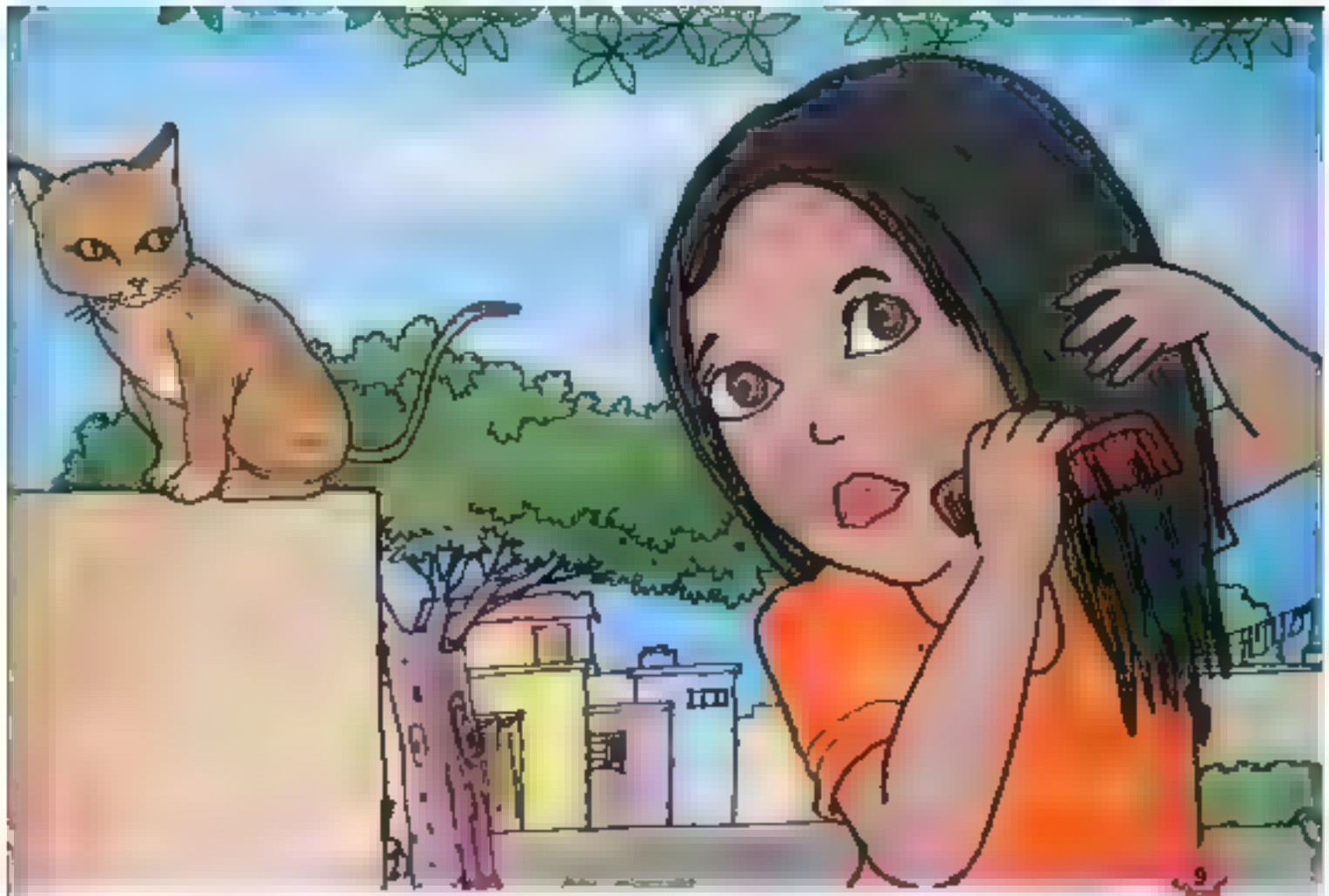
रानी ने भी अपने बालों में कंघी की।

रमा ने चप्पल पहनी।
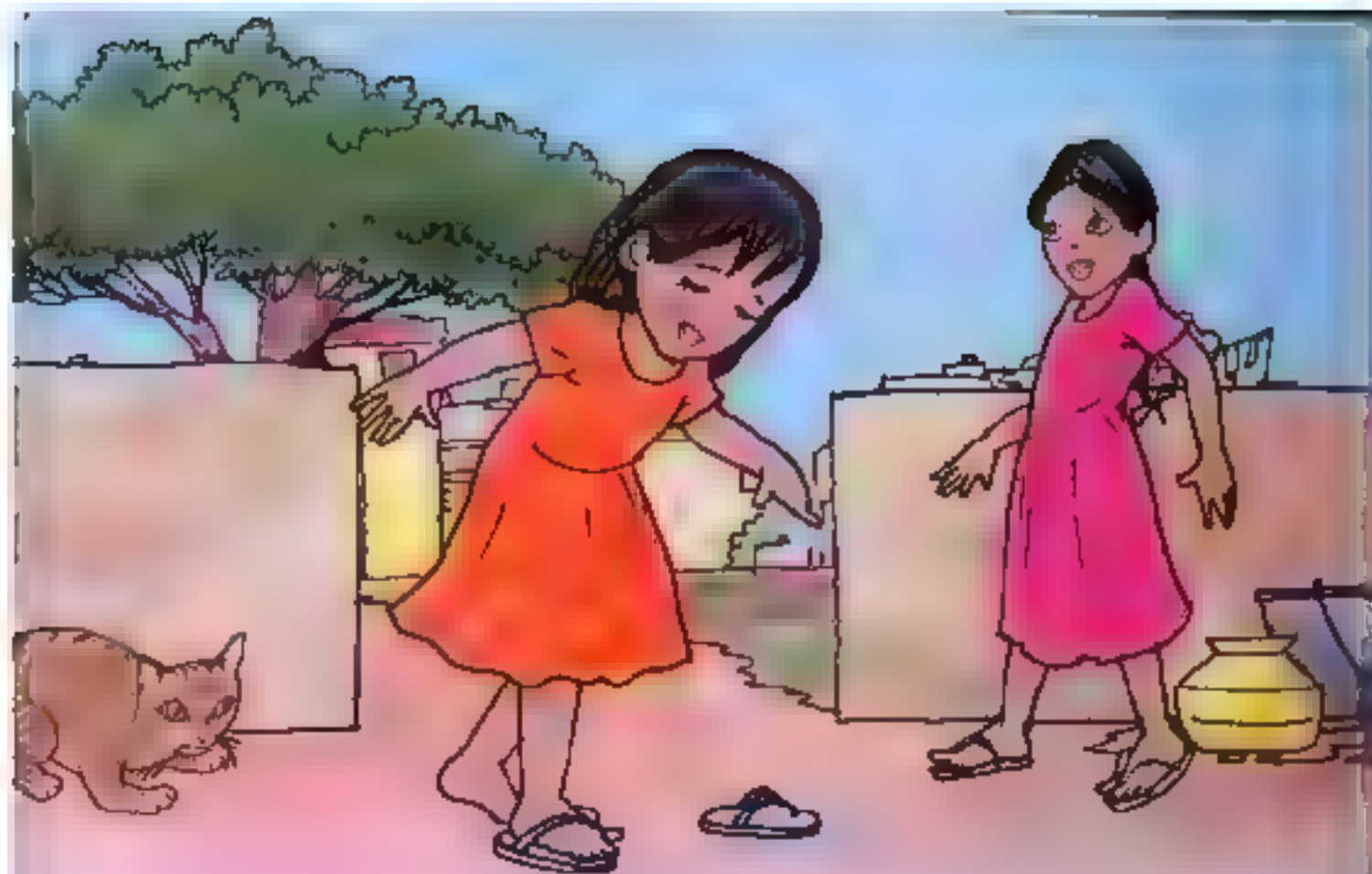
रानी ने भी चप्पल पहन ली।
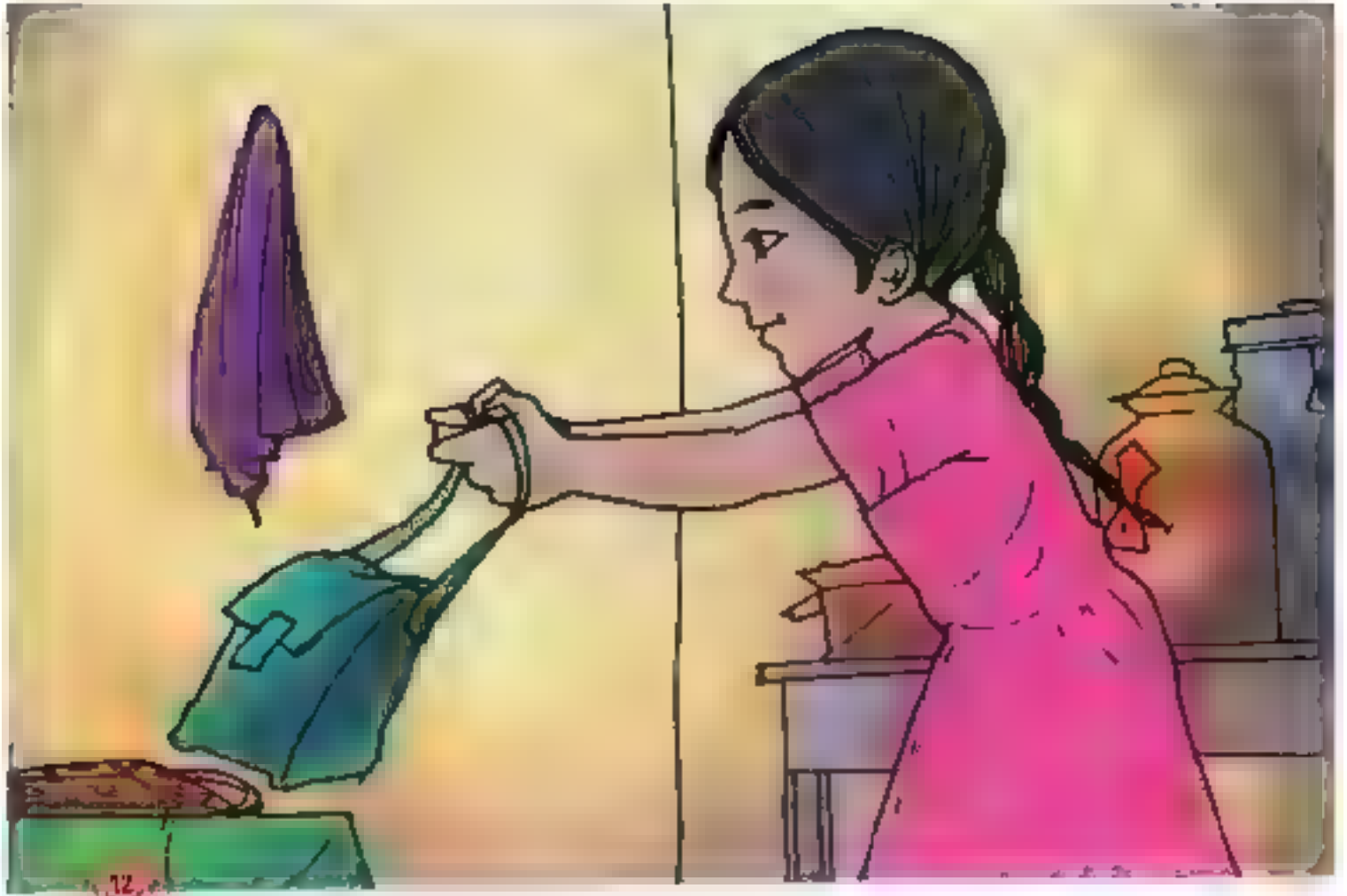
रमा ने अपना बस्ता उठाया।
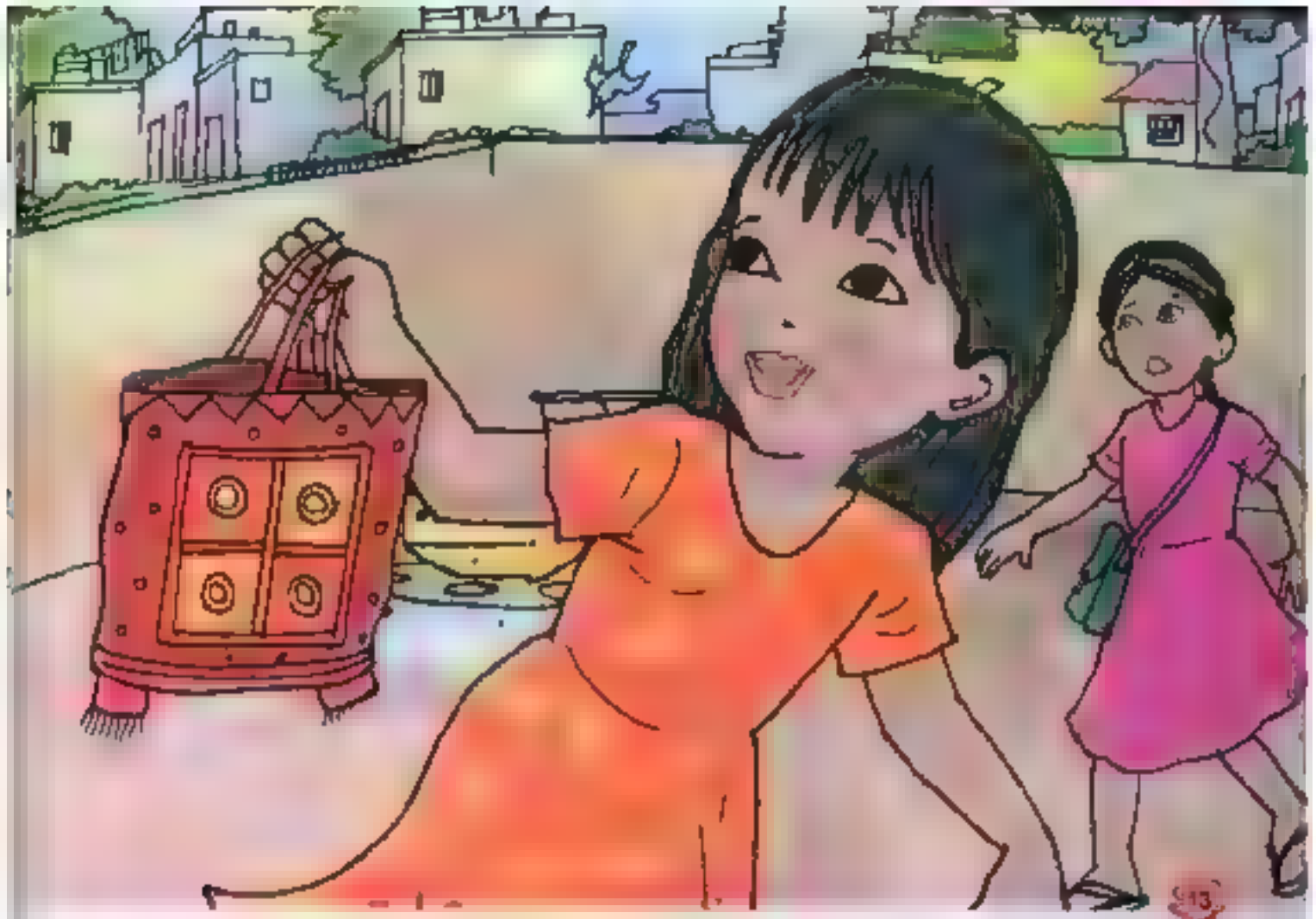
रानी ने भी एक झोला उठा लिया।

रमा स्कूल जाने लगी।
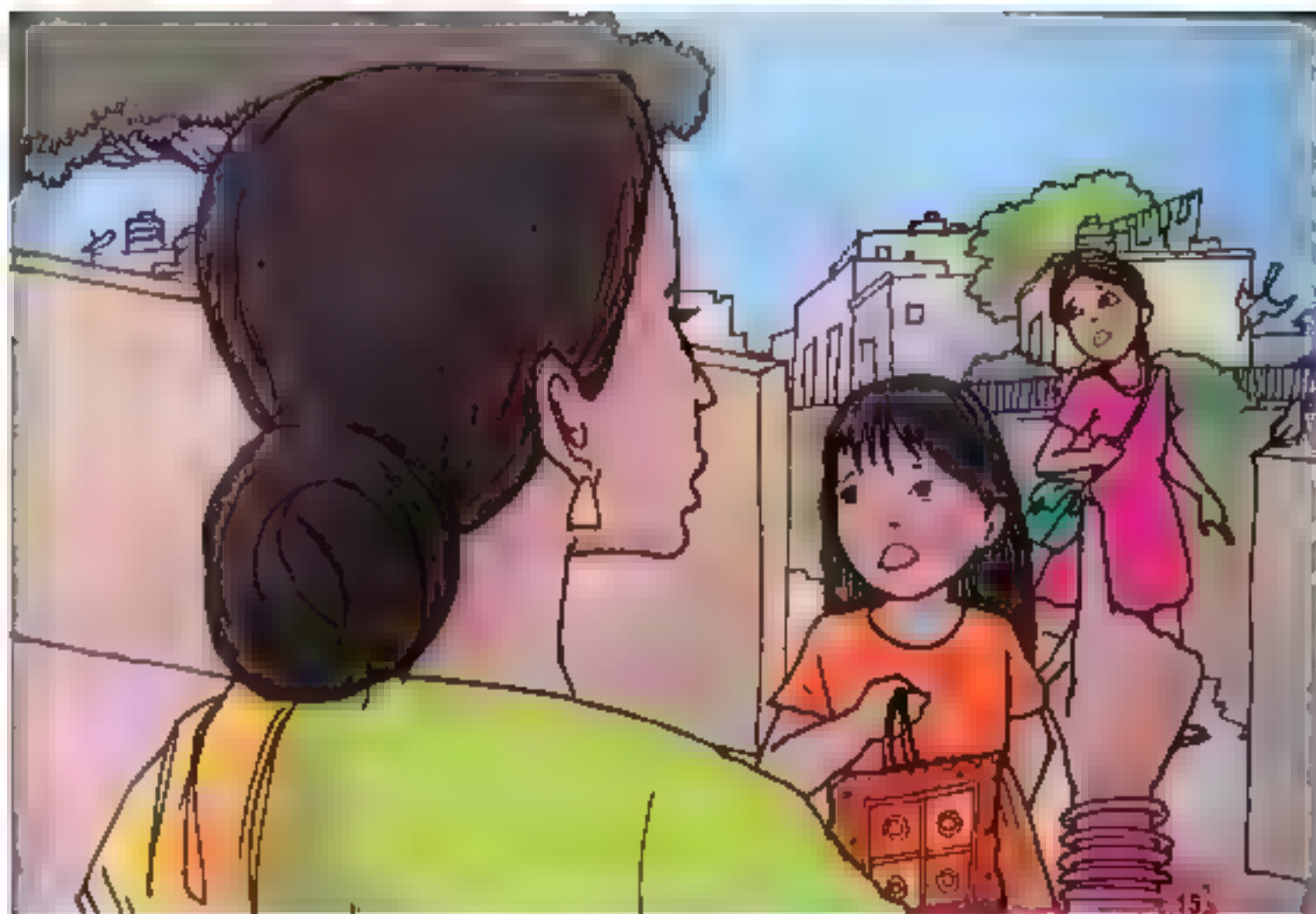
मम्मी ने रानी को स्कूल नहीं जाने दिया।

रानी अभी बहुत छोटी है।
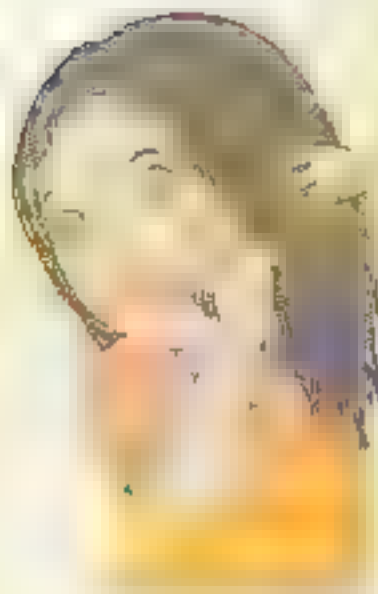
2057

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

रु. 10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (सेट)
978-81-7450-858-4

मुनमुन
और मुन्नू
पढ़ना है समझना
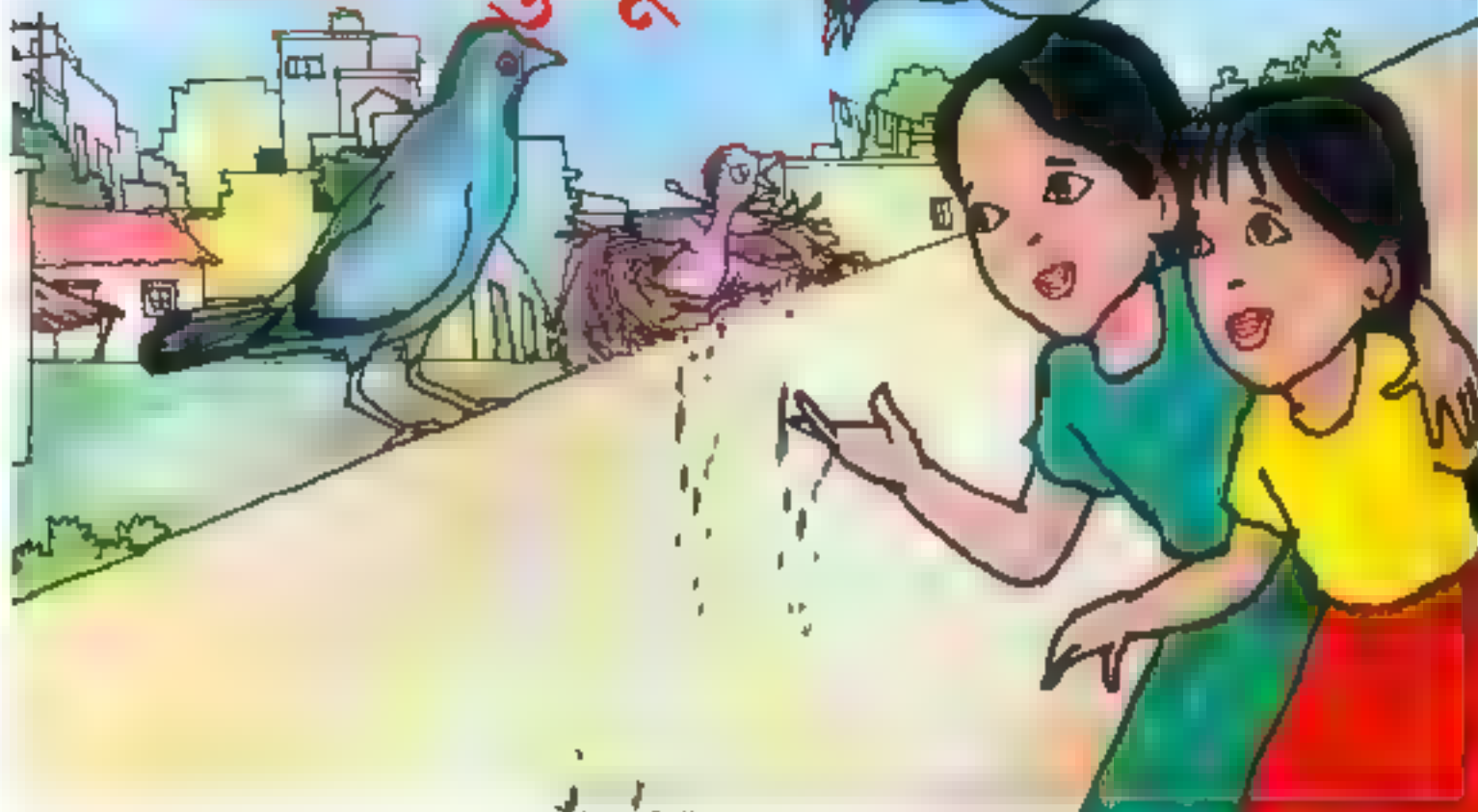
मुनमुन और मुन्नू
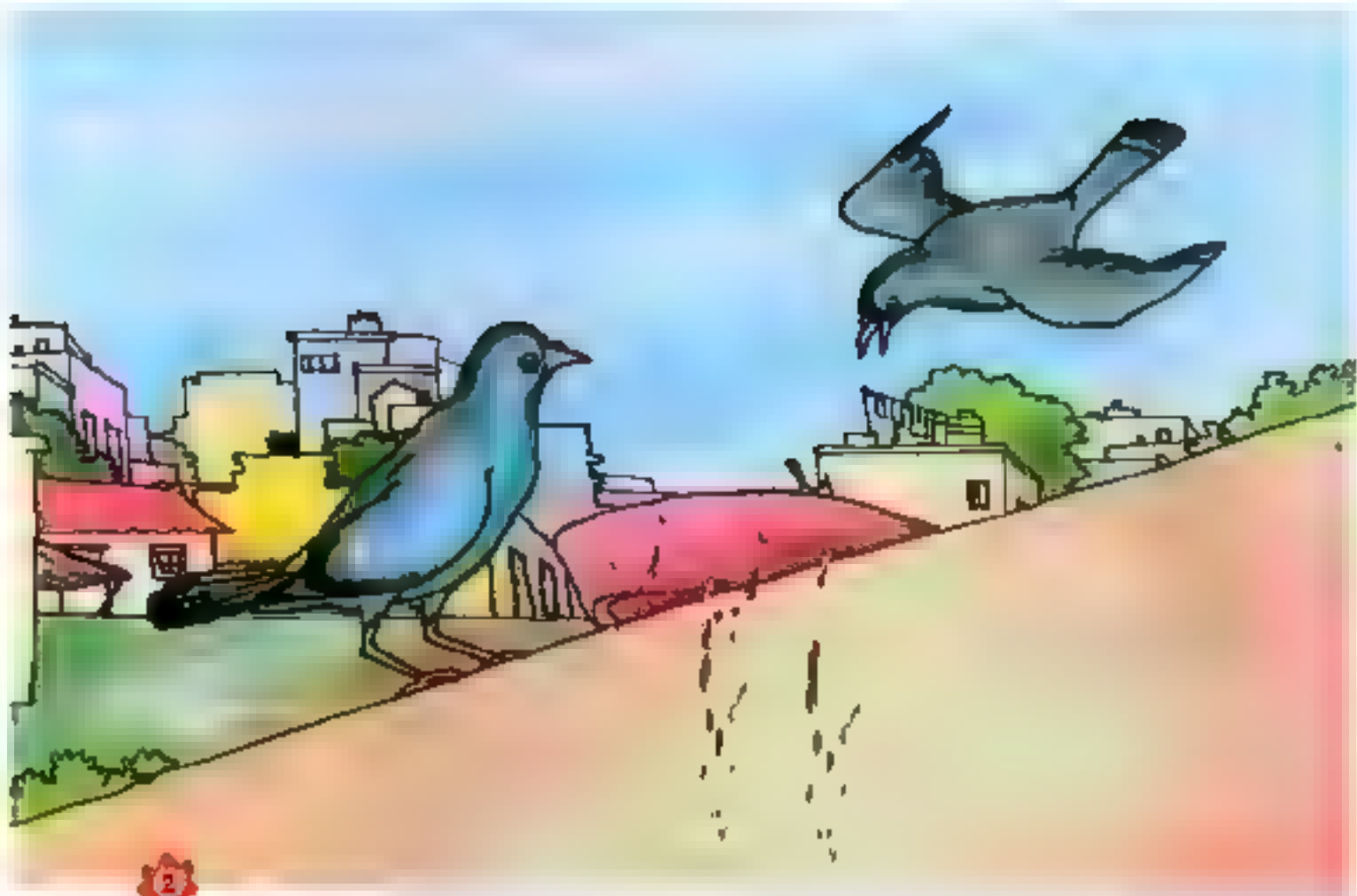
एक दिन रमा के घर में दो कबूतर आ गए।

रमा उन्हें देखने आँगन में आ गई।
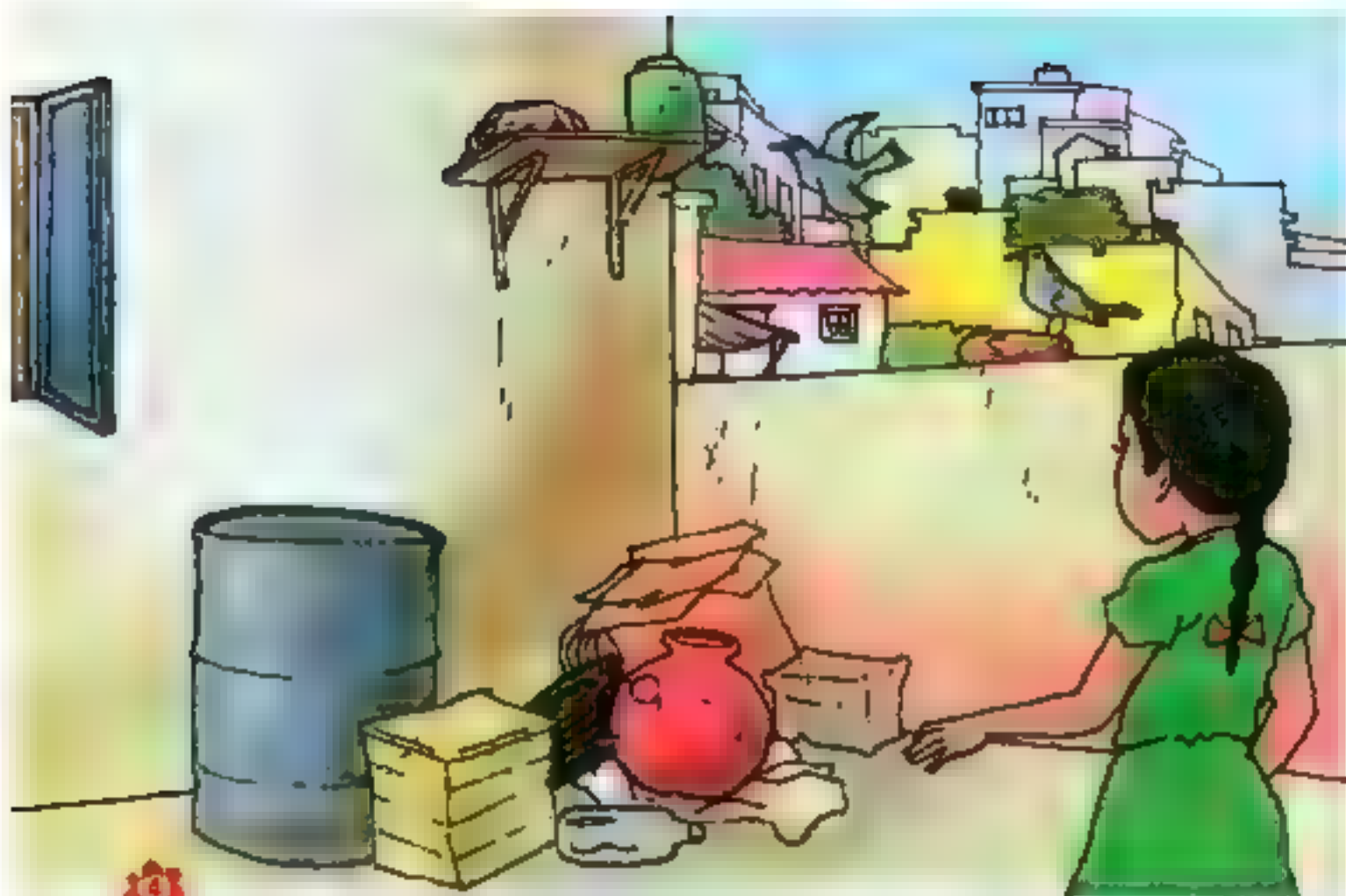
रमा को कबूतरों का घोंसला दिखा।

रमा ऊपर चढ़कर घोंसला देखने लगी।
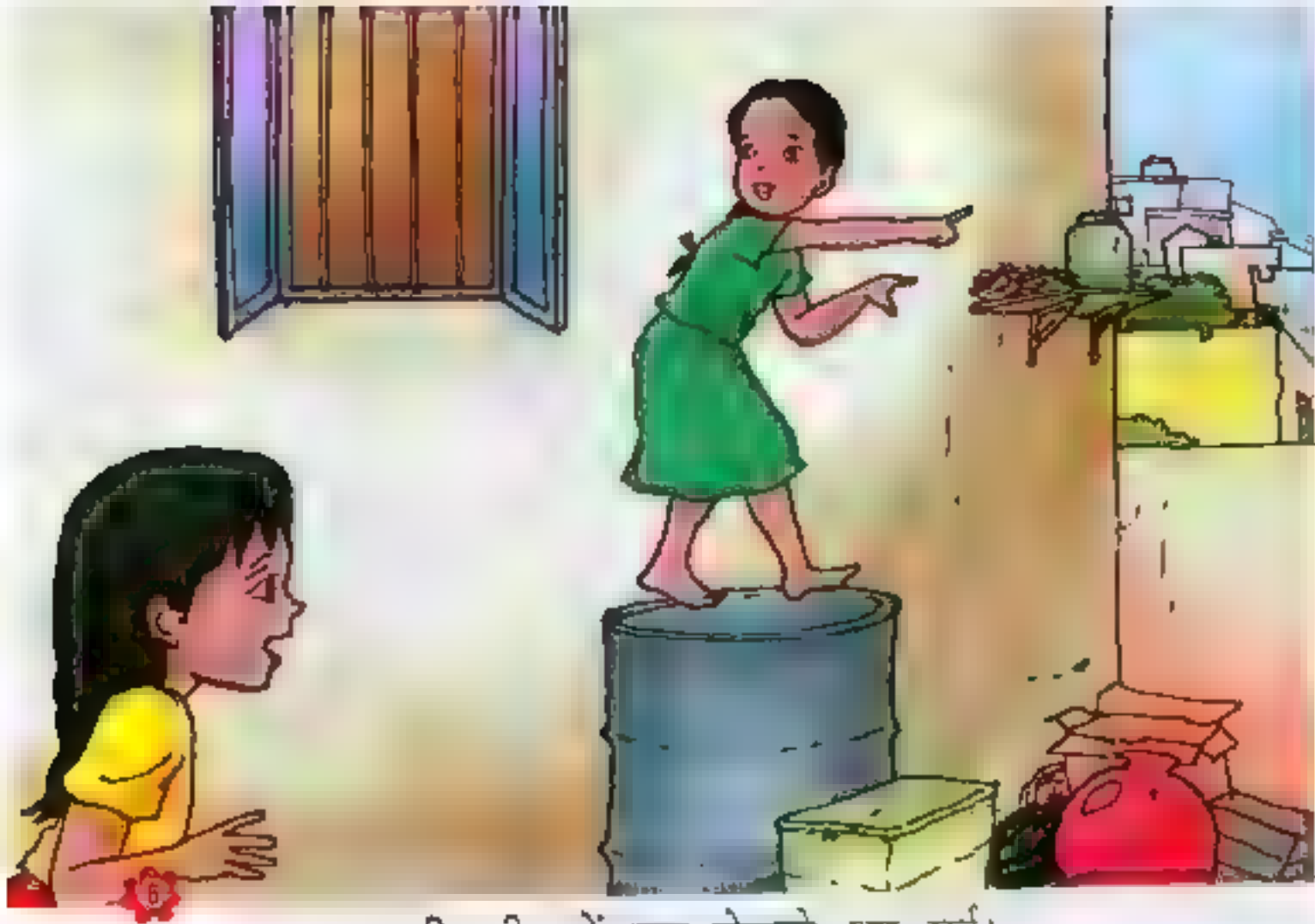
रानी भी घोंसला देखने आ गई।
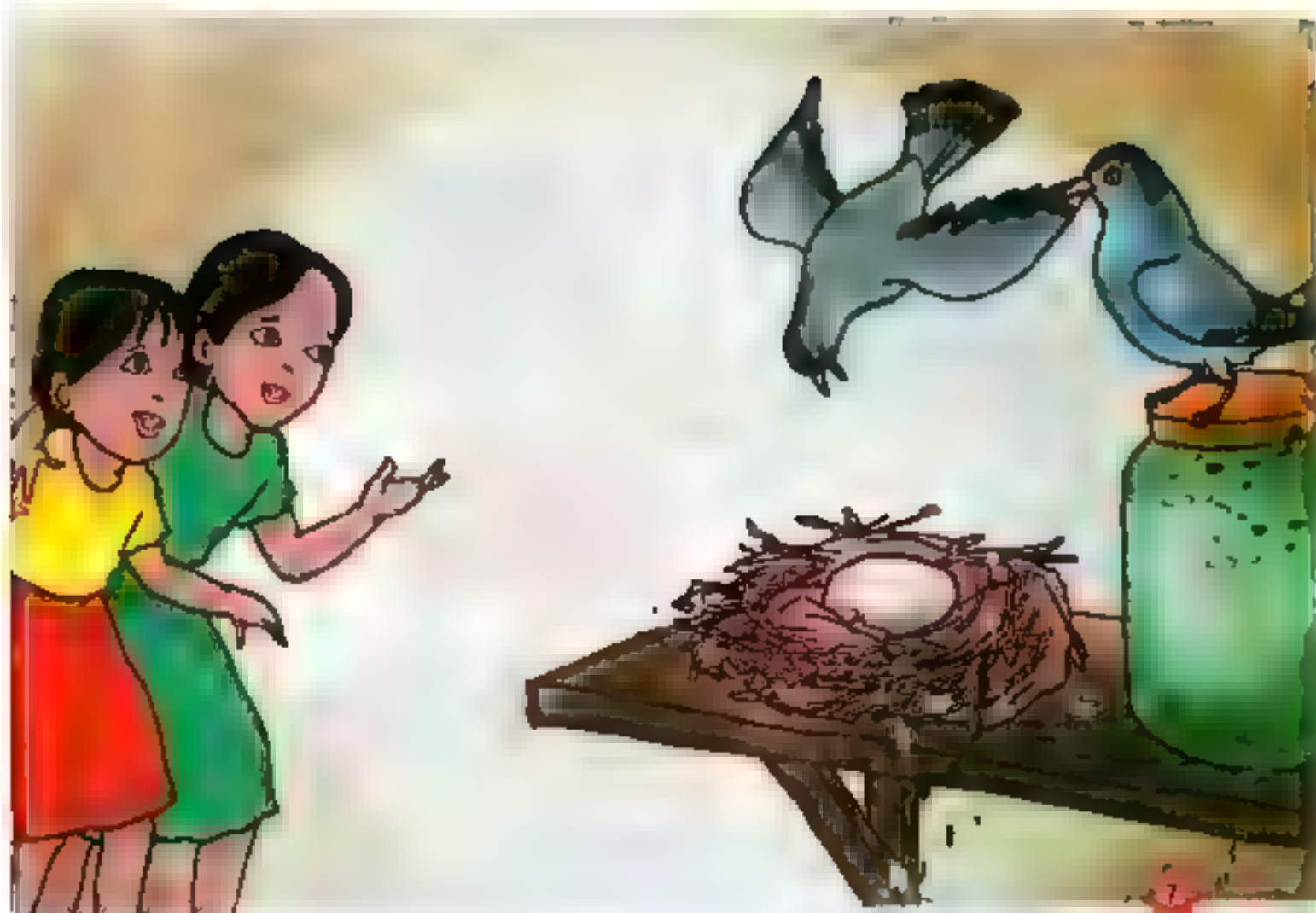
घोंसले में अंडा देखकर दोनों बहुत खुश हुईं।

रानी ने देखा कि मुनमुन भी वहाँ थी।
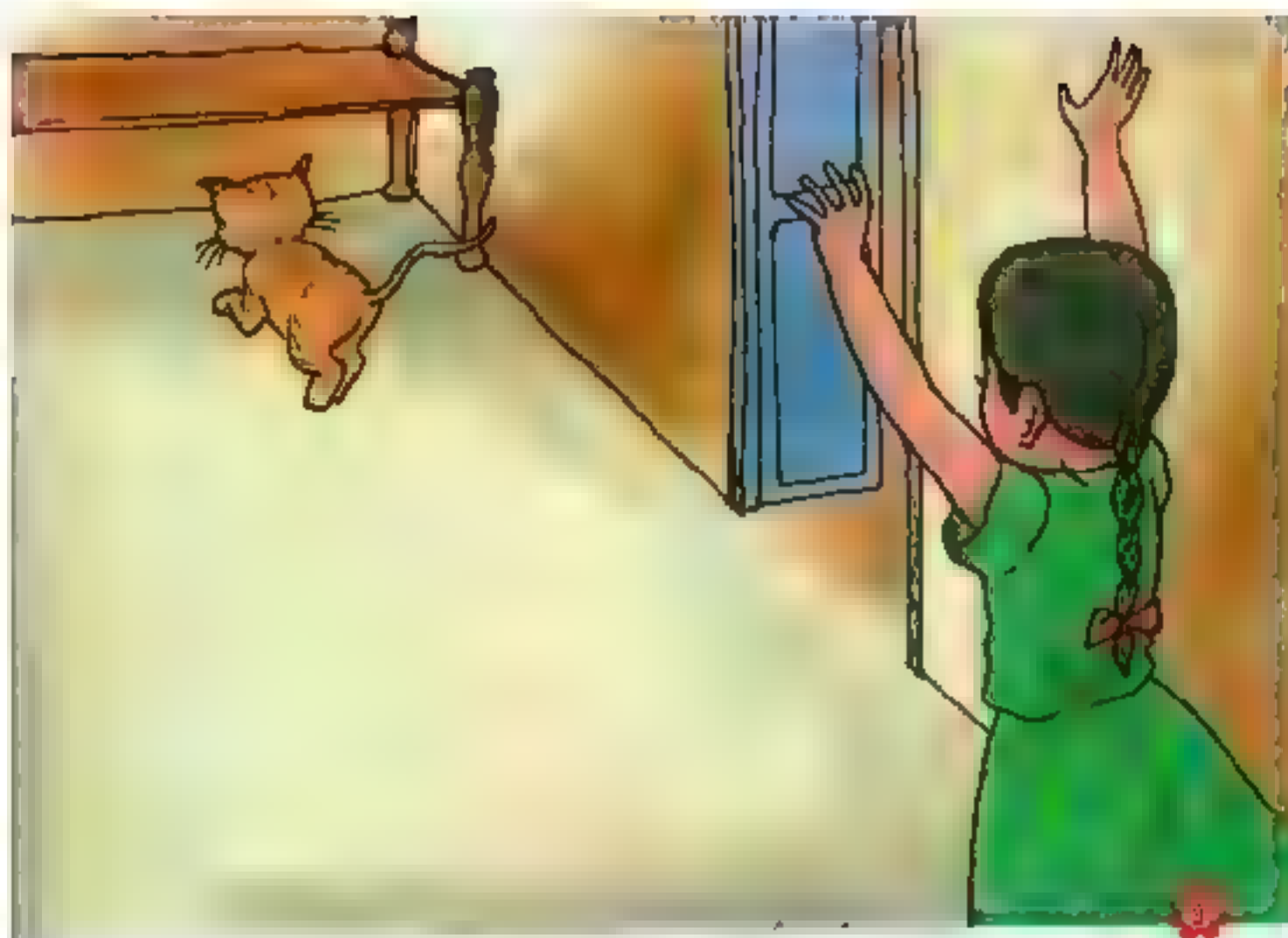
रमा ने मुनमुन को वहाँ से भगा दिया।

मुनमुन फिर से लौट आई।

रमा ने मुनमुन को दूध पिलाया।
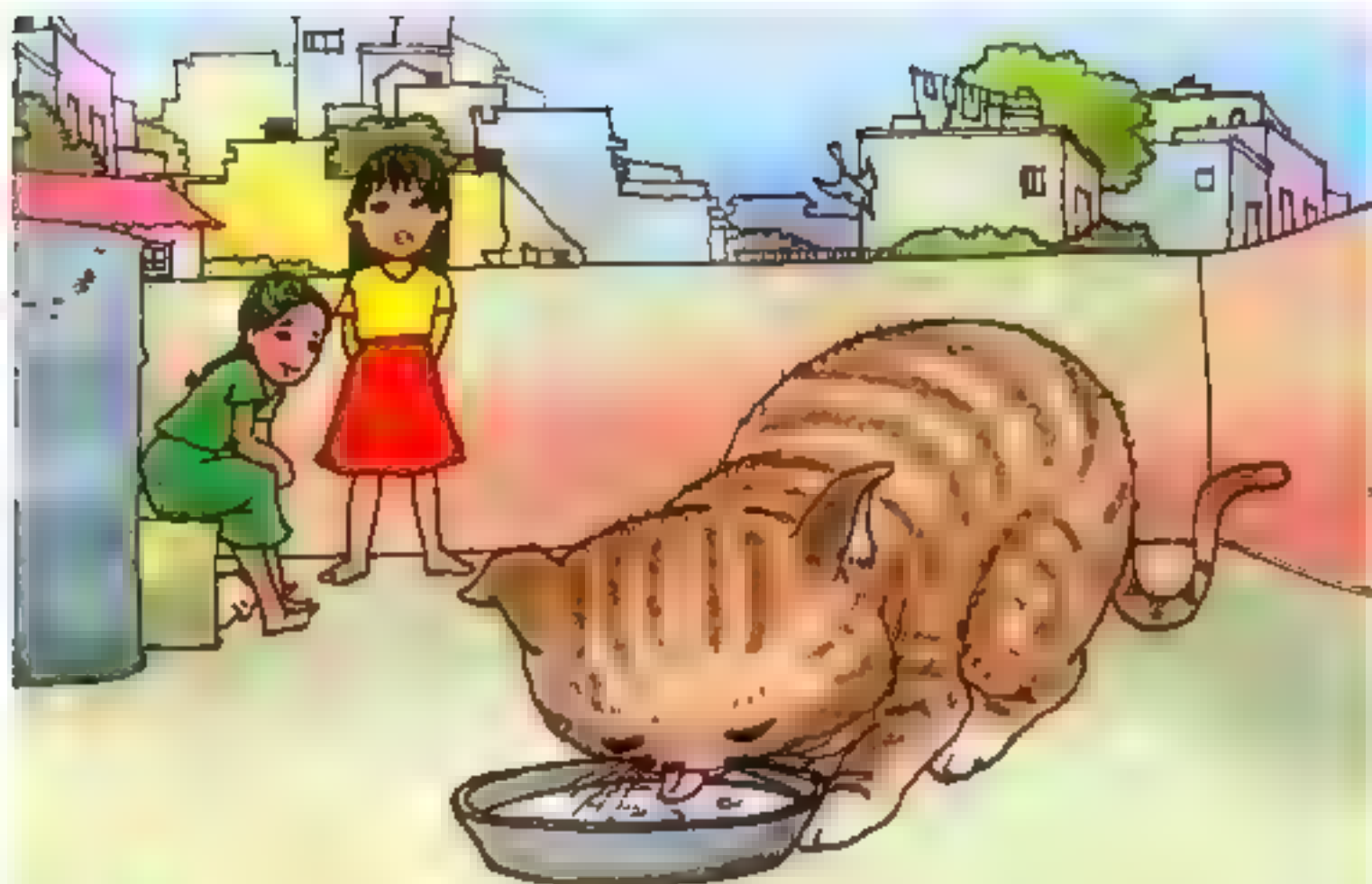
वे मुनमुन को रोज़ दूध देने लगीं।
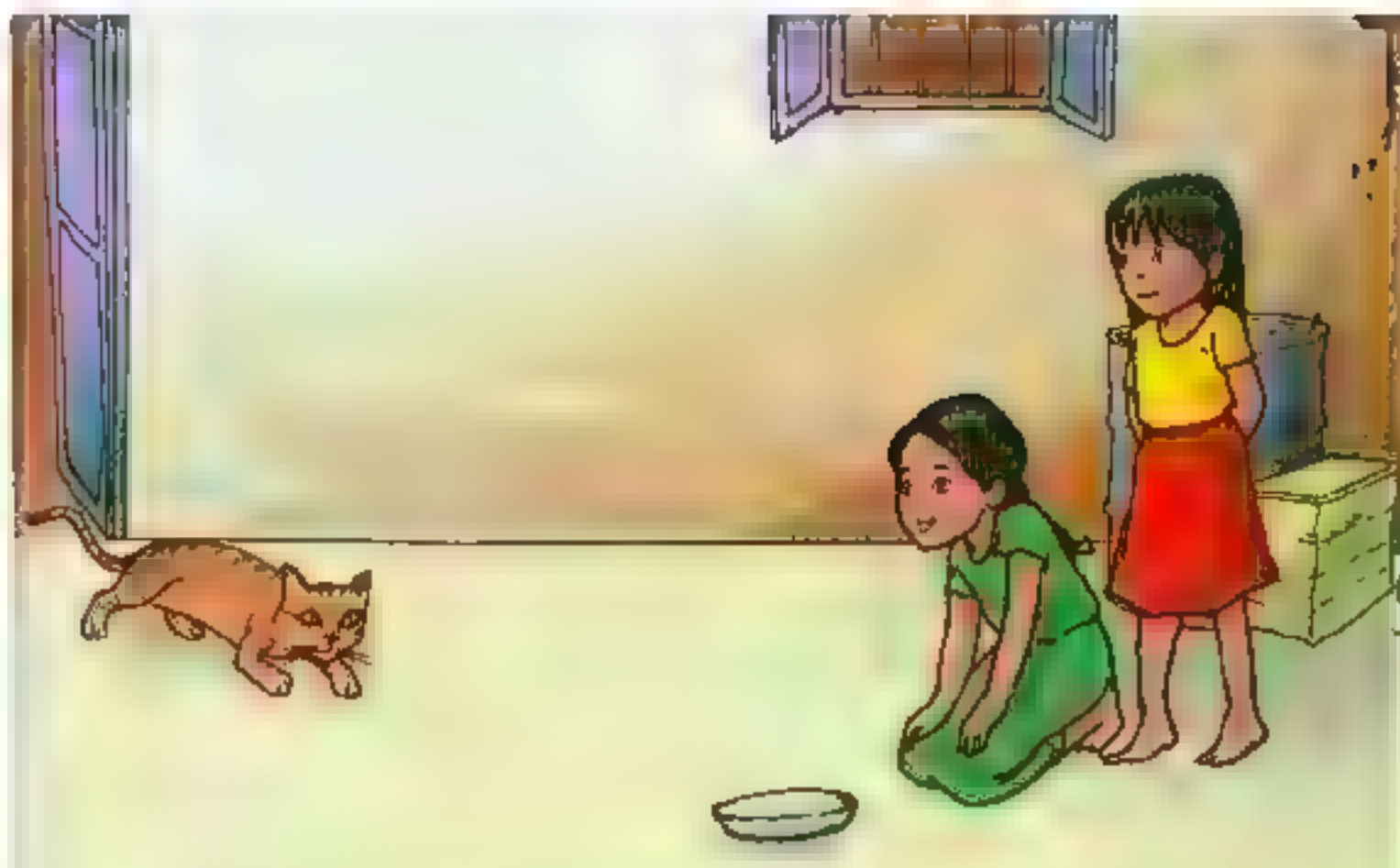
मुनमुन रोज़ दूध पीती और चली जाती।
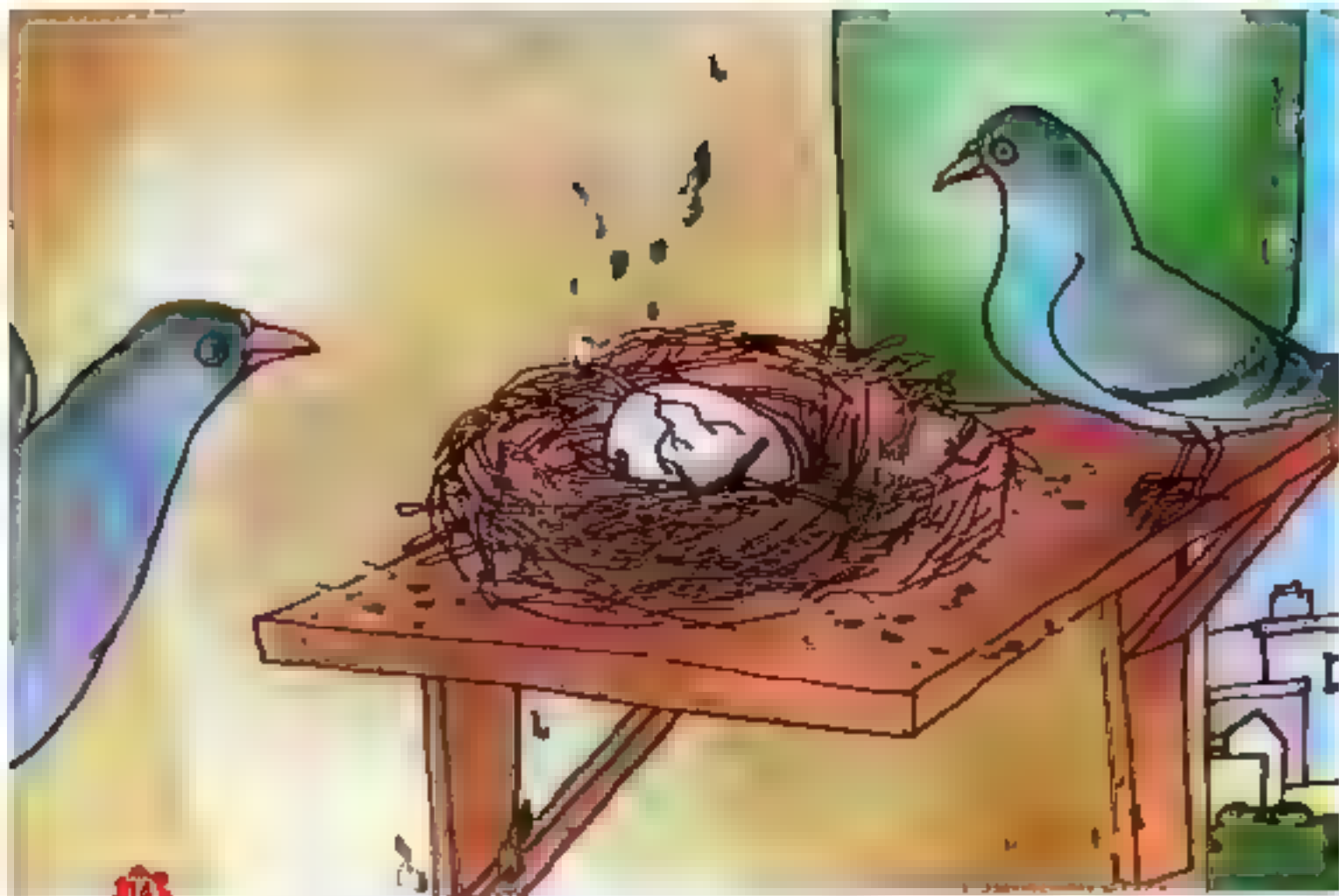
रमा और रानी को एक दिन अंडे में दरारें दिखीं।
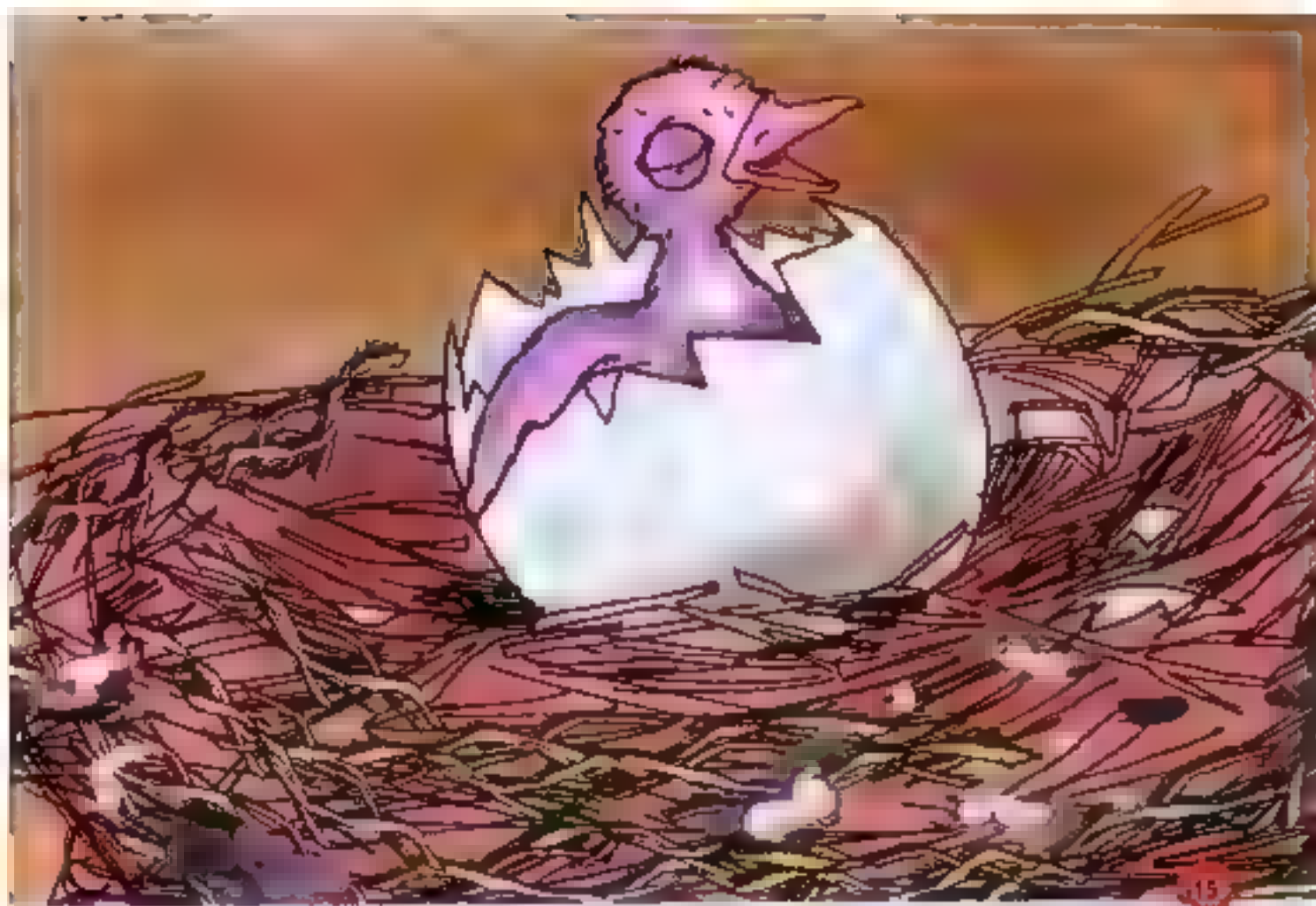
अंडे में से बच्चा निकल आया।

रमा और रानी ने उसका नाम मुन्नू रख दिया।
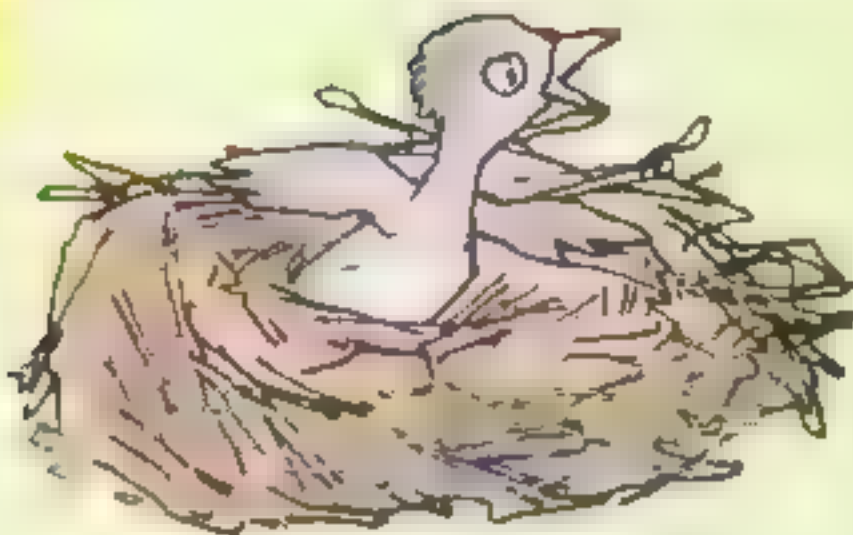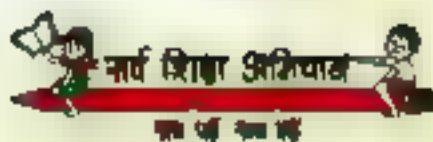
2058

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-808-0 कक्षा तीन
978-81-7450-859-.

मिठाई

मिठाई
गधा
मिठाई

एक दिन गधे का मन मीठा खाने का हुआ।
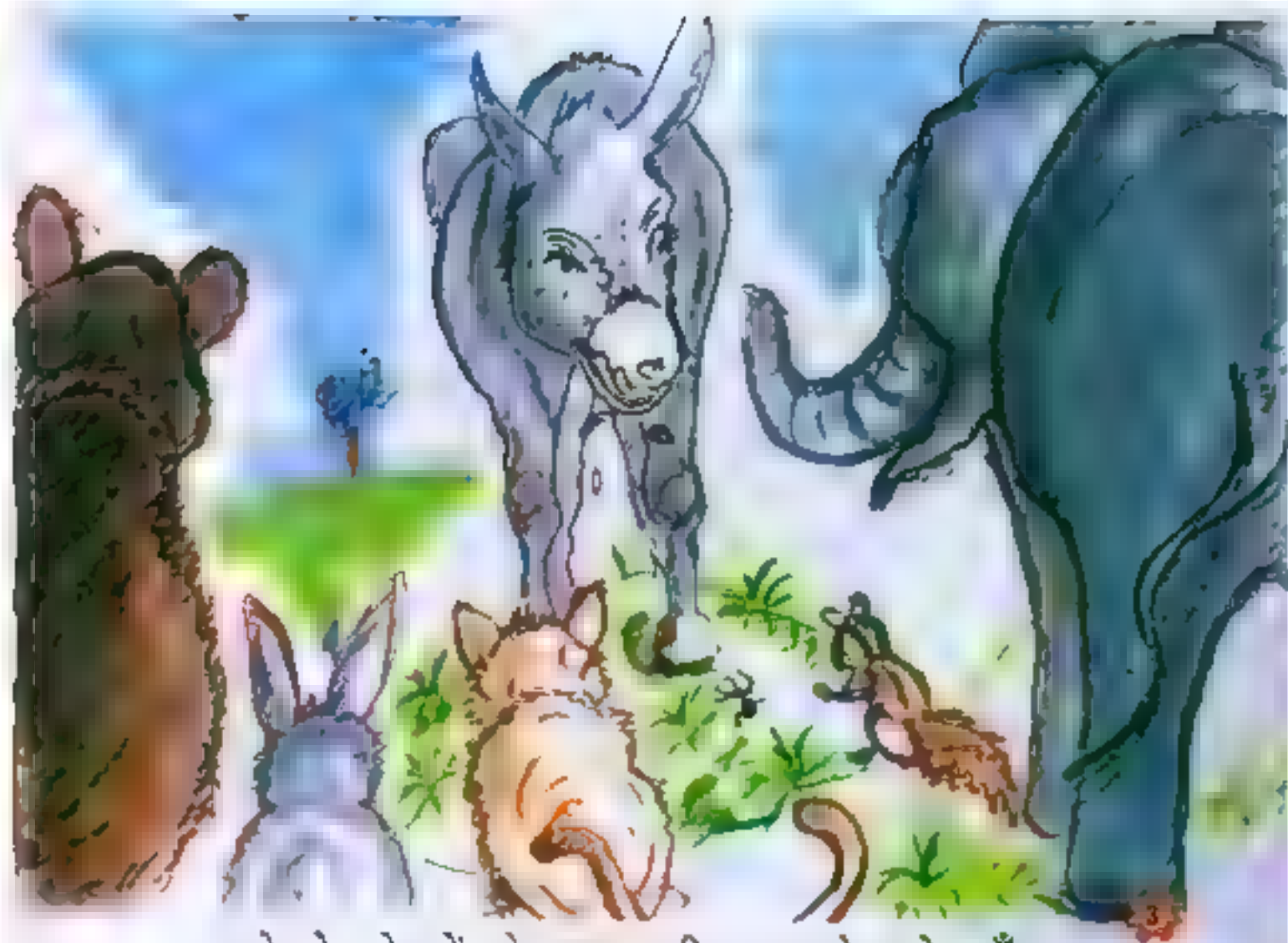
गधे ने दोस्तों से कुछ मीठा खाने को माँगा।

भालू ने कहा – शहद खा लो।

गधे ने मना कर दिया।

खरगोश ने कहा – गाजर खा लो।

गधे ने मना कर दिया।

चींटे ने कहा – गुड़ खा लो।

गधे ने मना कर दिया।
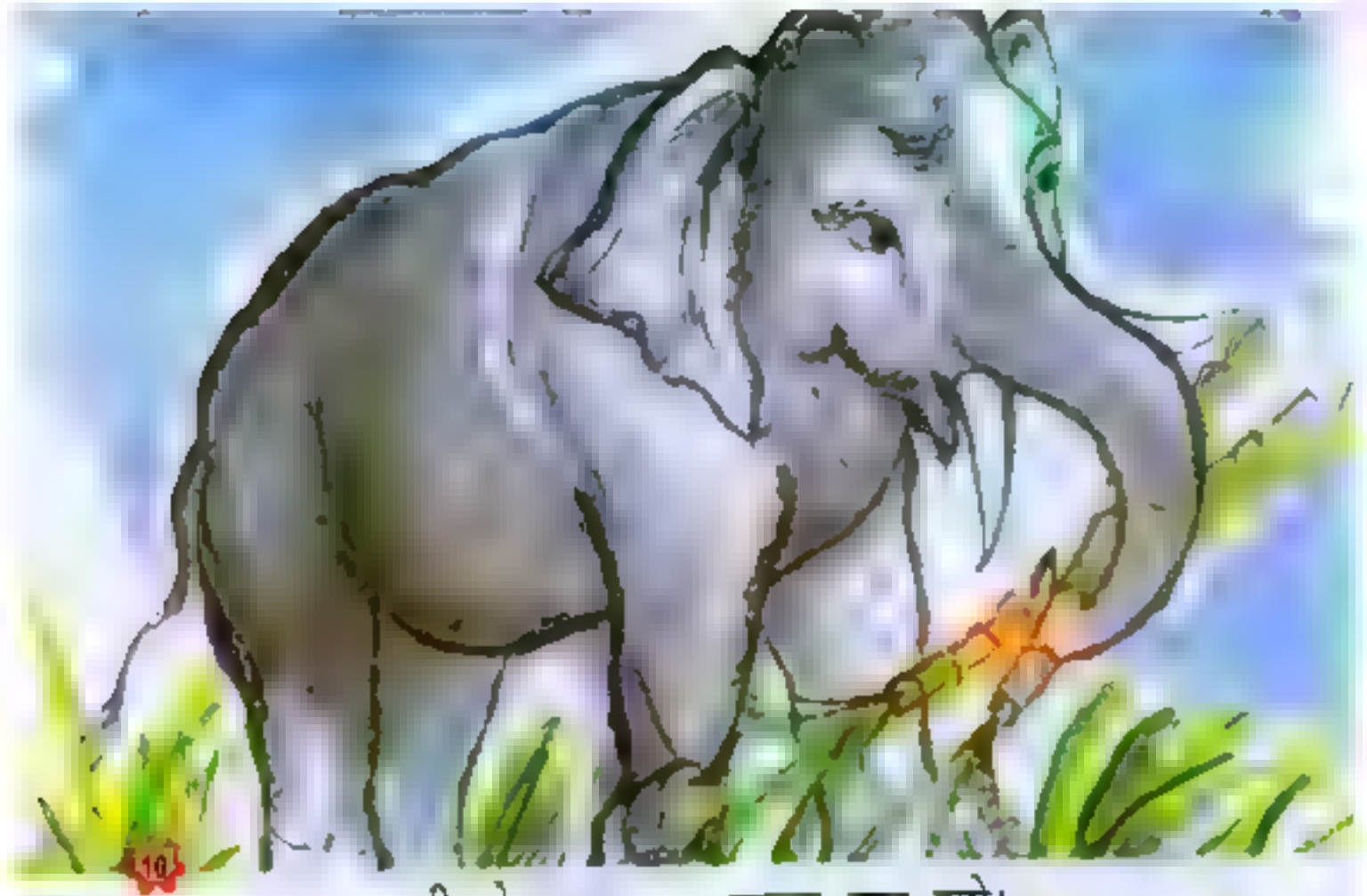
हाथी ने कहा – गन्ना खा लो।

गधे ने मना कर दिया।

गिलहरी ने कहा - आम खा लो।

गधे ने मना कर दिया।

बिल्ली बोली – हलवाई की दुकान पर चलो।

गधे को यह बात पसंद आ गई।
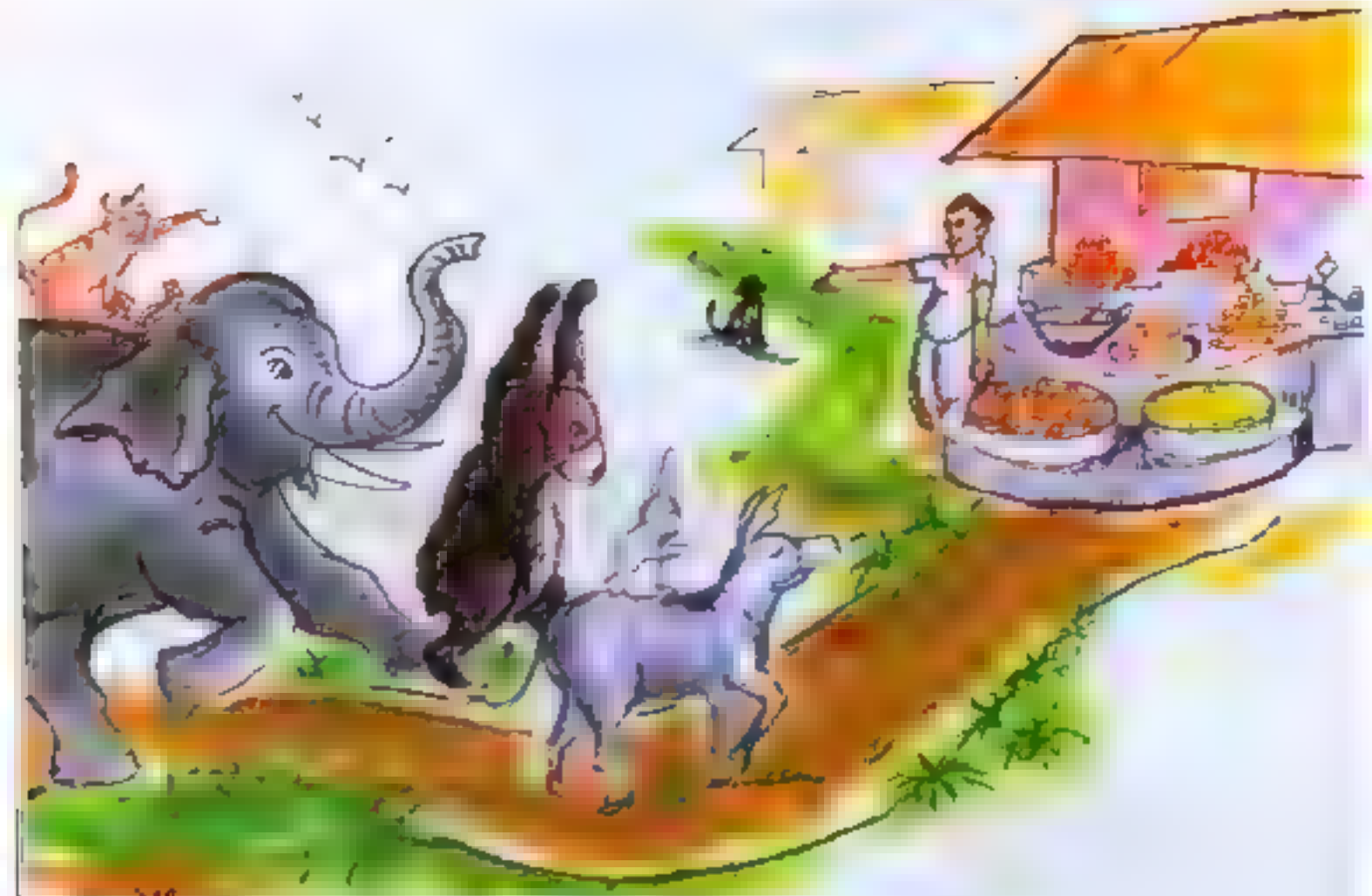
सब मिठाई खाने चल पड़े।

सर्व शिक्षा अभियान
₹. 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
ISBN 978-81 7450-898-0
978-81 7450-861 4

गिल्ली-डंडा

गिल्ली-डंडा
जीत
बबली

एक दिन सब गिल्ली-डंडा खेल रहे थे।

जीत ने गिल्ली को उछाला।

सब लोग उसे पकड़ने दौड़े।

गिल्ली तालाब के पार चली गई।

गिल्ली बबली के पास जा गिरी।

बबली ने गिल्ली उठाई।
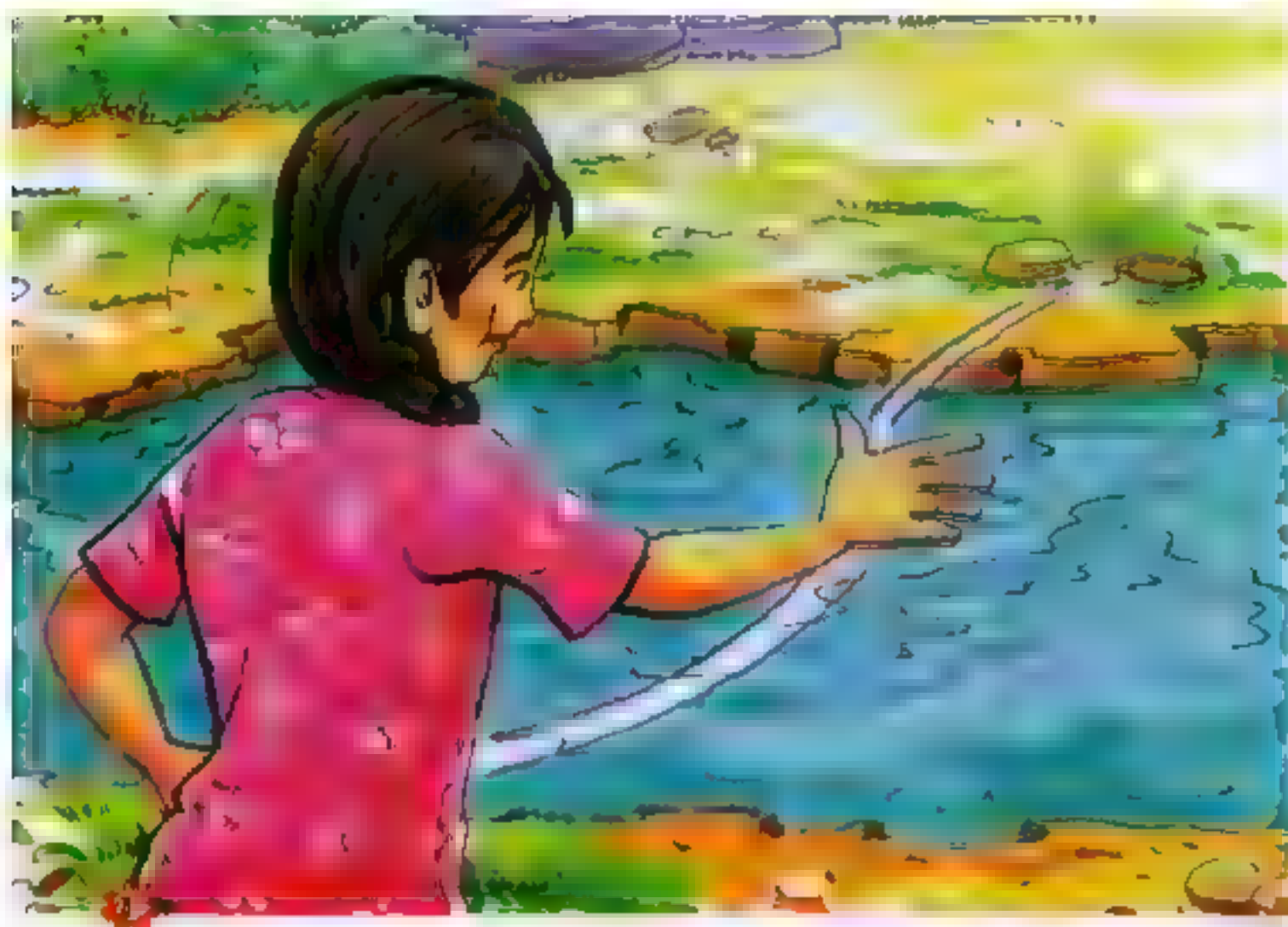
बबली उसे तालाब के पार फेंकने लगी।

गिल्ली तालाब में गिर गई।

सब गिल्ली को लेकर परेशान हो गए

बबली को तैरना आता था।

वह तालाब में कूदी और गिल्ली ले आई।

सब खुशी से चिल्लाने लगे।

बबली सबके साथ गिल्ली-डंडा खेलने लगी।

बबली ने ज़ोर से डंडा घुमाया।

गिल्ली फिर तालाब के पार चली गई।

2061

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बारह सैट)
978-81-7450-862-

छुपन-छुपाई
पढ़ना है समझना

छुपन-छुपाई
बबली
जीत

एक दिन सब छुपन-छुपाई खेल रहे थे।

उस दिन जीत की बारी थी।

जीत सौ तक गिन कर सबको ढूँढ़ने निकला।

मोहित दरवाज़े के पीछे ही मिल गया।

जीत बाकी सबको कमरे में ढूँढ़ने लगा।

बबली अलमारी के पीछे मिल गई।

उमा पलंग के नीचे मिल गई।
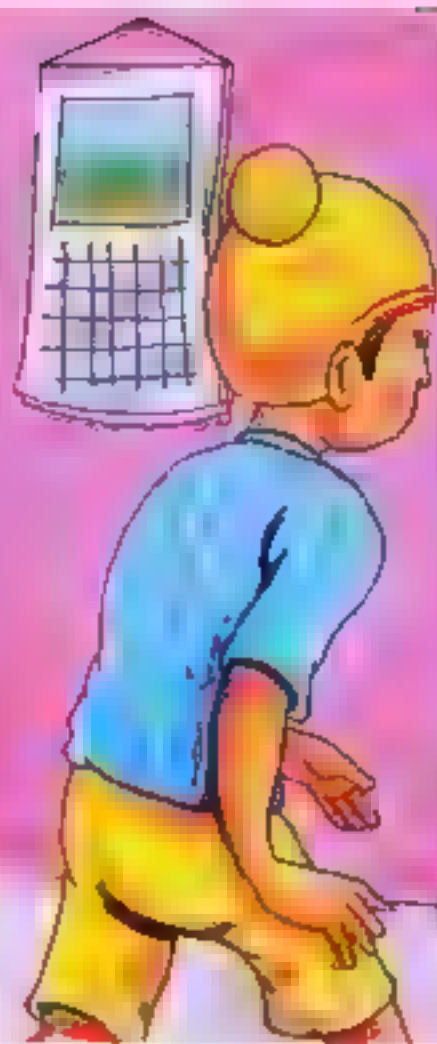
उसके बाद जीत आँगन की तरफ़ गया।

मीता दादी के पीछे मिल गई।

जीत नाज़िया को आँगन में ढूँढ़ने लगा।

जीत ने नाज़िया को चादर के पीछे ढूँढ़ा।

जीत नाज़िया को ढूँढ़ने के लिए बाहर आया।

वह पेड़ के नीचे खड़ा होकर सोचने लगा।

नाज़िया ने ऊपर से कूदकर उसे धप्पा कर दिया।
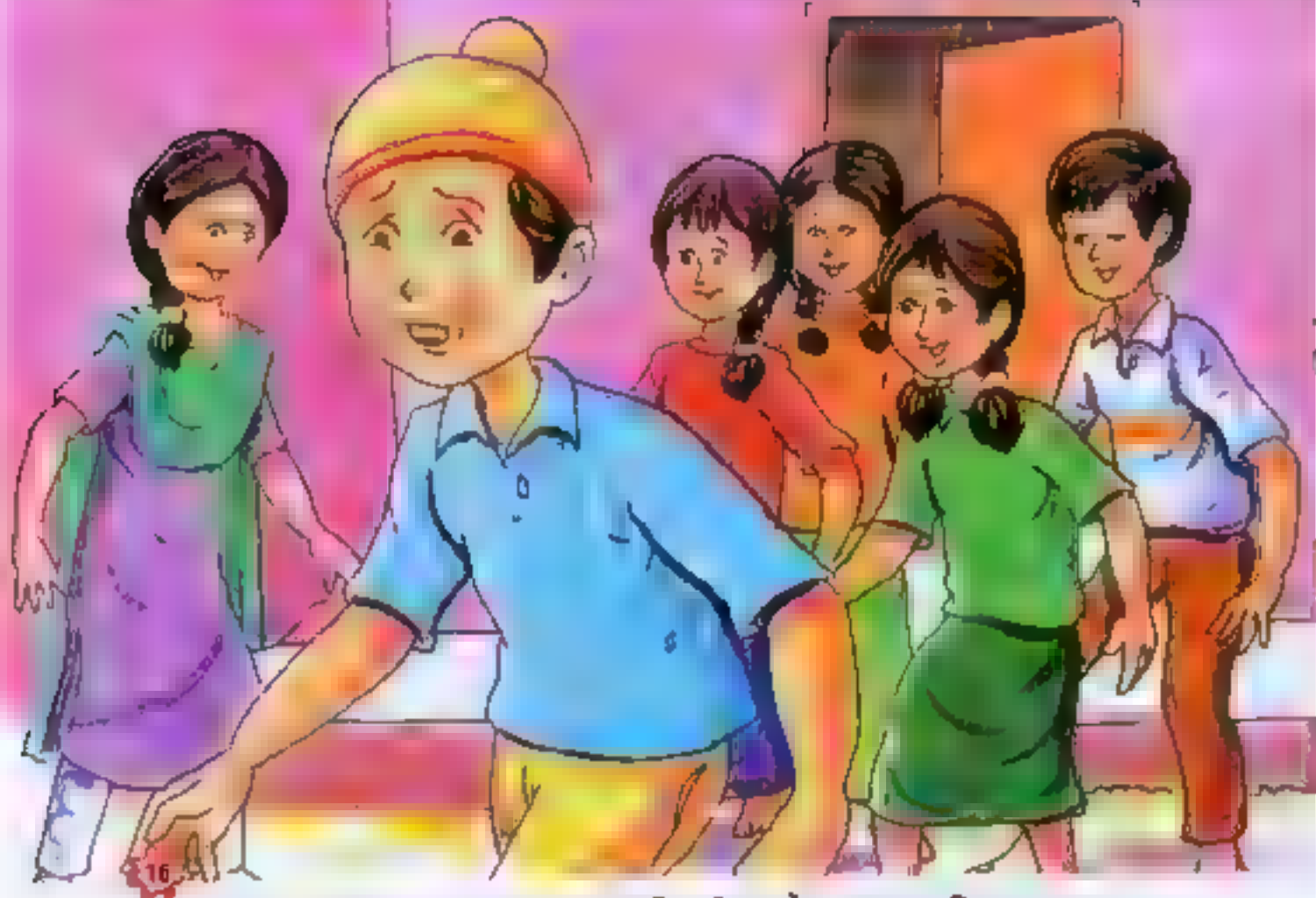
जीत दुबारा गिनती गिनने चल दिया।

2063

रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 [illegible] सेट
978-81-7450-8[illegible]3-8

पढ़ना है समझना
मज़ा आ गया

मज़ा आ गया

तोसिया और मिली को एक पेड़ पसंद था।

वे उस पेड़ के पास रोज़ खेलने जाती थीं।

पेड़ पर एक चिड़िया और इल्ली रहती थी।

उनको पेड़ पर बहुत मज़ा आता था।

एक दिन ज़ोर से हवा चली।
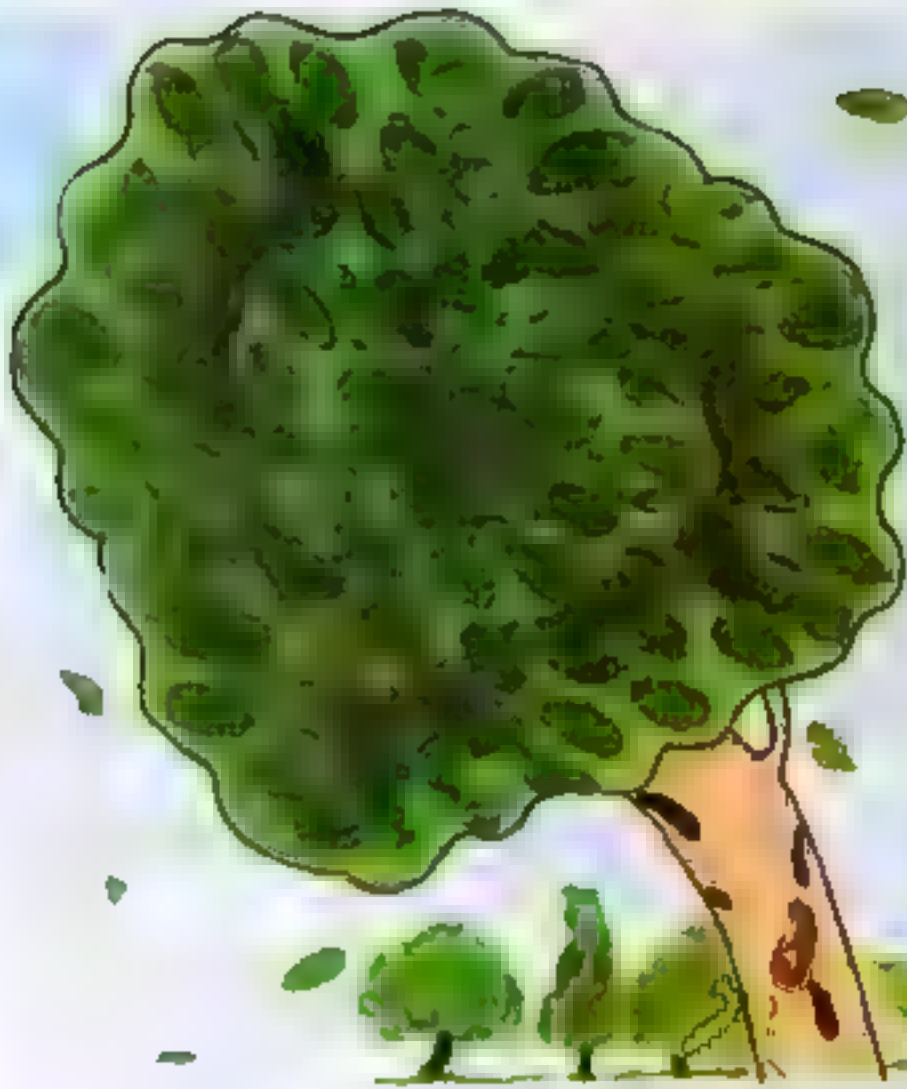
पेड़ कभी दाएँ कभी बाएँ झूलने लगा।

इल्ली और चिड़िया का घर भी झूलने लगा।

इल्ली भी पेड़ के साथ-साथ झूल रही थी।

चिड़िया अपने घोंसले से बाहर आ गई।

पेड़ बहुत ज़ोर से दाएँ बाएँ झूल रहा था।

इल्ली को मज़ा आ रहा था।
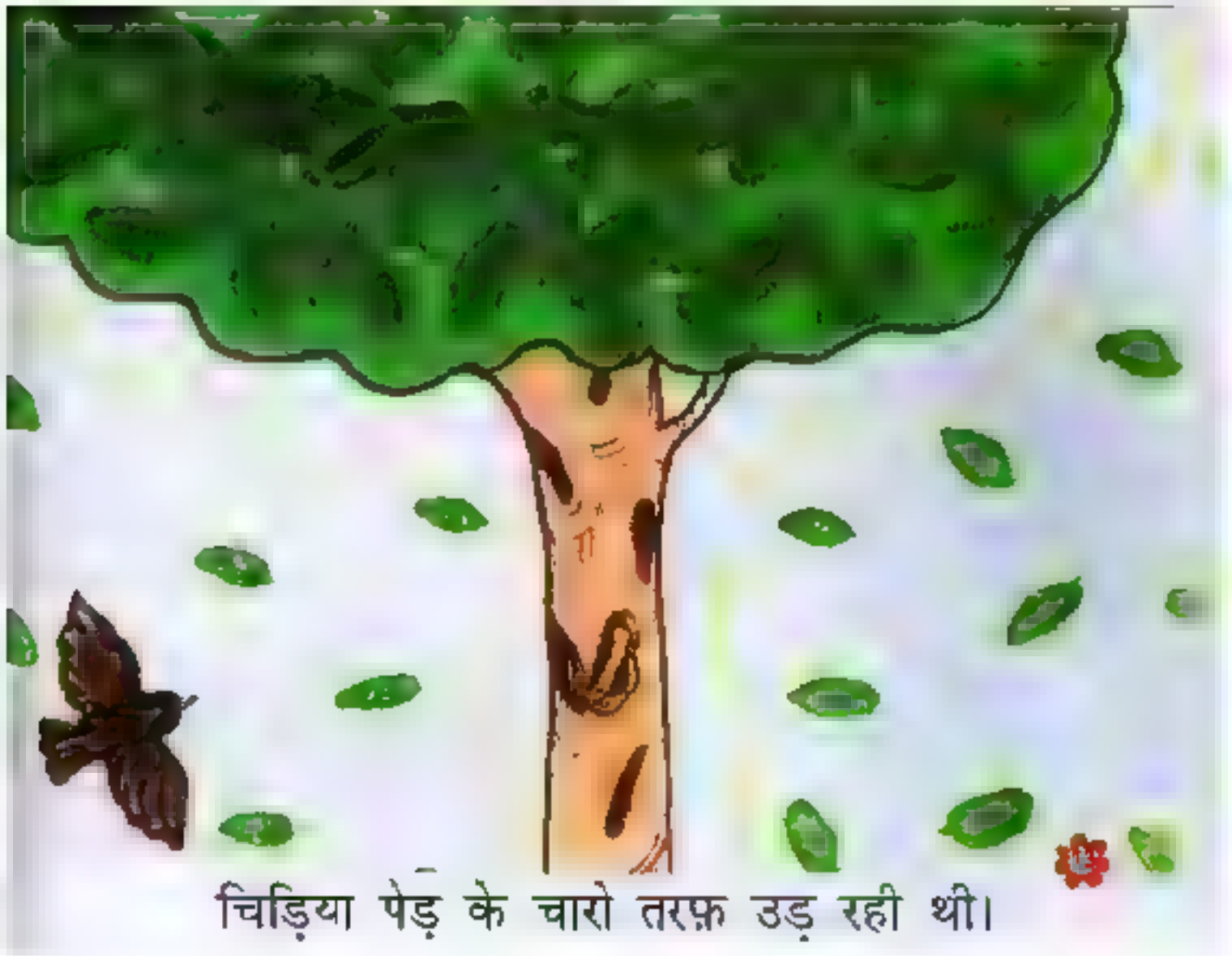
चिड़िया पेड़ के चारो तरफ़ उड़ रही थी।

थोड़ी देर में हवा रुक गई।

चिड़िया को घोसले में जाकर राहत मिली।

तोसिया और मिली फिर से खेलने लगीं।

2063

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 ([illegible])
978-81-7450-864-5

मिली का गुब्बारा
पढ़ना है समझना

मिली का गुब्बारा

एक दिन मिली के पापा गुब्बारा लाए।

मिली ने गुब्बारा हवा में उछाल दिया।
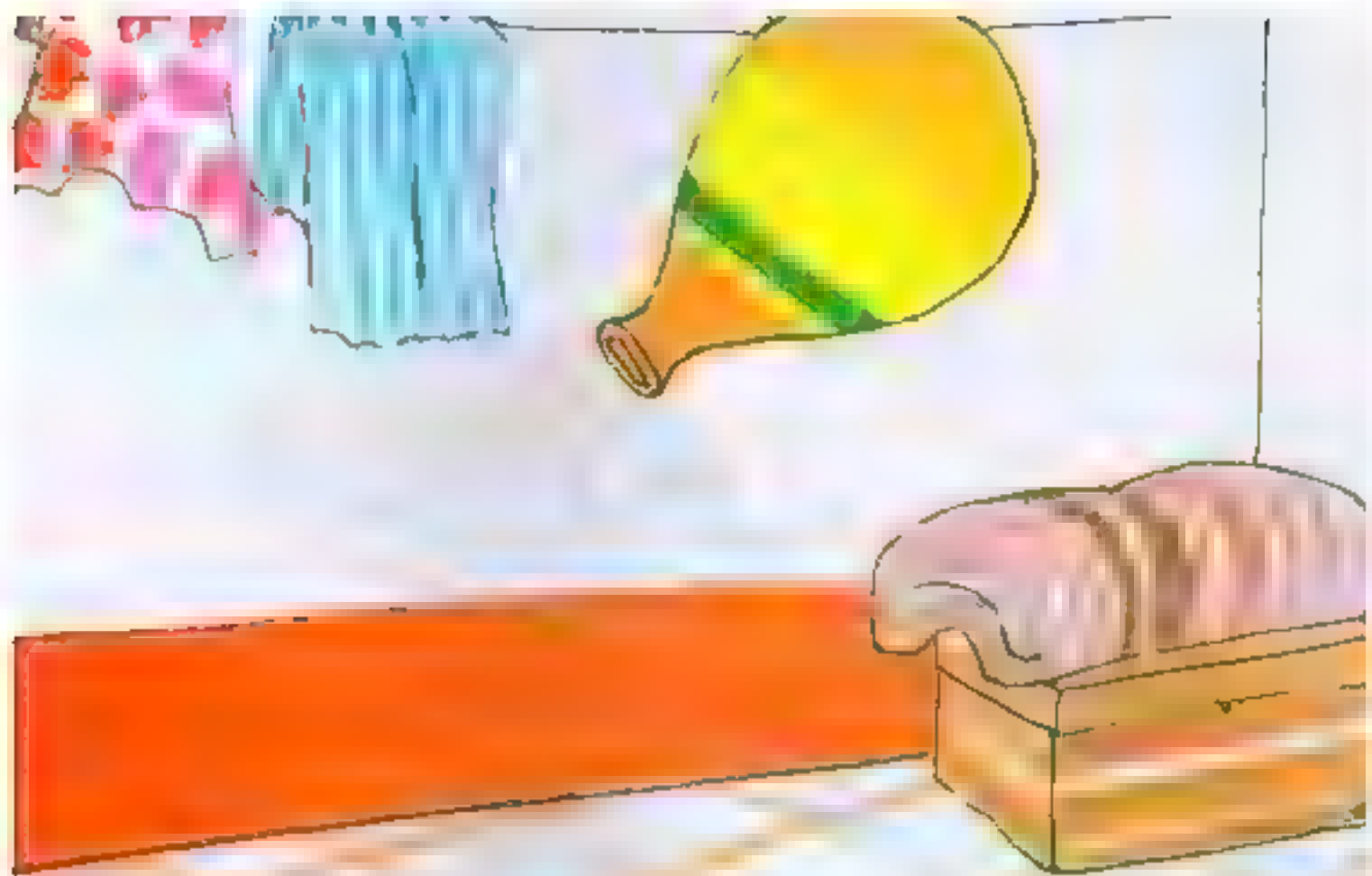
गुब्बारे की हवा धीरे धीरे निकलने लगी।

पिचकता हुआ गुब्बारा छत से टकराया।
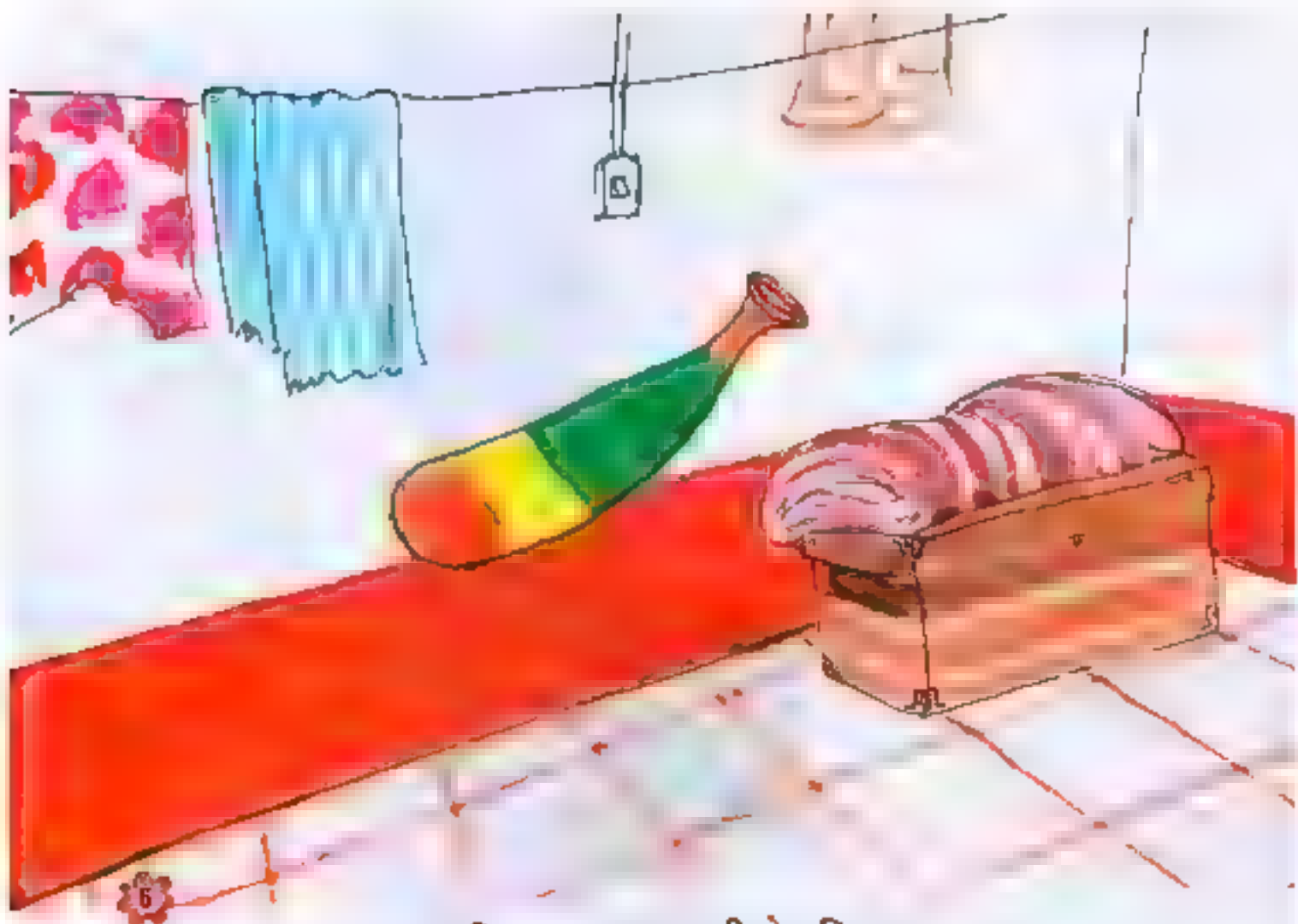
गुब्बारा पिचक कर नीचे गिर गया।
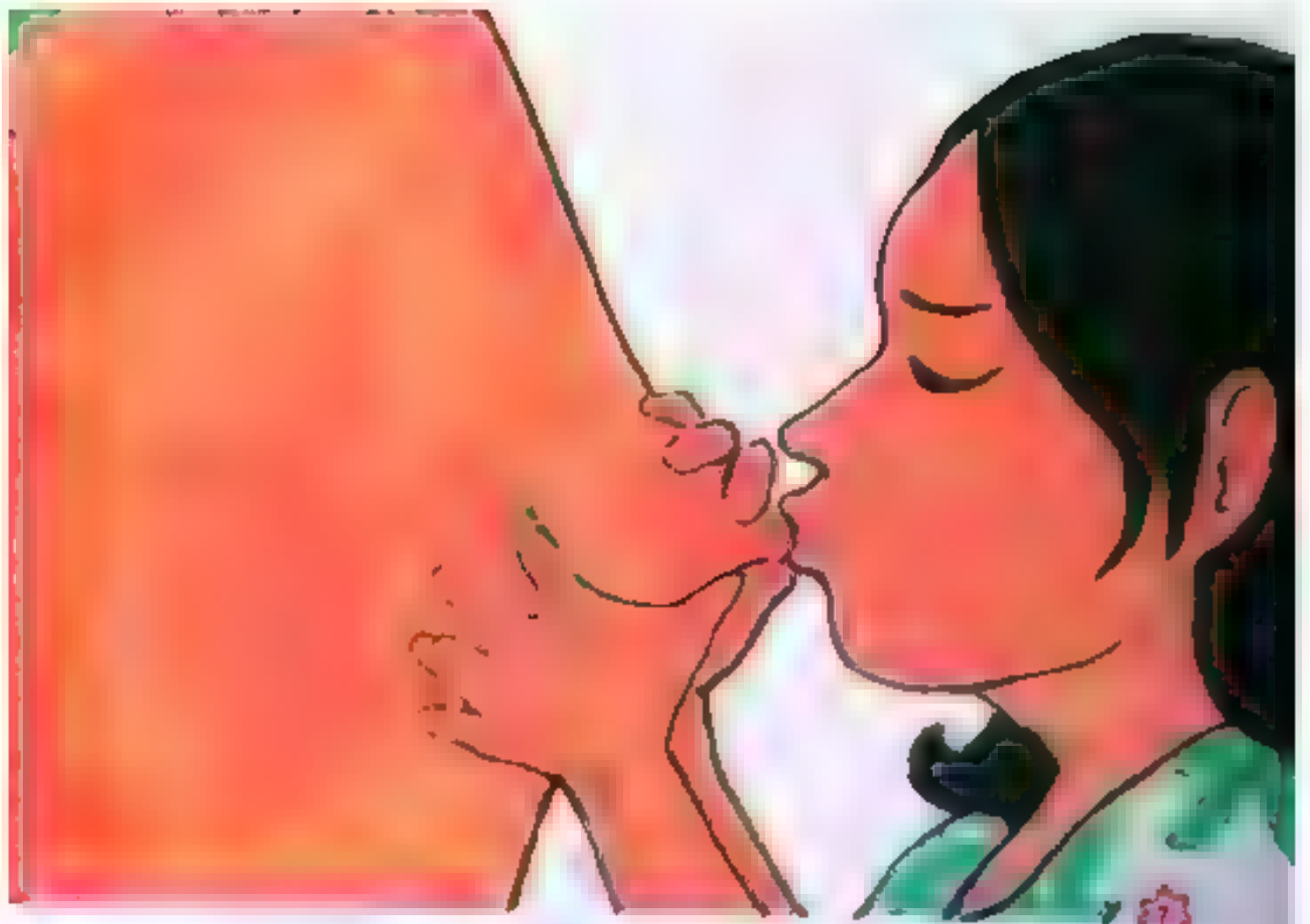
मिली ने गुब्बारा फिर से फुलाया।
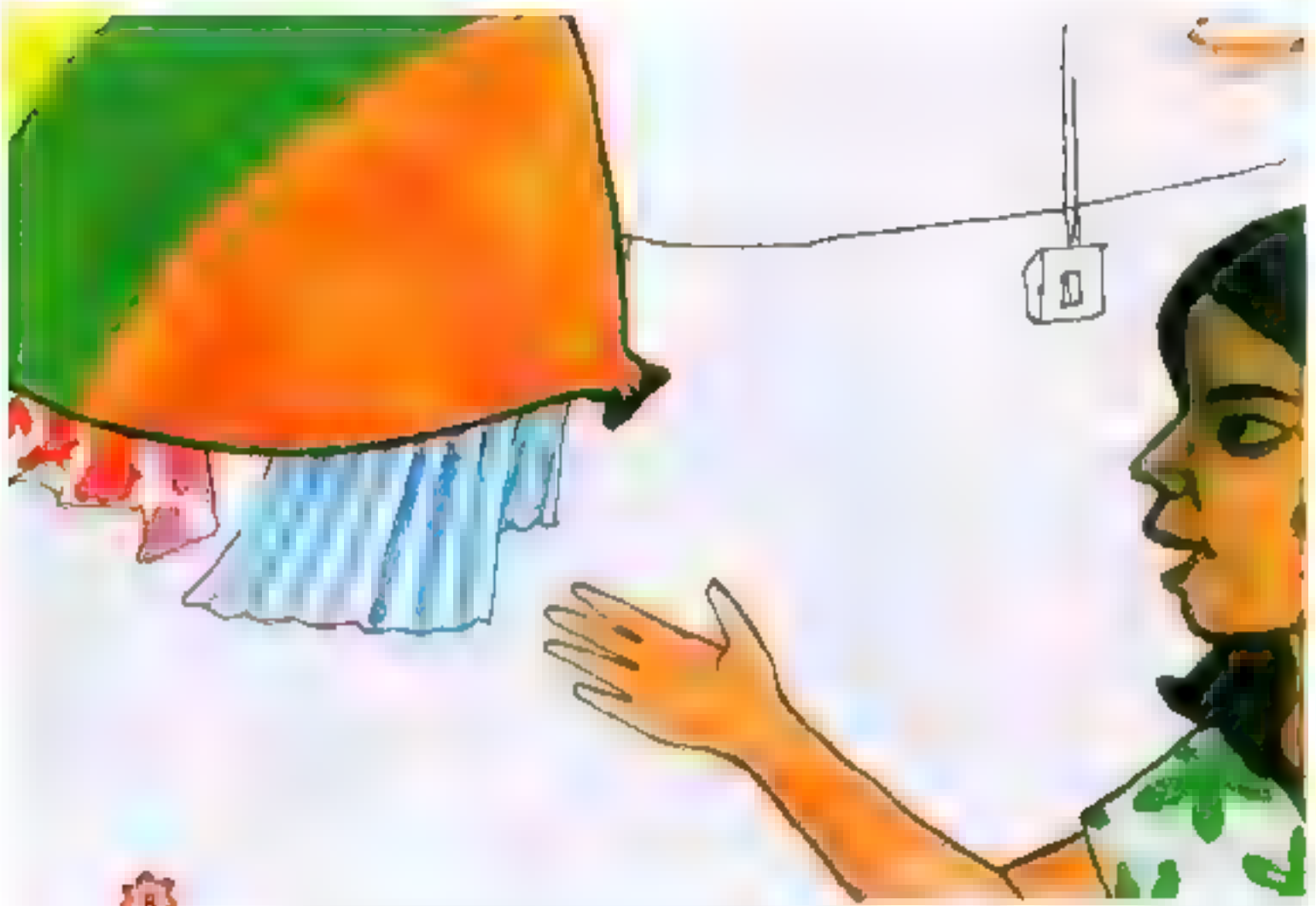
मिली ने गुब्बारा फिर से हवा में उछाल दिया।

गुब्बारा सूँ-सूँ सूँ की आवाज़ करने लगा।
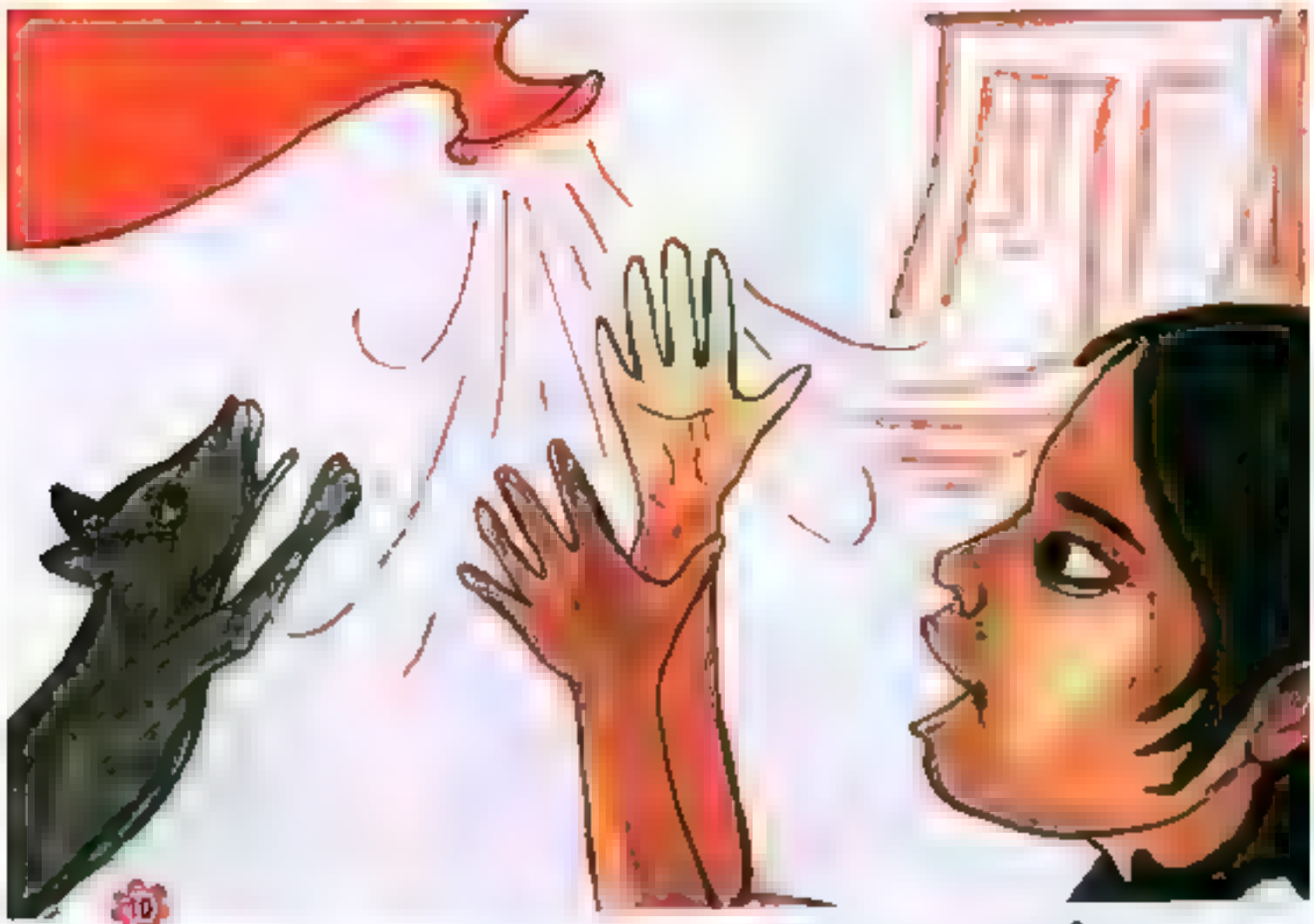
मिली गुब्बारे की आवाज़ से बहुत खुश हुई।

मिली ने पापा को वह आवाज़ सुनवाई।

पापा ने गुब्बारे को फिर से फुलाया।

पापा उस पर धागा बाँधने लगे।

मिली ने धागा बाँधने नहीं दिया।

धागा बाँधने से आवाज़ नहीं निकलती।

मिली को पिचकते हुए गुब्बारे की आवाज़ पसंद है।
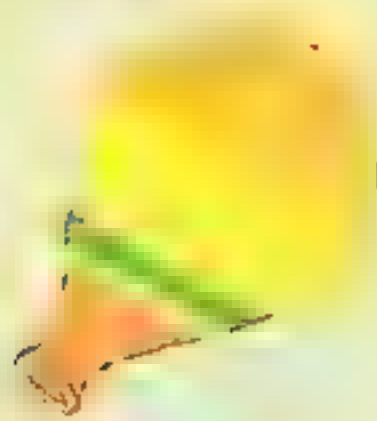
7064

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

रु.10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (पूरा सैट)
978-81-7450-865-[illegible]

मीठे-मीठे गुलगुले

मीठे-मीठे गुलगुले

मदन

मम्मी

जमाल
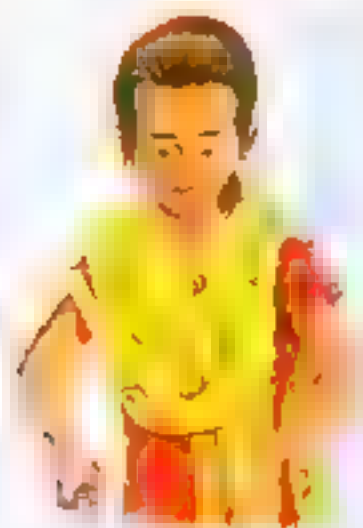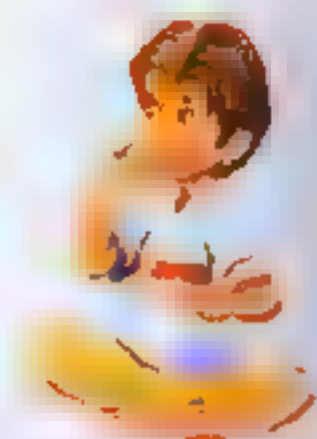
एक दिन जमाल की मम्मी आटा गूँध रही थीं।

जमाल पास ही बैठा हुआ था।
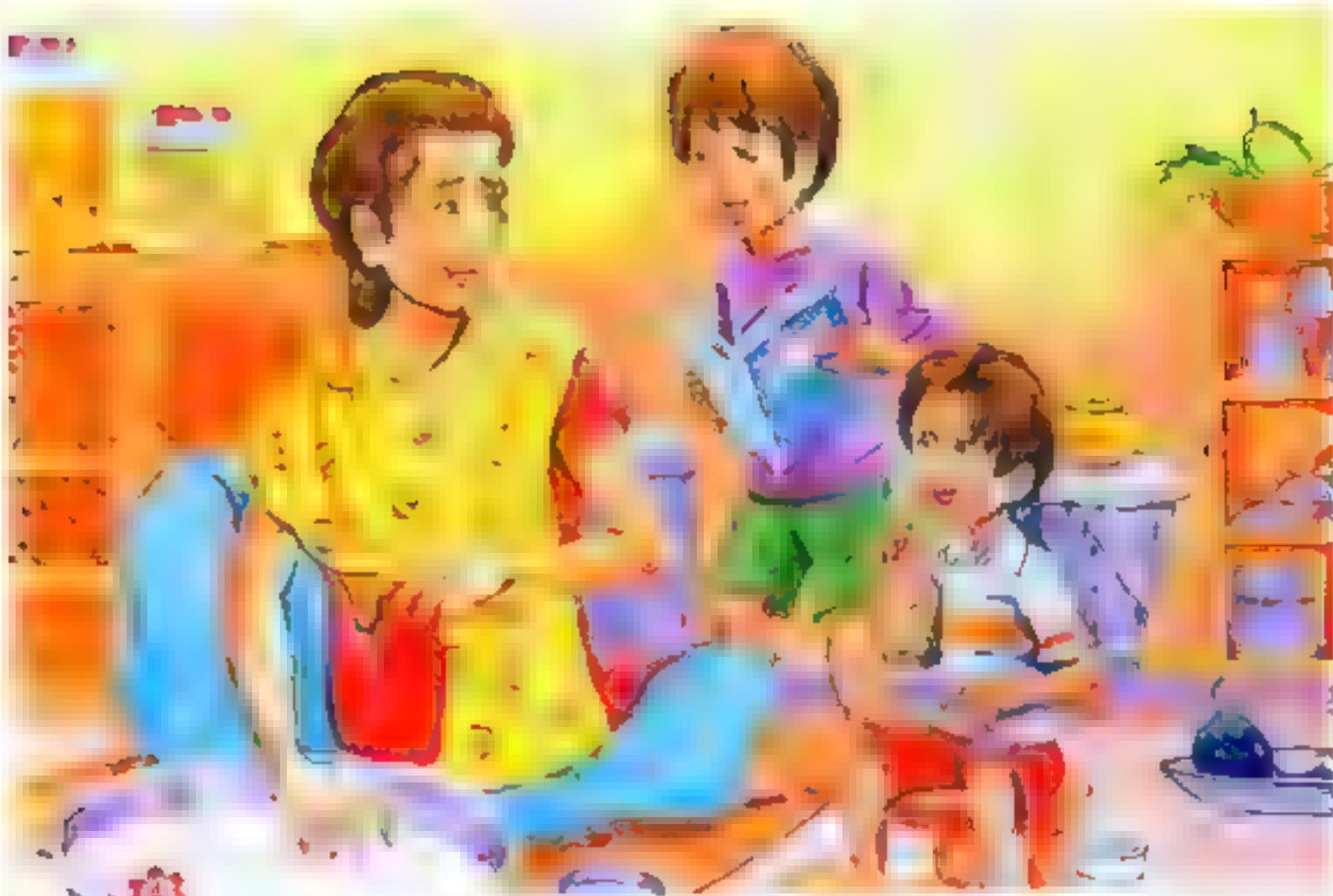
पड़ोस का मदन मम्मी से एक सवाल पूछने आया।
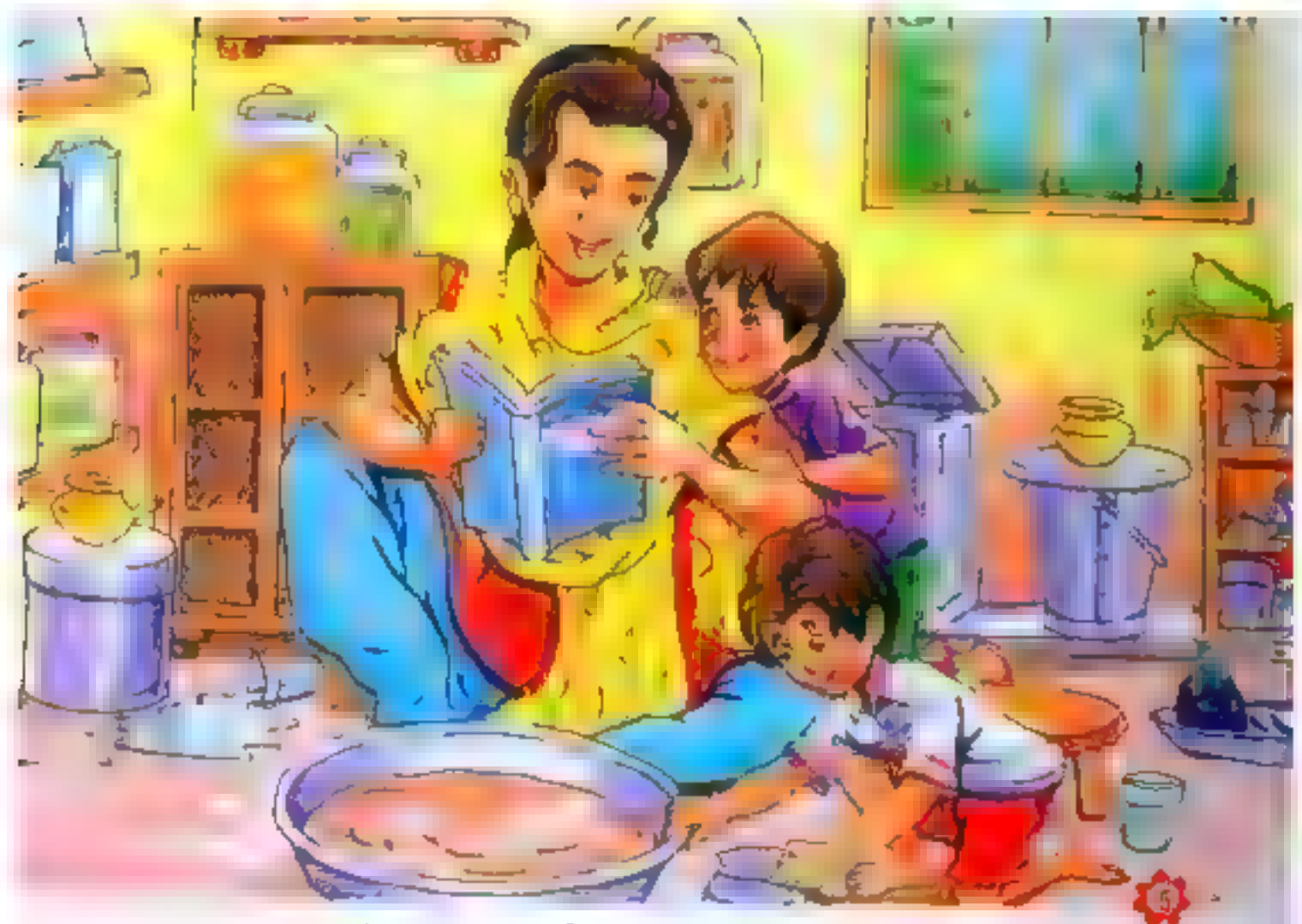
मम्मी मदन को सवाल समझाने लगीं।

जमाल आटा गूँधने लगा।
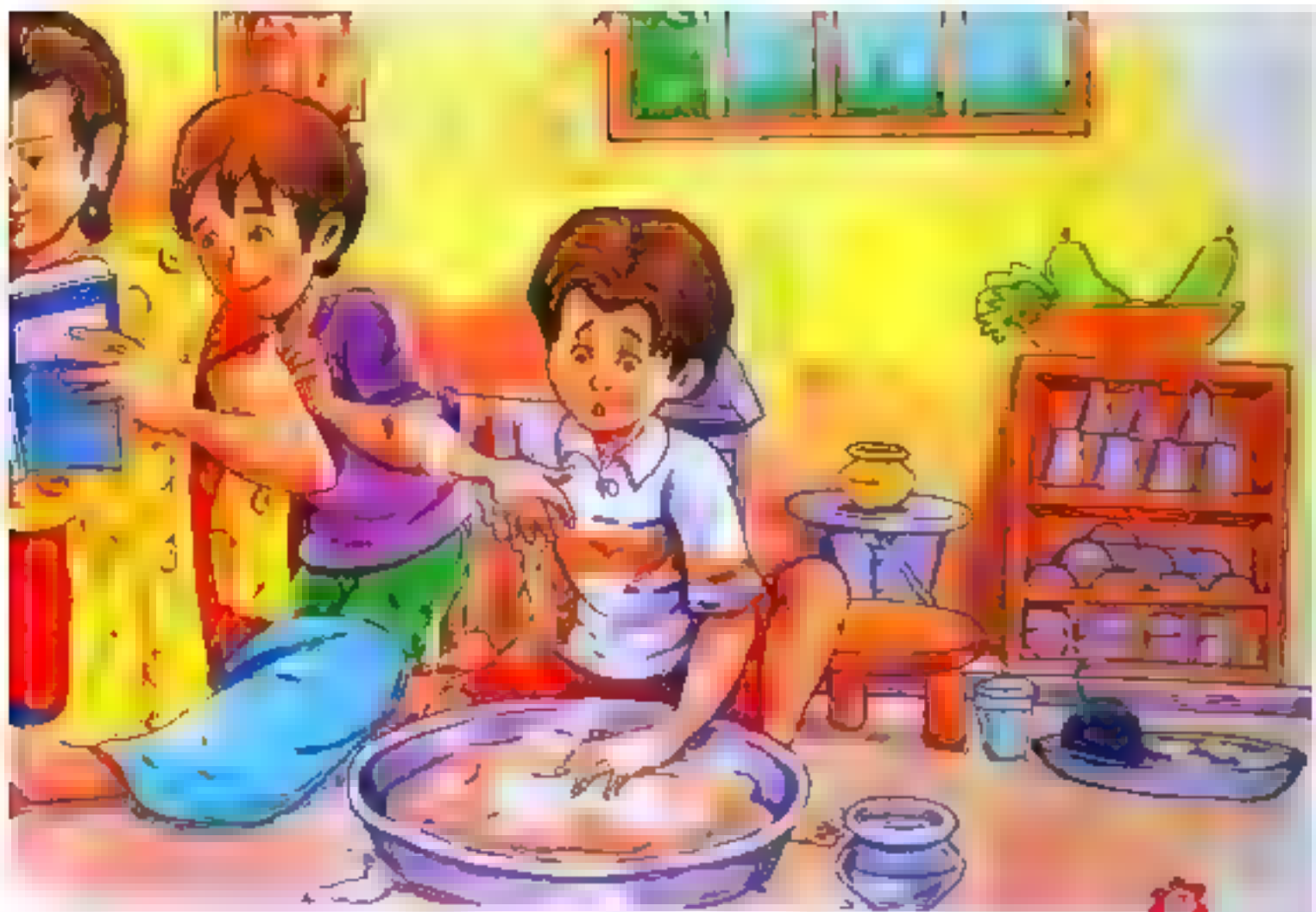
उसके हाथों में आटा चिपक गया।

जमाल ने आटे में पानी मिलाया।

उसके हाथों में आटा और चिपक गया।

जमाल ने आटे में और पानी मिला दिया।

आटा बहुत पतला हो गया।

मम्मी ने देखा तो वह गुस्सा हुई।
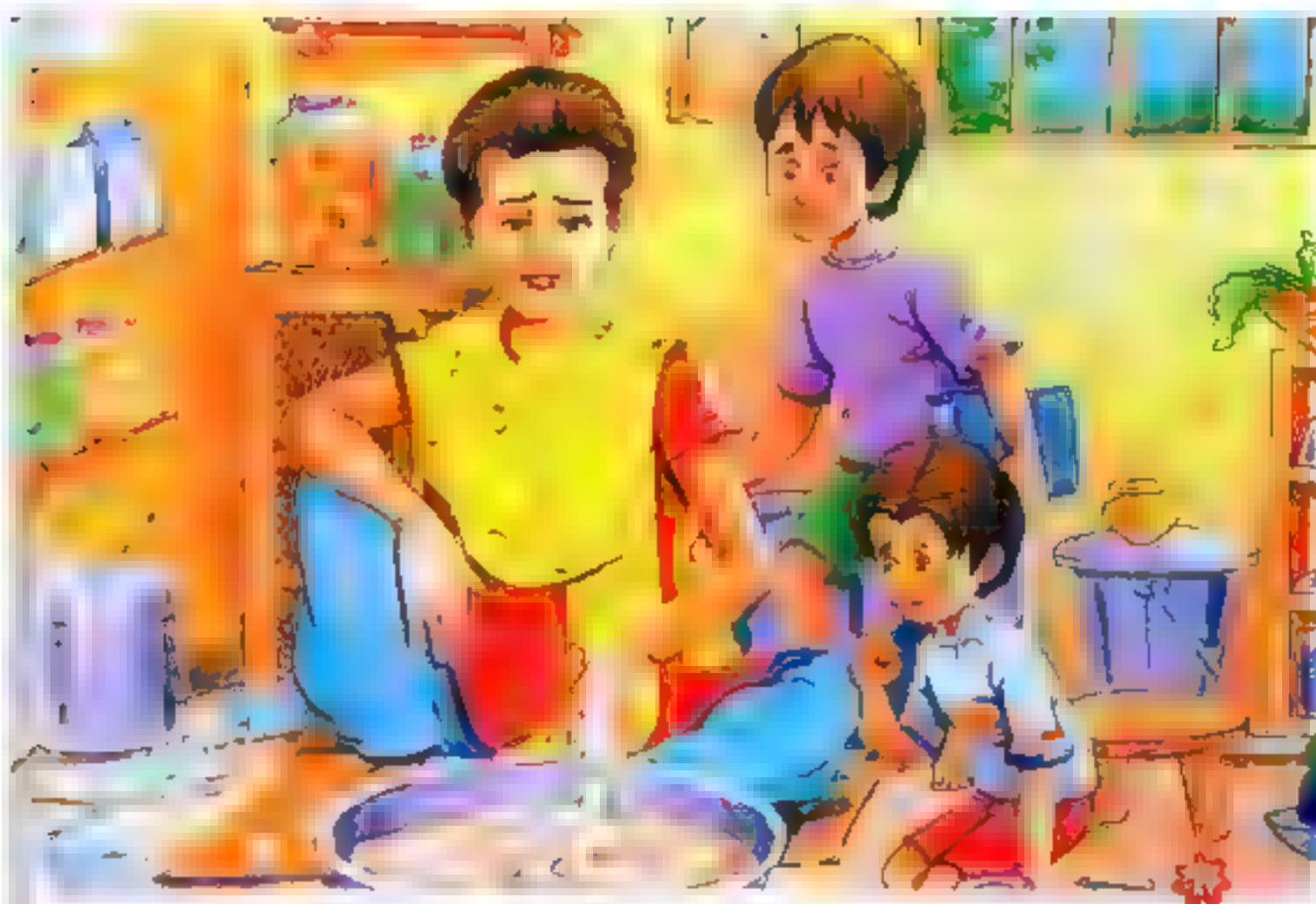
वह सोचने लगीं कि गीले आटे का क्या करें।
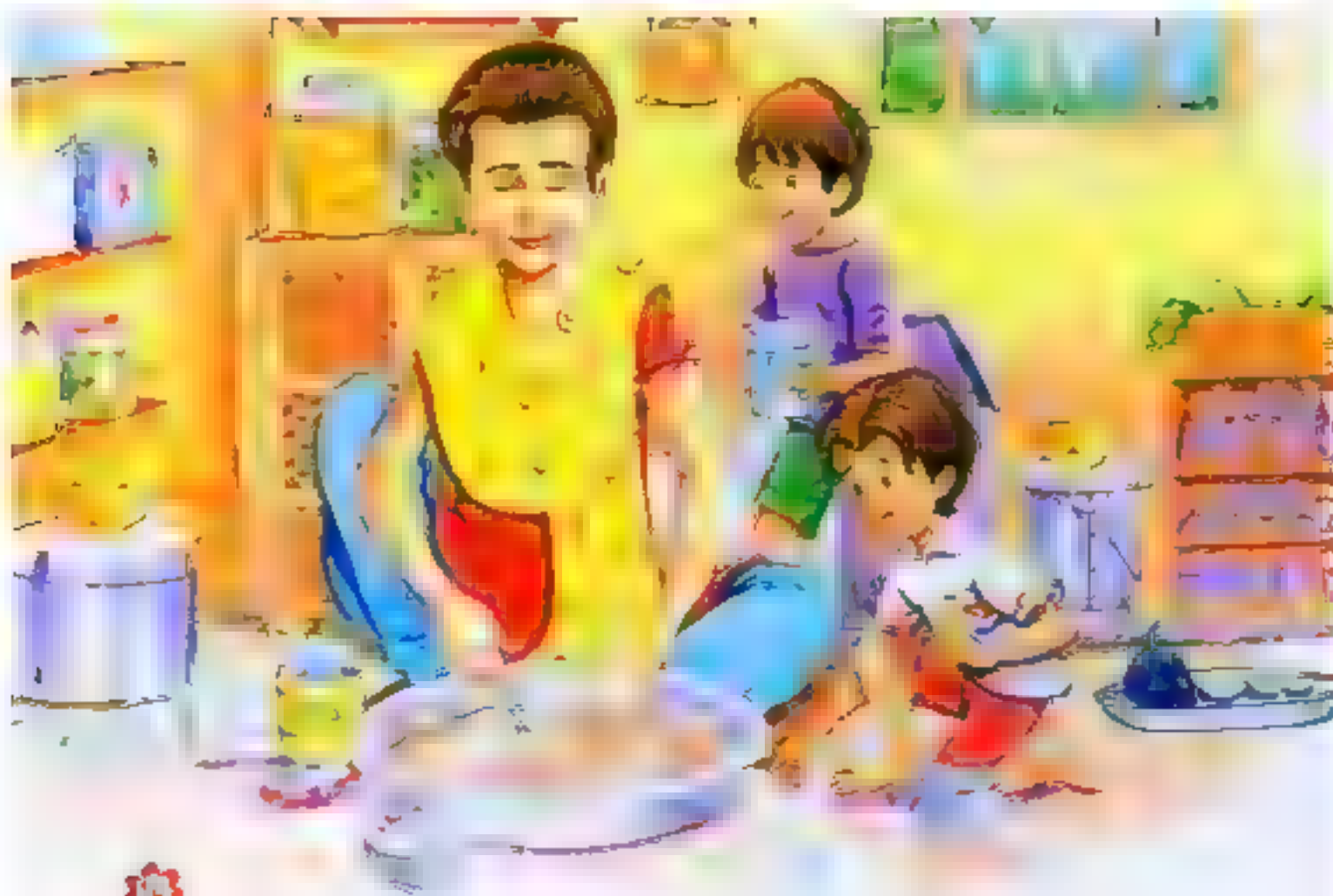
मम्मी ने आटे में सौंफ और गुड़ मिला दिया।
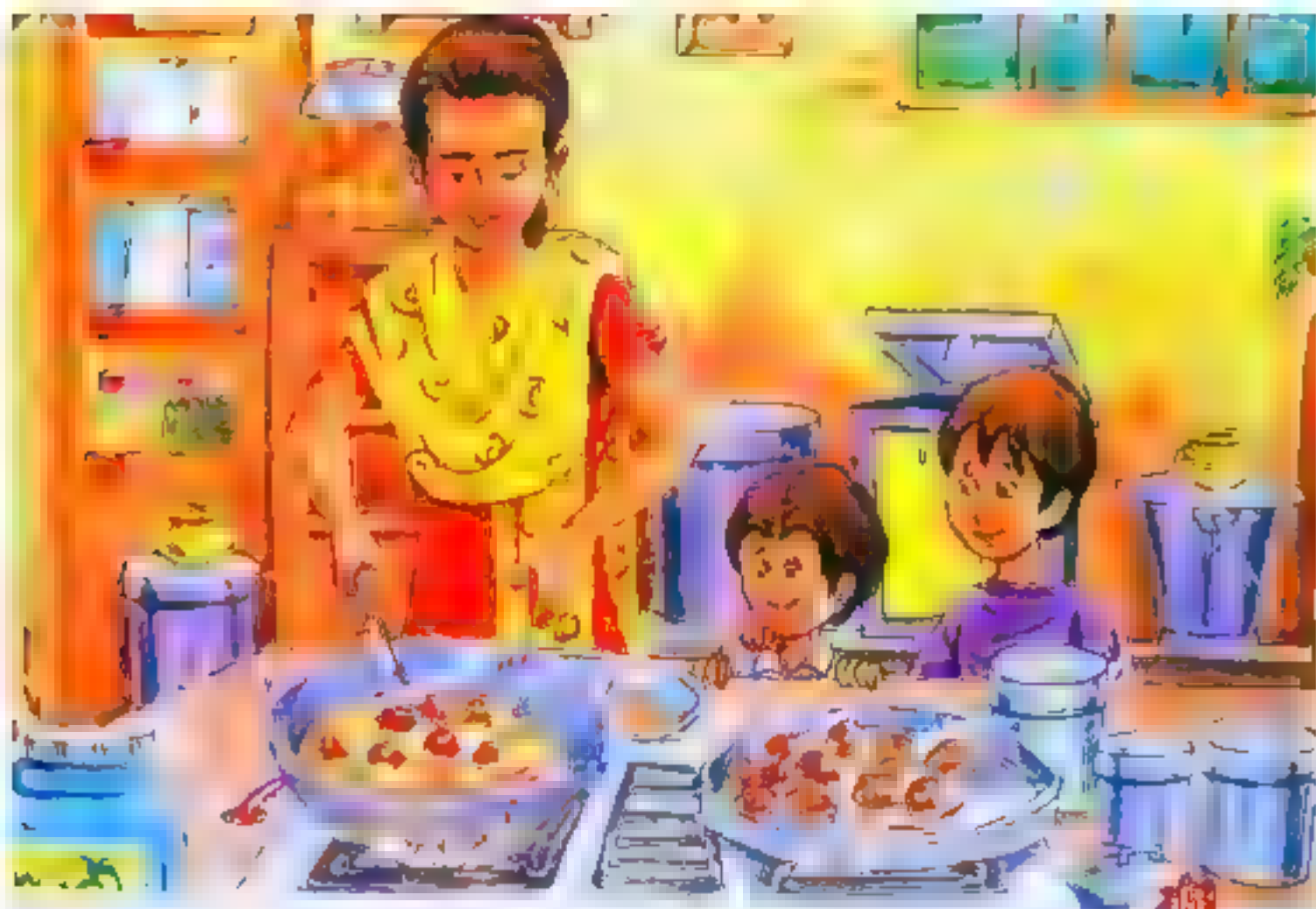
उन्होंने खूब सारे गुलगुले तले।

जमाल और मदन ने खूब सारे गुलगुले खाए।
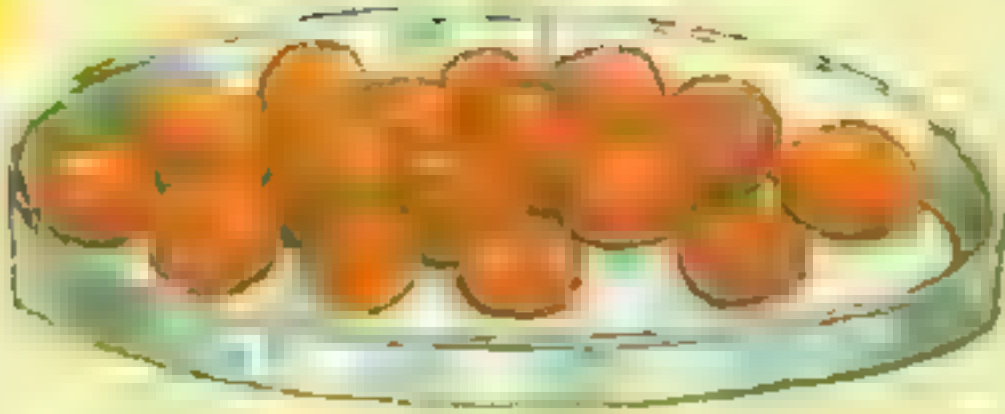
स्तर 1
स्तर 2
स्तर 4
सर्व शिक्षा अभियान
2065
रु. 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
ISBN 978-81-7450-898-4
978-81-7450-866-9

फूली रोटी

फूली रोटी
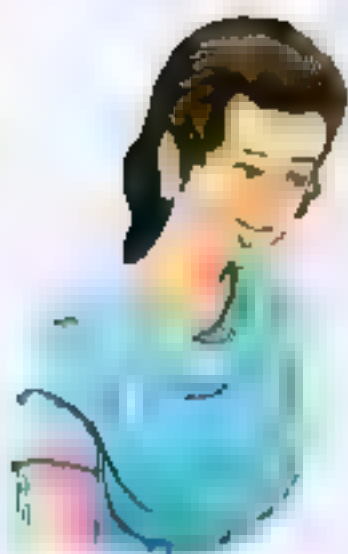
एक दिन मम्मी रोटी बना रही थीं।
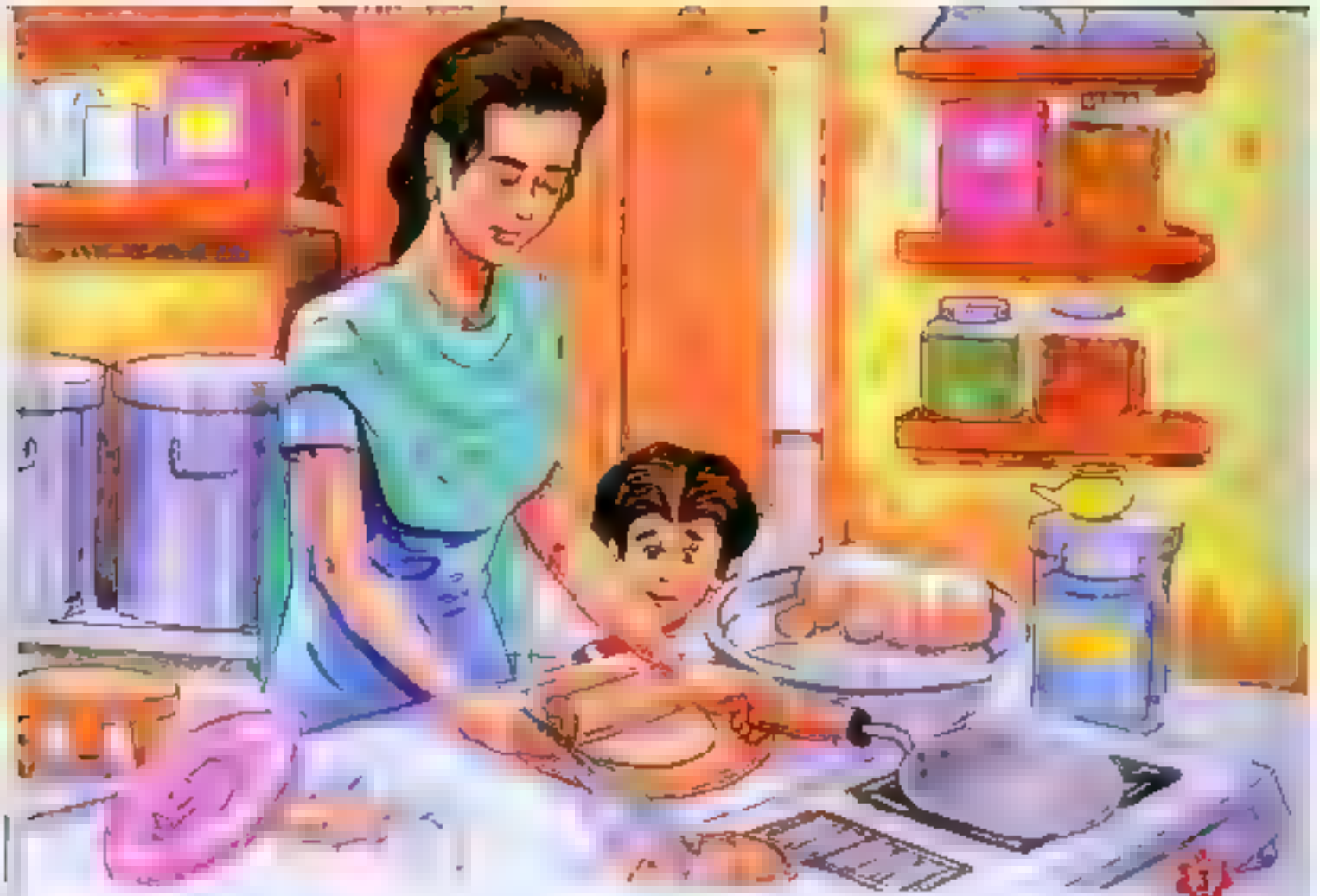
जमाल भी रोटी बनाना चाहता था।
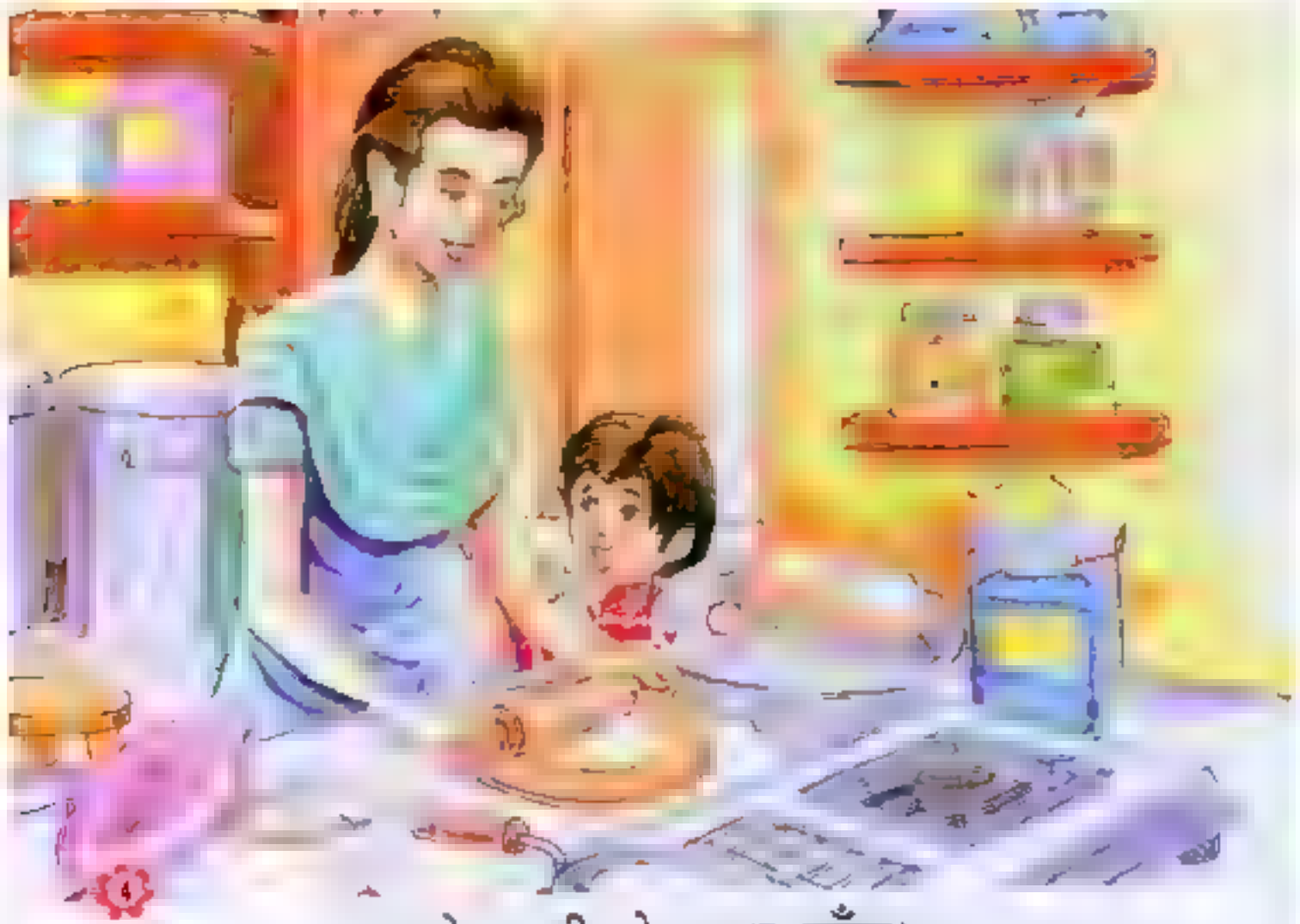
उसने मम्मी से आटा माँगा।

मम्मी ने उसे छोटी-सी लोई दे दी।

जमाल रोटी बेलने लगा।

उसने रोटी में सूखा आटा लगाया।

जमाल से रोटी गोल नहीं बन रही थी।

जमाल सोचने लगा कि रोटी गोल कैसे बने।

उसने एक कटोरी उठाई।

जमाल ने कटोरी रोटी पर रखकर घुमा दी।

रोटी गोल हो गई।

मम्मी ने जमाल की रोटी सेंक दी।
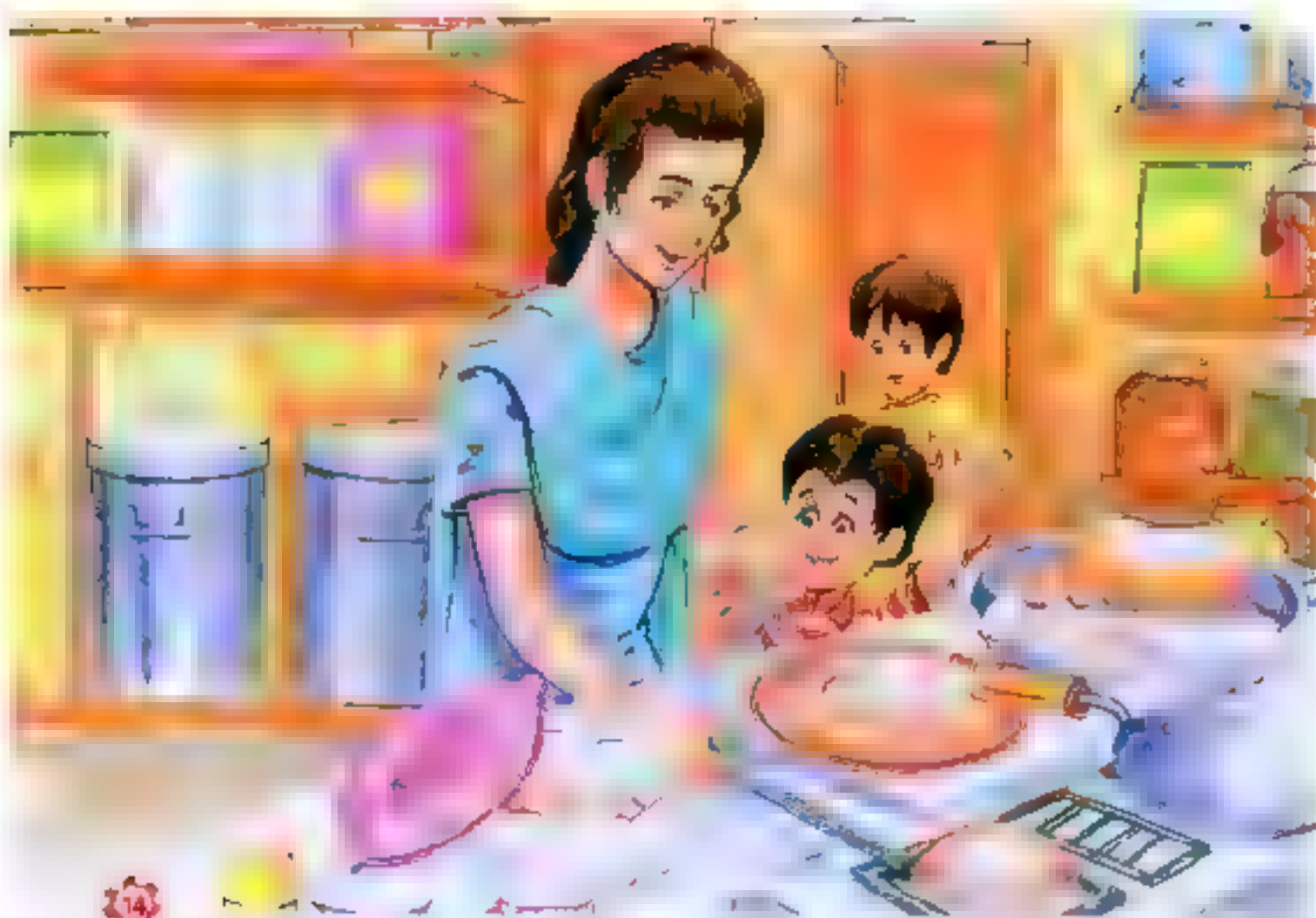
जमाल की रोटी खूब फूली।

जमाल और मदन रोटी खाने लगे।
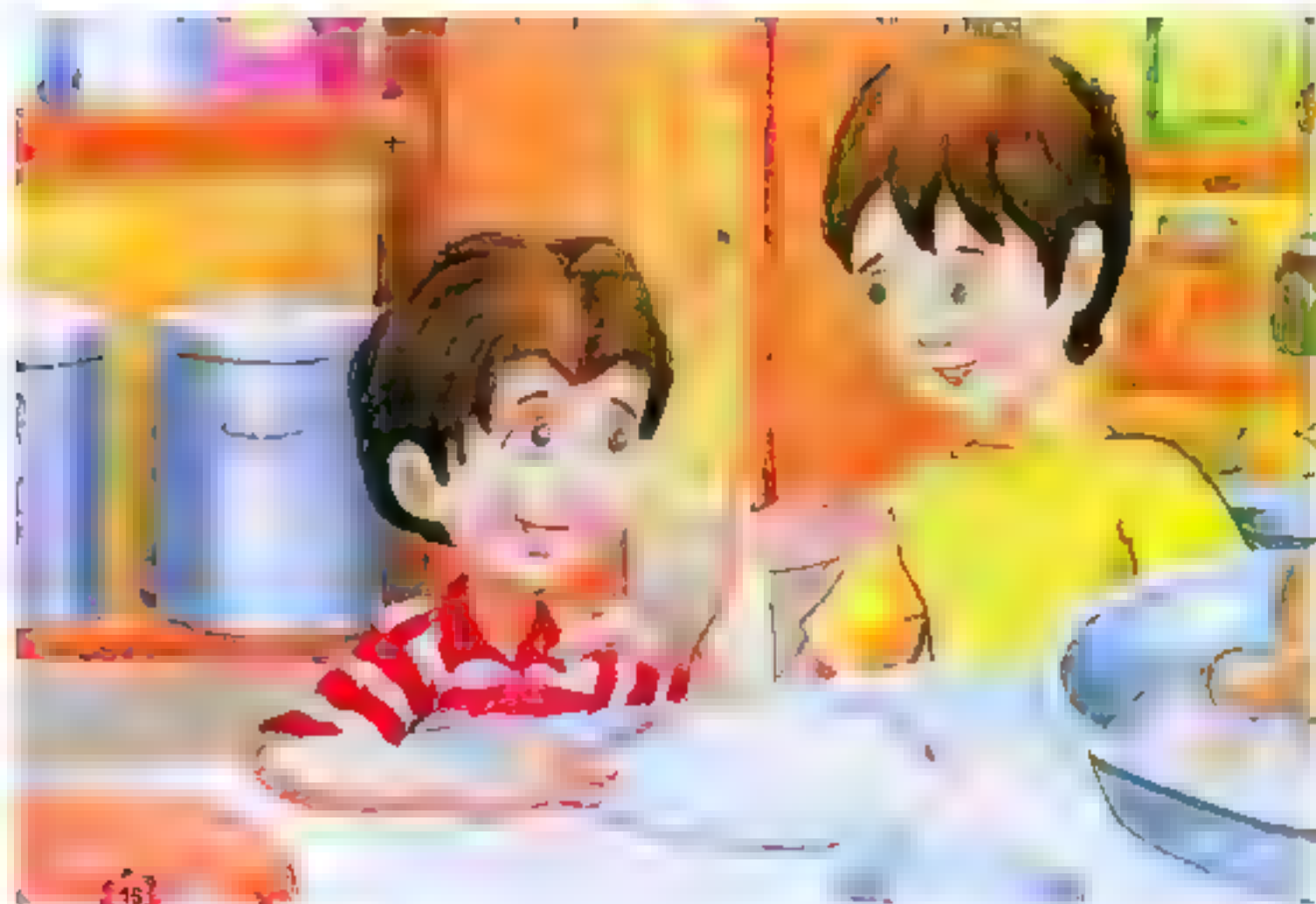
जमाल बोला कि रोटी उसने बनाई है।
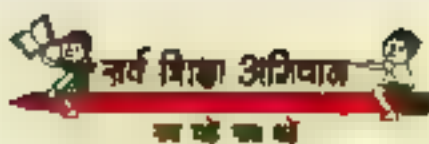
2066

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 ([illegible]
978-81-7450-867-6

पढ़ना है समझना
ऊन का गोला
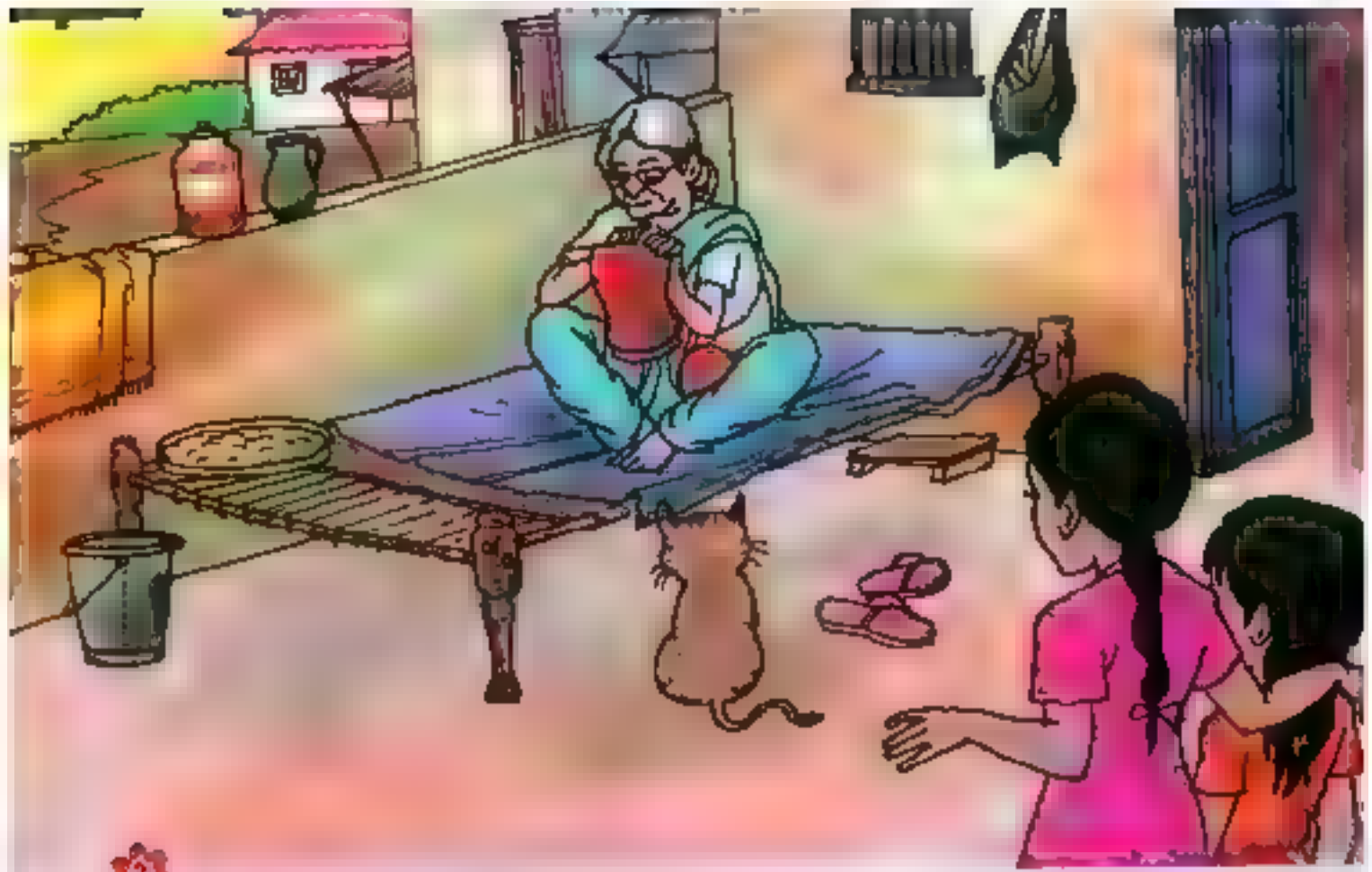
ऊन का गोला

एक दिन मेरी नानी धूप में स्वेटर बुन रही थीं।
नानी के पास लाल ऊन का गोला था।
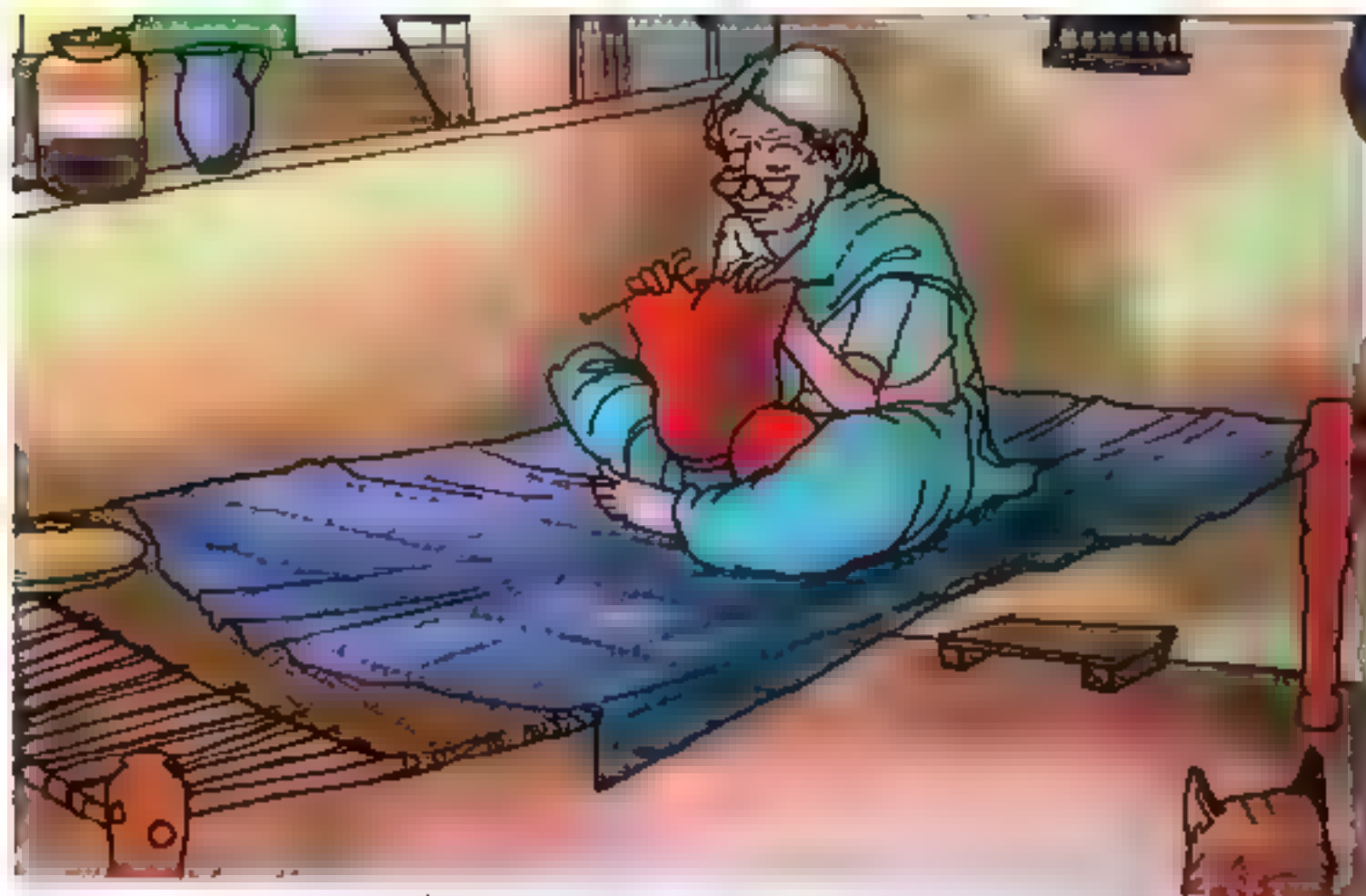
नानी आँगन में बैठकर स्वेटर बुन रही थीं।
गोला उनकी गोद में पड़ा हुआ था।
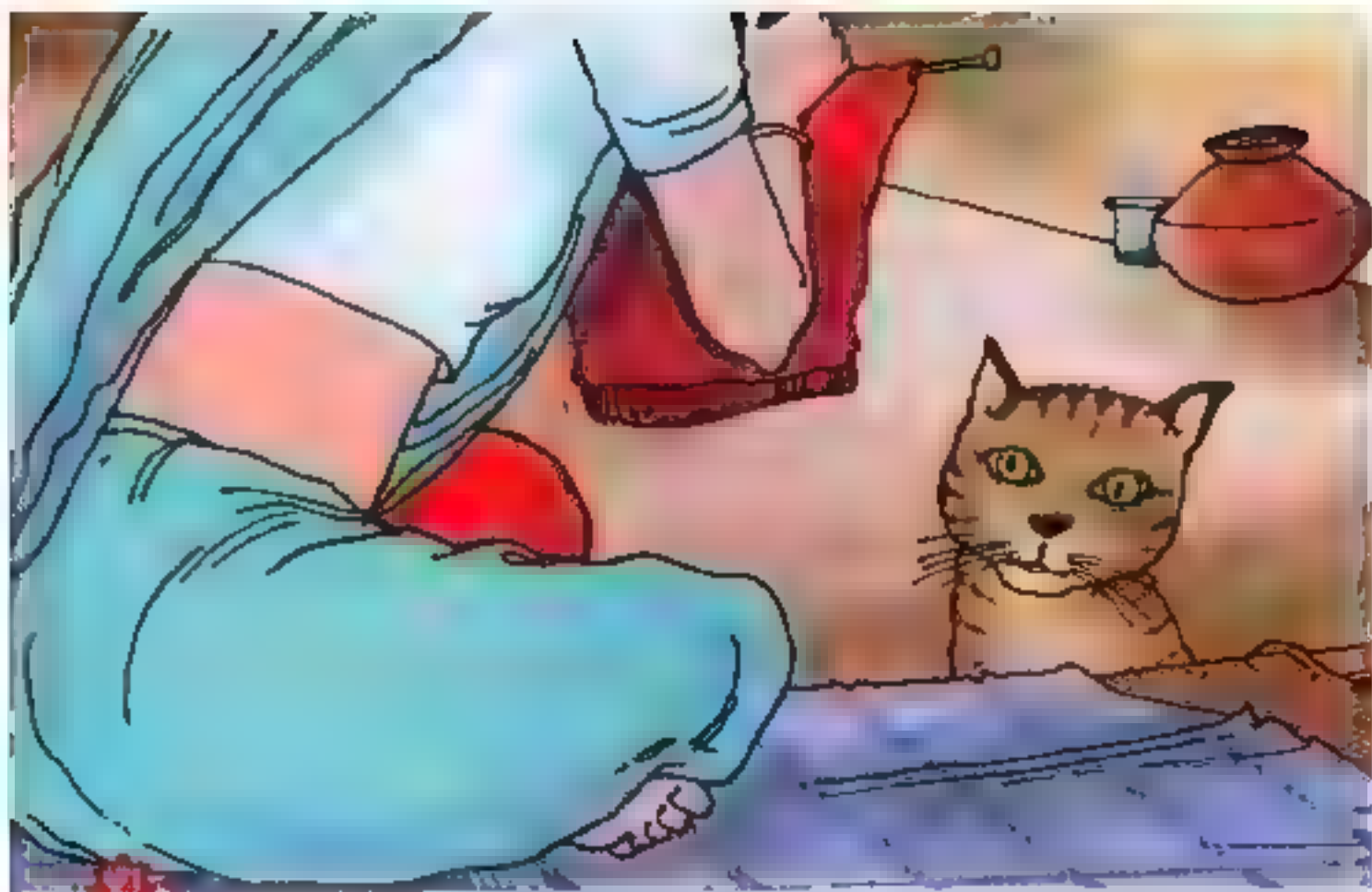
मुनमुन नानी के पास ही बैठी हुई थी।
वह ऊन के गोले को गौर से देख रही थी।
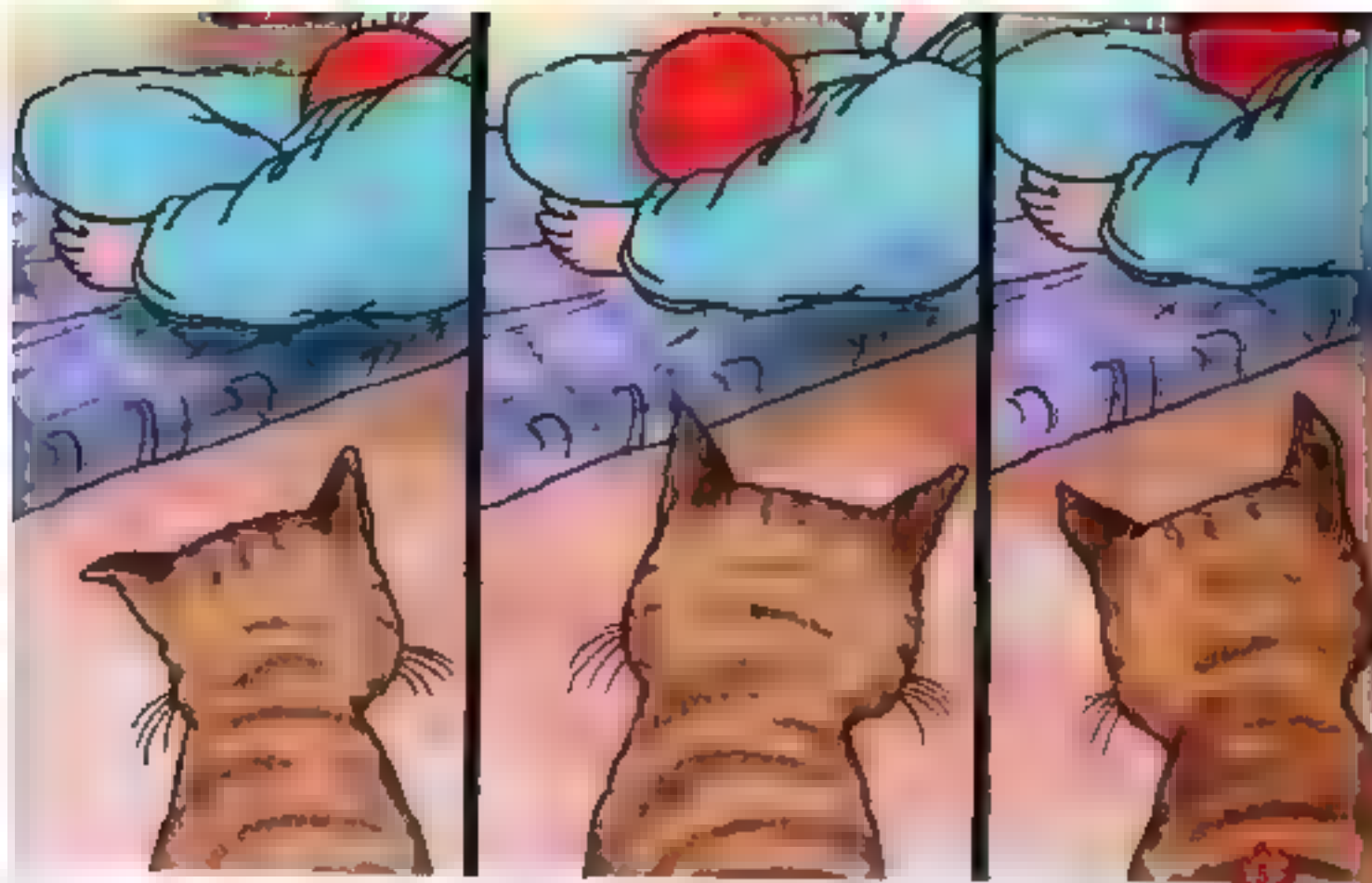
गोला धीरे धीरे हिल रहा था।
मुनमुन भी अपना सिर धीरे-धीरे हिलाती थी।
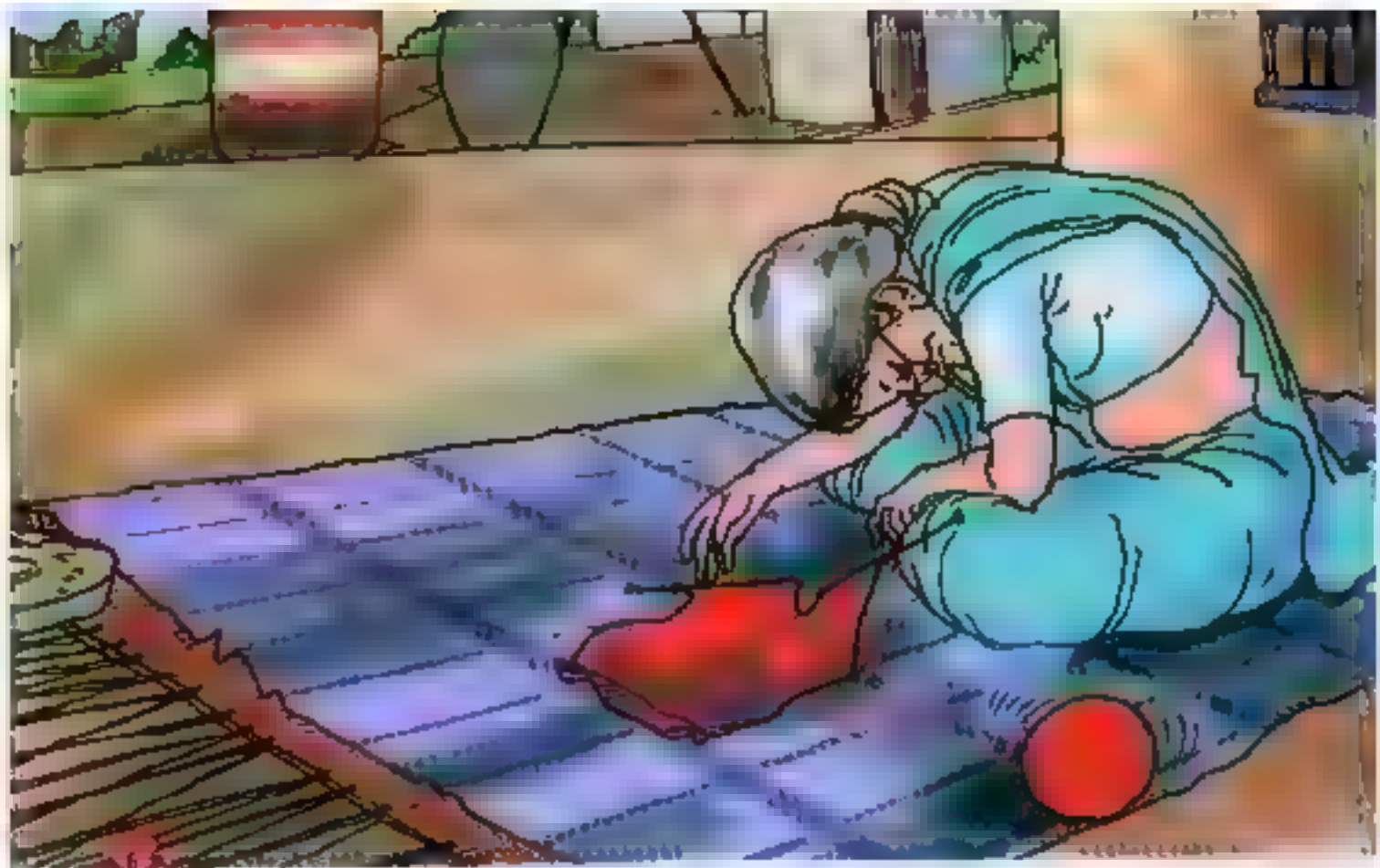
नानी को स्वेटर बुनते बुनते नींद आ गई।
ऊन का गोला नीचे लुढ़क गया।
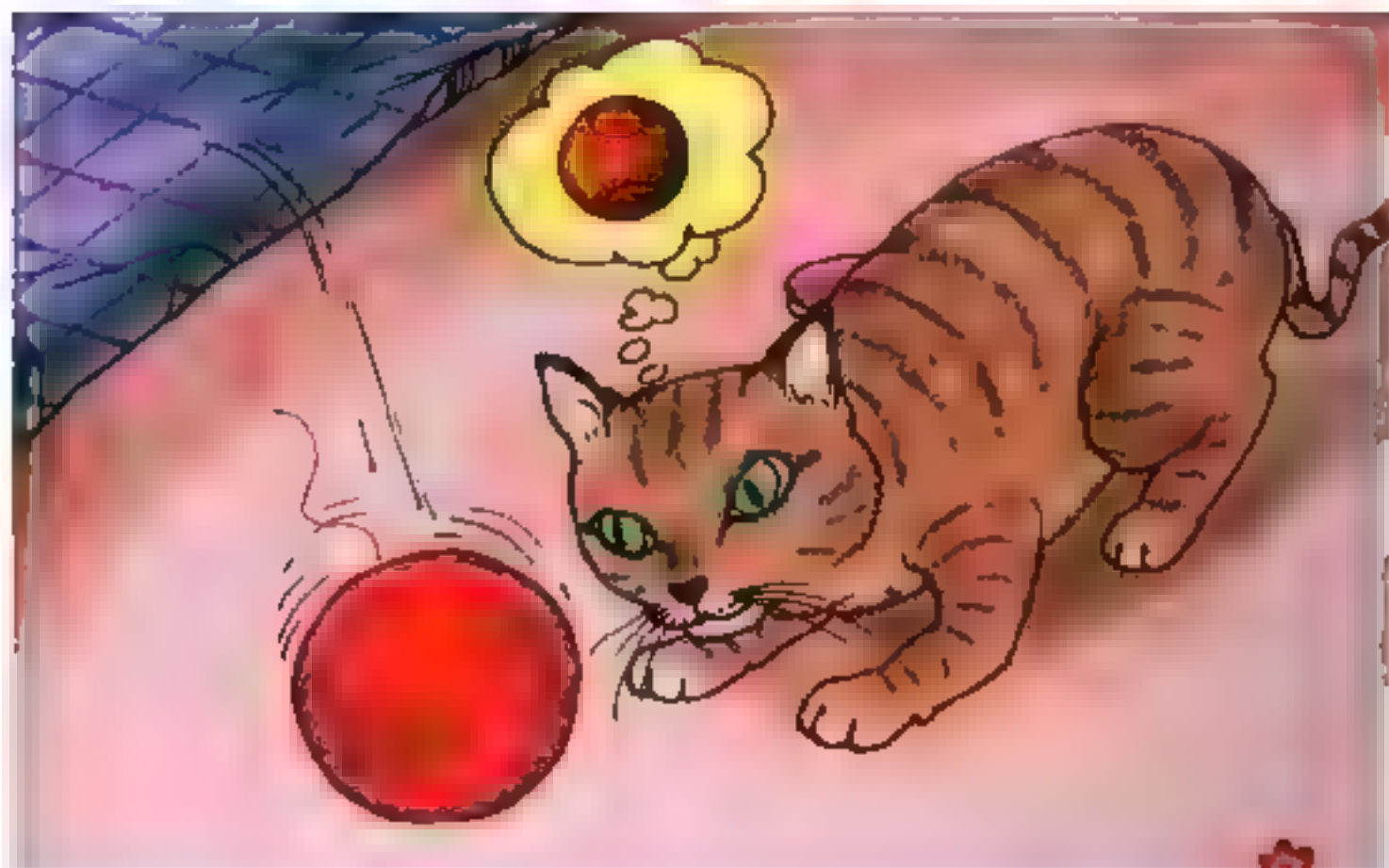
गोला लुढ़ककर मुनमुन के पास पहुँच गया।
मुनमुन ने उसे गेंद समझा।
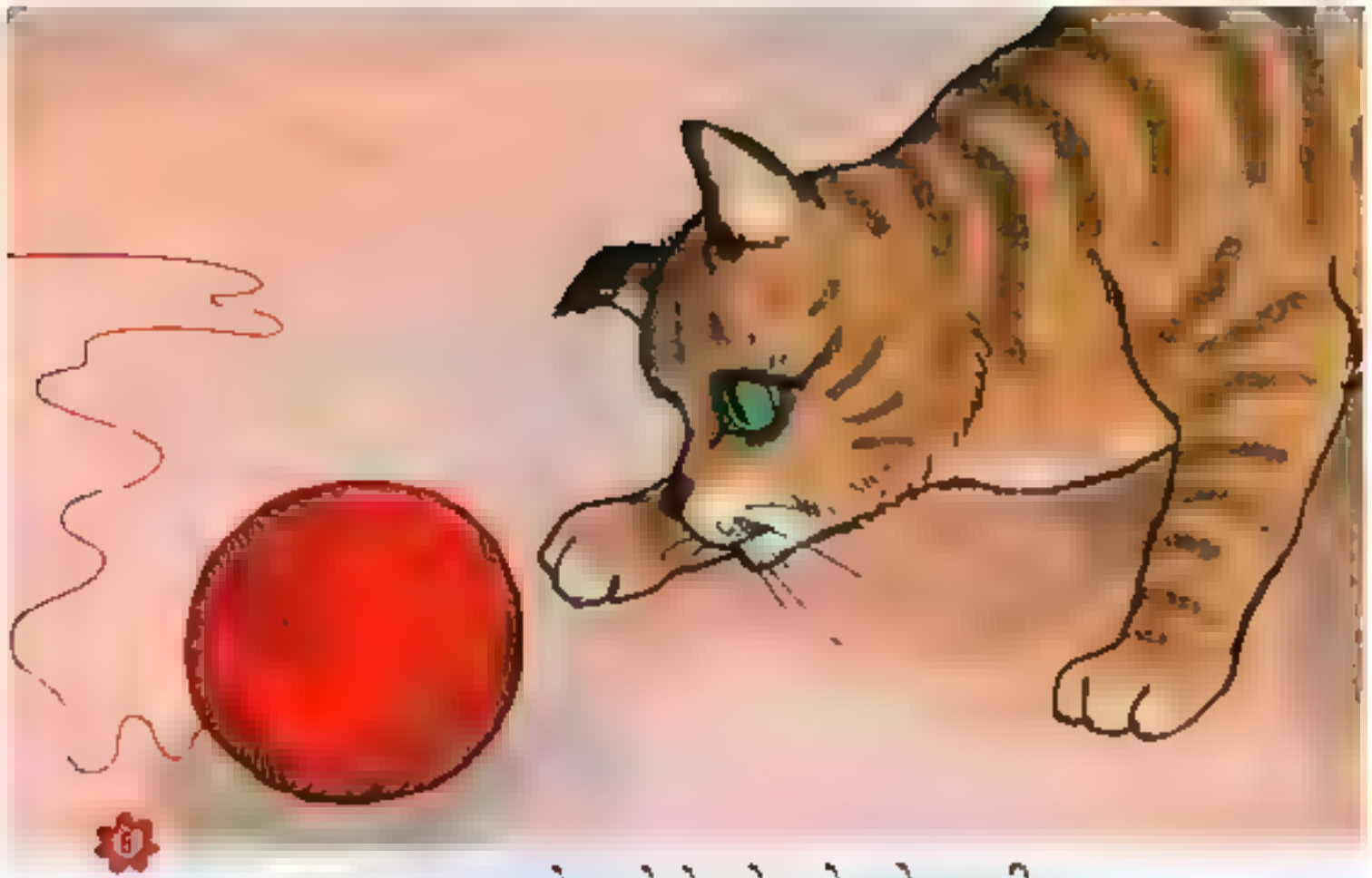
मुनमुन ऊन के गोले से खेलने लगी।
उसे गेंद से खेलने में मज़ा आता है।
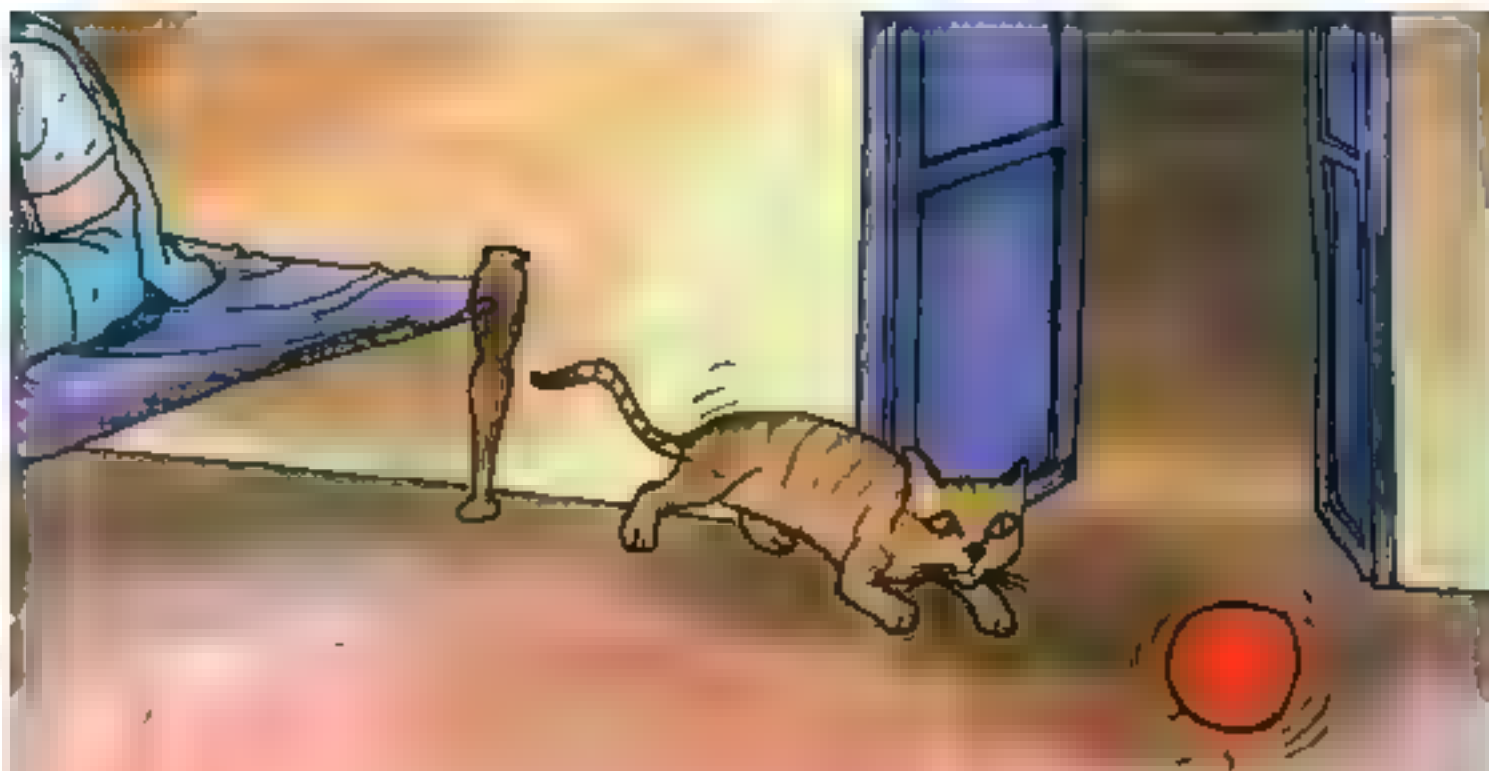
ऊन का गोला यहाँ-वहाँ लुढ़कने लगा।
मुनमुन उसके पीछे-पीछे भागने लगी।
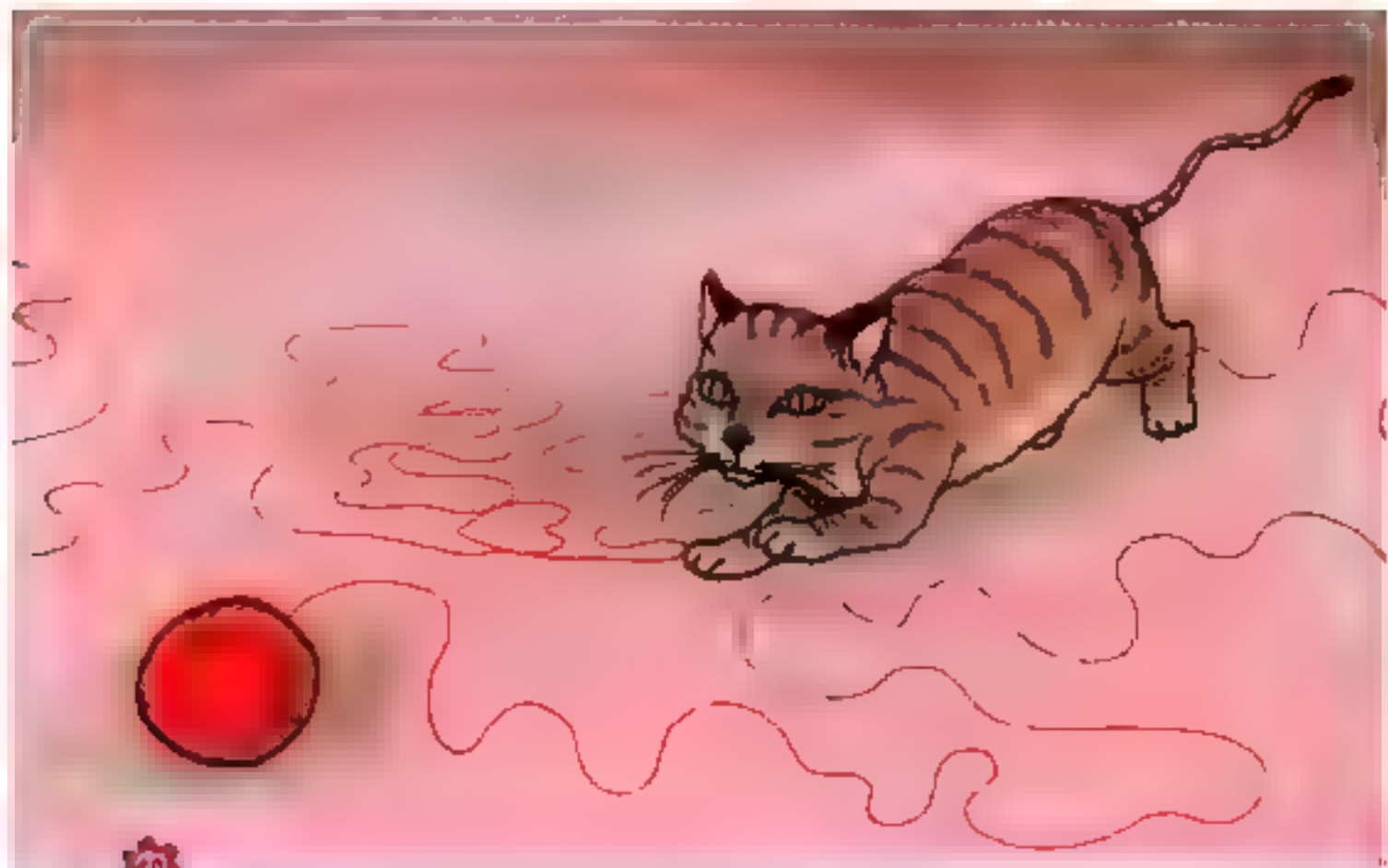
ऊन का गोला छोटा होता जा रहा था।
मुनमुन उसके पीछे पीछे भाग रही थी।
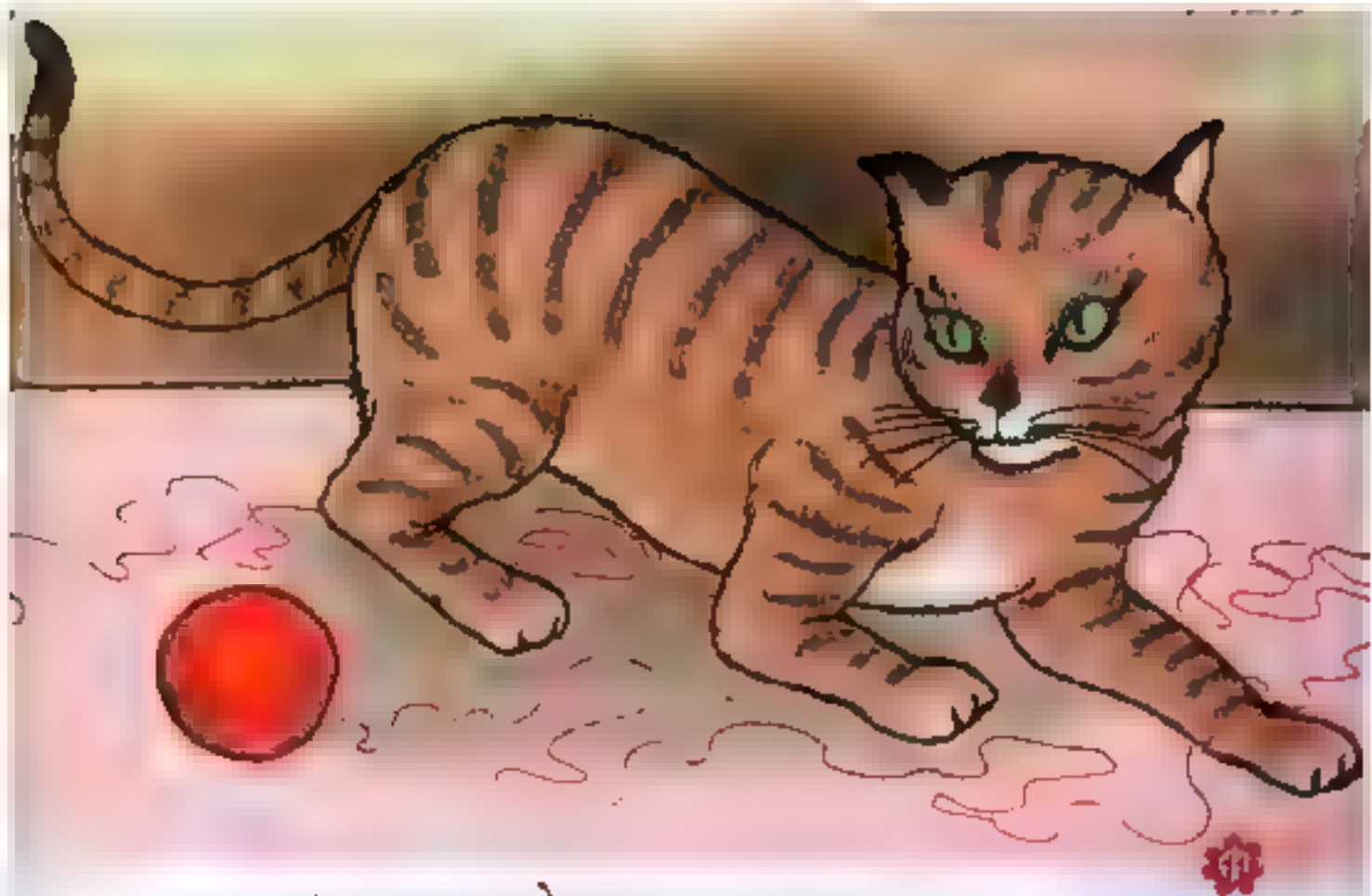
ऊन का गोला खुलता जा रहा था।
खुलता जा रहा था।
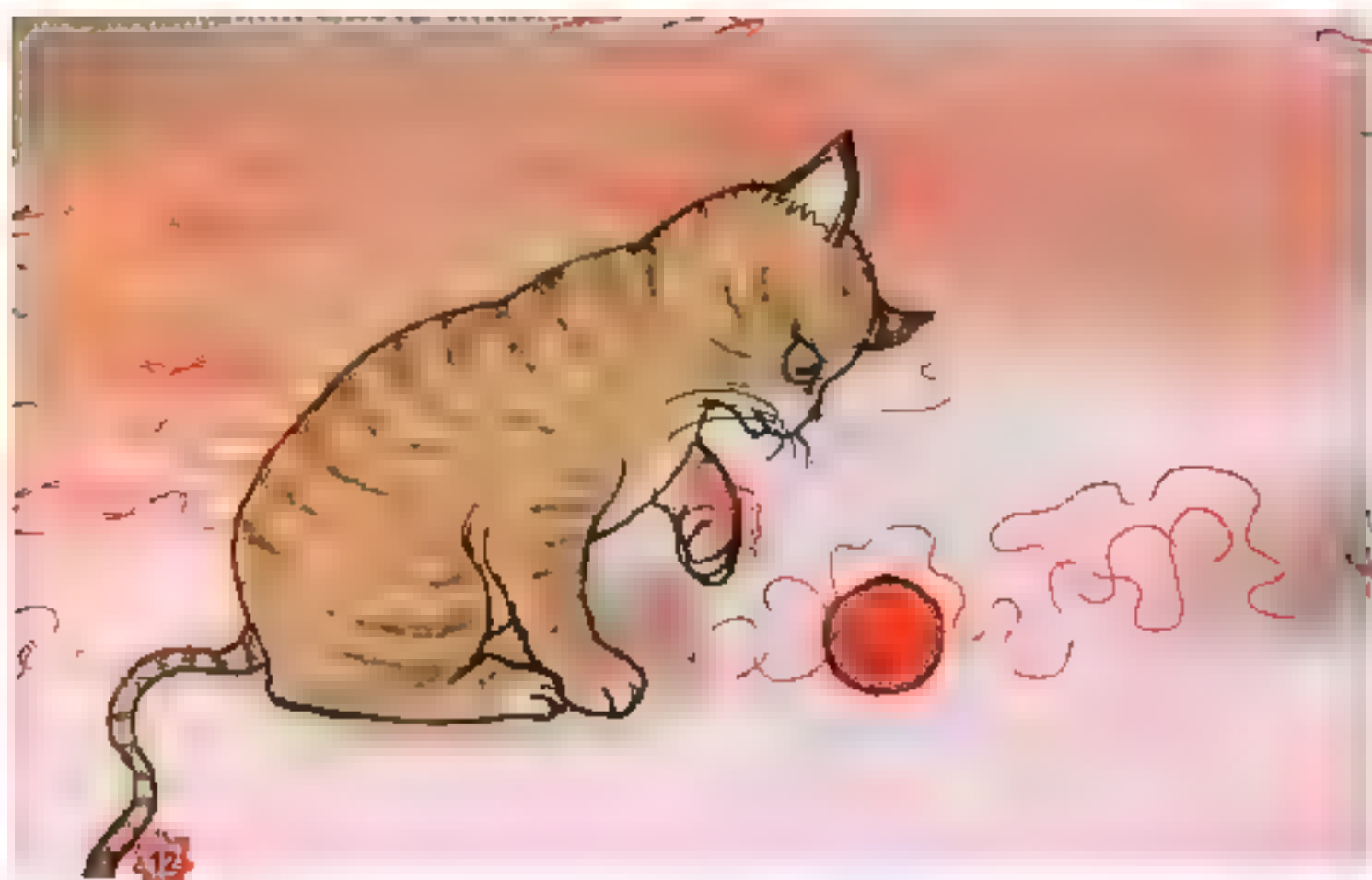
थोड़ी-थोड़ी ऊन मुनमुन के पैरों में भी फँस रही थी। मुनमुन उसको पंजे से निकाल देती थी।
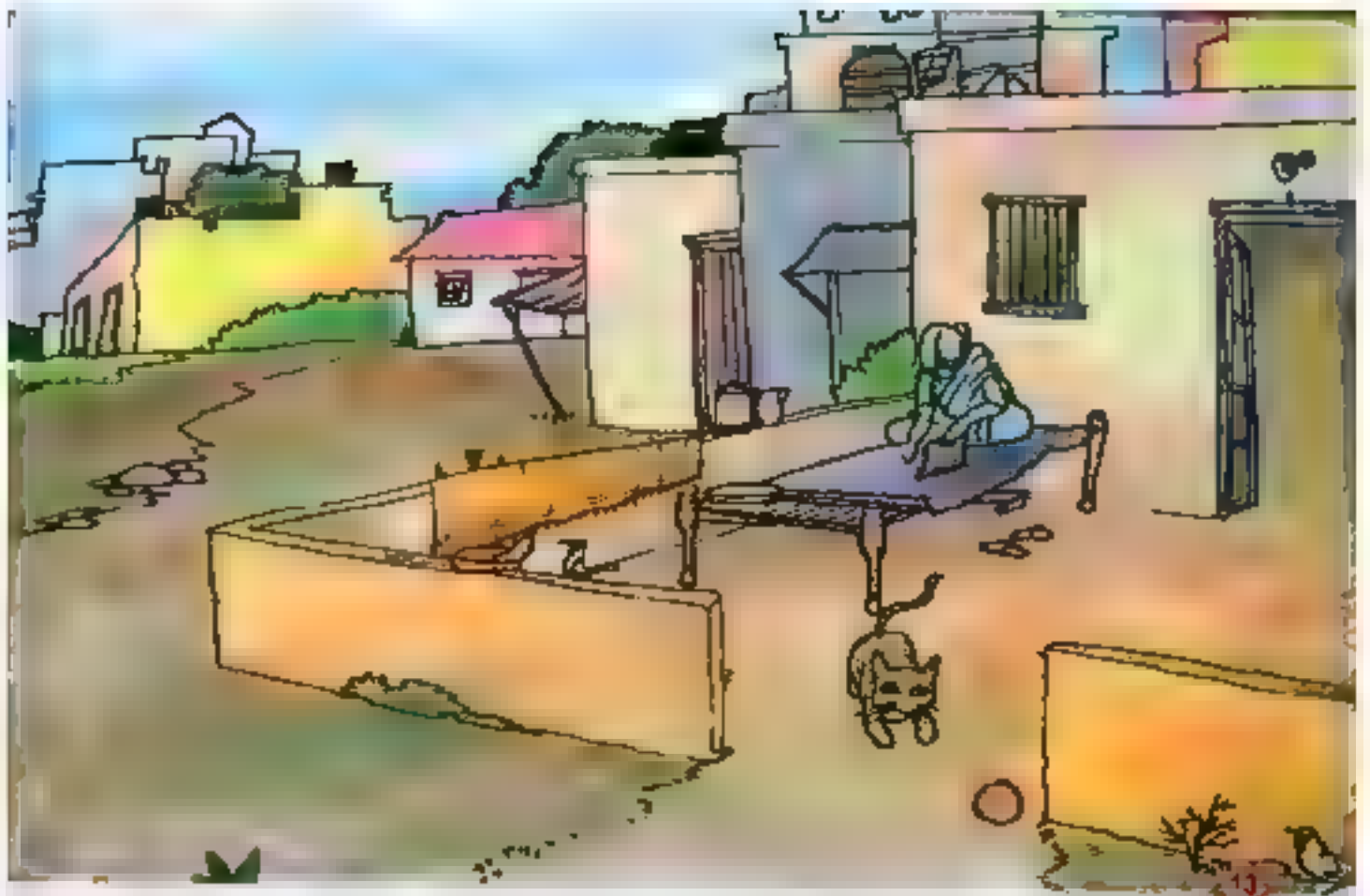
गोला लुढ़क लुढ़क कर छोटा सा रह गया था।
मुनमुन उसको पकड़ नहीं पा रही थी।
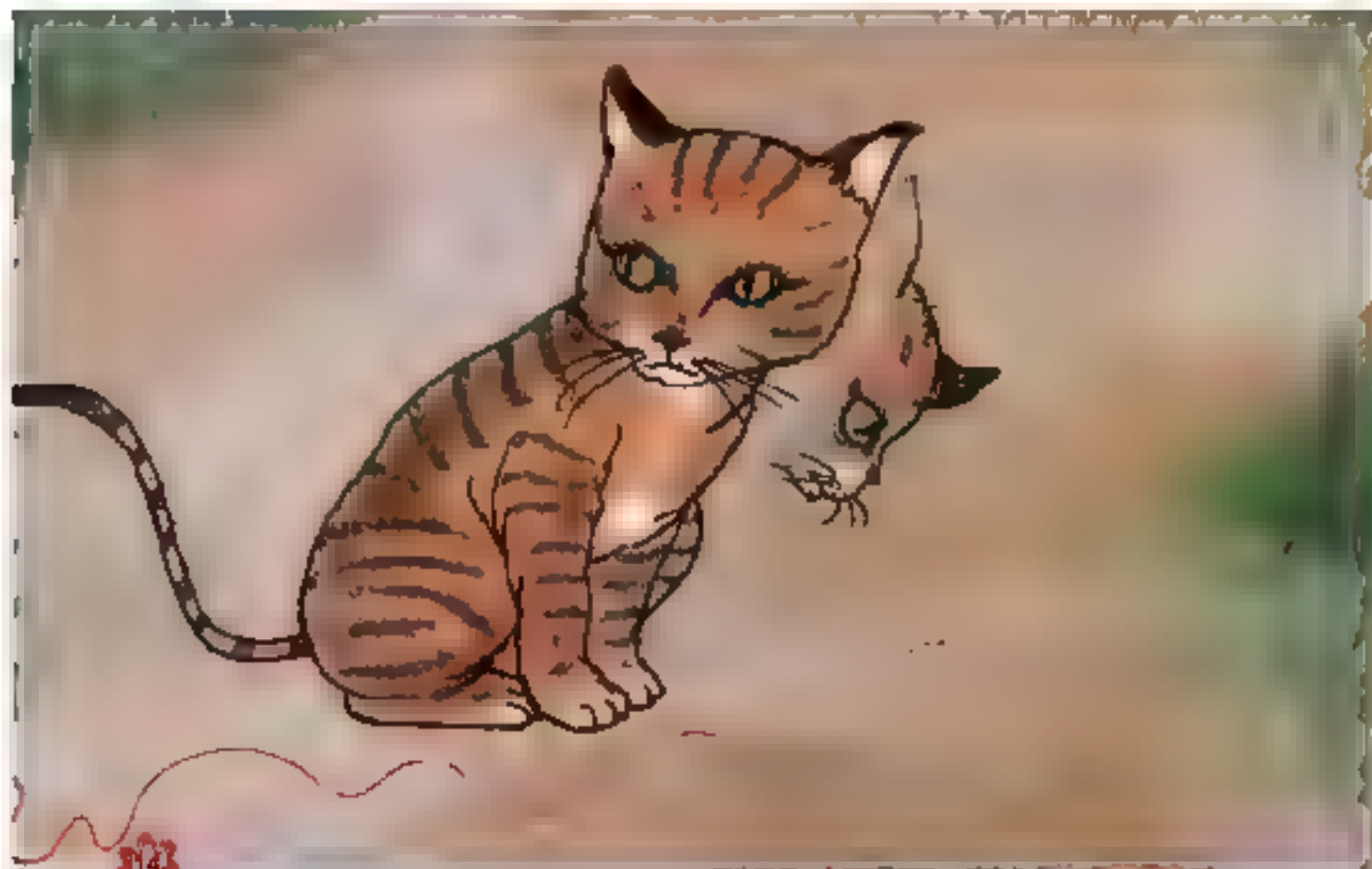
गोला जब पूरा खुल गया तो गायब हो गया।
मुनमुन परेशान होकर गोले को ढूँढ़ने लगी।
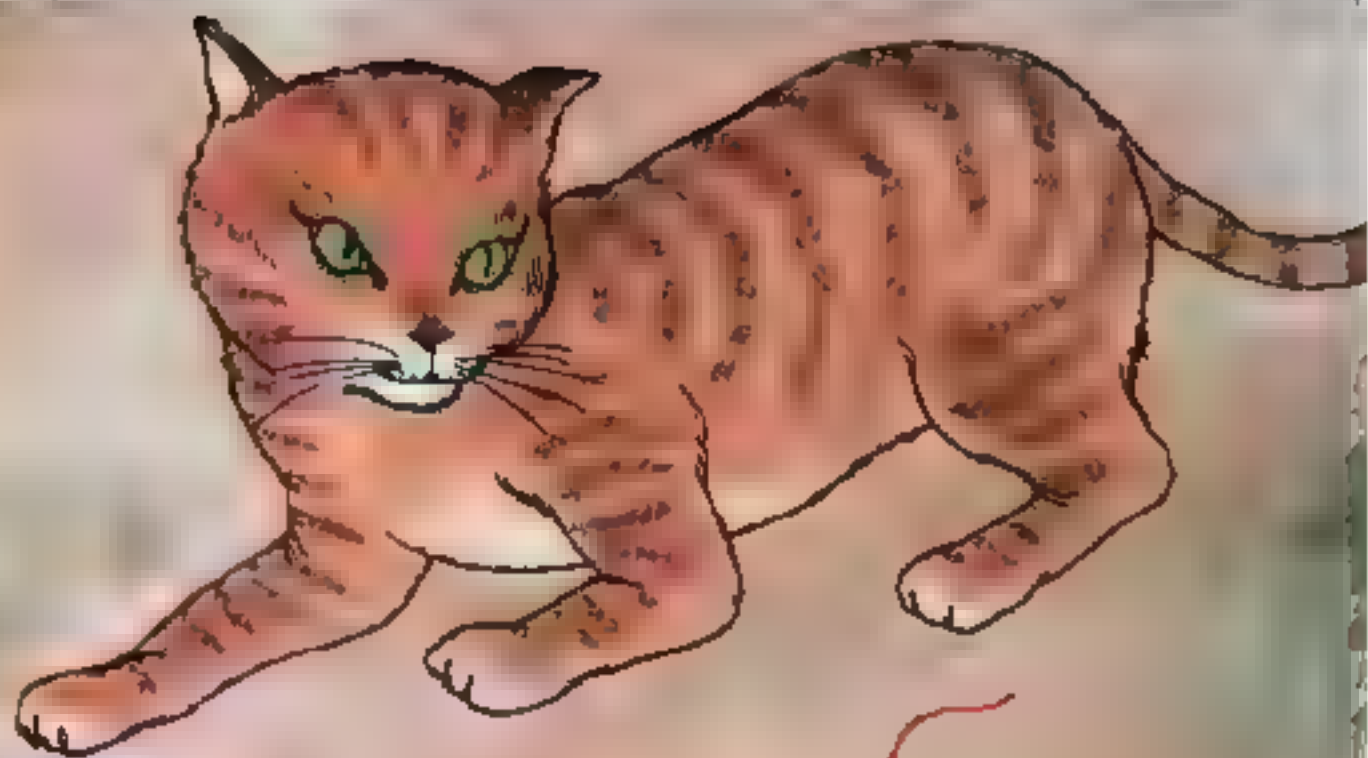
मुनमुन कभी आगे देखती कभी पीछे।
पर गोला उसे मिला नहीं।
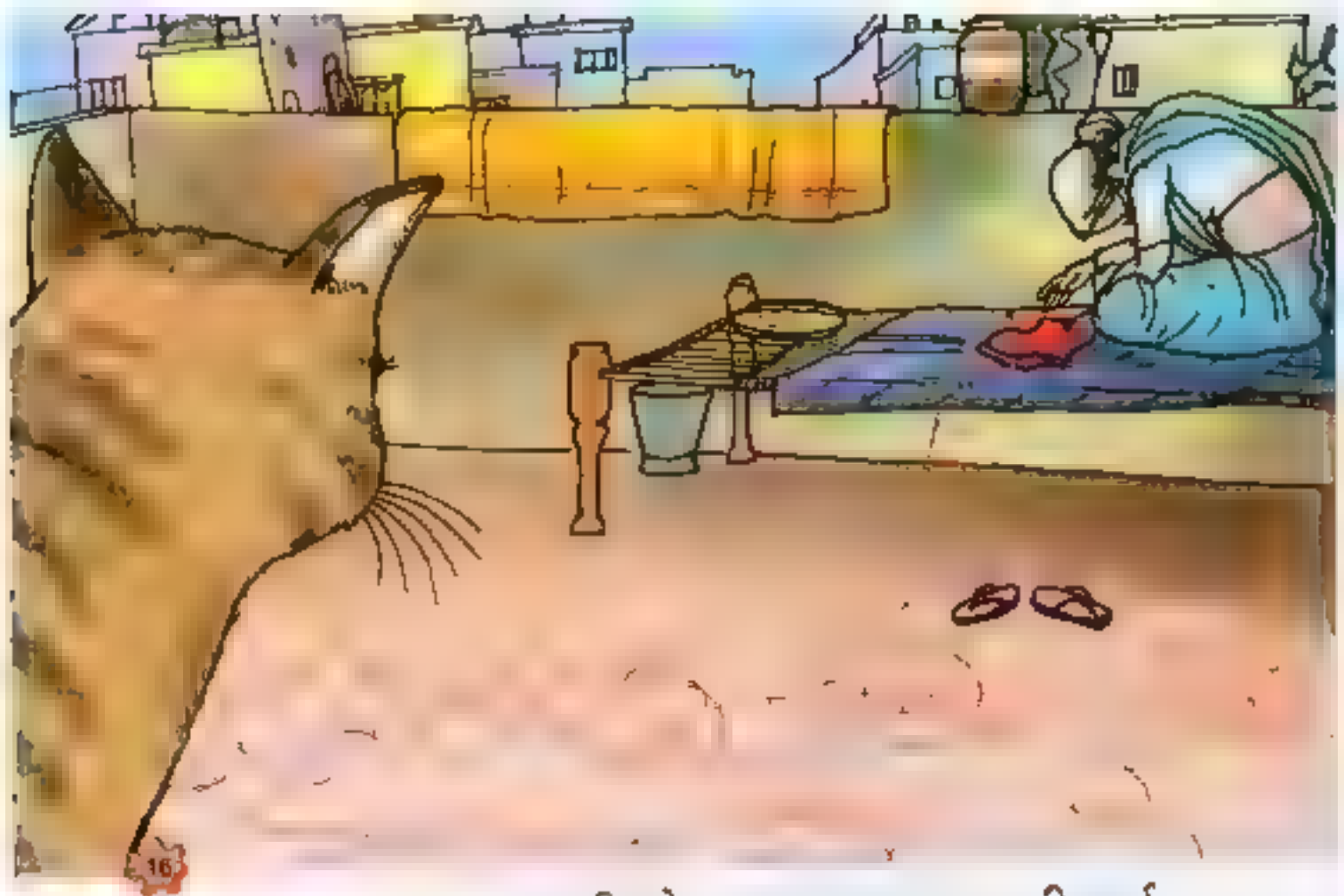
मुनमुन भागकर नानी के पास वापस चली गई।
नानी अब भी गहरी नींद में सो रही थीं।
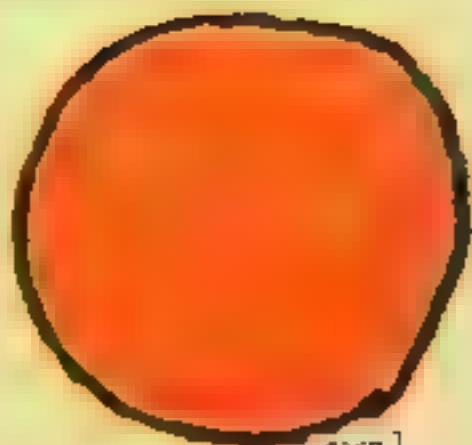
3067

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-[illegible]
978-81-7450-868-3

हिच-हिच हिचकी
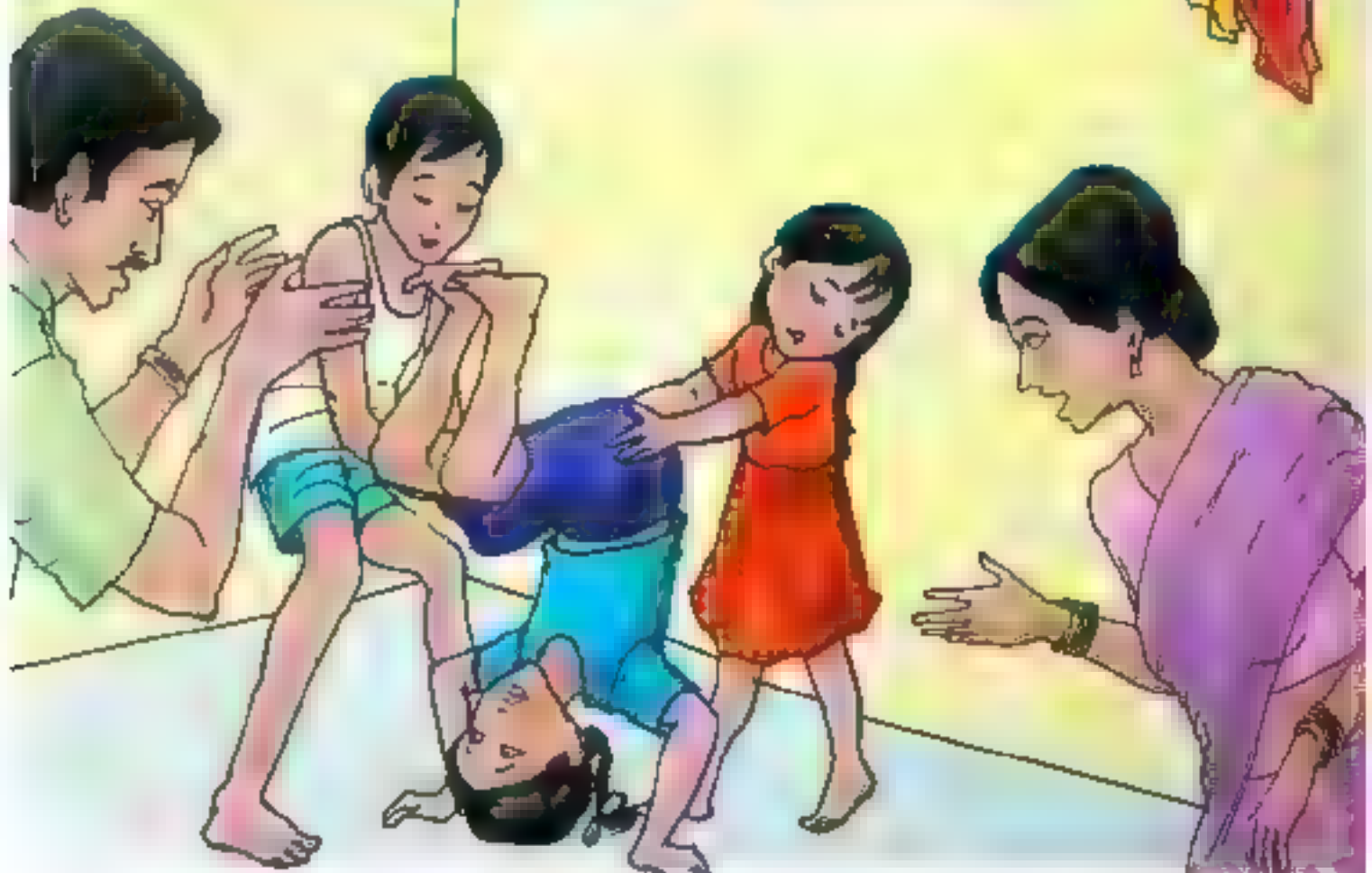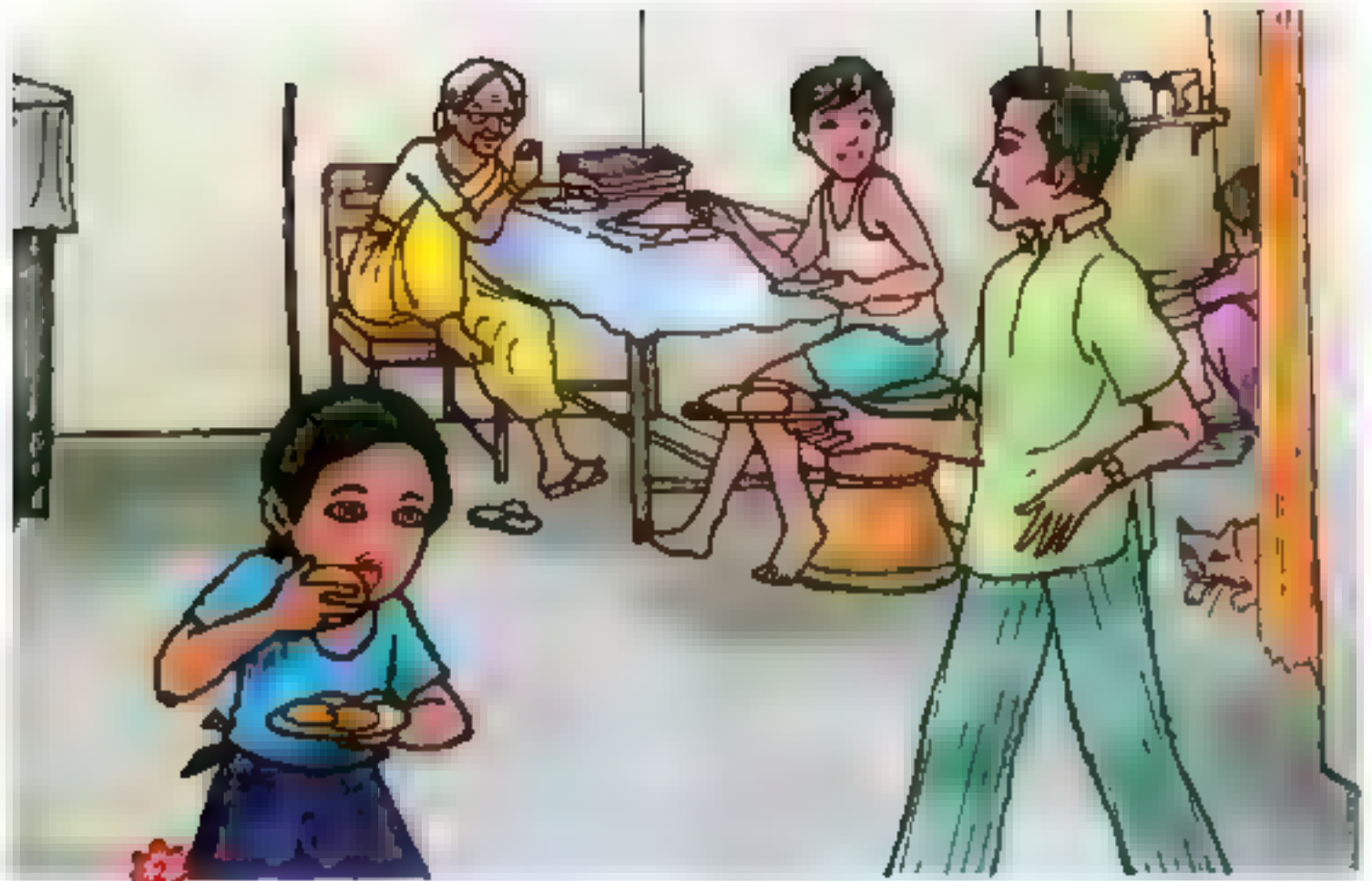
हिच-हिच हिचकी

एक दिन मम्मी ने कचौड़ियाँ बनाईं।
रमा ने पूरी चार कचौड़ियाँ खाईं।
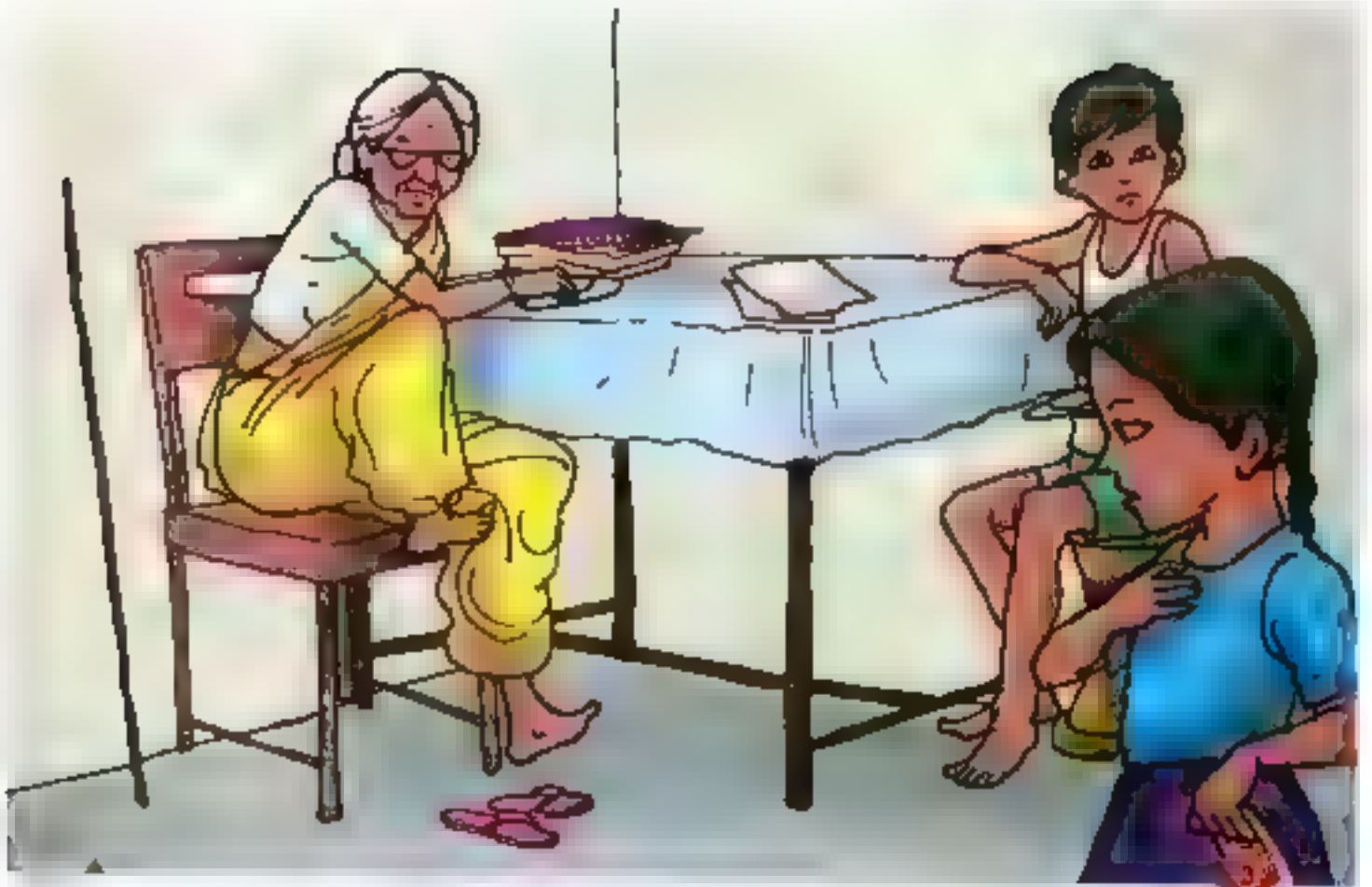
रमा को ज़ोर ज़ोर से हिचकियाँ आने लगीं।
हिच-हिच-हिच-हिच

दादी जग में पानी भरकर ले आईं।
दादी ने खूब सारा पानी पीने को कहा।

रमा ने पानी पी लिया पर हिचकी नहीं रुकी ।
हिच हिच-हिच-हिच
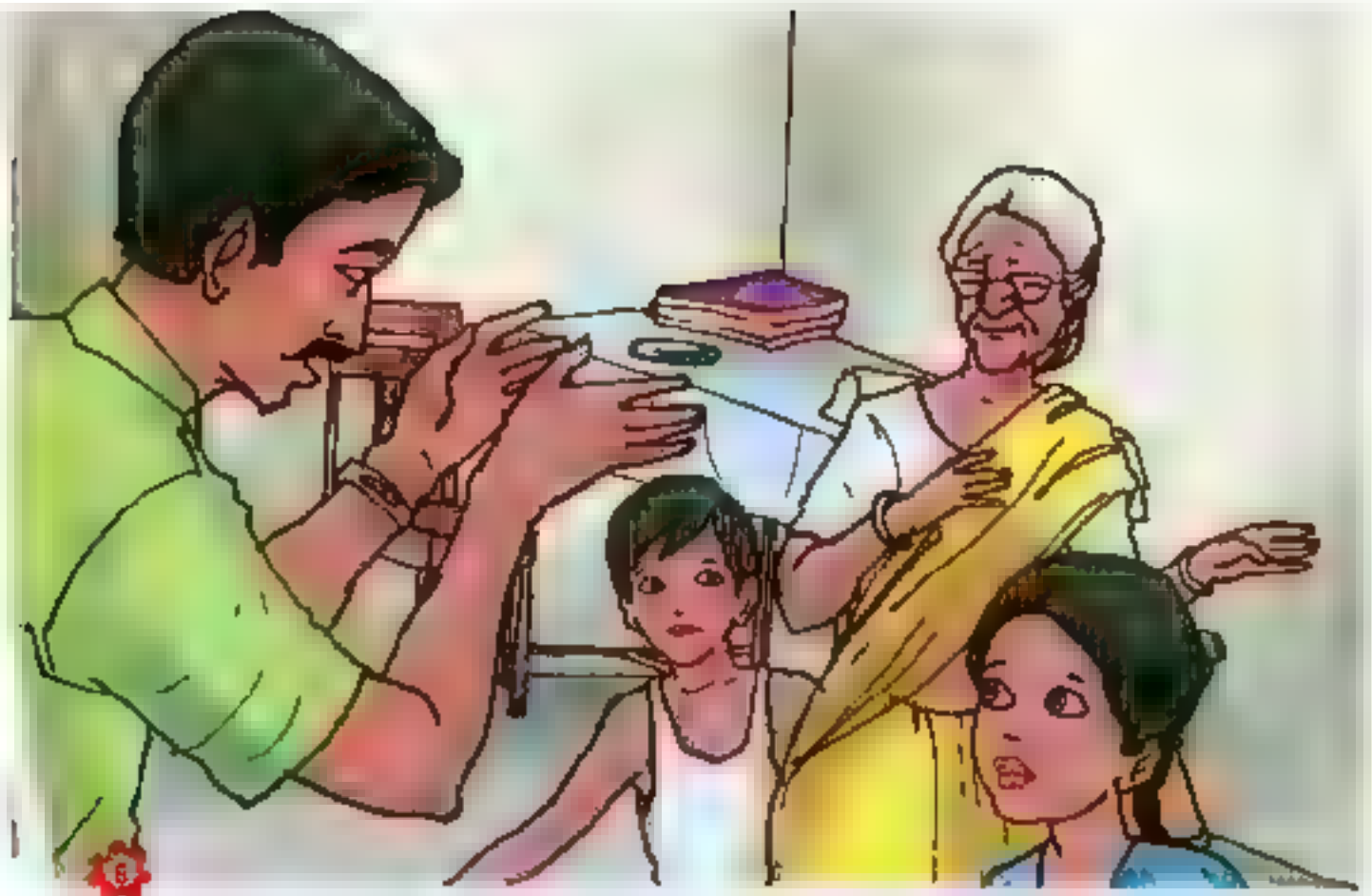
पापा ताली बजाने लगे।
पापा ने गाना गाने को कहा।

रमा ने गाना गाया पर हिचकी नहीं रुकी ।

हिच-हिच हिच-हिच
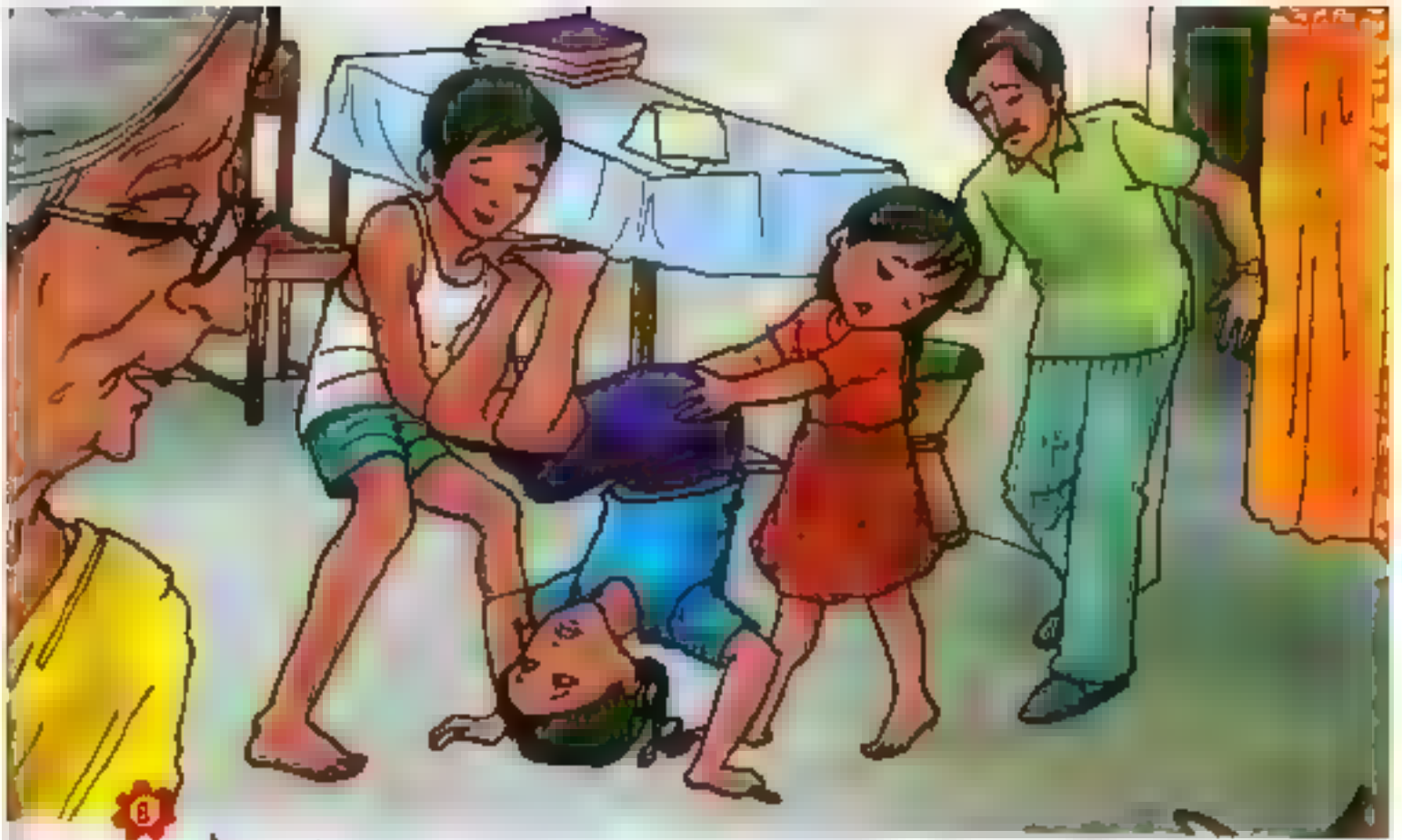
भैया ने सिर के बल खड़े हो जाने को कहा।
भैया ने रमा को सिर के बल खड़ा कर दिया।
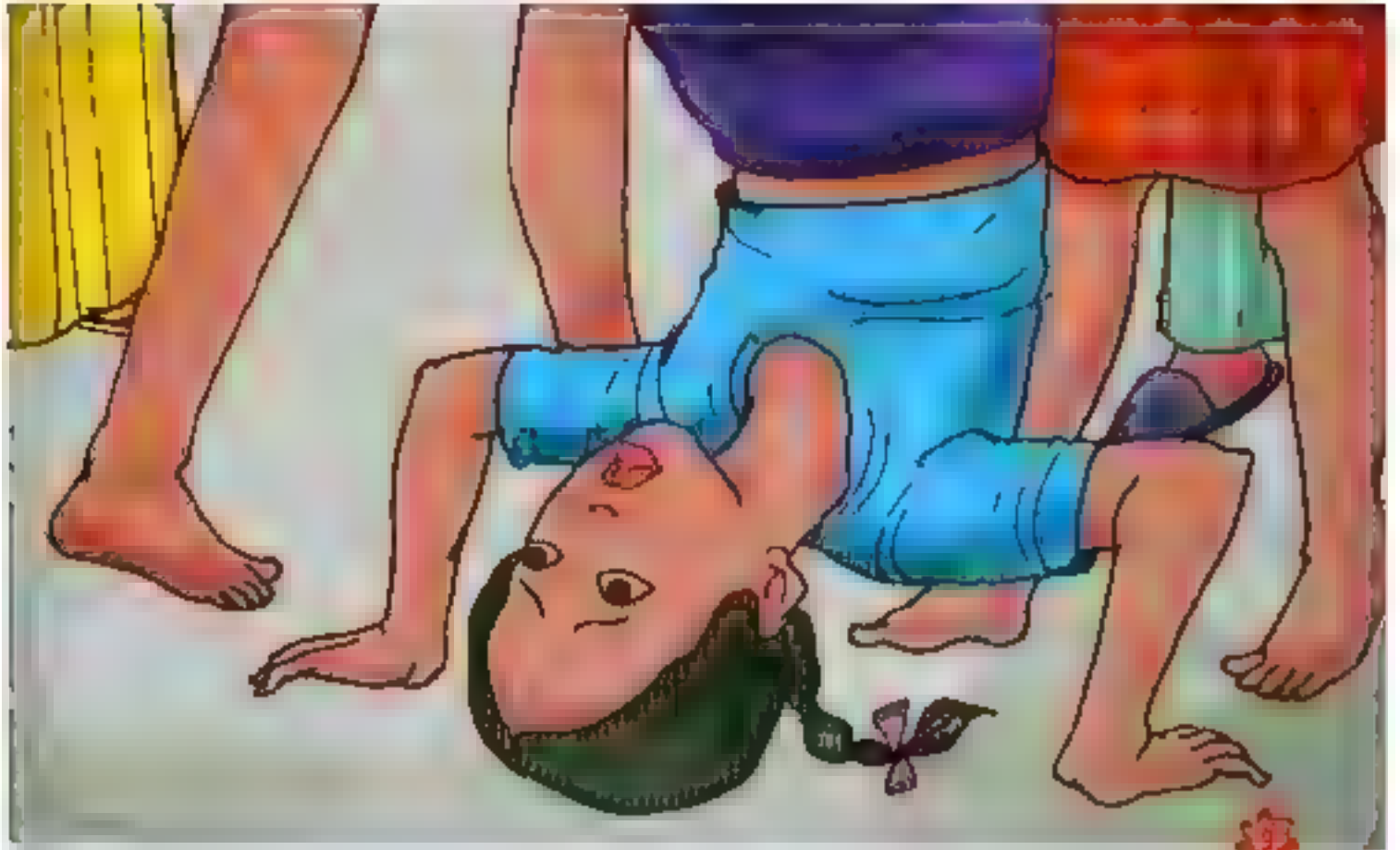
रमा उल्टी हो गई पर हिचकी नहीं रुकी।
हिच-हिच-हिच हिच
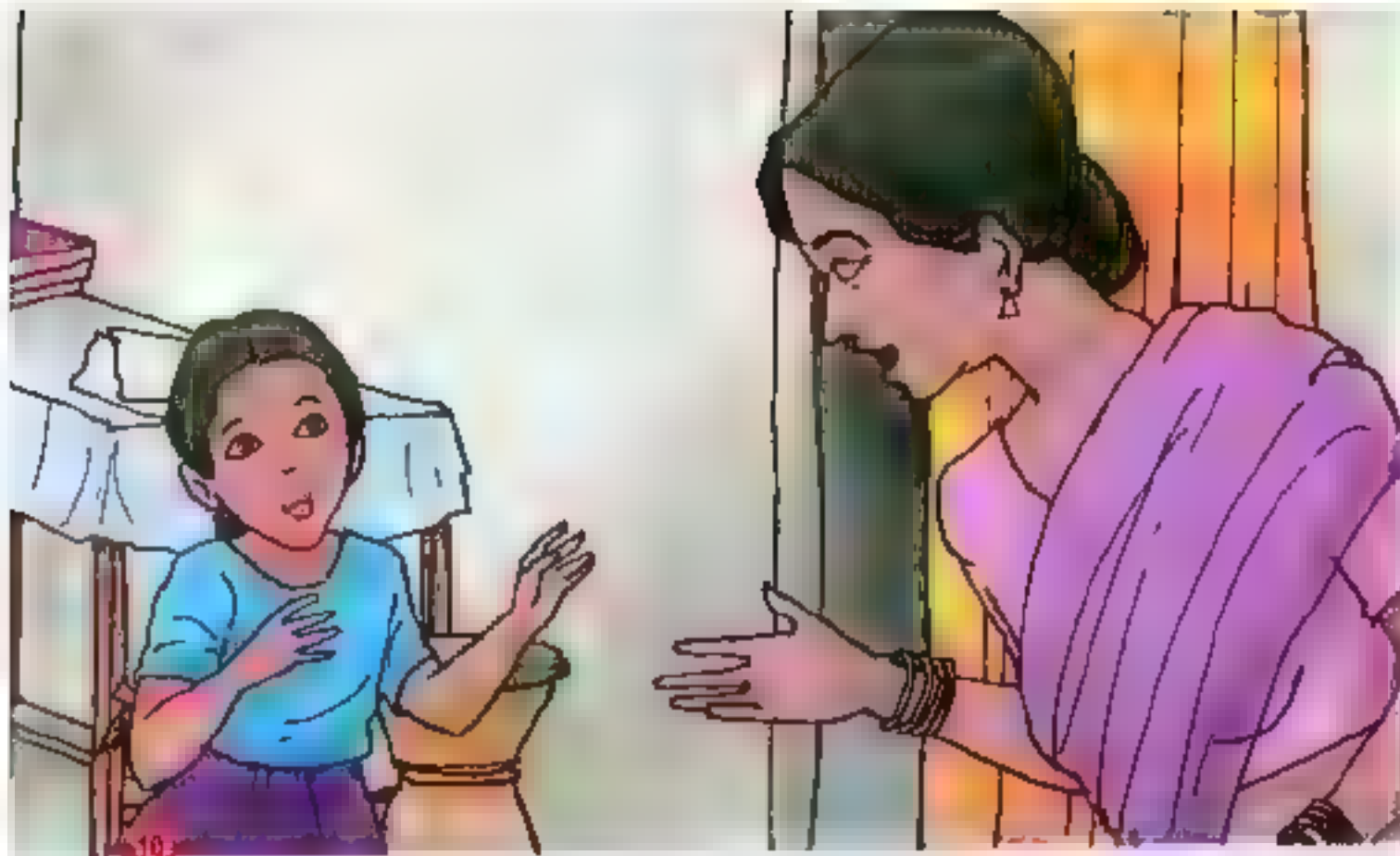
मम्मी भी रसोई से बाहर आ गईं।
मम्मी ने कदम-ताल करने को कहा।

रमा ने ज़ोर ज़ोर से कदम-ताल की पर हिचकी नहीं रुकी।
हिच-हिच हिच-हिच

तभी रानी रसगुल्ले का डिब्बा ले आई।
रानी ने कहा कि रमा ने दो रसगुल्ले खाए हैं

रमा ज़ोर से चिल्लाई नहीं।
वह बोली- मैंने रसगुल्ले नहीं खाए।
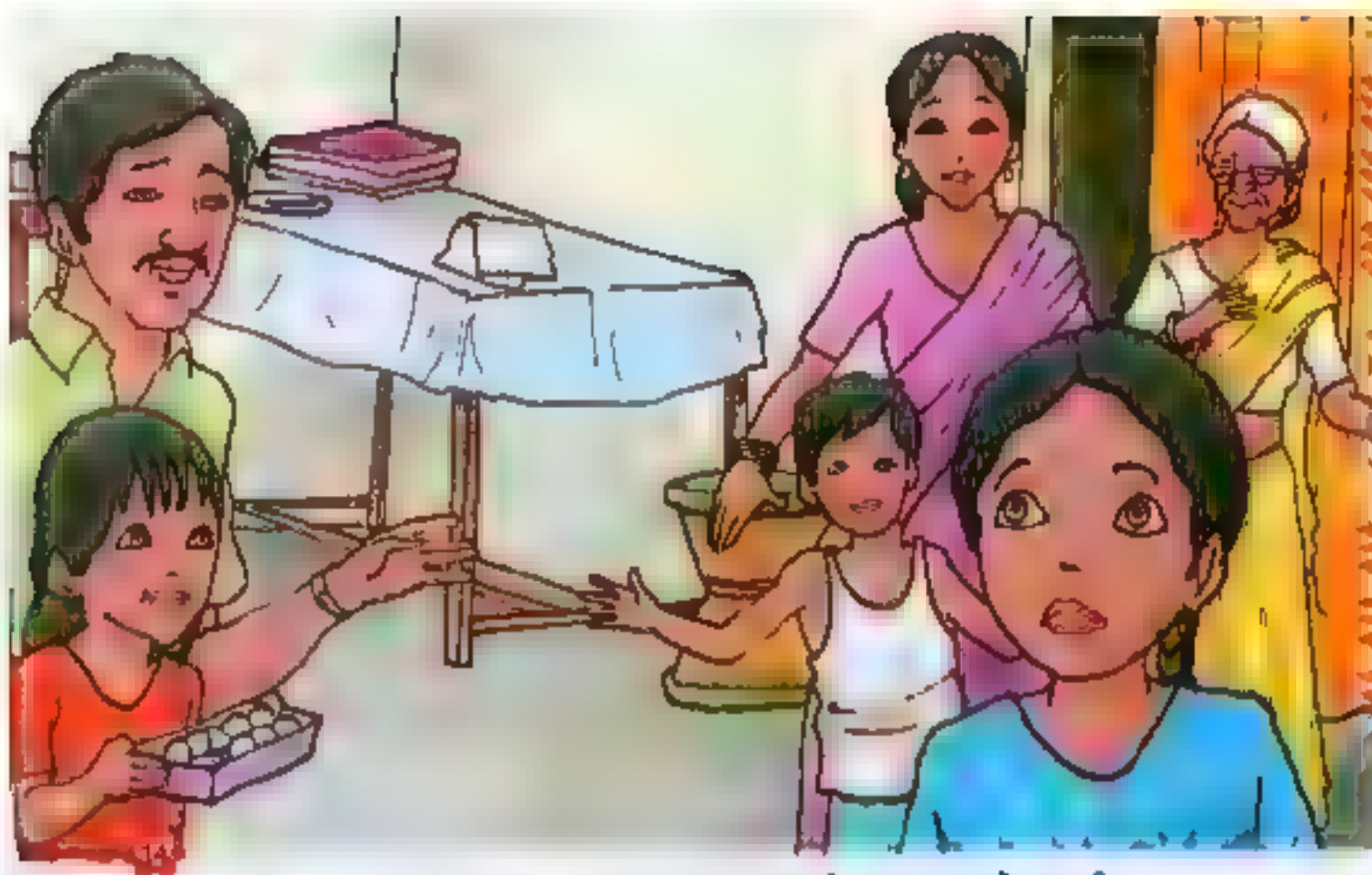
यह बोलकर रमा एकदम से चुप हो गई।
सब लोगों को हँसी आ गई।
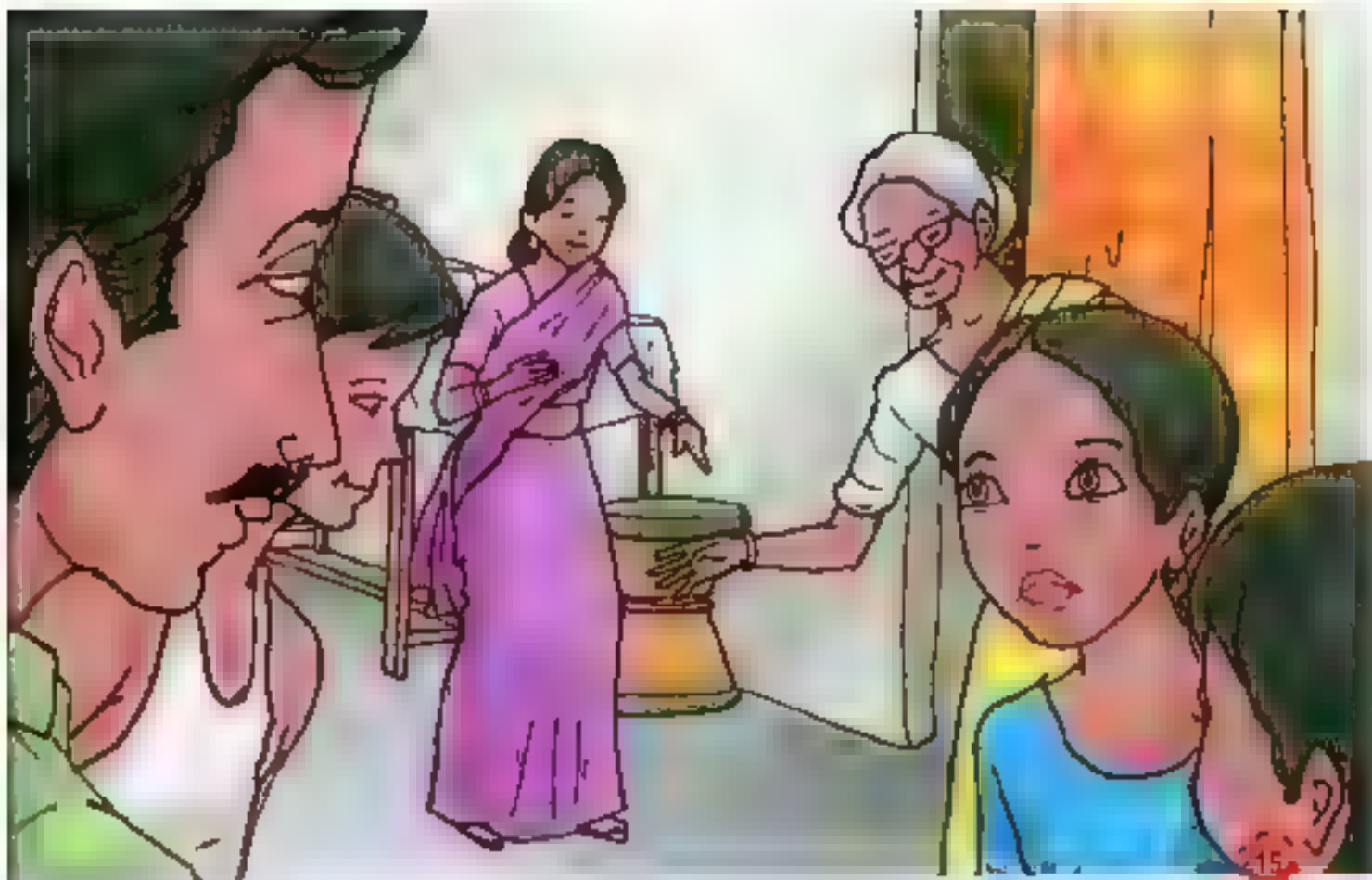
सबने देखा कि रमा की हिचकी बंद हो गई थी।
हिचकी गायब।

रमा एक और कचौड़ी खाने बैठ गई।

घर के बाकी लोग भी अपनी-अपनी कचौड़ी खाने लगे।

रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (सजिल्द-सेट)
978-81-7450-869-[illegible]

मोनी
पढ़ना है समझना

मोनी

एक दिन काजल और माधव खेल रहे थे।
खेलते हुए उन्हें कूँ-कूँ की आवाज़ सुनाई दी।

काजल को वहाँ कोने में एक पिल्ला दिखाई दिया।
पिल्ले को कई जगह चोट लगी हुई थी।

माधव ने पिल्ले को प्यार से सहलाया।
पिल्ले की चोटों से बहुत खून बह रहा था।

काजल दवाई लाने घर गई।
माधव पिल्ले को प्यार से सहलाता रहा।

काजल और माधव ने मिलकर पिल्ले के घाव साफ़ किए। फिर उसके घावों पर पट्टी बाँधी।

माधव पिल्ले के लिए घर से थोड़ा दूध लाया।
उसने पिल्ले को रुई से धीरे-धीरे दूध पिलाया।

काजल और माधव रोज़ पिल्ले को देखने जाने लगे।
उन्होंने उसका नाम मोनी रख दिया।

काजल रोज़ मोनी के लिए एक रोटी बनवाती थी।
माधव रोज़ मोनी को अपने गिलास में से दूध देता था।

मोनी अब ठीक होने लगी थी।
वह खड़ी होकर खुद दूध पीने लगी।

दोनों मिलकर मोनी की पट्टी हर दूसरे दिन बदलते थे।
काजल और माधव उसके घाव भी साफ़ करते थे।
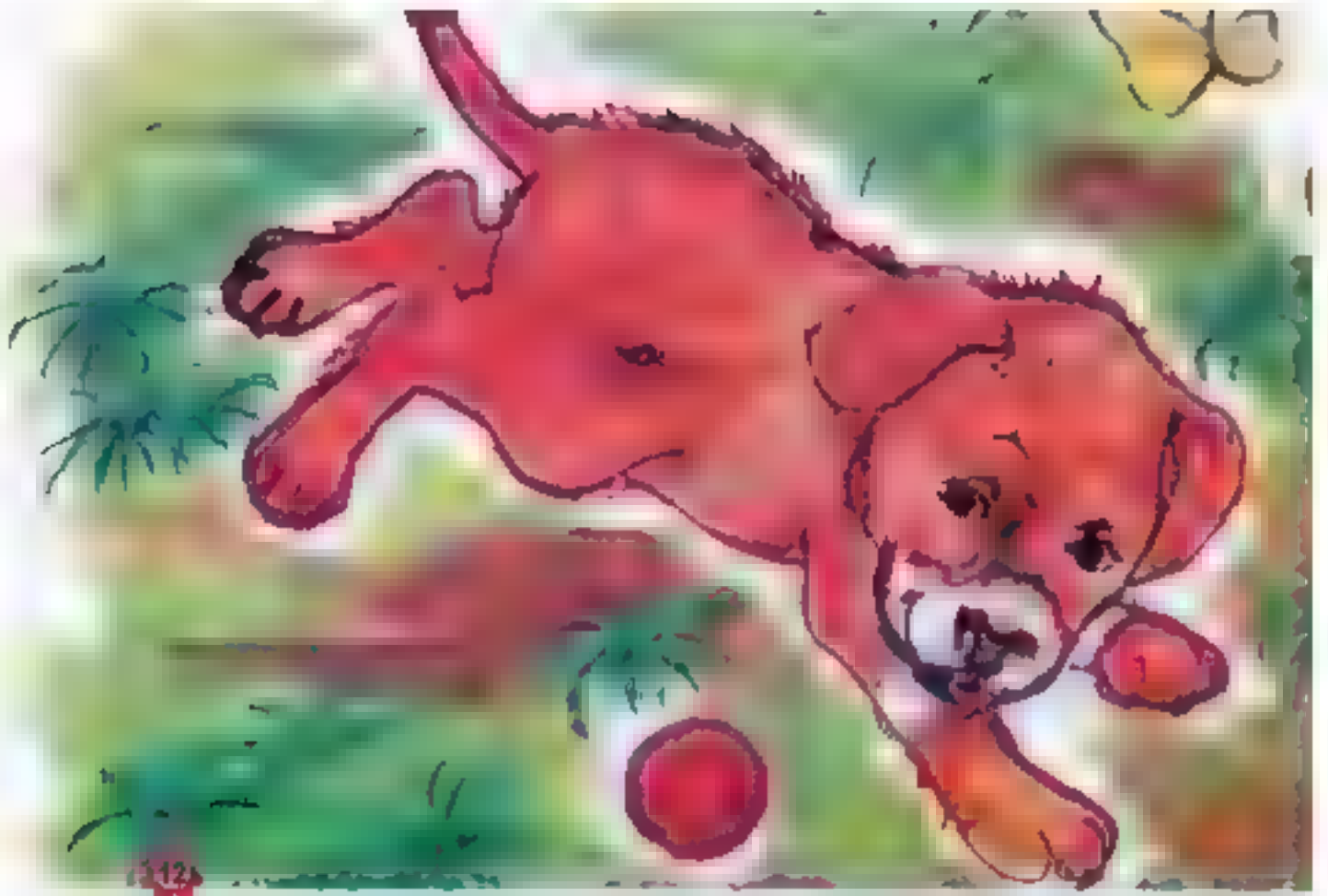
मोनी अब काफ़ी ठीक हो गई थी।
वह दौड़ने-भागने लगी थी।

मोनी काजल और माधव के पीछे पीछे भागती थी।
वह उनके साथ खेलती थी।

माधव नीचे बैठता तो मोनी उसकी गोदी में चढ़ जाती।
मोनी को काजल और माधव की गोदी बड़ी पसंद थी।

मोनी ने उनके घर का रास्ता भी देख लिया था।
मोनी खुद ही काजल और माधव से मिलने आ जाती थी।

मोनी अब काजल और माधव की दोस्त बन गई थी। वह उनको स्कूल छोड़ने भी जाती थी।

स्तर 1
स्तर 2
सर्व शिक्षा अभियान
रु. 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पढ़ना है समझना
का फूल

चिमटी का फूल

काजल

तितली

सोफ़िया

एक दिन काजल बगीचे में गई।
बगीचे में बहुत सारी तितलियाँ थीं।

तितलियाँ फूलों पर मंडरा रही थीं।
वे फूलों का रस पी रही थीं।
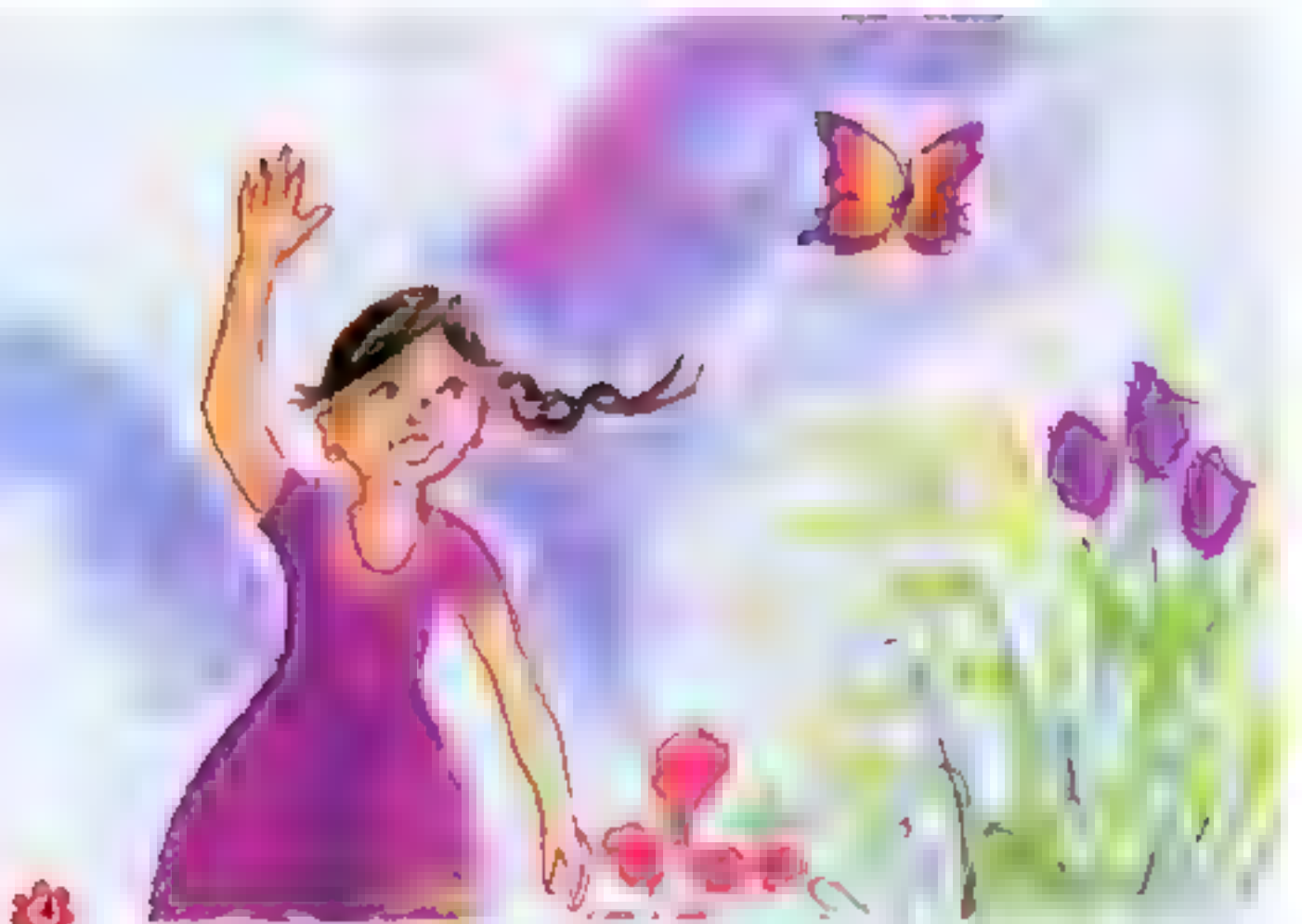
काजल सबसे बड़ी तितली के पीछे-पीछे भागी।
उस तितली के पंख नीले, पीले और लाल रंग के थे।
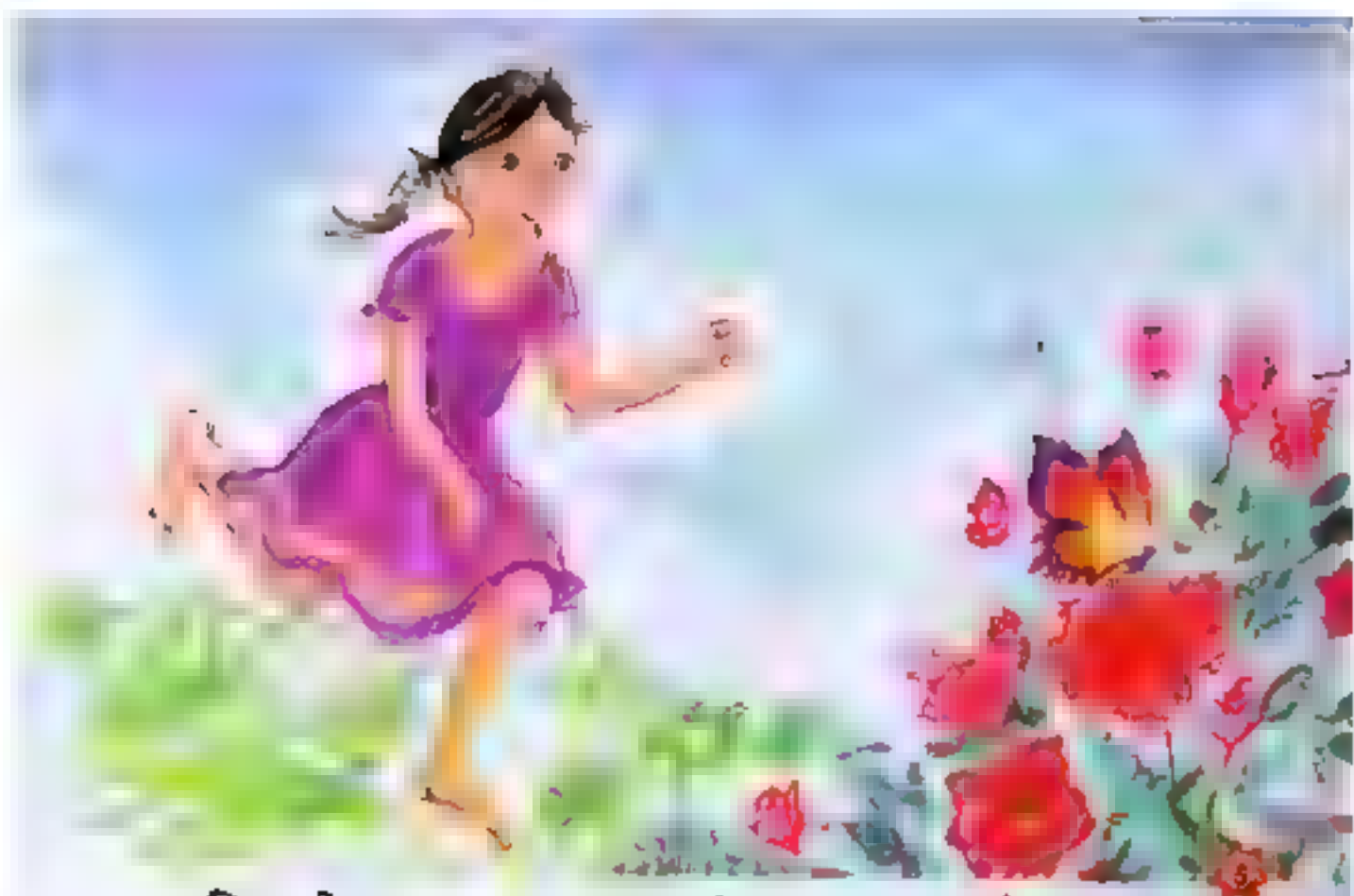
तितली उड़कर गुलाब के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।
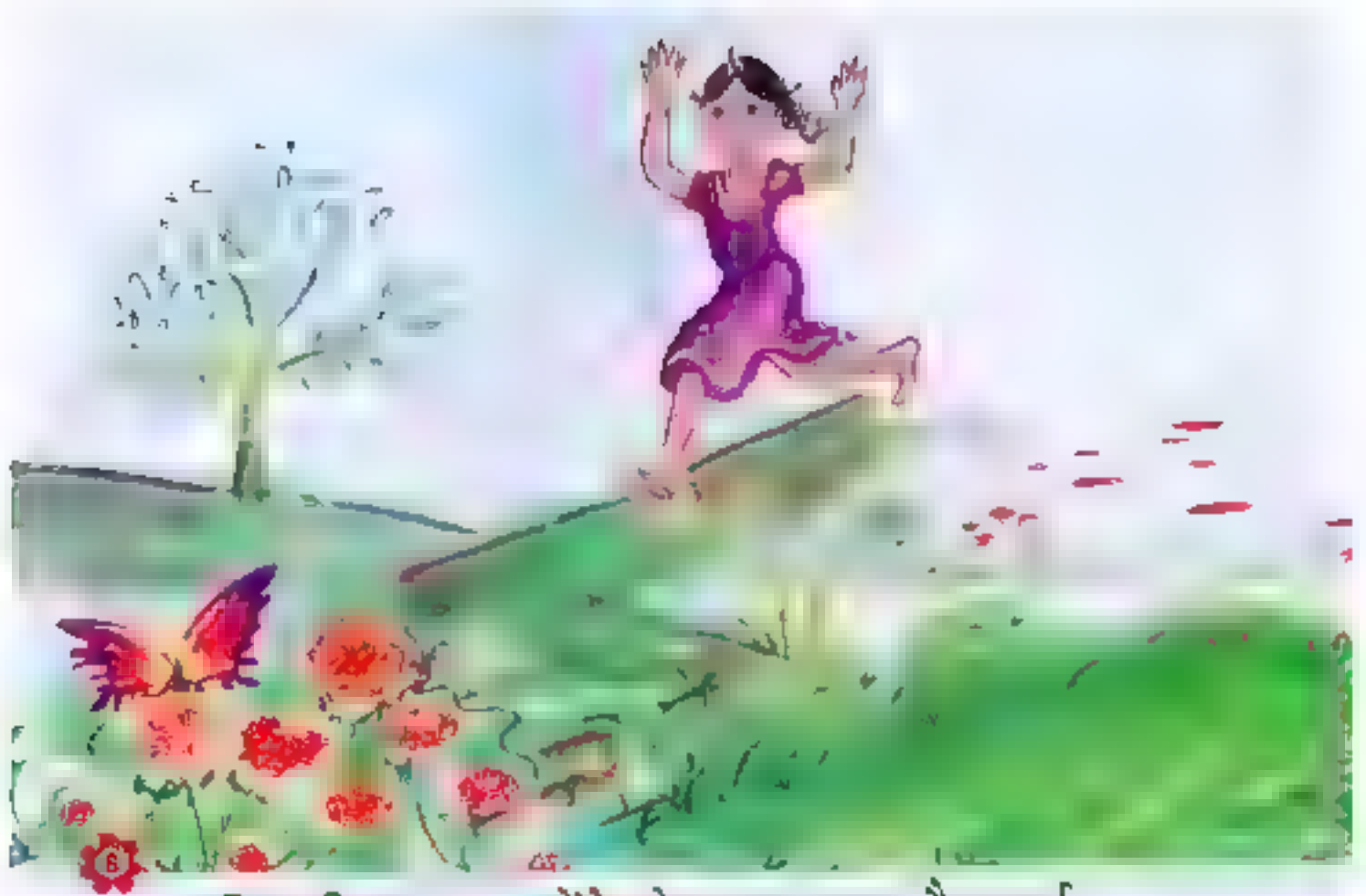
तितली उड़कर गेंदे के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।

तितली उड़कर चमेली के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।

तितली उड़कर सदाबहार के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।

तितली उड़कर सूरजमुखी के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।

सोफ़िया भी बाग में थी।

उसने बालों में फूलवाली चिमटी लगायी हुई थी।

चिमटी का फूल गुलाबी रंग का था।
फूल के नीचे हरी पत्तियाँ भी थीं।
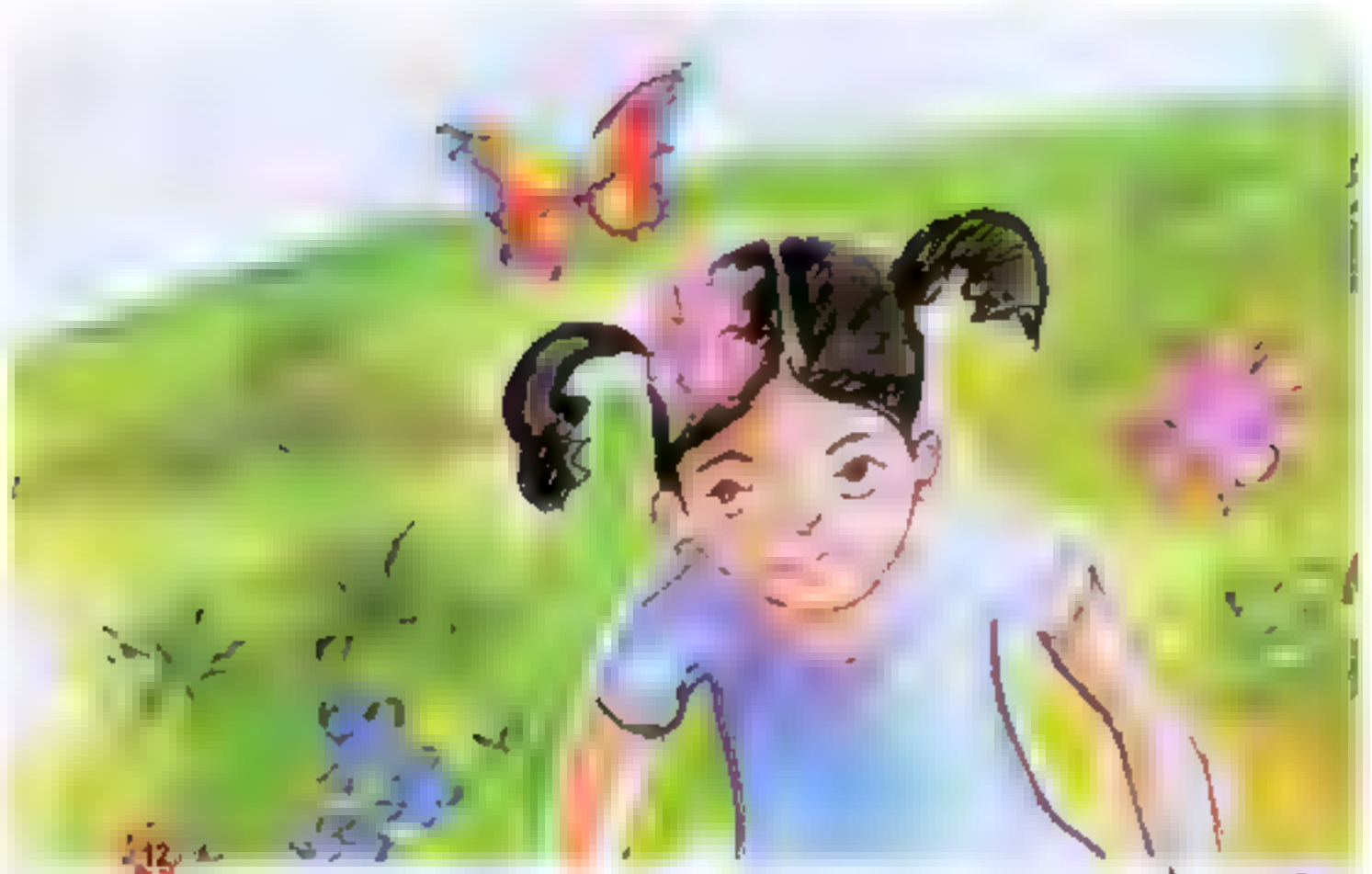
तितली उड़कर सोफिया के बालों की चिमटी पर बैठ गई। तितली उसको असली फूल समझ रही थी।

तितली उड़ गई तो काजल ने सोफ़िया से चिमटी ले ली। उसने अपने बालों में वह चिमटी लगा ली।
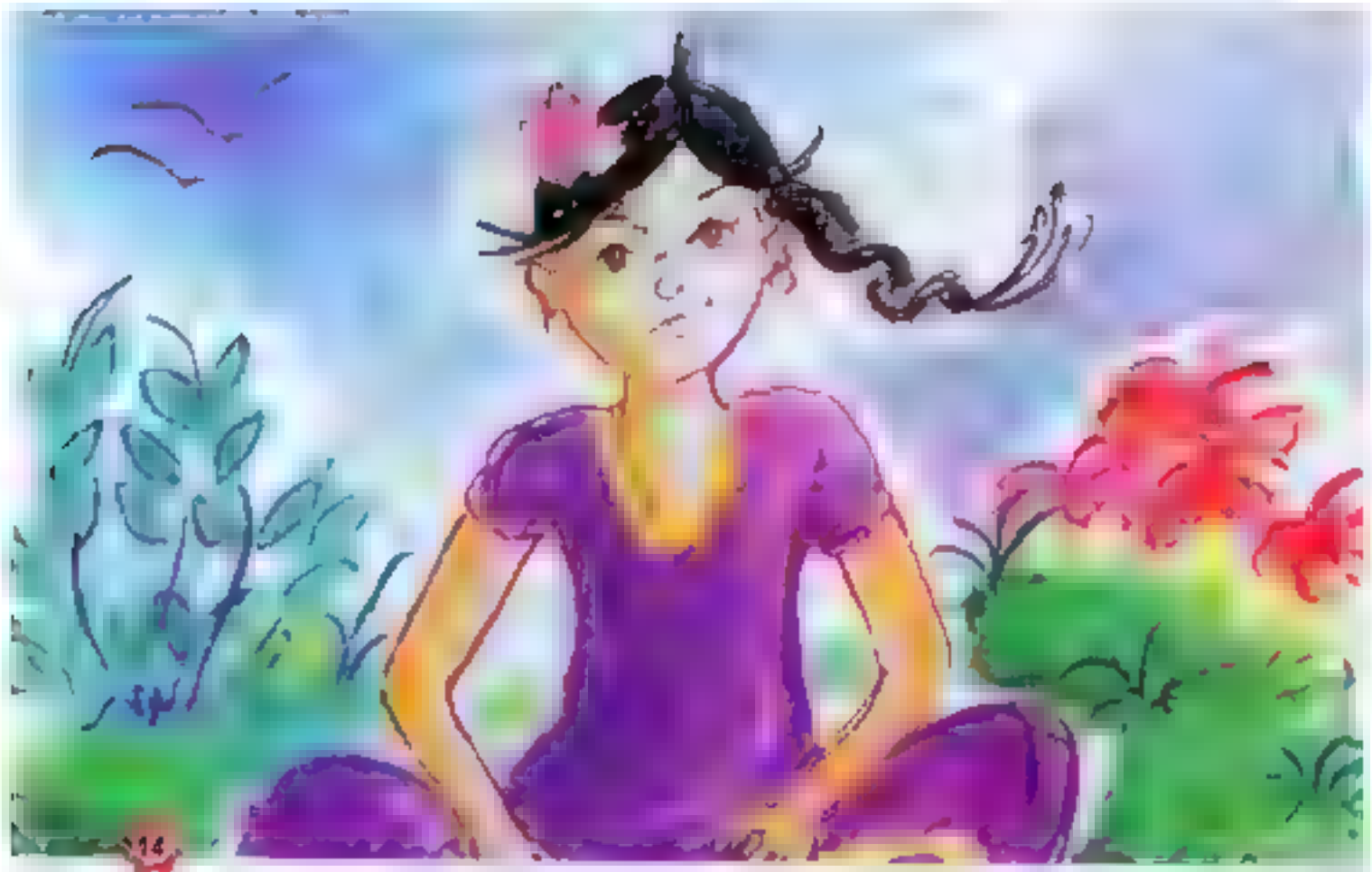
काजल चिमटी लगा कर वहीं बैठ गई।
वह चुपचाप बिना हिले-डुले बैठी रही।

काजल तितली का इंतज़ार करती रही।
काजल बैठी-बैठी इंतज़ार करती रही।
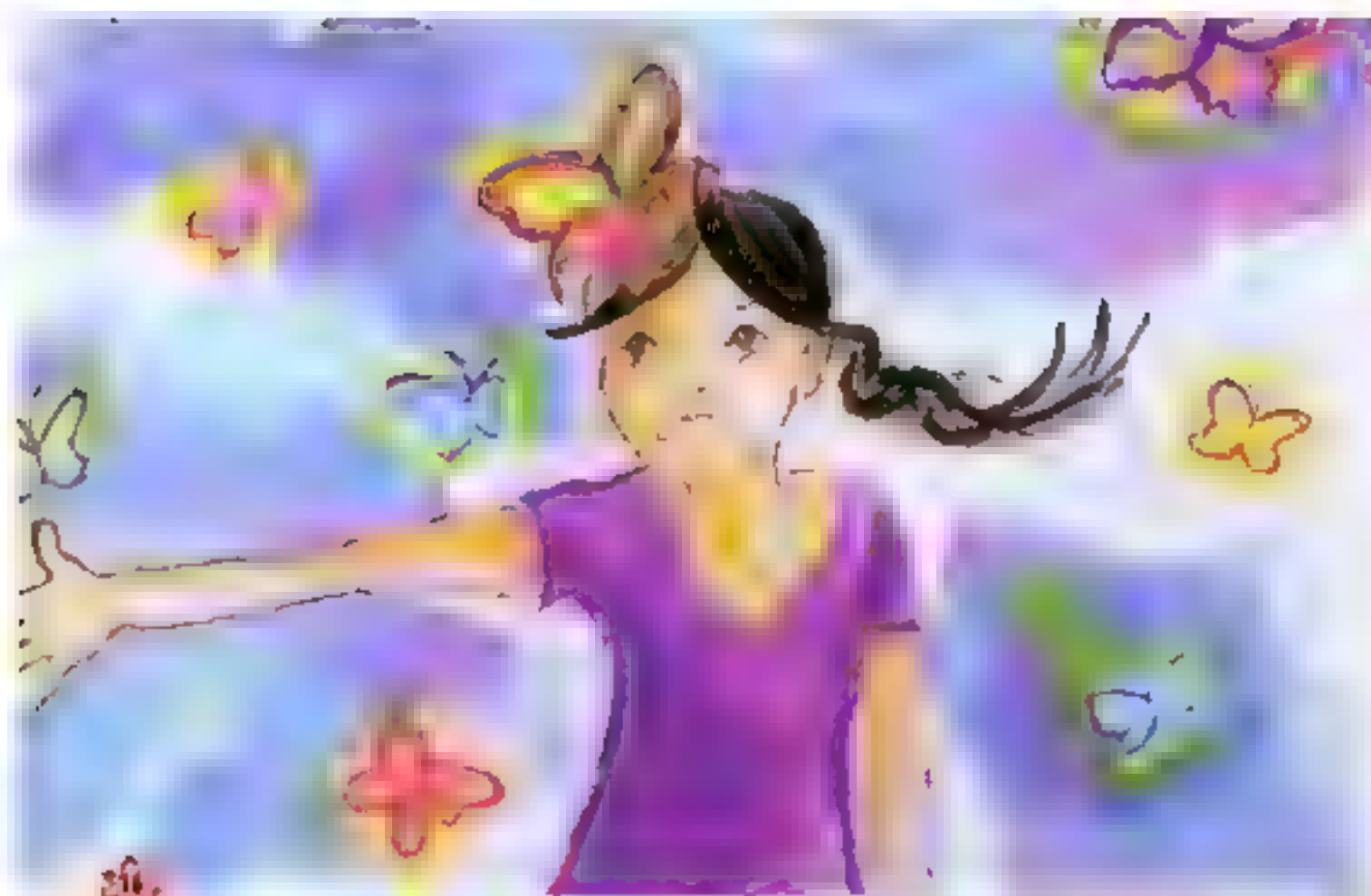
अचानक उसके पास बहुत सारी तितलियाँ आ गईं।
एक तितली उसकी चिमटी पर भी बैठ गई।
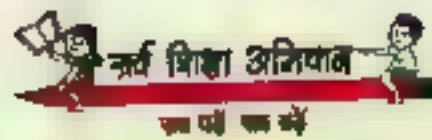
2070

रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0
978-8[illegible]-7450-371-3

जीत की
पीपनी
पढ़ना है समझना

जीत की पीपनी

जीत

बबली

एक दिन जीत की पेंसिल कहीं खो गई।
उसने अपनी पेंसिल हर जगह ढूँढ़ी।

जीत ने पेंसिल अपने बस्ते में ढूँढ़ी।
उसके बस्ते में बहुत सारा सामान था।

बबली ने जीत का बस्ता उलट दिया।
उसमें से गिल्ली, पंख, धागे, ढक्कन और पत्थर गिर पड़े।

जीत के बस्ते में से और कई चीज़ें निकलीं।
बबली ने आम की एक गुठली उठा ली।

समीर आम की गुठली को देखने लगा।
जीत ने बताया कि वह पीपनी है।

जीत ने आम की गुठली को घिसकर पीपनी बनाई थी।
पीपनी से बहुत ज़ोर की आवाज़ निकलती थी।

जीत ने पीपनी बजाने को कहा।
बबली ने ज़ोर से पीपनी बजाई।

इतने में मास्टर जी आ गए।
उन्होंने पीपनी की आवाज़ सुन ली थी।

सारे बच्चे अपनी जगह पर वापिस बैठ गए।
सबने अपनी-अपनी किताब निकाल ली।

मास्टर जी ने पूछा कि आवाज़ कौन कर रहा है।
सब चुप रहे।

मास्टर जी ने दुबारा पूछा।
बबली ने बता दिया कि जीत पीपनी लाया था।

मास्टर जी ने पीपनी माँगी।
बबली ने डरते-डरते पीपनी मास्टर जी को दे दी।

मास्टर जी ने पीपनी बजाने की कोशिश की।
पीपनी बजी ही नहीं।

मास्टर जी बोले कि कोई बजाकर दिखाओ।
उन्होंने पीपनी देते हुए हाथ बढ़ाया।

बच्चे पीपनी बजाने के लिए मास्टर जी की तरफ़ दौड़े।
हम बजाएँगे –हम बजाएँगे –हम बजाएँगे।
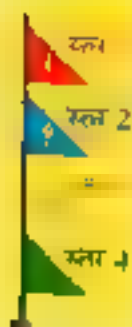
20
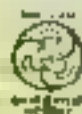
रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0
978-81-7450-877-0

आउट
पढ़ना है समझना

आउट

छुट्टी का दिन था।
जीत और बबली सुबह से खेल रहे थे।
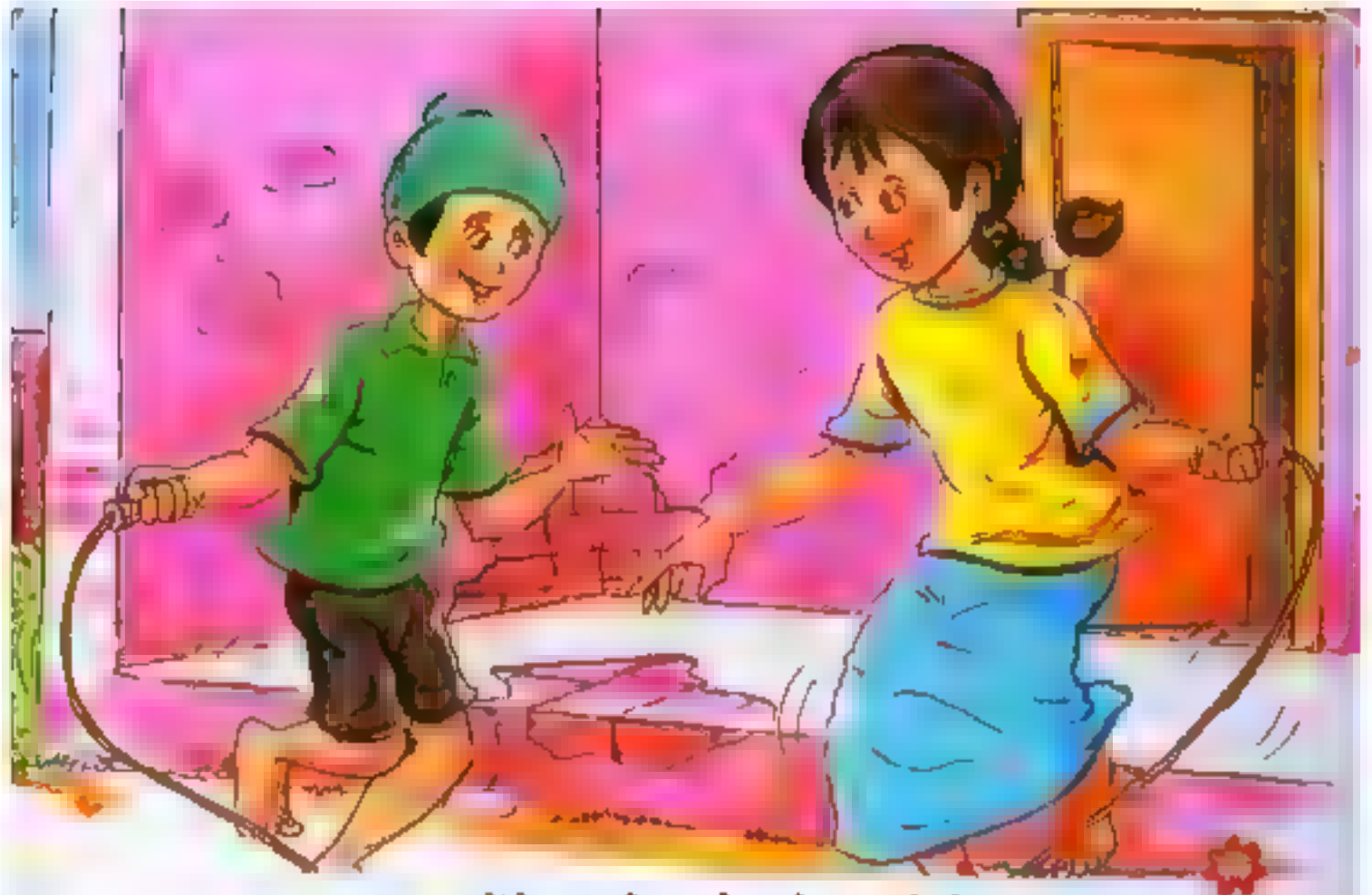
उन्होंने कई सारे खेल खेले।
दोनों ने रस्सी कूदी।

फिर छुपन-छुपाई खेली।
उसके बाद गिल्ली-डंडा खेला।

बबली ने क्रिकेट खेलने के लिए कहा।
जीत गेंद फेंकने के लिए तैयार हो गया।

ज़ात ने गेद फेंकी।
बबली ने ज़ोर से बल्ला घुमाया।

गेंद मोहित के आँगन में चली गई।
मोहित के घर ताला लगा हुआ था।

जीत और बबली का खेल रुक गया।
बबली बोली कि उसे गेंद बनानी आती है।
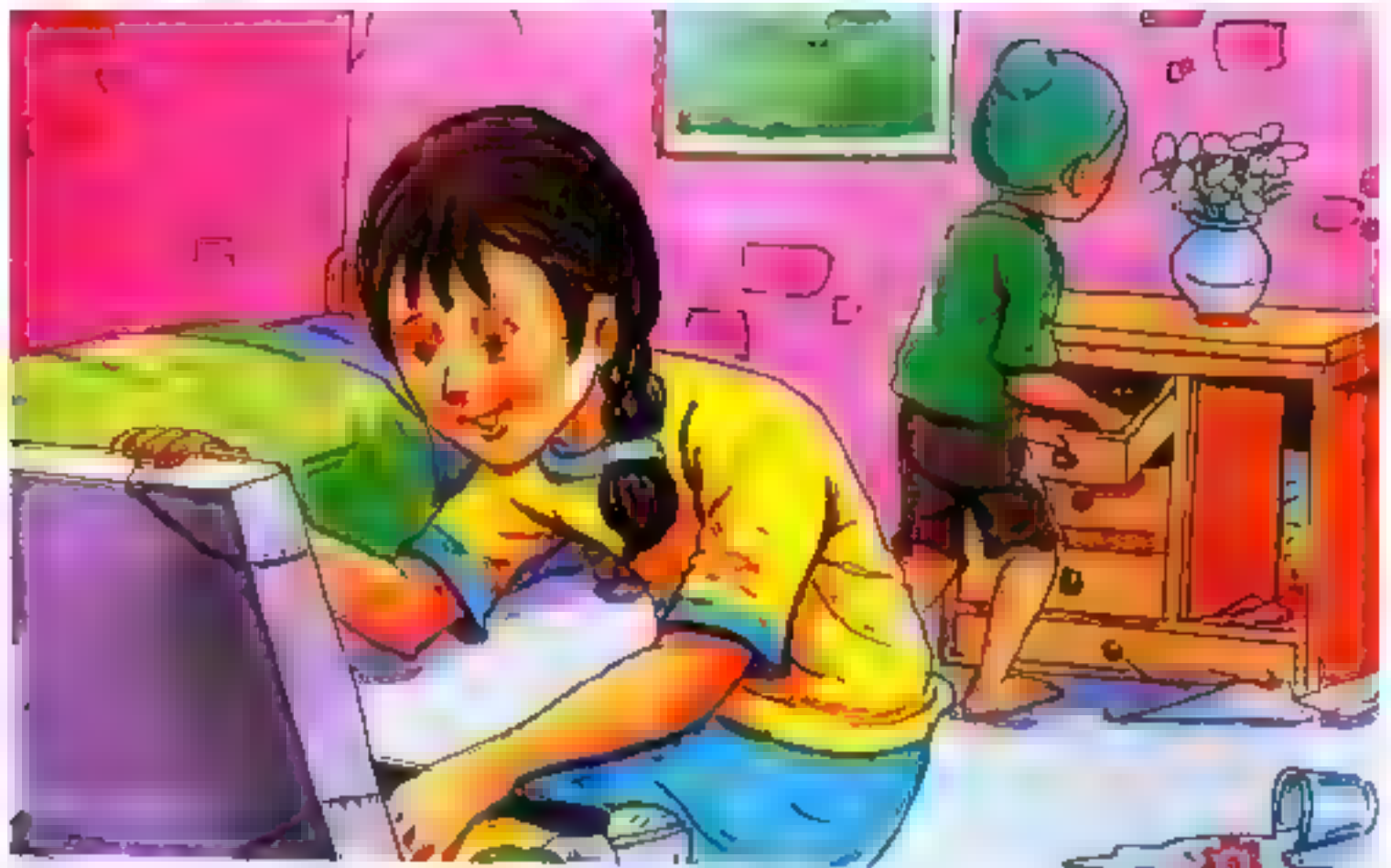
उसने जीत से कपड़े, कागज़ और पन्नी लाने को कहा। वह खुद भी ये सब ढूँढ़ने लगी।

दोनों ने खूब सारी कतरनें और पन्नियाँ इकट्ठी कर लीं। बबली सुतली का टुकड़ा भी ले आई।

बबली ने उन सबको मिलाकर एक गोला बनाया।
गोले को सुतली से कस दिया।
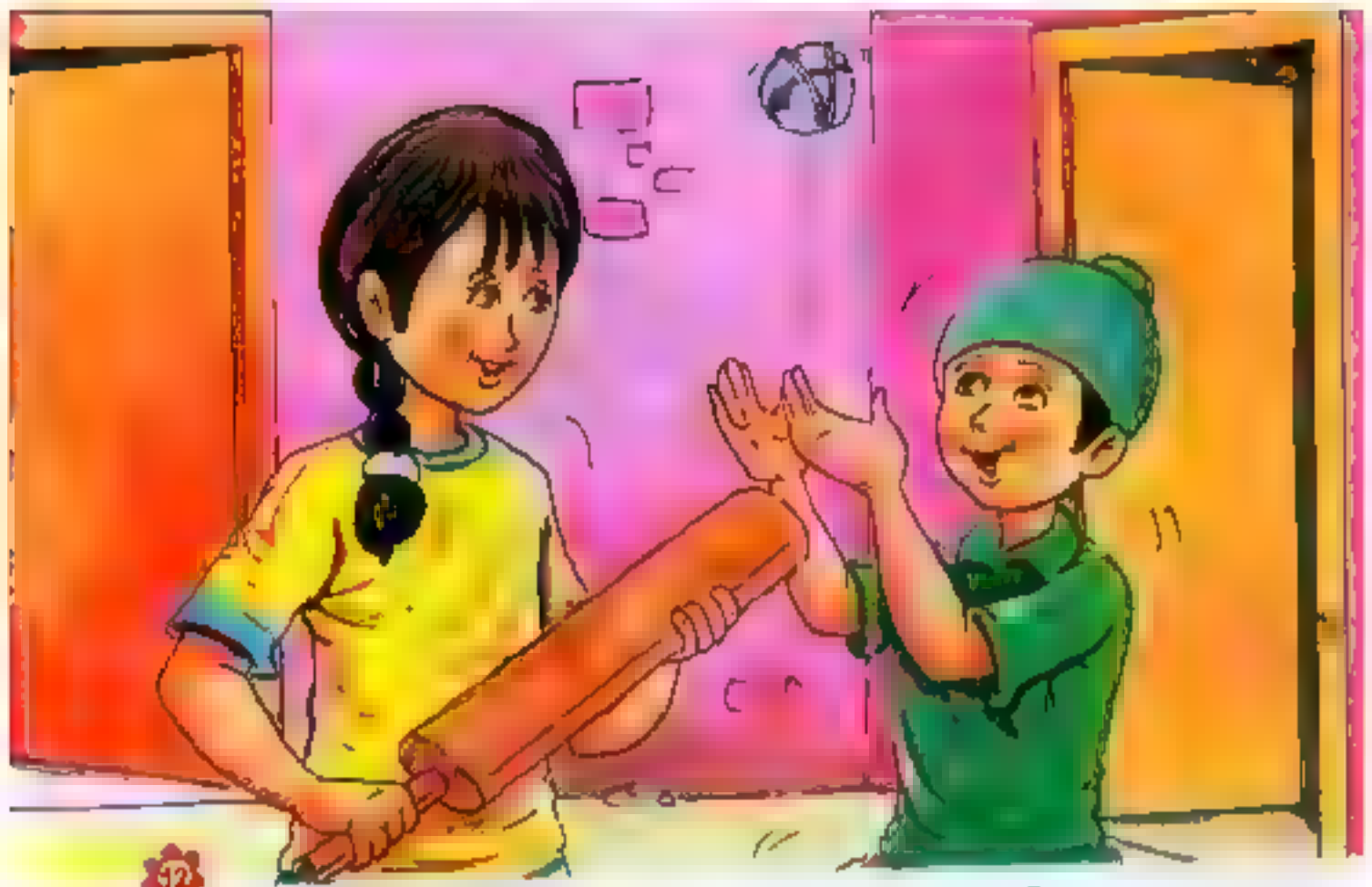
दोनों की पसंद की गेंद बन गई।
खेल फिर से शुरू हो गया।

इस बार बबली ने गेंद उठाई।
जीत ने बल्ला उठाया।

बबली ने गेंद फेंकी।
जीत ने ज़ोर से बल्ला घुमाया।

गेंद खुलकर हवा में फैल गई।
बबली ने उछलकर एक कपड़ा पकड़ लिया।

बबली उछल-उछलकर आउट-आउट चिल्लाने लगी।
वह हाथ में कपड़ा लेकर आउट आउट कहते हुए दौड़ी।

2012

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-8 7450-898-0 (कक्षा सैट)
978-8 7450-873 7

हमारी पतंग

हमारी पतंग

मिली की मम्मी

मिली

एक दिन मिली छत पर गई।
आसमान में बहुत सारी पतंगें उड़ रही थीं।

मिली का मन हुआ कि वह भी पतंग उड़ाए।
वह फ़ौरन नीचे आ गई।

मिली ने माँ से पतंग उड़ाने के लिए कहा।
अ घर में पतंग नहीं थी।

माँ ने कहा कि चलो पतंग बनाते हैं।
मिली यह सुनकर खुश हो गई।

मिली माँ के साथ पतंग बनाने लगी।
वह कागज़ और गोंद ले आई।

माँ कैंची और तीलियाँ ले आई।
दोनों मिलकर पतंग बनाने बैठ गईं।

माँ ने कागज़ काटा और तीली मोड़ी।
उन्होंने मिली की मदद से तीली कागज़ पर चिपकाई।
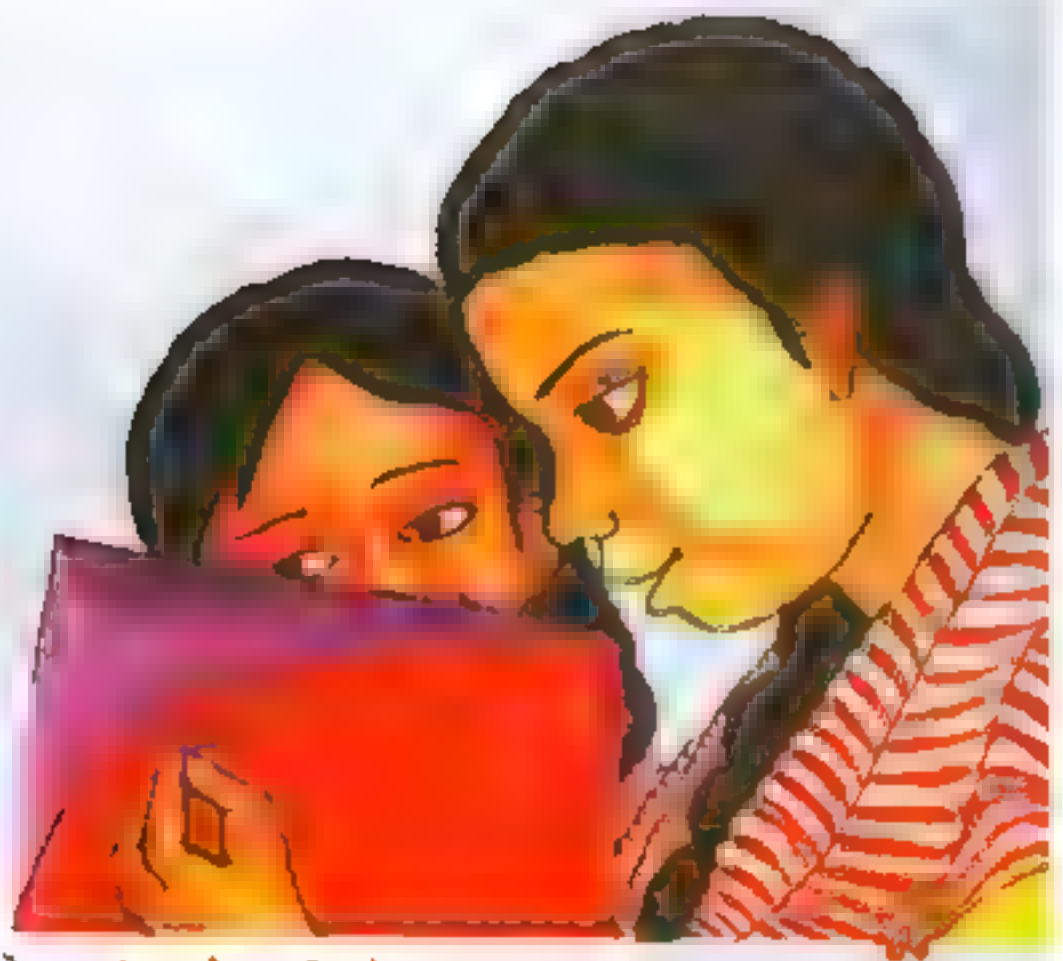
फिर उन्होंने पतंग के बीचों बीच दो छेद किए।
ये छेद माँझे के लिए किए थे।
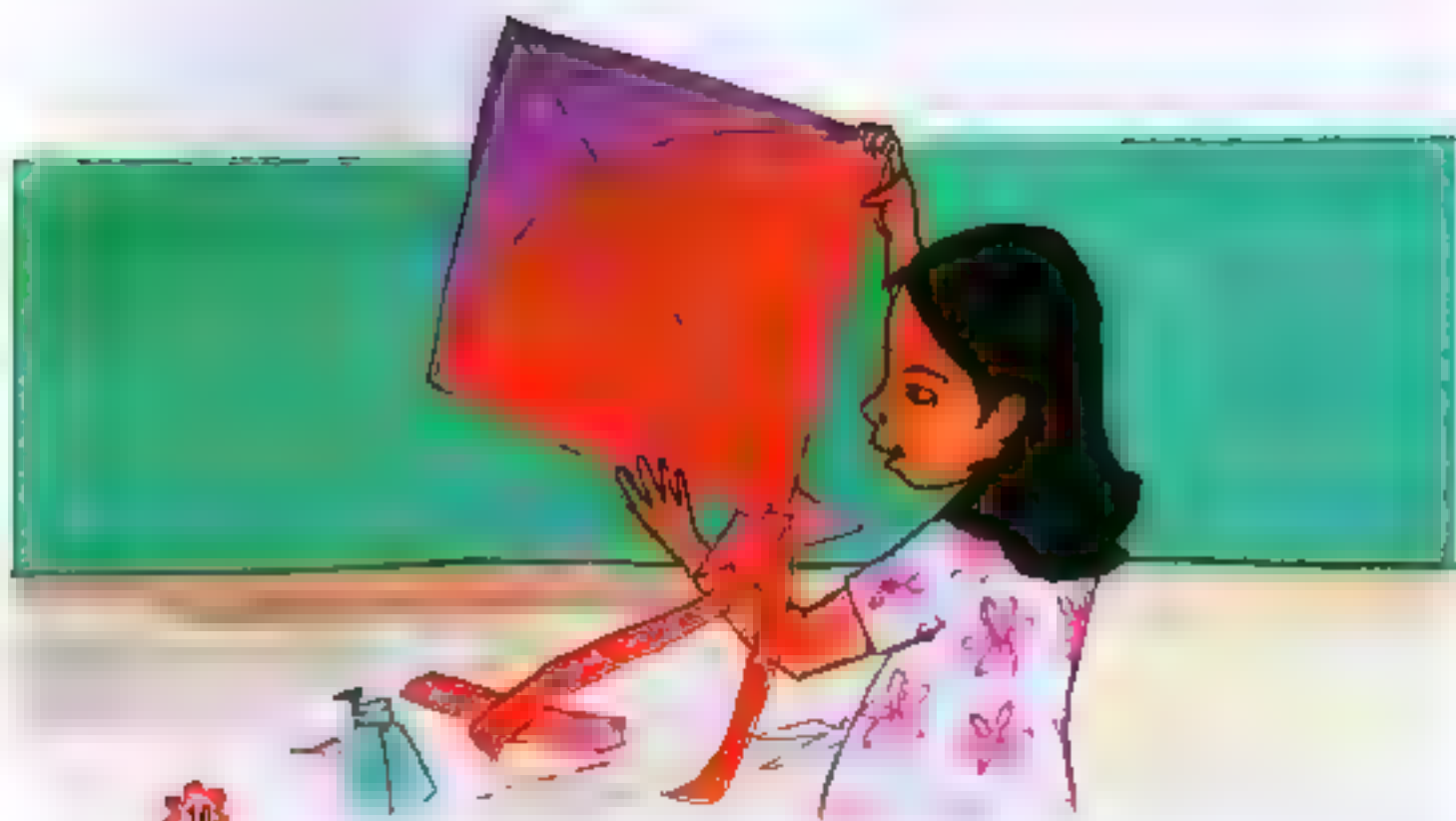
मिली ने पतंग के कोने पर अपना फ़ीता लगा दिया।
उसने फूँक फूँक कर गोंद सुखा दी।
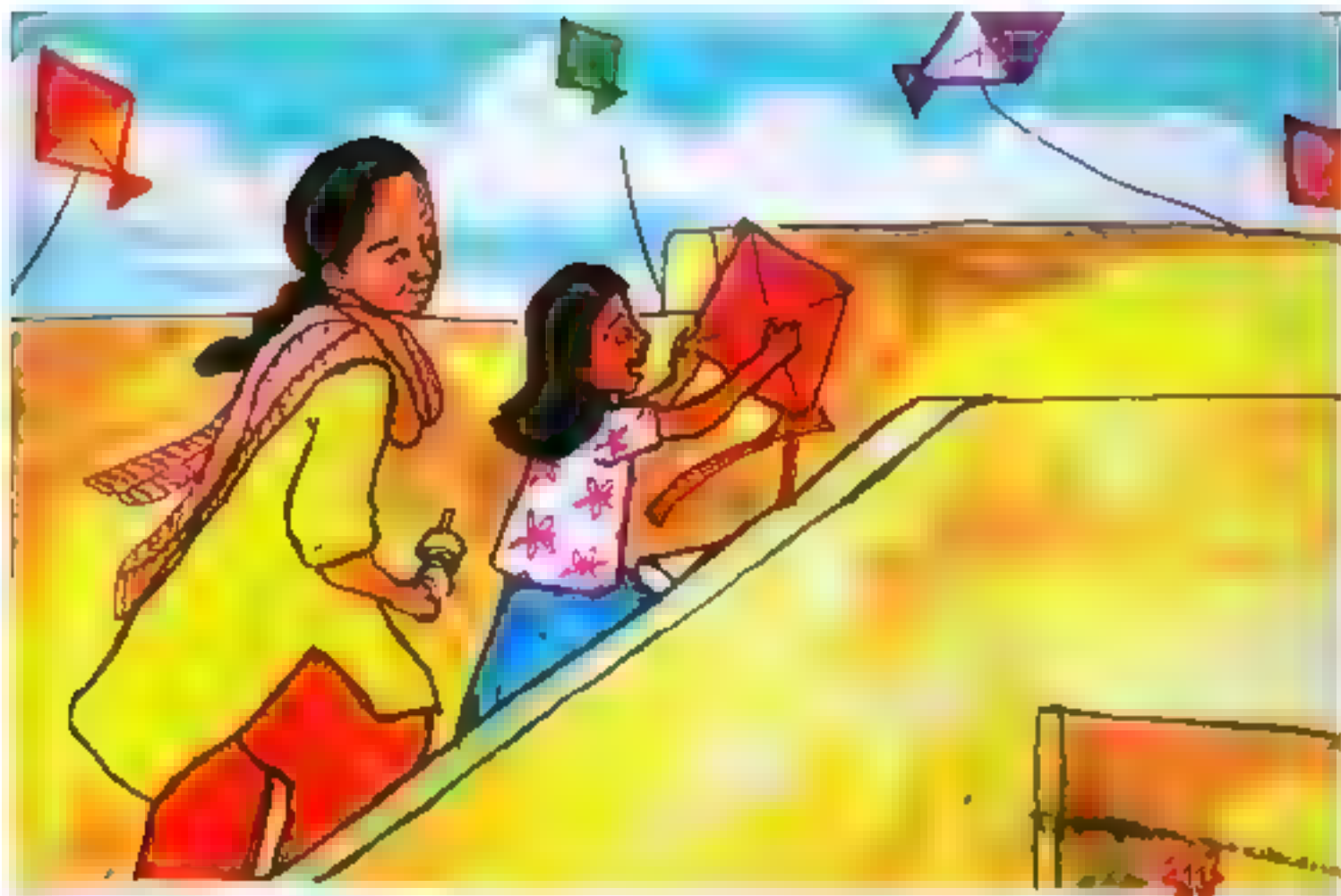
दोनों छत पर पतंग उड़ाने पहुँच गईं।
माँ ने छेदों में माँझा डाला।

माँ और मिली ने पतंग उड़ाना शुरू किया।
मिली ने चरखी पकड़ी।

माँ ने माँझा ताना।
थोड़ी देर में पतंग आसमान में उड़ने लगी।

उनकी पतंग बहुत ऊपर चली गई थी।
मिली ताली बजा-बजा कर कूदने लगी।
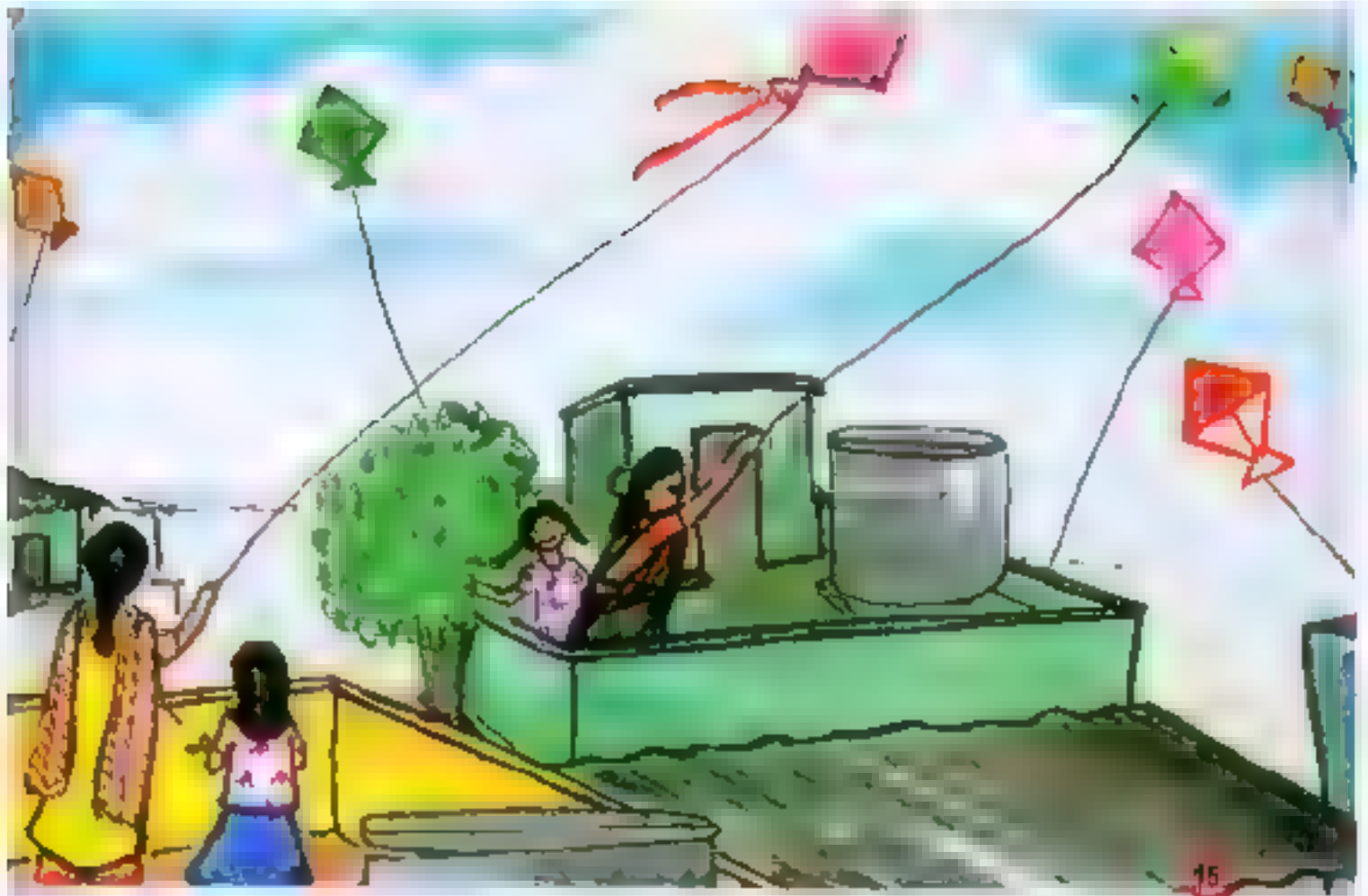
तोसिया भी अपनी मम्मी के साथ पतंग उड़ा रही थी। दोनों पतंगें साथ-साथ उड़ने लगीं।

माँओं की पतंगें खूब ऊँची उड़ रही थीं।
तोसिया और मिली हाथ में चरखी पकड़े उछल रही थीं।
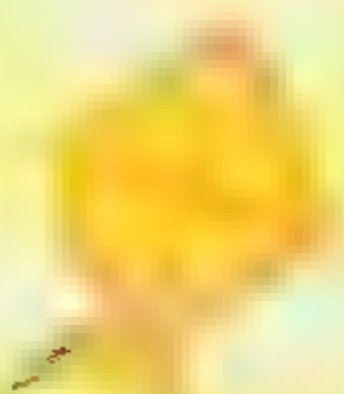
2073

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

रु.10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा सैट)
978-81-7450-874-4

शरबत
पढ़ना है समझना

शरबत

तोसिया

मिली

एक दिन तोसिया और मिली ने शरबत बनाया।
दोनों ने पानी में लाल-लाल शरबत घोला।

शरबत में चीनी भी मिलाई।
उसमें खूब सारी बर्फ़ डाली।

तोसिया और मिली शरबत पीने बैठ गईं।
वे शरबत पीते-पीते बातें करने लगीं।

तोसिया हाथ हिला-हिलाकर बात कर रही थी। उसका हाथ लगा और शरबत गिर गया।

मिली ने तोसिया को अपना आधा शरबत दे दिया। दोनों फिर शरबत पीने लगीं।

तोसिया की नज़र गिरे हुए शरबत पर पड़ी।
उसे गिरा हुआ शरबत बादल जैसा लगा।

तोसिया ने शरबत में उँगली घुमाकर मछली बना दी।
उसने मछली की पूँछ भी बनाई।

मिली ने गिरे हुए शरबत से फूल बना दिया।
फूल के नीचे दो पत्तियाँ भी बनाईं।

तोसिया ने फूल मिटा के सूरज बना दिया।
तोसिया ने सूरज की लंबी लंबी किरणें बनाईं।

फिर तोसिया ने एक नाव बनाई।
तोसिया ने नाव पर एक झंडा बनाया।

17

मिली ने उस झंडे में से एक पतंग बना दी।
तोसिया ने पतंग की लंबी डोर बनाई।

वह पतंग की डोर को पूरे कमरे में खींचती रही।
मिली उसके पीछे-पीछे चल रही थी।

तोसिया बोली कि ममता को बुलाकर लाते हैं।
उसको यह सब दिखाएँगे।

तोसिया और मिली ममता के साथ लौटीं
शरबत की पतंग और डोर तो गायब थी।

उन्होने देखा कि मुनमुन सारा शरबत चट कर चुकी थी। तोसिया और मिली ज़ोर ज़ोर से हँसने लगीं।
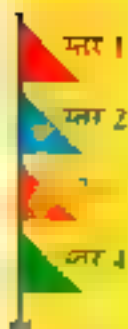
पत्तल
पढ़ना है समझना

पटाल
दीदी
मदन
जमाल

एक दिन सब बच्चे दीदी के साथ पिकनिक पर गए। वे सब पास के एक पार्क में गए थे।

पार्क में सब खूब दौड़े और कूदे।
सबने खूब सारे खेल खेले।

खेलते-खेलते सब थक गए।
सारे बच्चों को ज़ोर से भूख लगने लगी।
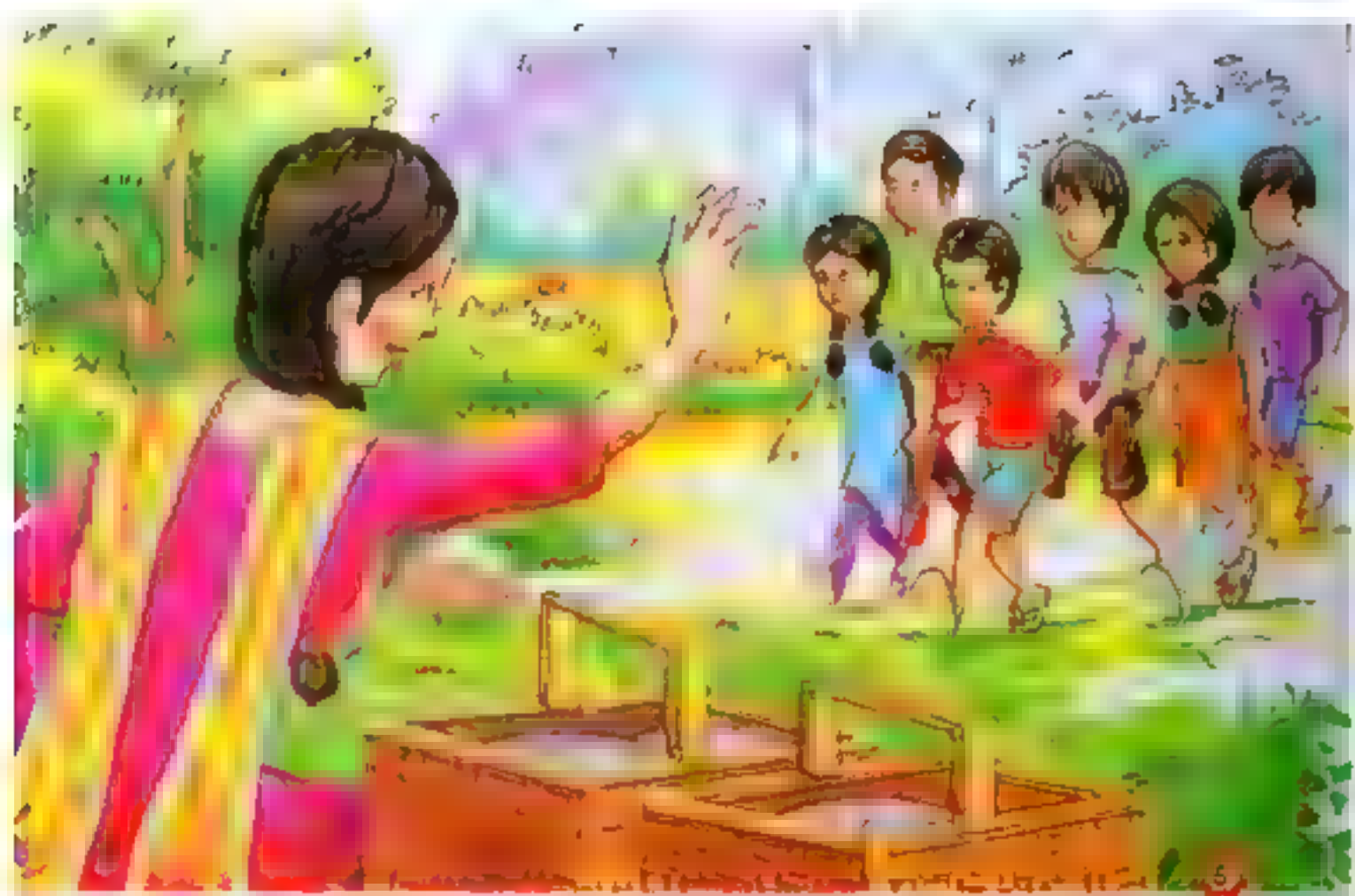
दीदी खूब सारा खाना लाई थी।
उन्होंने सबको खाने के लिए बुलाया।

दीदी ने बड़े-बड़े डिब्बे लाइन से लगा दिए।
डिब्बों पर बड़े-बड़े चमचे रखे हुए थे।

दीदी इधर उधर कुछ ढूँढ़ने लगीं।
वह बर्तनों का झोला घर भूल आई थीं।

खाना खाने के लिए बर्तन नहीं थे।
सब शोर मचाने लगे।

मदन बोला कि पत्तल बना लेते हैं।
पत्तल पर खाना खा लेंगे।

जमाल ने पूछा कि पत्तल कैसे बनेंगे।
मदन ने कहा कि पत्ते बीनकर ले आएँगे।

सारे बच्चे पत्ते लाने दौड़े।
सबने नीचे पड़े हुए साफ़ पत्ते बीन लिए।

जमाल बड़ के पत्ते बीन लाया।

मदन भी बड़ के पत्ते बीन लाया।

पूजा ढाक के पत्ते लाई।
राजा भी ढाक के पत्ते लाया।

सबने मिलकर पत्ते धोए।
पत्तों को सींकों से जोड़-जोड़ कर पत्तलें बनाईं।

सब पत्तल लेकर खाना खाने बैठ गए।

रानी हाथ में नीम की पत्ती लिए खड़ी थी।

सब हँसने लगे कि नीम की पत्ती पर कौन खाना खाएगा।
दीदी ने कहा कि चींटी खाएगी।
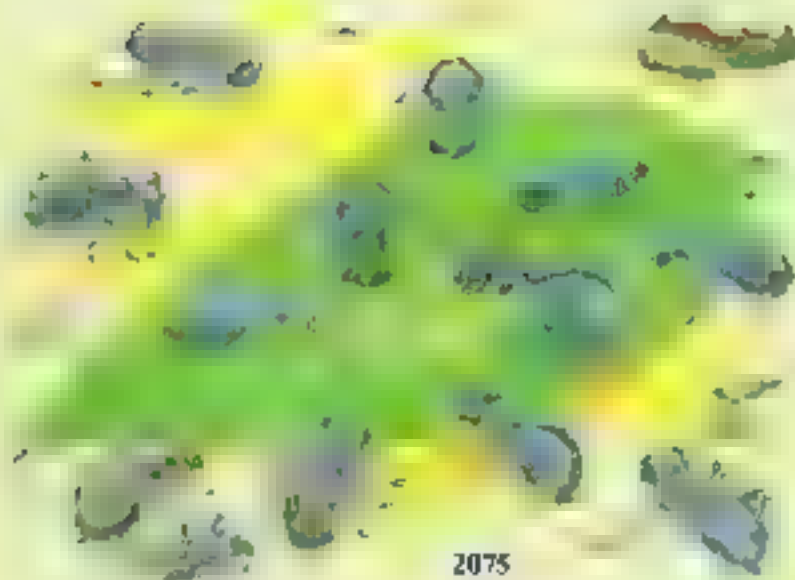
स्तर 1
स्तर 3
सर्व शिक्षा अभियान
2075
रु. 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

चावल
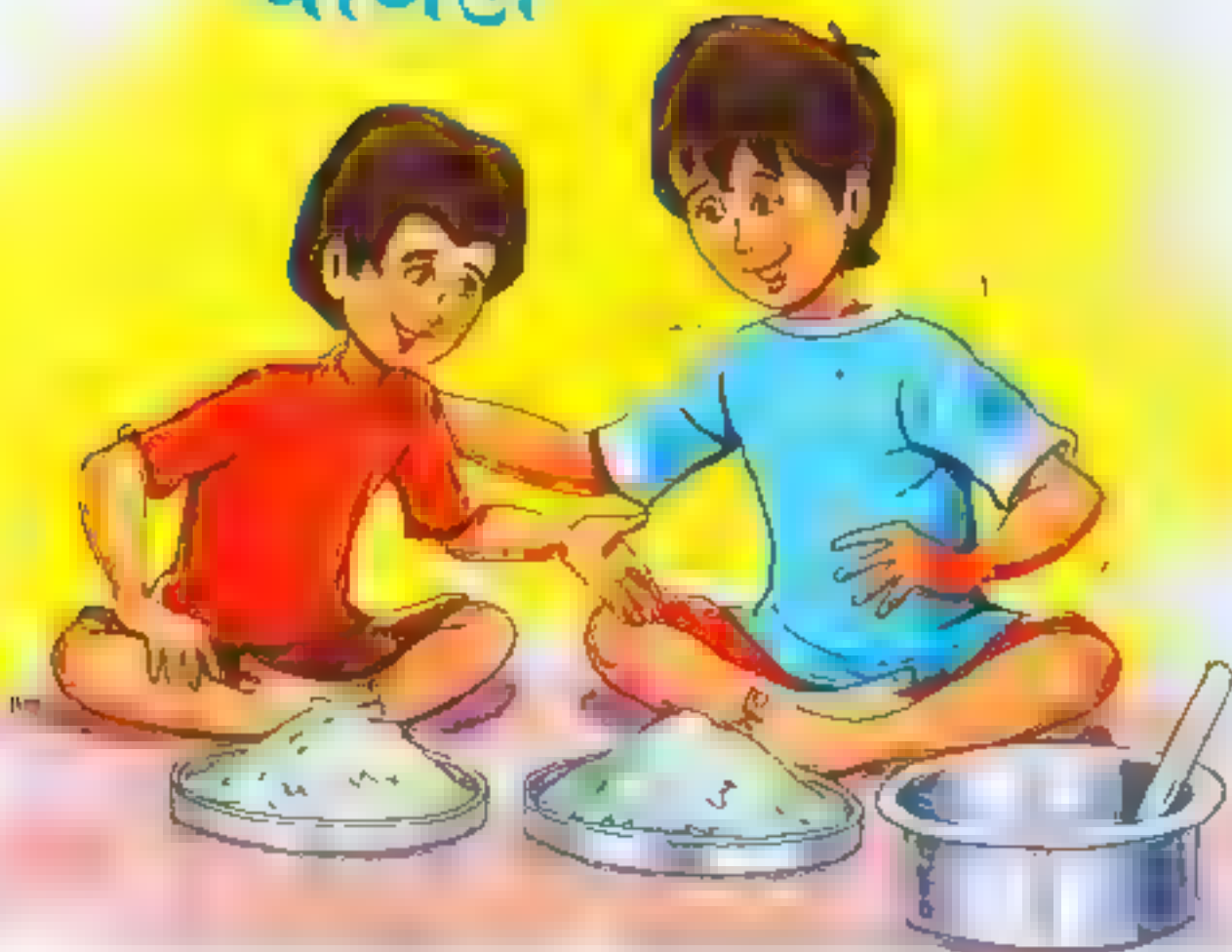
चावल

जमाल

मदन
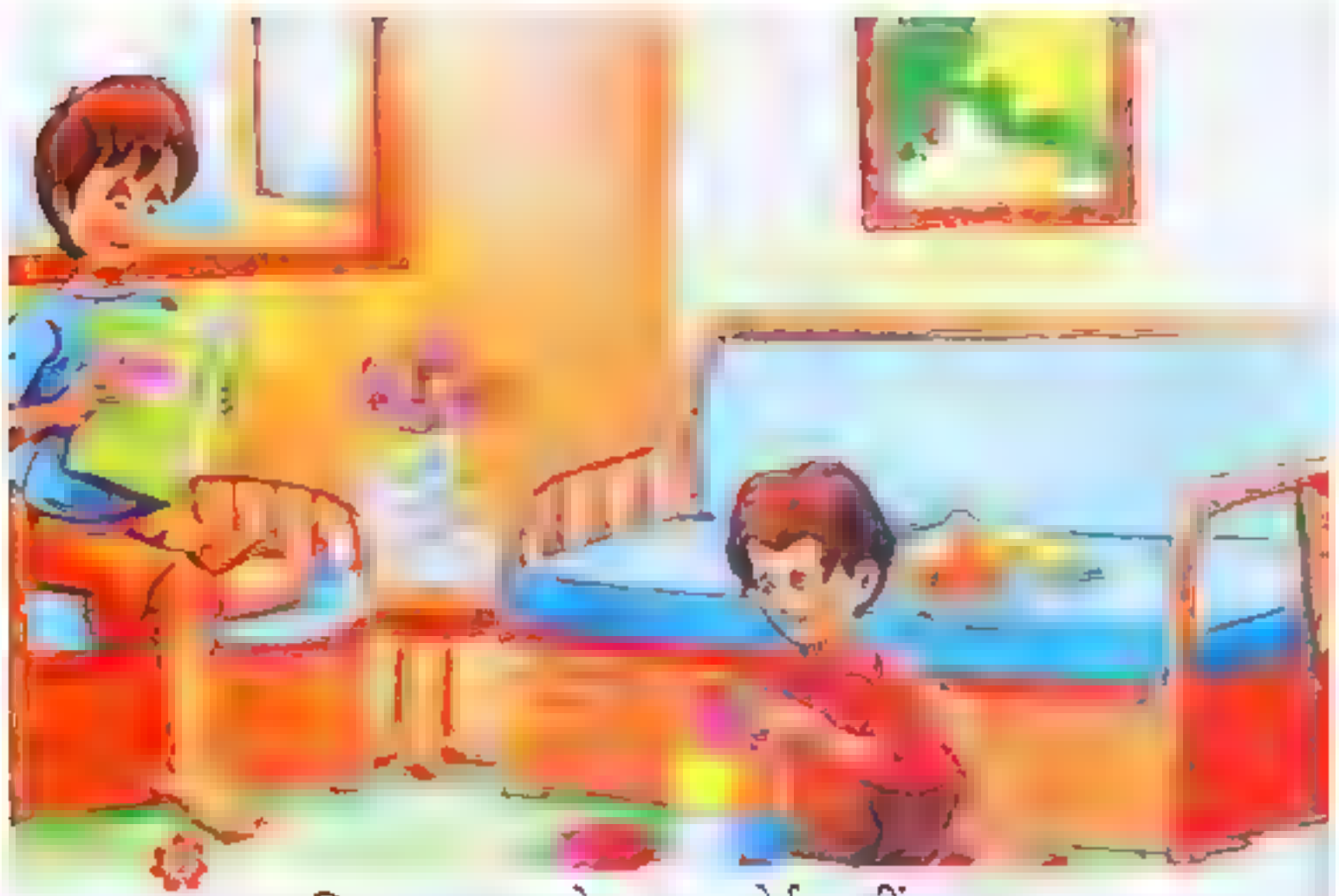
एक दिन जमाल के घर कोई नहीं था।
मदन उसके घर खेलने के लिए आया हुआ था।

उन दोनों को ज़ोर से भूख लग रही थी।
रसोई में कुछ भी पका हुआ नहीं था।

जमाल ने सारे बर्तन खोल-खोलकर देखे।
मदन ने डिब्बों में कुछ खाने के लिए ढूँढ़ा।

उनको खाने के लिए कुछ नहीं मिला।
दोनों सोचने लगे कि क्या बनाया जाए।

मदन ने कहा कि चावल बनाते हैं।
जमाल को भी यह बात पसंद आ गई।

जमाल ने ऊपर चढ़कर चावल निकाला।
उसने ढेर सारा चावल पतीले में डाल दिया।

मदन ने लाल-लाल गाजर छीली और काटी।
जमाल ने हरी हरी मटर छीली।

मदन ने आलू और प्याज़ भी काटे।
जमाल ने चावल धोया और पतीले में पानी डाल दिया।

जमाल ने पतीली आग पर चढ़ाई।
मदन ने चावल में कटी हुई गाजर डाल दीं।
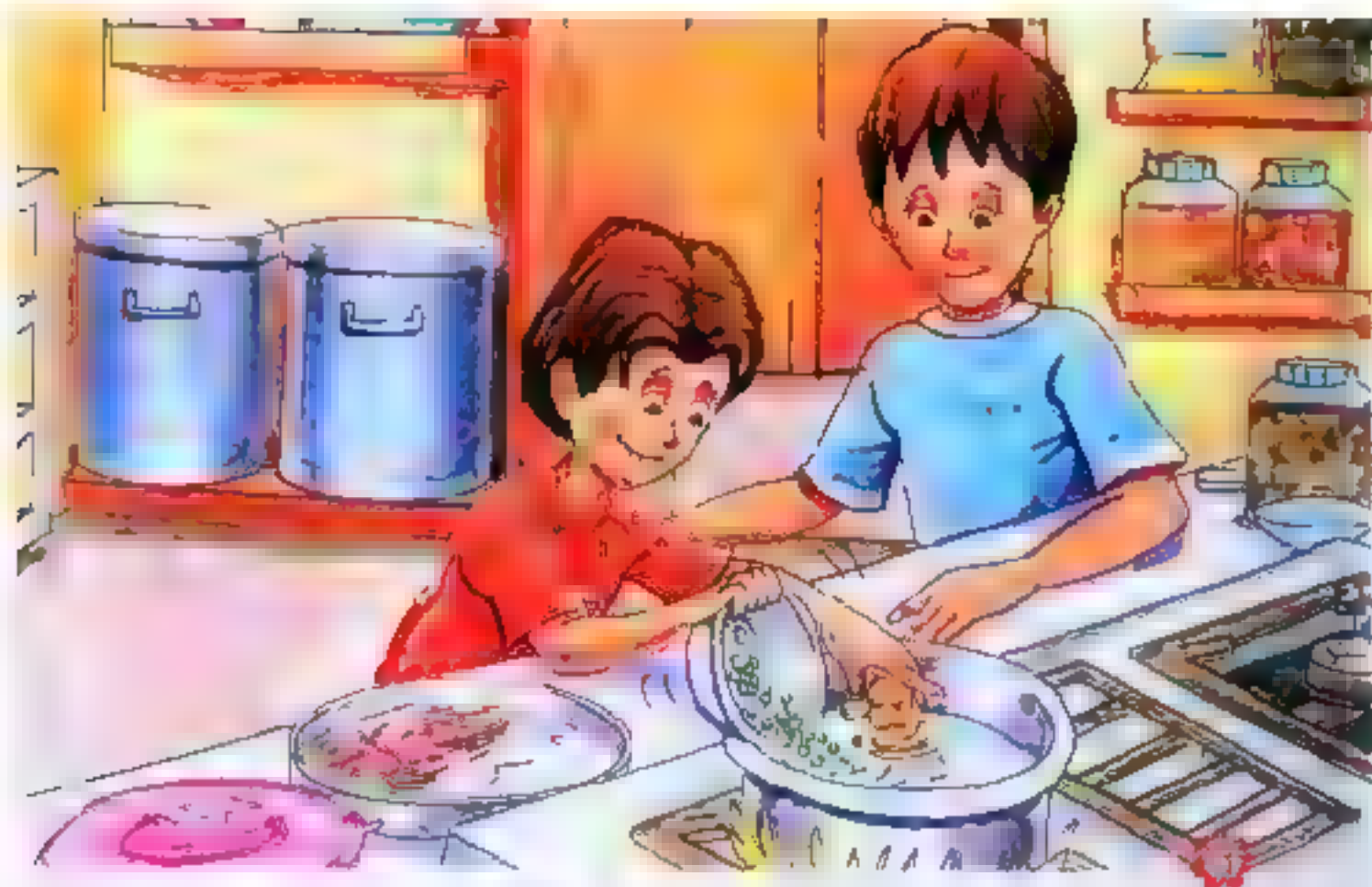
जमाल ने पतीली में प्याज़ डाल दिया।
वह पतीली में झाँक-झाँक कर देखने लगा।

मदन ने देखा कि पानी उबलने लगा था।
उसने चावल में थोड़ी सी हल्दी मिला दी।

दोनों पीले-पीले चावल को उबलता हुआ देखते रहे।
मदन ने चावल निकालकर जमाल को चखाया।

जमाल को चावल कच्चा लगा।
उन्होंने चावल को और उबाला।

दोनों चावल खाने बैठे।
मदन ने ऊपर का चावल लिया जमाल ने नीचे का।

मदन के चावल पीले-पीले थे।
जमाल के चावल काले-पीले थे।

2076

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0
978-81-7450-877-5

पढ़ना है समझना

मौसी के मोज़े

2

एक दिन मौसी नानी से मोज़े बनाना सीख रही थीं।
दोनों आँगन में चारपाई डाल कर बैठ गईं।
मुनमुन चारपाई के नीचे लेटी हुई थी।
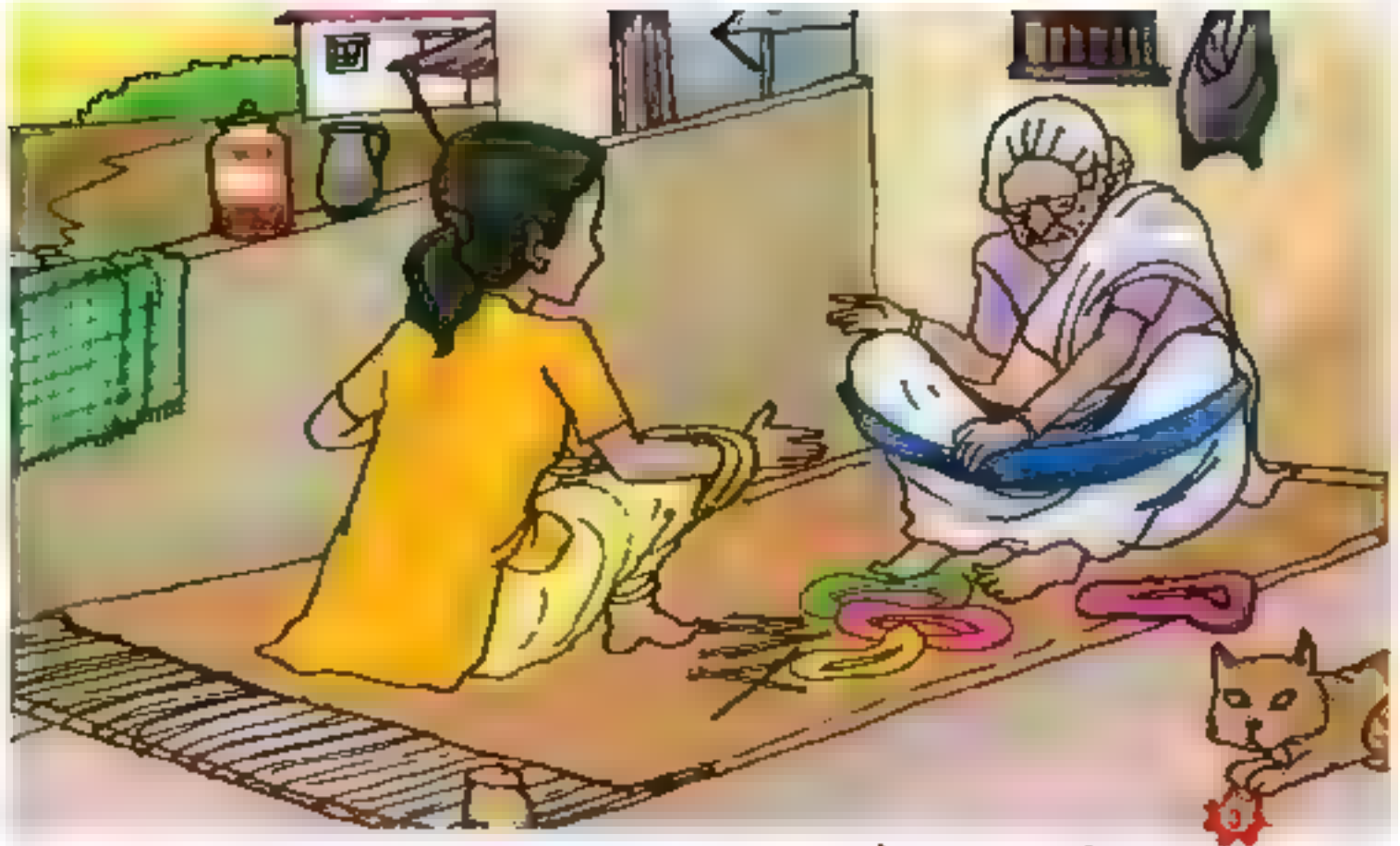
उन दोनों के पास खूब सारी ऊन और सलाइयाँ थीं।
नानी ने अपने घुटनों पर नीली ऊन की लच्छी चढ़ाई।
मौसी ने अपने घुटनों पर पीली ऊन की लच्छी चढ़ाई।
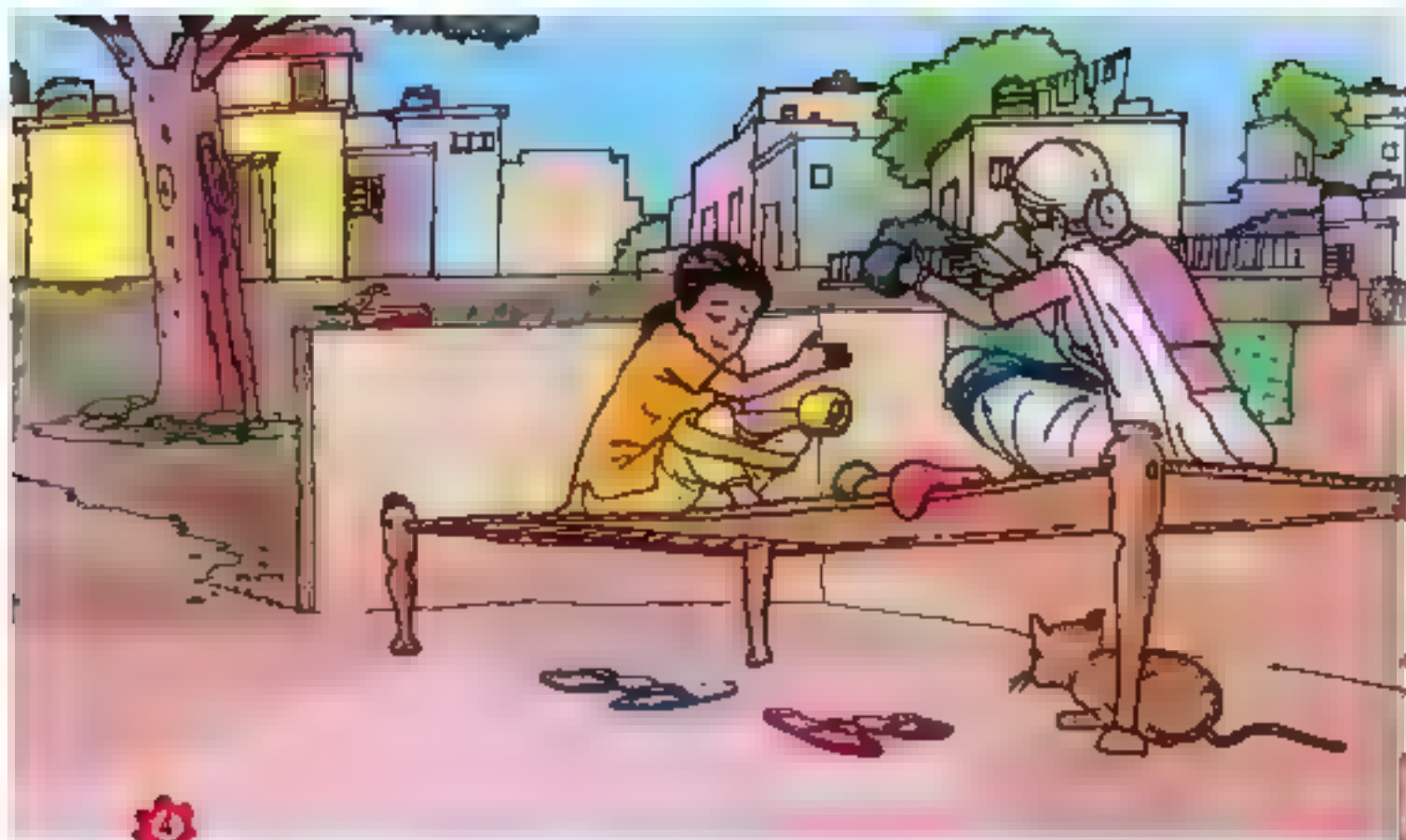
4

नानी ने हाथ घुमा घुमा कर नीले रंग का गोला बनाया।
मौसी ने हाथ घुमा घुमा कर पीले रंग का गोला बनाया।
मुनमुन ऊन के गोलों को ध्यान से देख रही थी।
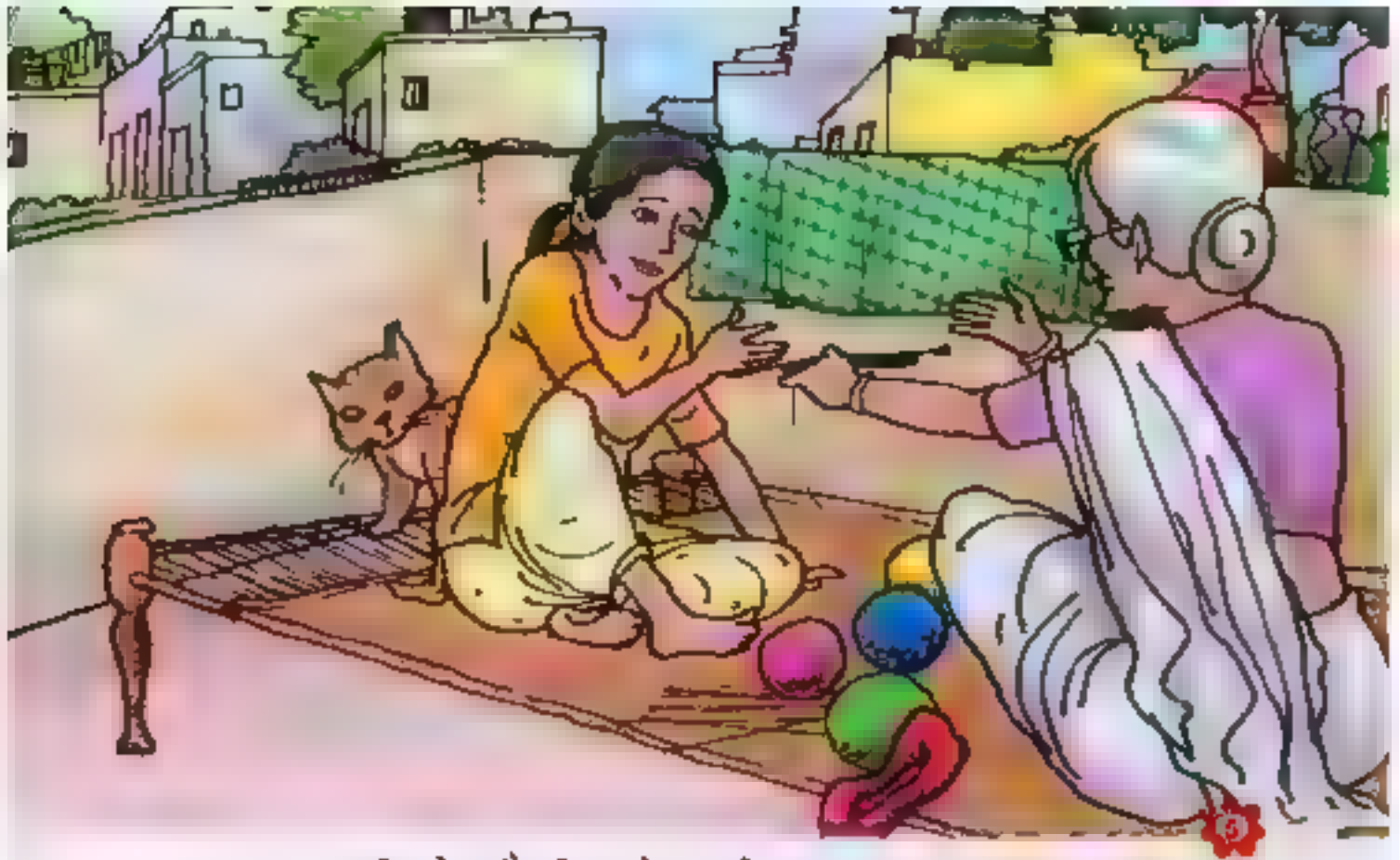
नानी ने मौसी को फंदे डालकर दिए।
मौसी ने मोज़े बुनना शुरू किया।
मुनमुन चुपके-से चारपाई पर चढ़ गई।
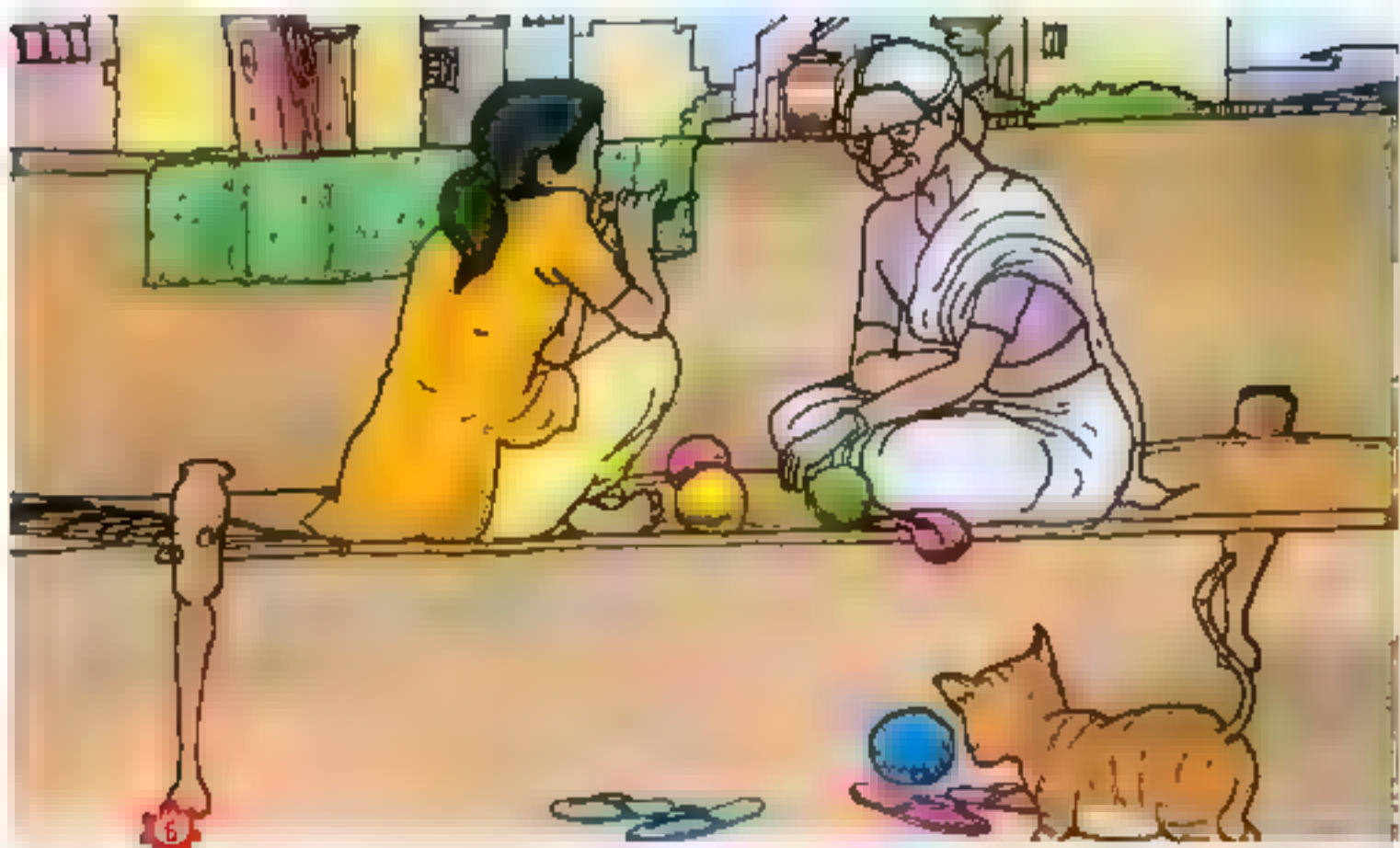
मौसी मोज़ा बुनने में लगी हुई थी।
मुनमुन ने गोला नीचे लुढ़का लिया।
वह गोले से खेलने लगी।
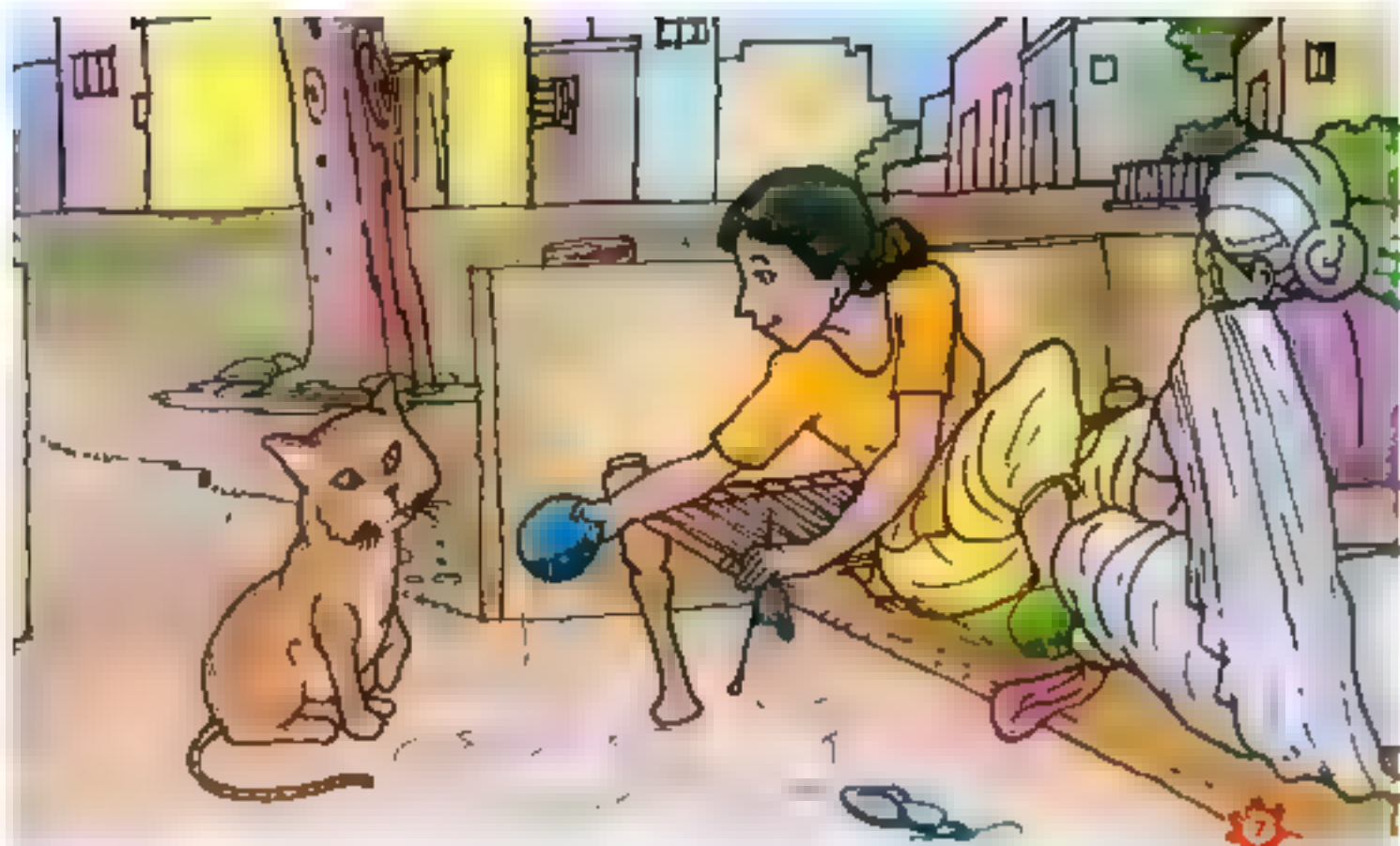
जब ऊन खिंची तो मौसी ने गोले की तरफ़ देखा।
उन्होंने मुनमुन को गोले से अलग कर दिया।
मौसी ने गोले को लपेट कर गोद में रख लिया।
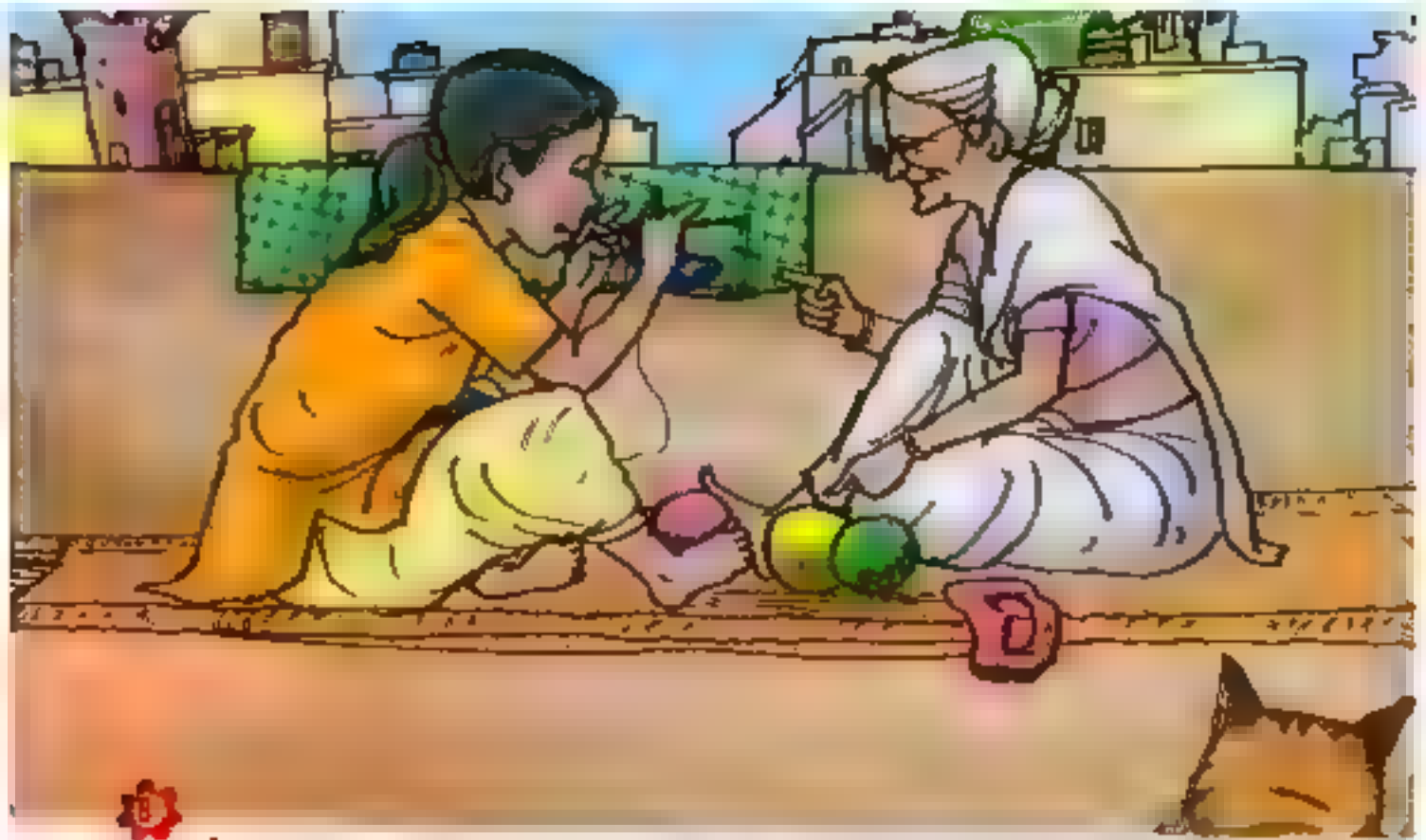
मौसी फिर से मोज़ा बुनने लगी।
मोज़ा थोड़ा-थोड़ा दिखने लगा था।
नानी ने सिलाई पर गुलाबी ऊन के फंदे बना दिए।

मौसी वापस बुनाई करने लगीं।
बुनाई में अब गुलाबी ऊन भी आ रही थी।
गुलाबी गोला भी हिल रहा था।
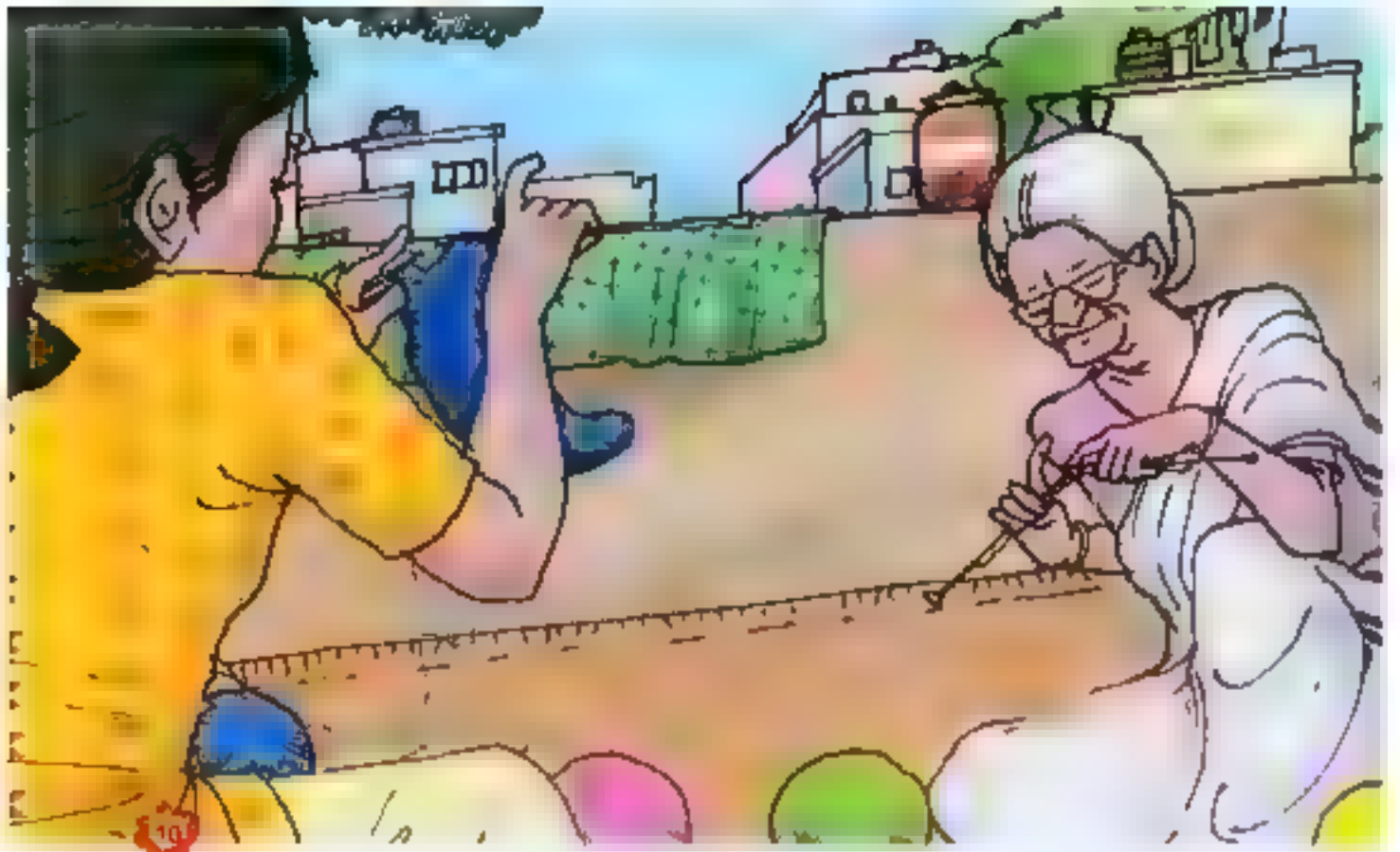
मौसी की बुनाई में गुलाबी फूल दिखने लगा।
मांझा काफी लंबा लटकने लगा था।
नानी ने अपने लिए एक सिलाई पर फंदे डाल लिए।
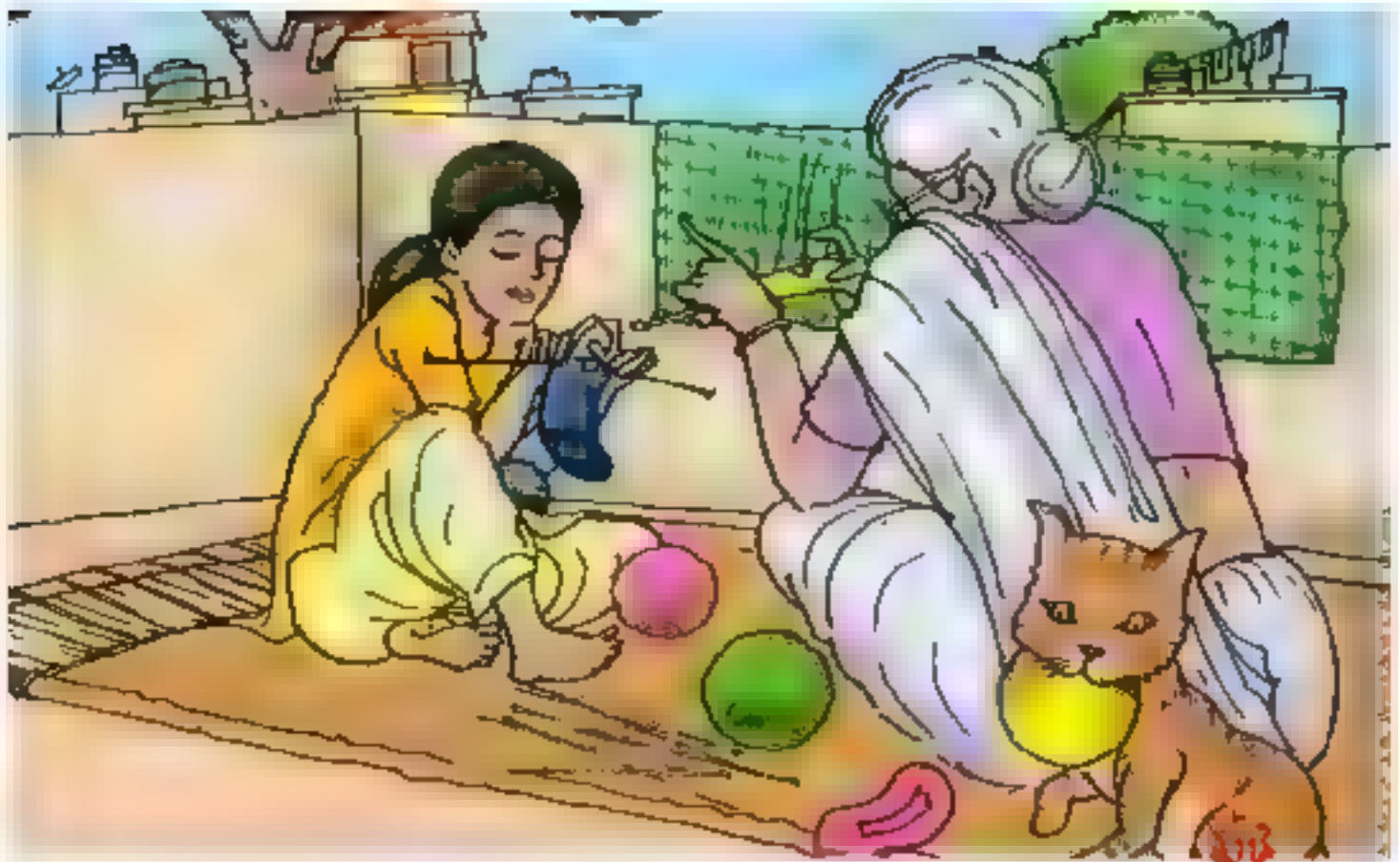
नानी ने भी बुनाई शुरू कर दी।
मुनमुन फिर चुपके से ऊपर आ गई
वह नानी के गोले को नीचे ले जाने लगी।
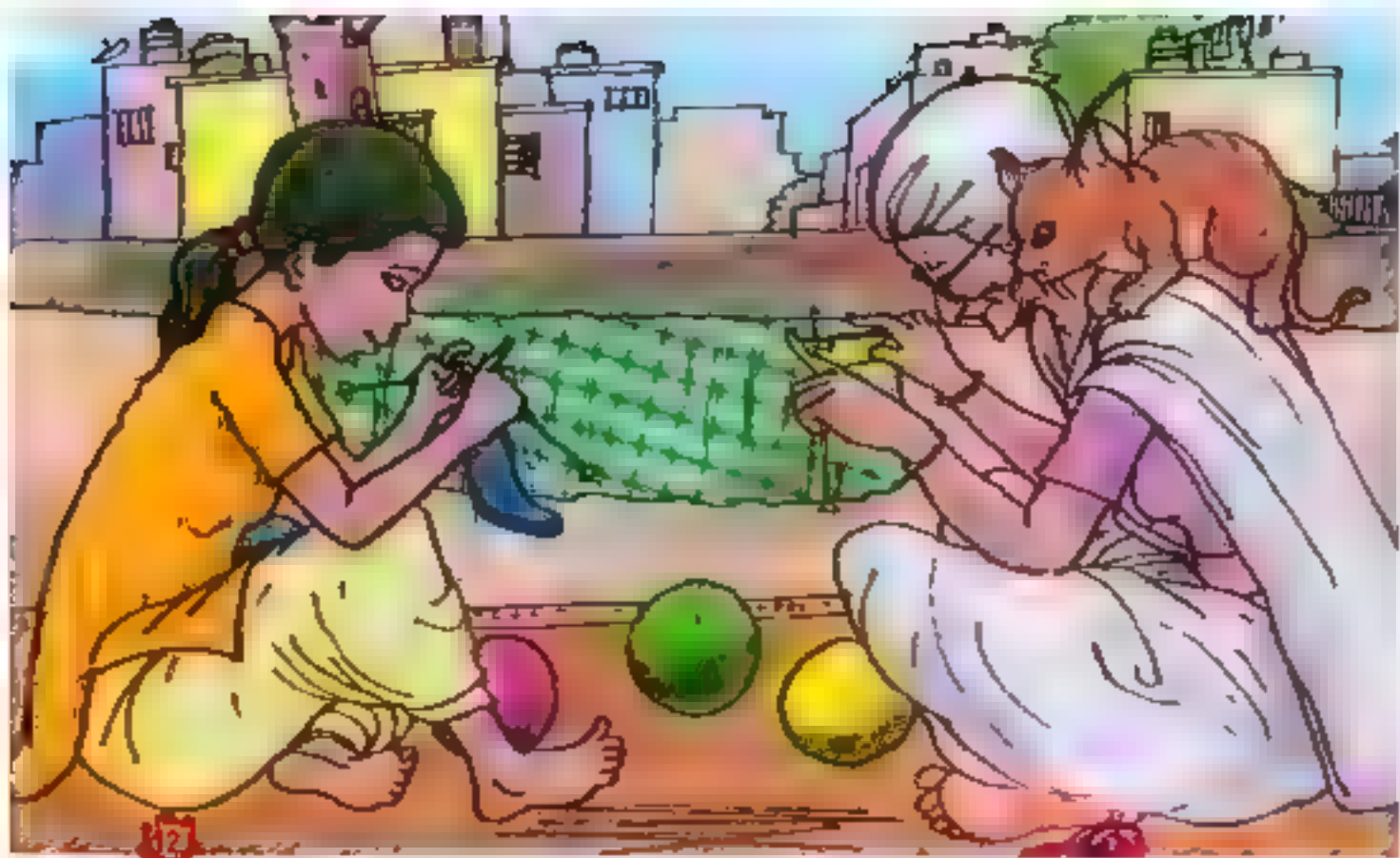
नानी ने मुनमुन के मुँह से गोला छुड़ाया।
उन्होंने मुनमुन को अपने कंधे पर बैठा लिया।
मुनमुन उनके कान पर अपना मुँह रगड़ने लगी।
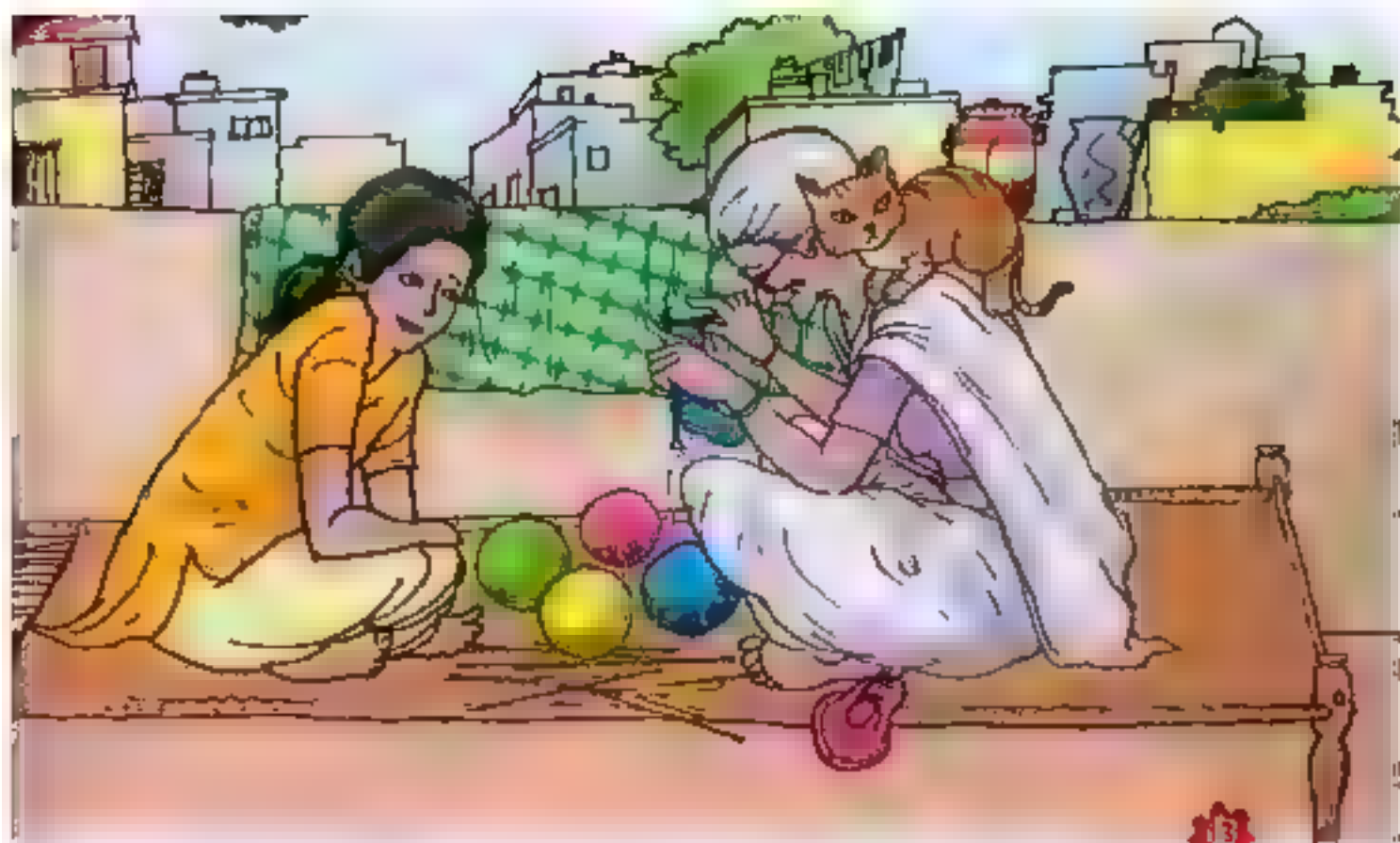
नानी ने मौसी का मोज़ा हाथ में लिया।
उन्होंने मौसी को फंदे बंद करना सिखाया।
मौसी ने उस मोज़े के फंदे बंद कर दिए।
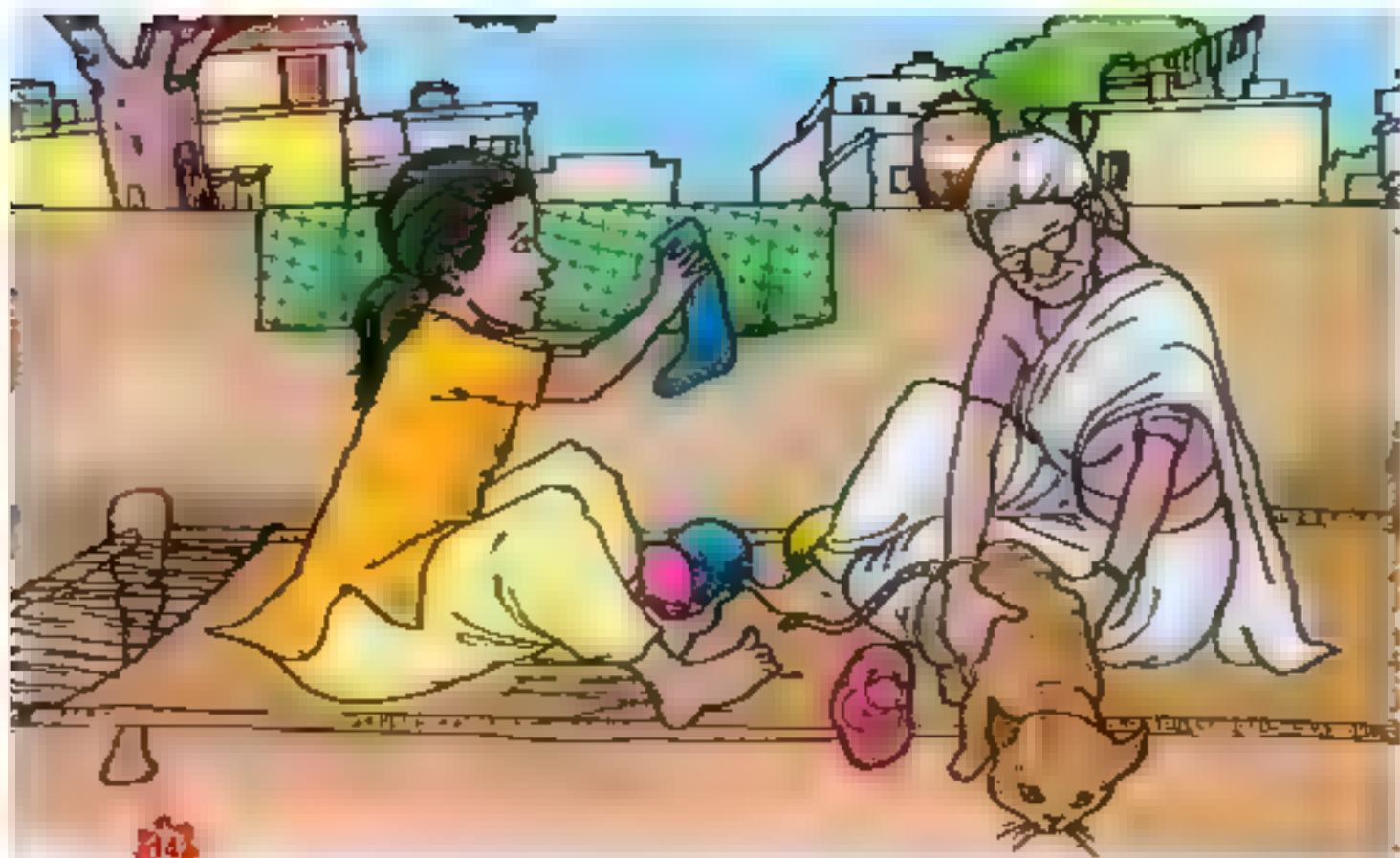
मौसी का एक मोज़ा पूरा हो गया।
वह अपना मोज़ा देखकर बहुत खुश हुईं।
नानी ने मुनमुन को नीचे उतार दिया।
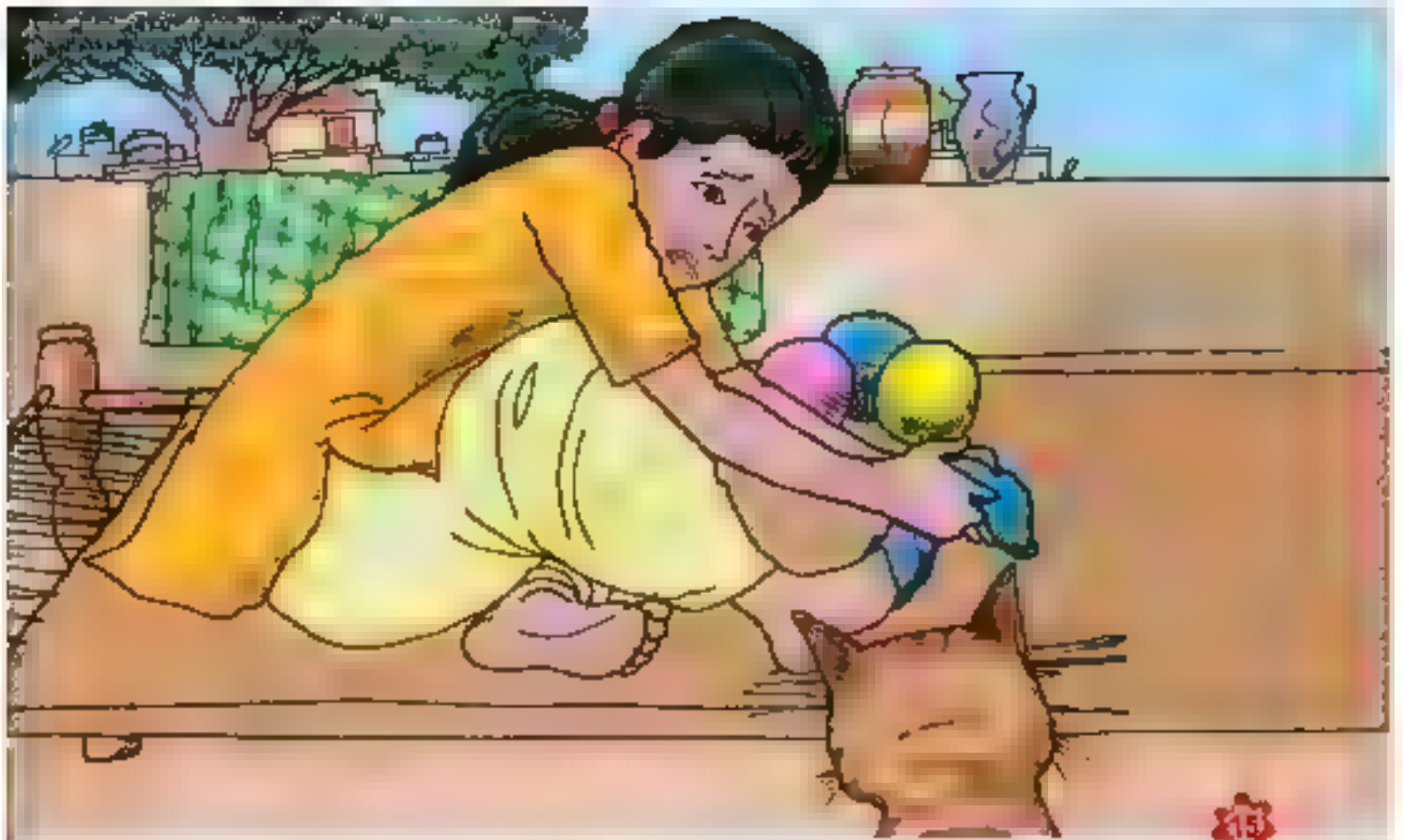
मौसी अपना मोज़ा पहनकर देखने लगी।
मोज़ा मौसी के पैर में आया ही नहीं।
मोज़ा तो छोटा पड़ गया।
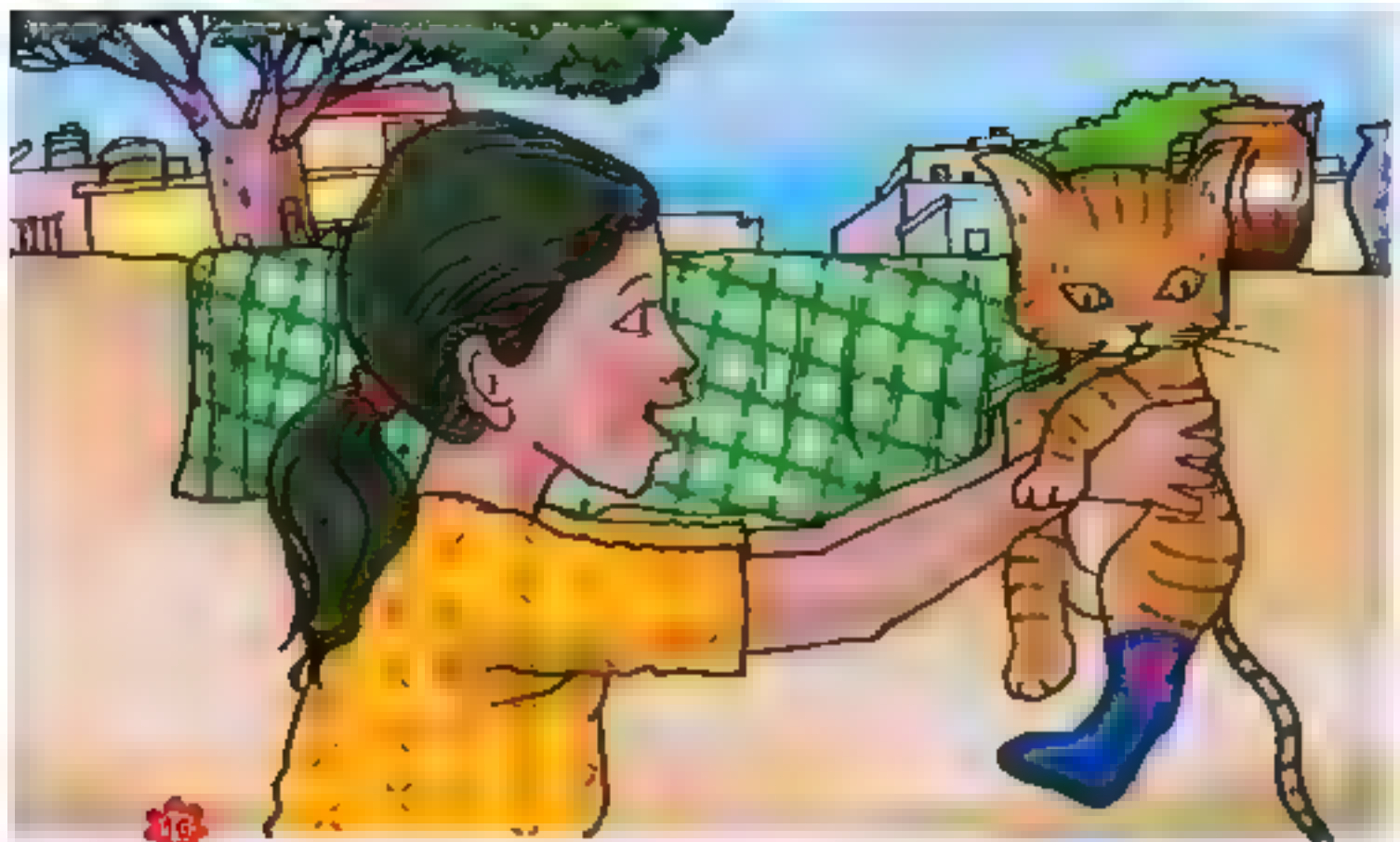
मौसी ने मुनमुन को अपनी गोद मे बैठाया।
उन्होंने मोज़ा मुनमुन को पहना दिया।
मोज़ा मुनमुन को आ गया।
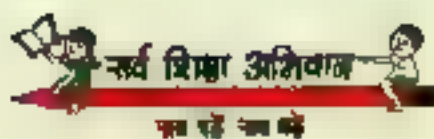
2077

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81 7450-898-0

मेरे जैसी

मेरे जैसी
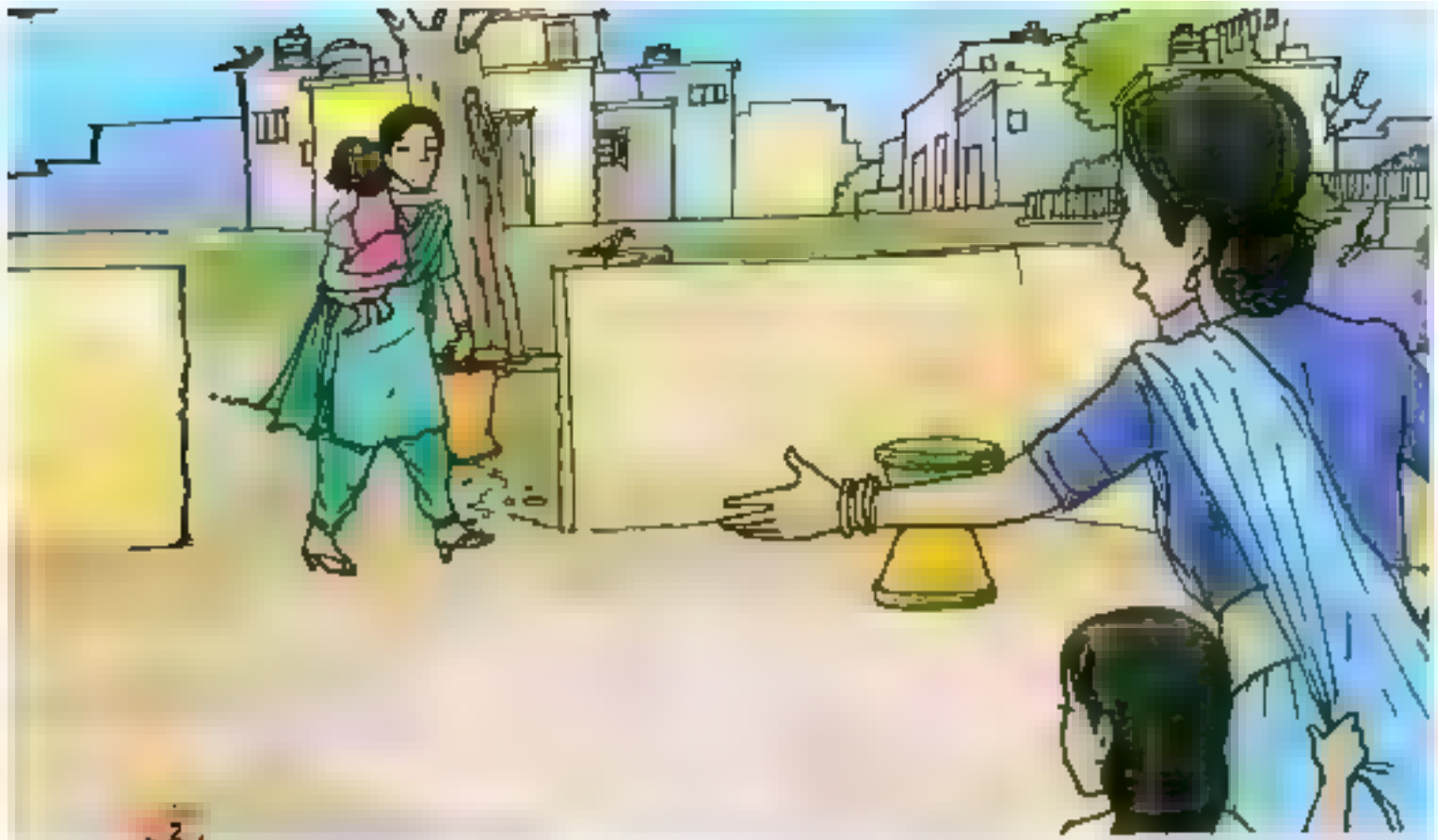
एक दिन रानी की बुआ उसके घर आईं।
बुआ साथ में अपनी छोटी-सी बेटी को भी लाईं।
उनकी बेटी का नाम दीपा था।
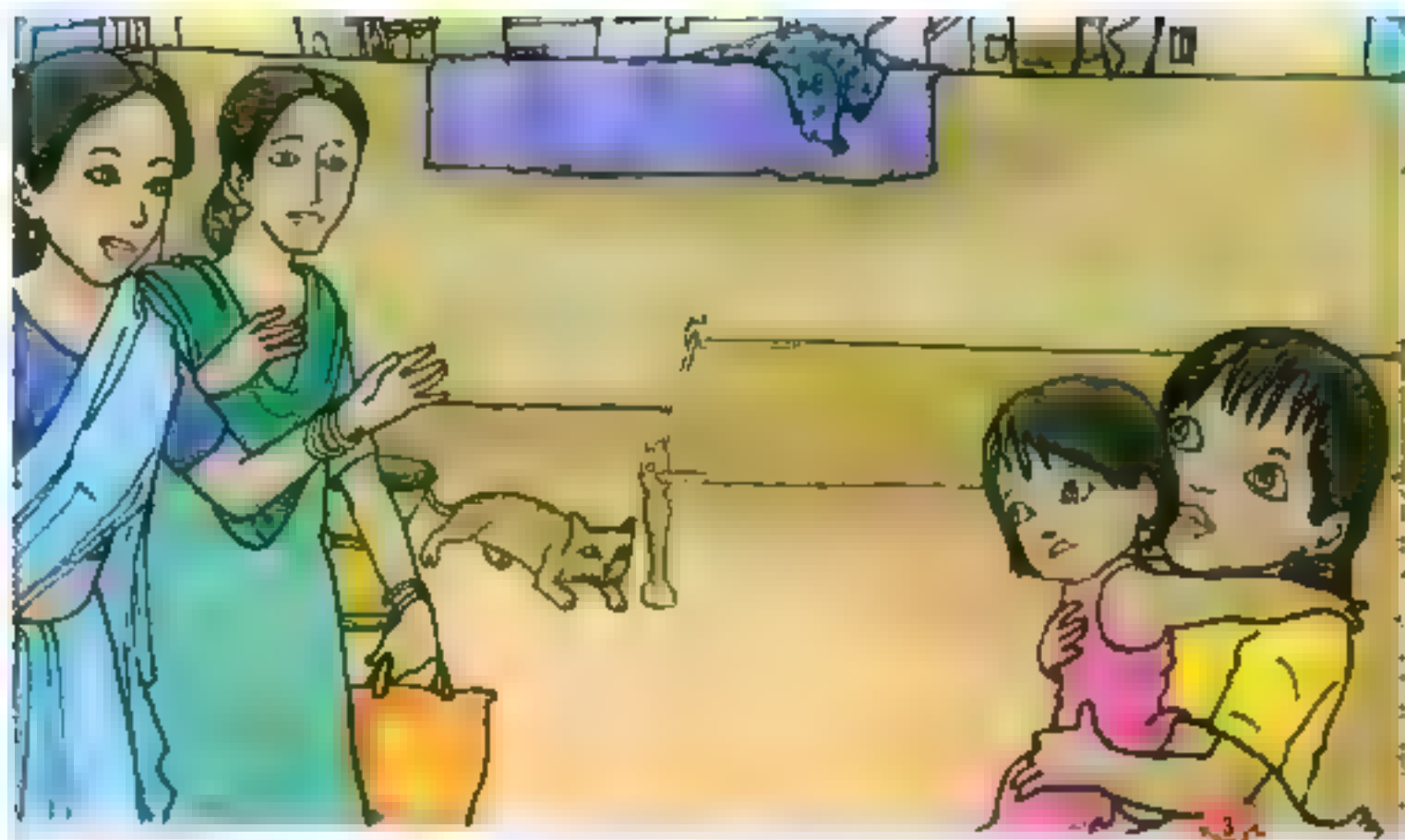
रानी ने दीपा को अपनी गोद में ले लिया।
रानी दीपा को खिलाने लगी।
दीपा सिर्फ़ एक साल की थी।
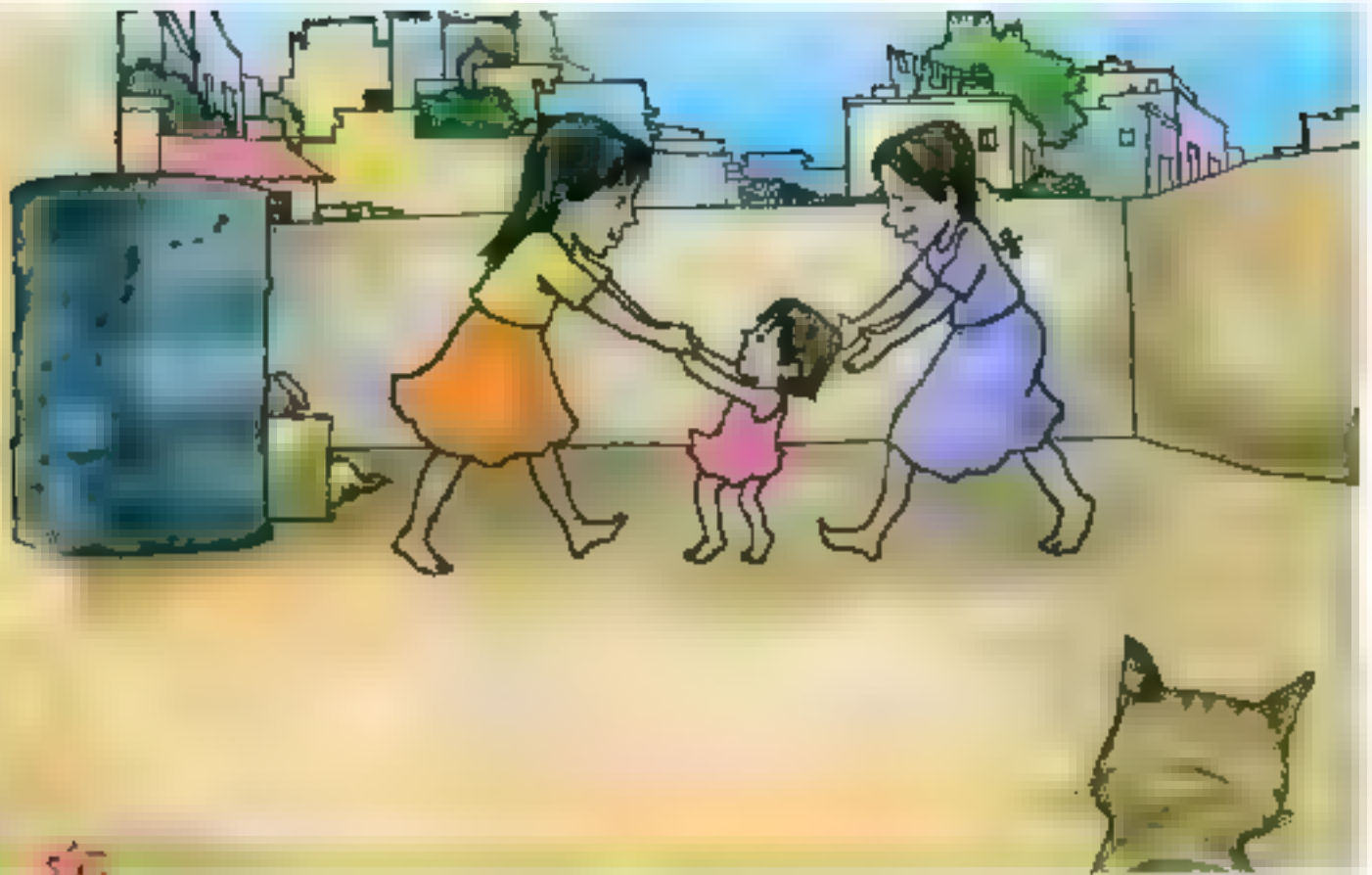
रमा भी वहाँ आ गई।
वह भी रानी के साथ खेलने लगी
रमा और रानी ने दीपा को खूब खिलाया।
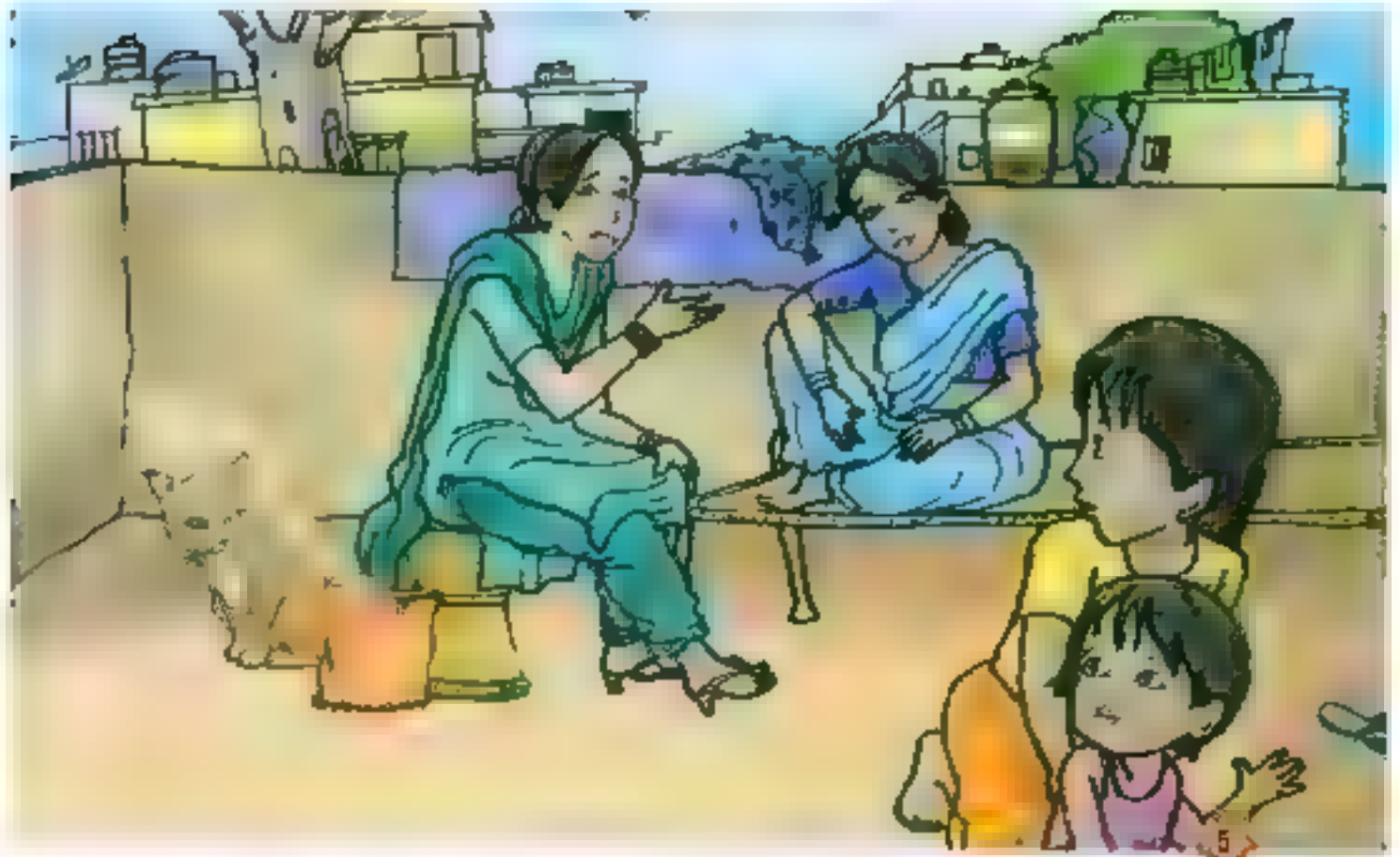
बुआ बोली कि दीपा रानी जैसी दिखती है।
मम्मी भी बोलीं कि दीपा रानी जैसी दिखती है।
रानी दीपा को गौर से देखने लगी।

रानी ने दीपा को बिस्तर पर बैठाया।
उसने दीपा की बाँह से अपनी बाँह मिलाकर देखी।
उसे दीपा की बाँह पतली और अपनी बाँह मोटी लगी।
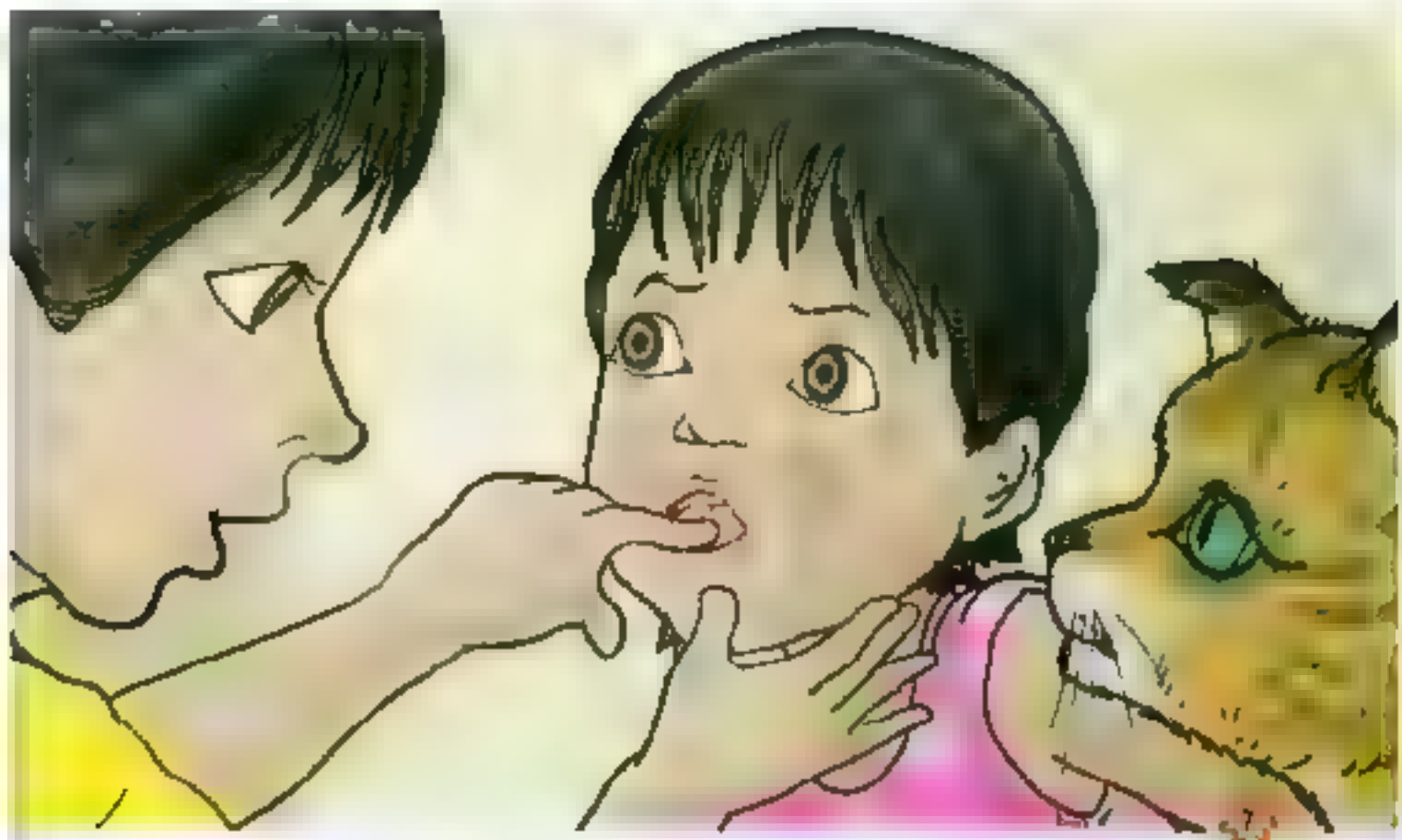
रानी ने दीपा का मुँह खोला।
वह दीपा के दाँत ढूँढ़ने लगी।
दीपा के मुँह में चार ही दाँत थे और रानी के बहुत सारे

रानी ने अपने पैर दीपा के पैरों से मिलाए।
दीपा के पैर छोटे थे और रानी के बड़े।
दीपा के पैर पतले थे और रानी के मोटे।
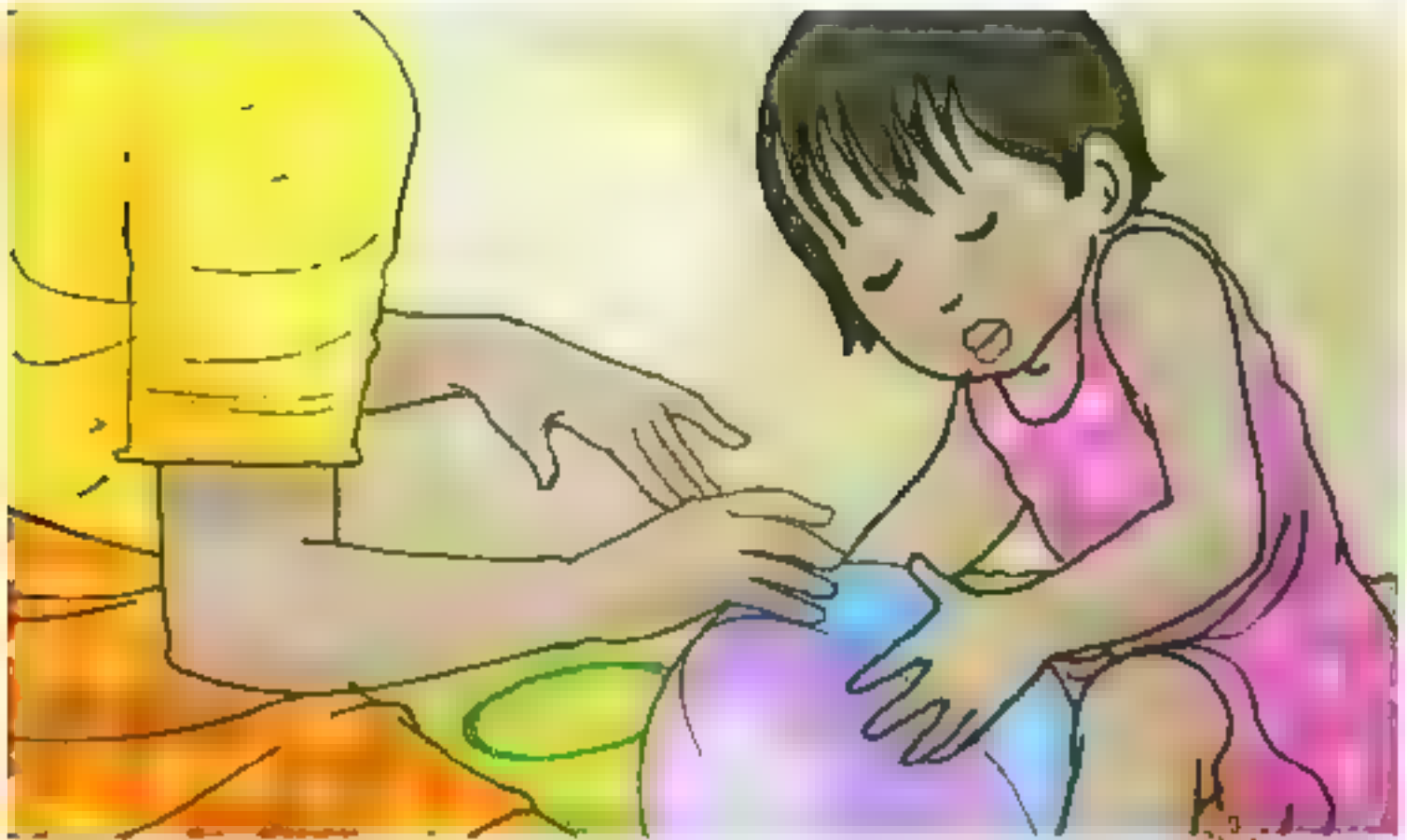
रानी ने अपनी उँगलियाँ दीपा की उँगलियों से मिलाईं।
दीपा की उँगलियाँ छोटी थीं और रानी की बड़ी।
दीपा की उँगलियाँ पतली थीं और रानी की मोटी।
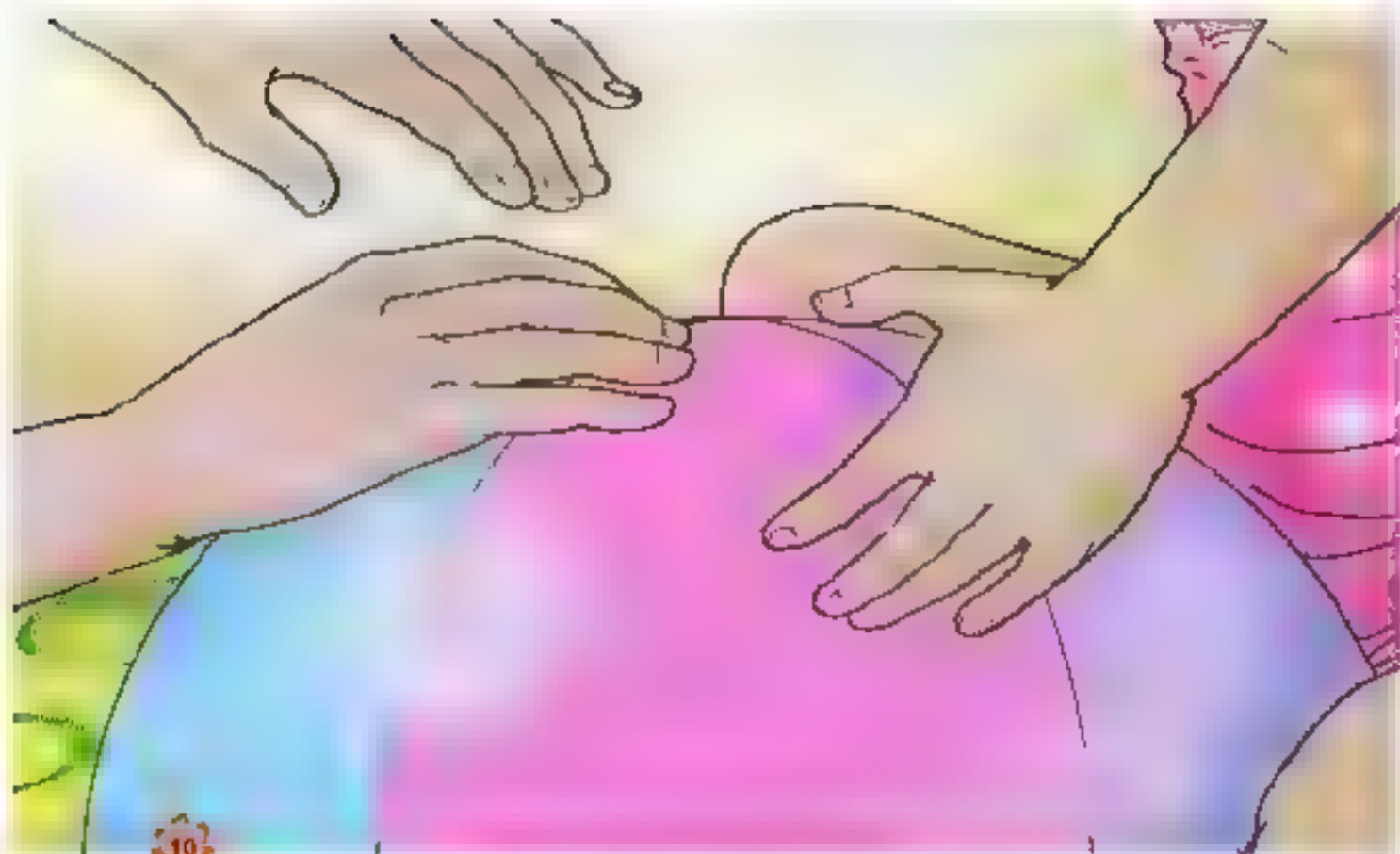
रानी ने अपने नाखून दीपा के नाखून से मिलाए।
दीपा के नाखून बहुत नरम और गुलाबी थे।
रानी के नाखून थोड़े सख्त और कम गुलाबी थे।
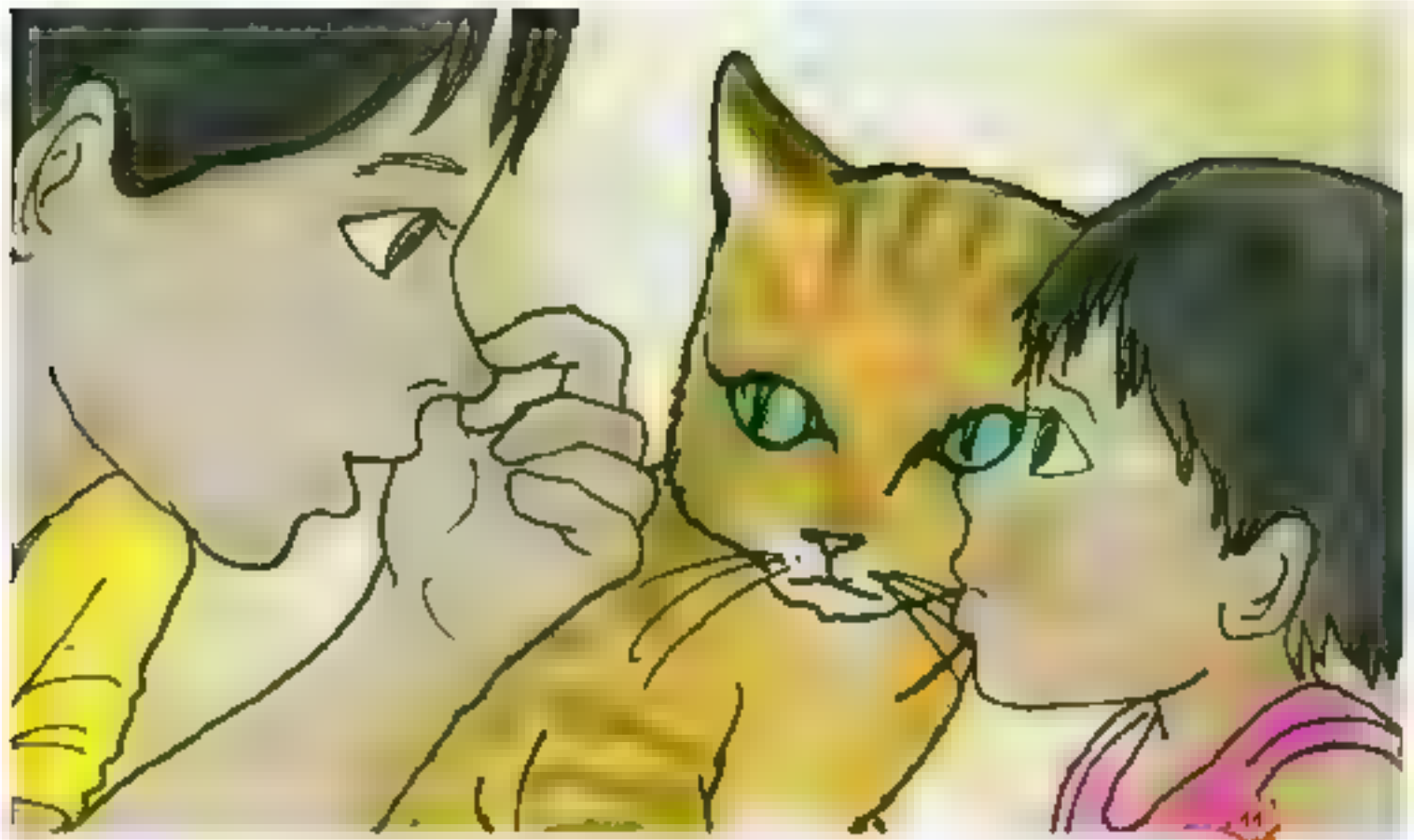
रानी ने अपनी नाक दीपा की नाक से मिलाई।
रानी अपनी नाक छू-छूकर देख रही थी।
वह नाक मिला कर देख नहीं पाई।
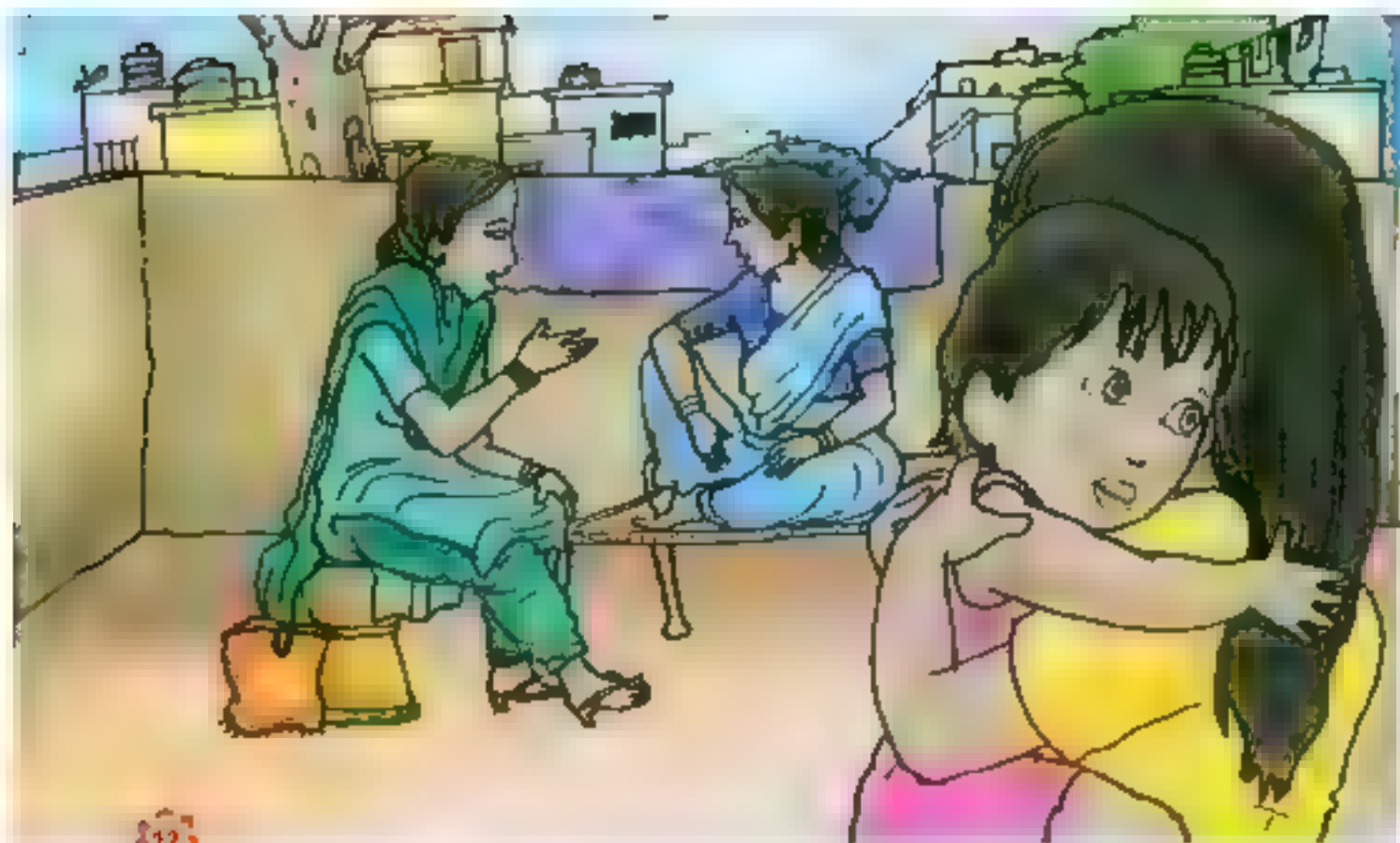
रानी ने दीपा को गोद मे उठाया

वह उसे लेकर बुआ के पास गई।

वहाँ रानी की मम्मी भी थीं।
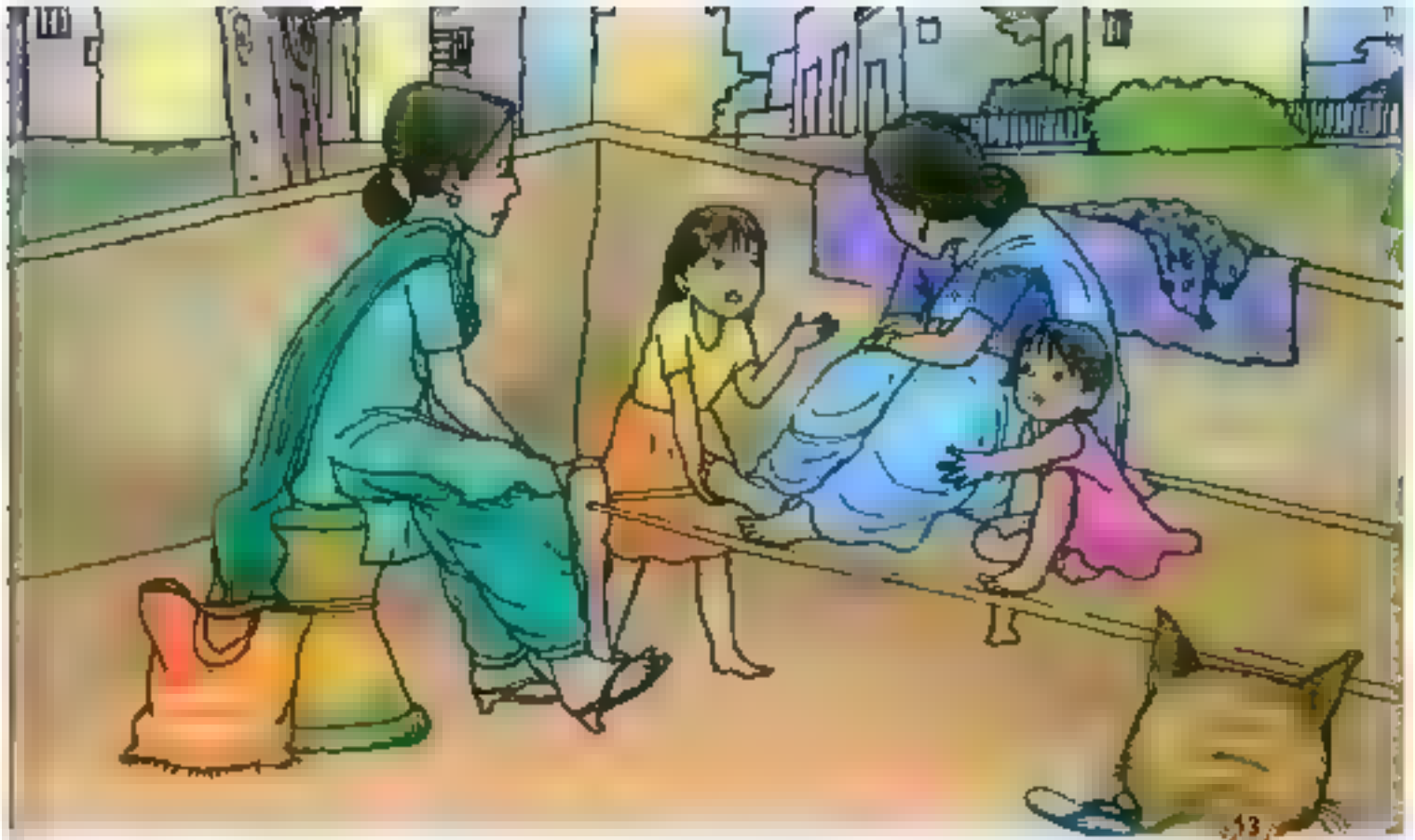
रानी ने बुआ से कहा कि दीपा उसके जैसी नहीं है।
रानी को दीपा अपने जैसी नही लगी।
वह बोली कि दीपा मेरे जैसी नहीं है।
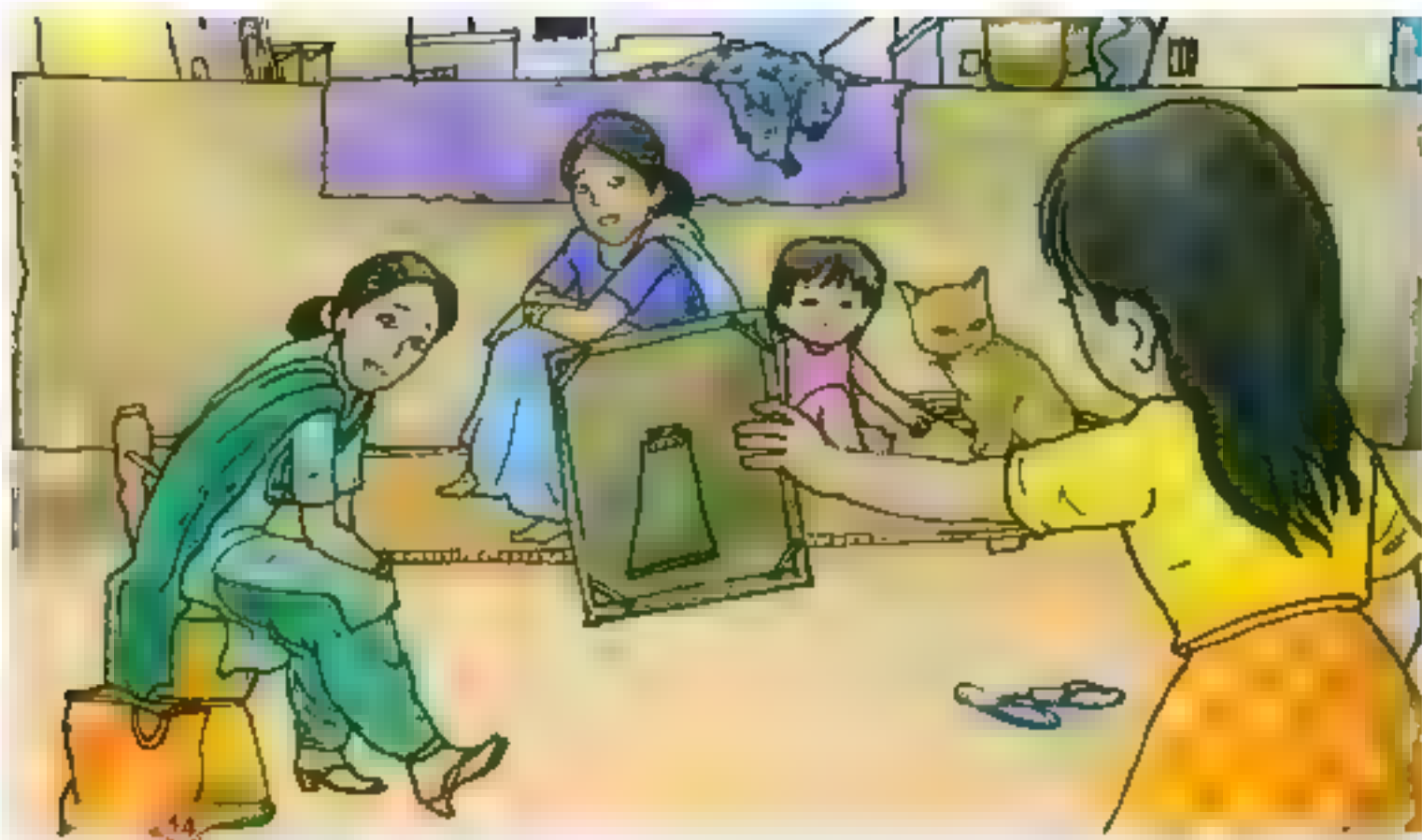
माँ ने रानी को शीशा लाने के लिए कहा।
रानी शीशा लाने अंदर गई।
वह हरे किनारे वाला शीशा लेकर लौटी।
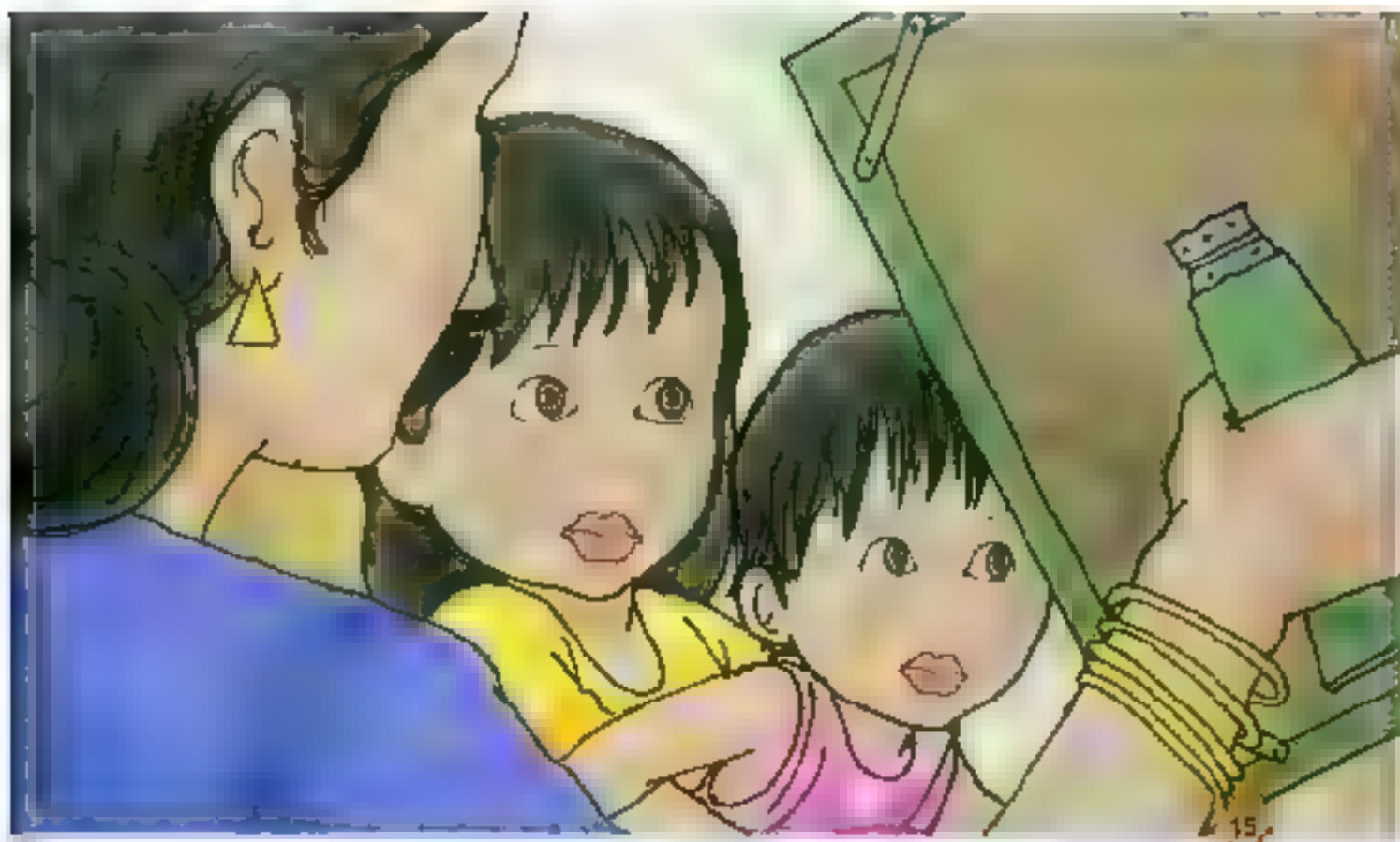
माँ ने रानी से शीशे मे देखने के लिए कहा।
उन्होने दीपा को भी शीशे के सामने खड़ा कर दिया।
रानी अपना और दीपा का चेहरा शीशे में देखने लगी।

रानी ने ध्यान से शीशे में देखा।
उसे दीपा अपने जैसी ही लगी।
वह सिर हिलाकर बोली कि दीपा मेरे जैसी है।

2078

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

रु. 10.00

कूदती जुराबें

माधव

एक दिन माधव सुबह-सुबह तालाब पर रुक गया।
तालाब का ठंडा-ठंडा पानी उसे बहुत पसद है।
उसे तालाब मे डुबकियाँ लगाने में बहुत मज़ा आता है।

माधव ने जूते और जुराबें उतारीं और एक तरफ़ रख दी।
उसने अपने कपड़े भी उतार कर एक तरफ़ रख दिए।
वह पानी मे पैर डाल कर तालाब के किनारे बैठ गया
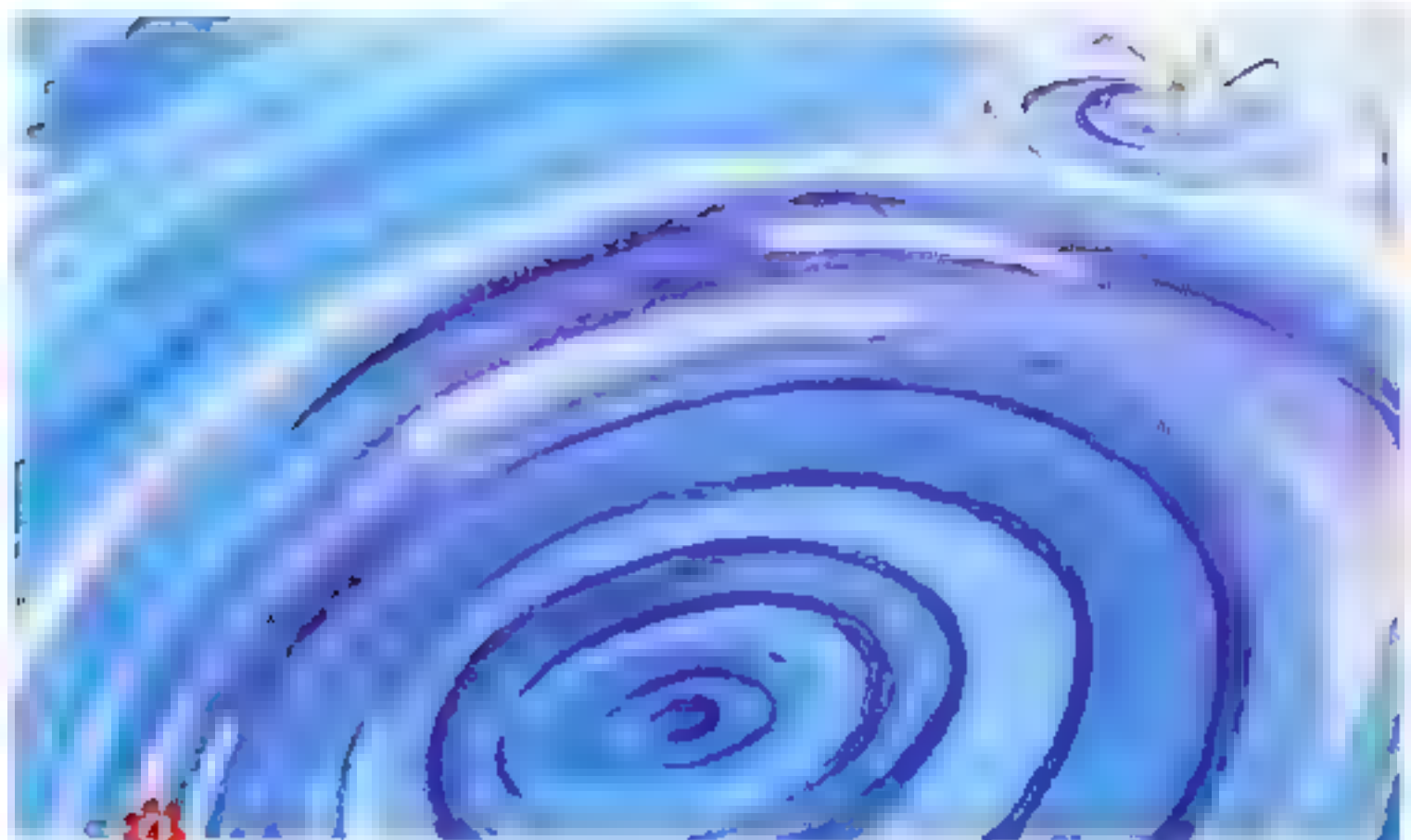
बहुत देर माधव तालाब में छोटे-छोटे पत्थर फेंकता रहा। उसे पत्थर से तालाब में बनने वाले गोले भी पसंद हैं। वह ऐसे गोले बनाने तालाब पर कई बार आता है।

माधव की नज़र तालाब की मछलियों पर पड़ी।
उसने पत्थर फेकना बंद कर दिया।
माधव गौर से मछलियों को देखने लगा।
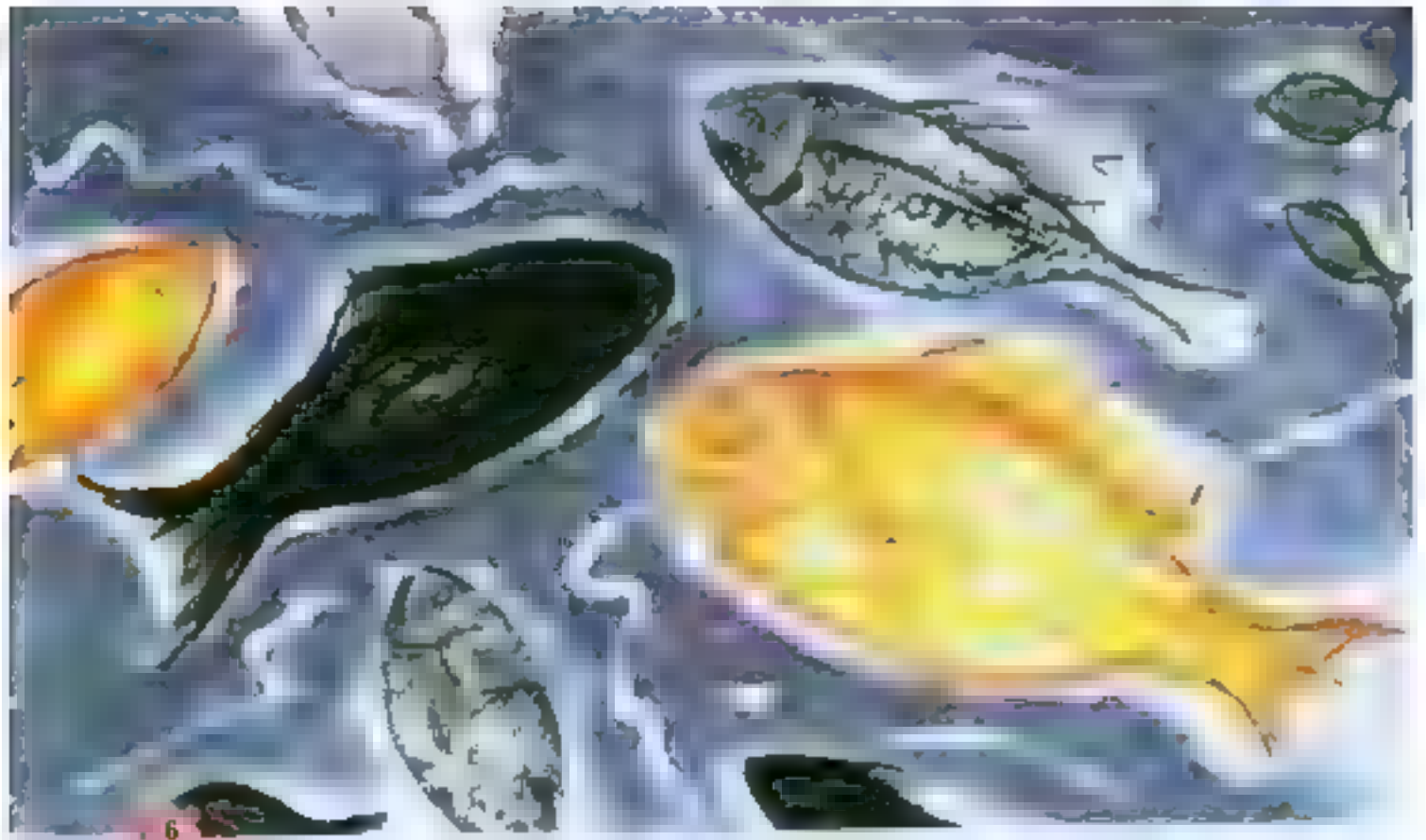
माधव ने काली मछली देखी।
माधव ने सुनहरी मछली देखी।
उसने चमकीली मछली भी देखी।

वह झुककर मछलियों को पास से देखने लगा।
तालाब में बहुत सारी मछलियाँ थीं।
कुछ मछलियाँ छोटी-सी थीं और कुछ बड़ी।
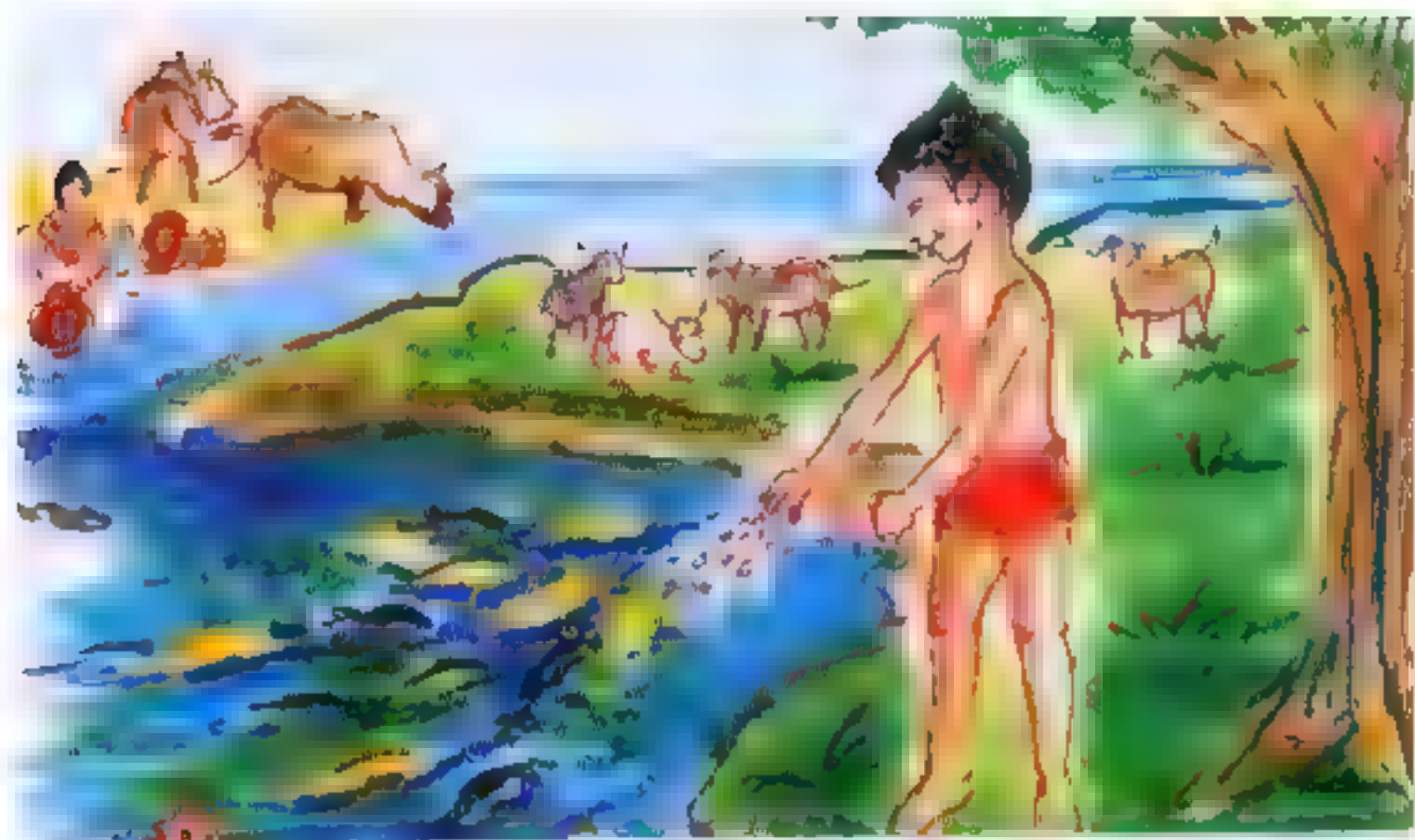
माधव मछलियों को पास बुलाना चाहता था।
उसने तालाब में रोटी के टुकड़े डाले।
रोटी खाने के लिए खूब सारी मछलियाँ आ गईं।

माधव ने मछलियों को पकड़ने की कोशिश की।
सारी मछलियाँ भाग गईं।
एक भी मछली हाथ नहीं आई।
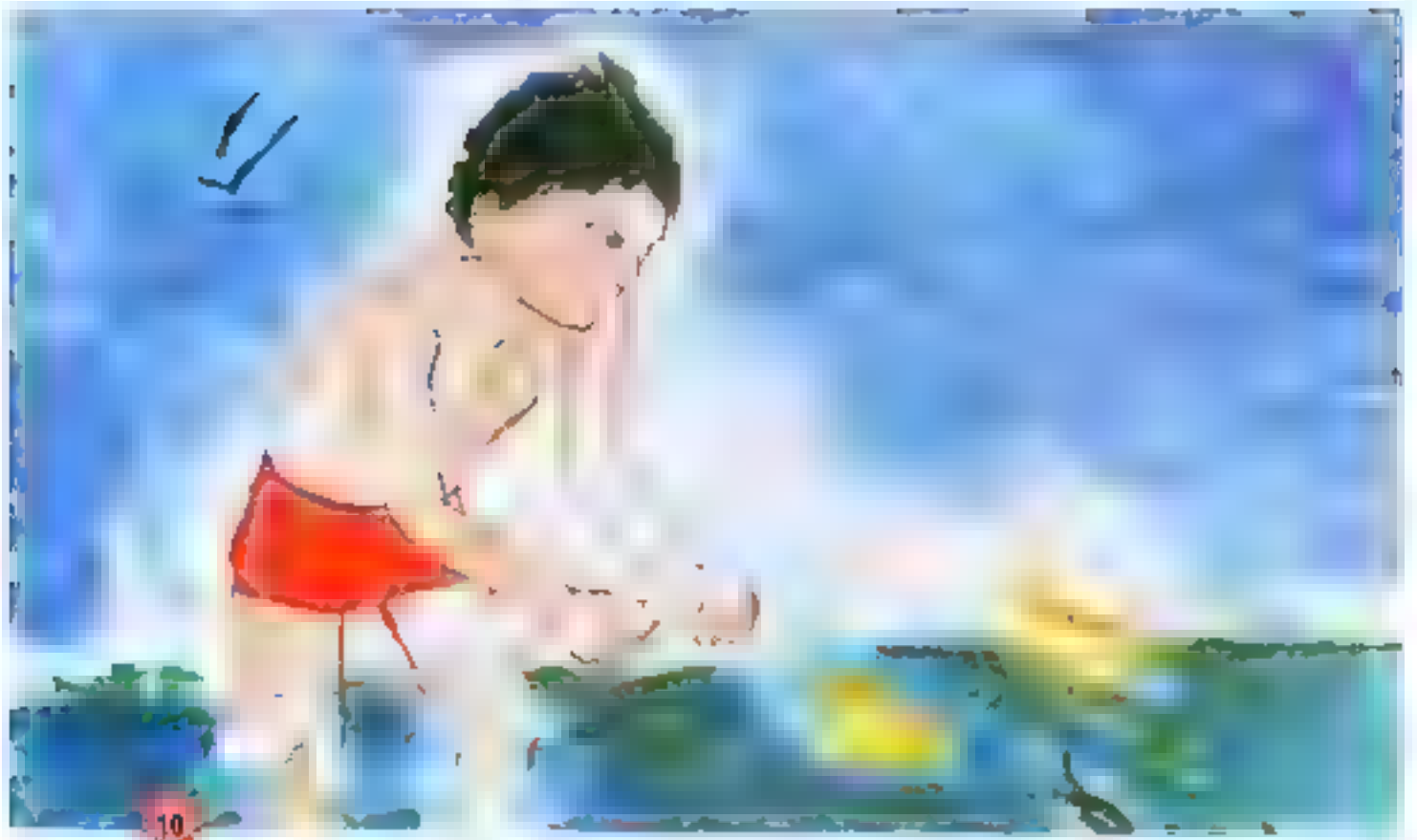
माधव ने मछली पकड़ने के लिए डुबकी लगा दी।
उसने हाथ बढ़ाकर मछलियों को पकड़ने की कोशिश की।
पर मछलियाँ दूर भाग गईं।

माधव को एक तरकीब सूझी।
उसने सोचा कि वह जुराबों में मछलियाँ पकड़ लेगा।
वह अपनी जुराबें उठाने किनारे पर आया।

माधव की जुराबें किनारे पर नहीं थीं।
उसने अपने कपड़े झाड़-झाड़ कर देखे।
उसने जूते में भी देखा।
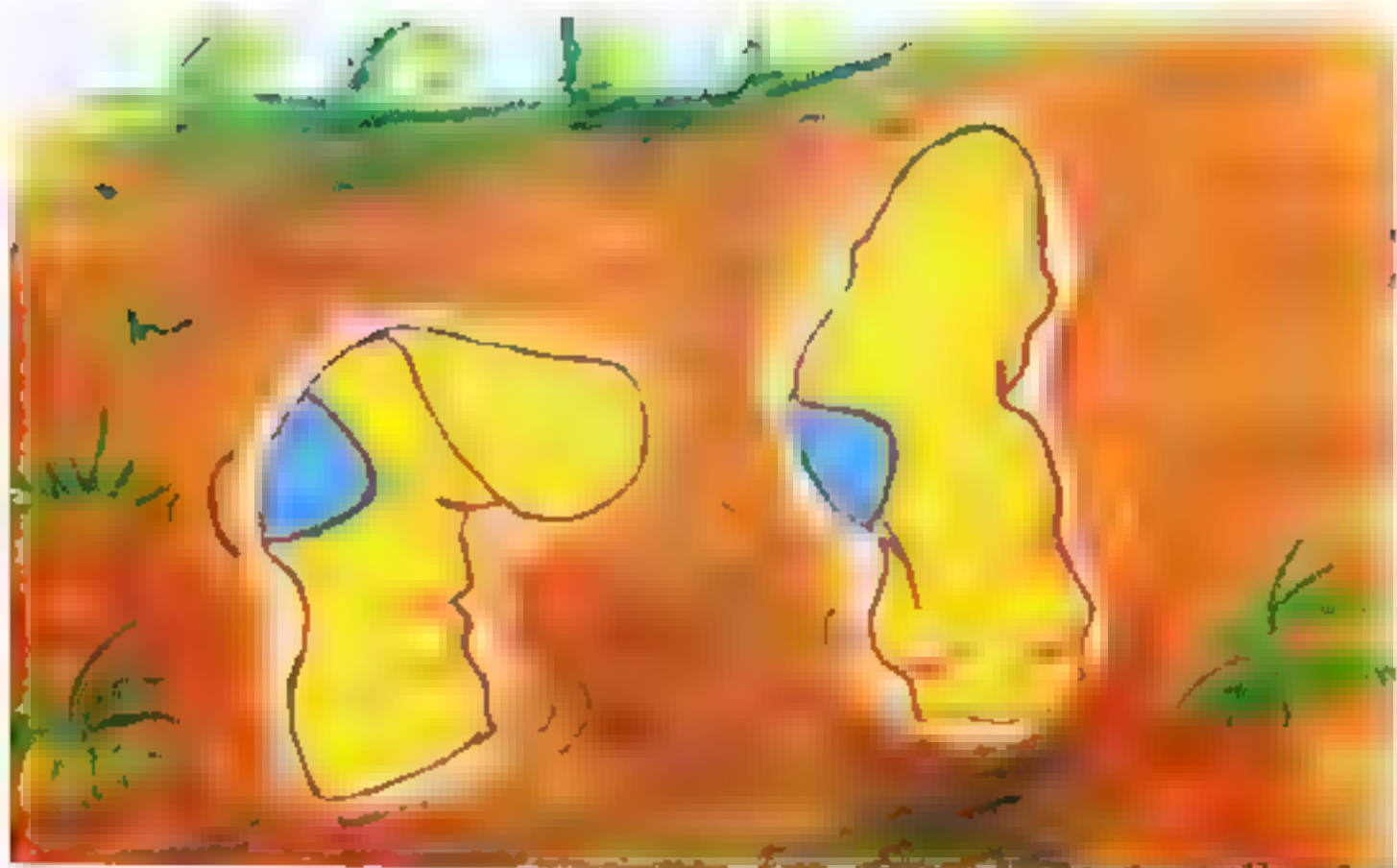
पर उसकी जुराबें किनारे पर नहीं थीं।
माधव की जुराबें तो दूर मैदान में कूद रही थीं।
उसकी नज़र कूदती जुराबों पर पड़ी।

माधव फौरन तालाब से बाहर आ गया।
वह कूदती जुराबों के पीछे भागा।
जुराबें आगे-आगे कूदती रहीं।

माधव तेज़ी से जुराबों के पीछे भागा।
पर वह उनको पकड़ नहीं पाया।
जुराबें कूदती ही रहीं।

जुराबें एक झाड़ी में जाकर अटक गईं।
उनमें से कुछ निकला।
माधव उनको देखकर हँस पड़ा।

सर्व शिक्षा अभियान
स्तर 1
स्तर 2
रु. 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
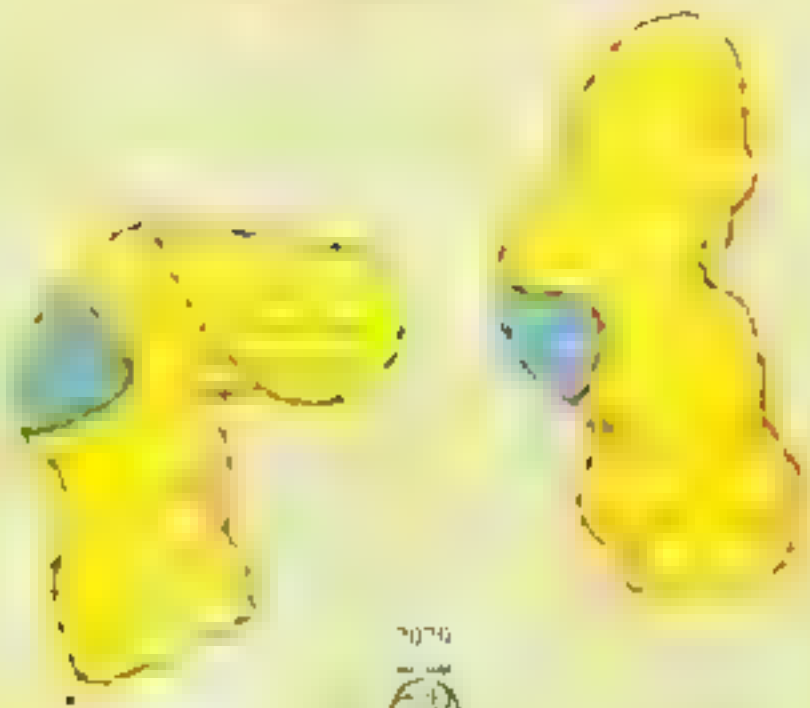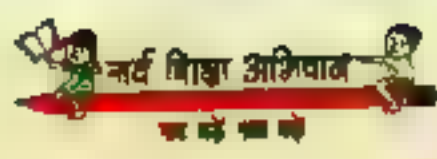
तालाब के मज़े

काजल

माधव

काजल और माधव के गाँव में एक तालाब था।
दोनो तालाब पर रोज़ खेलने जाते थे।
उन्हें तालाब का पानी बहुत अच्छा लगता था।

एक दिन वे दोपहर को तालाब पर पहुँचे।
वहाँ बहुत सारे बगुले आए हुए थे।
तालाब सफ़ेद बगुलों से भरा हुआ था

काजल और माधव इतने सारे बगुले देखकर खुश हो गए।
दोनों कूद-कूद कर बगुलों के बीच भागे।
दोनों ने बगुलो को पकड़ने की कोशिश भी की।

अगले दिन मोनी भी उनके साथ तालाब पर आ गई।
मोनी बगुलों पर भौंकने लगी।
काजल ने उसको प्यार से चुप कराने की कोशिश की।
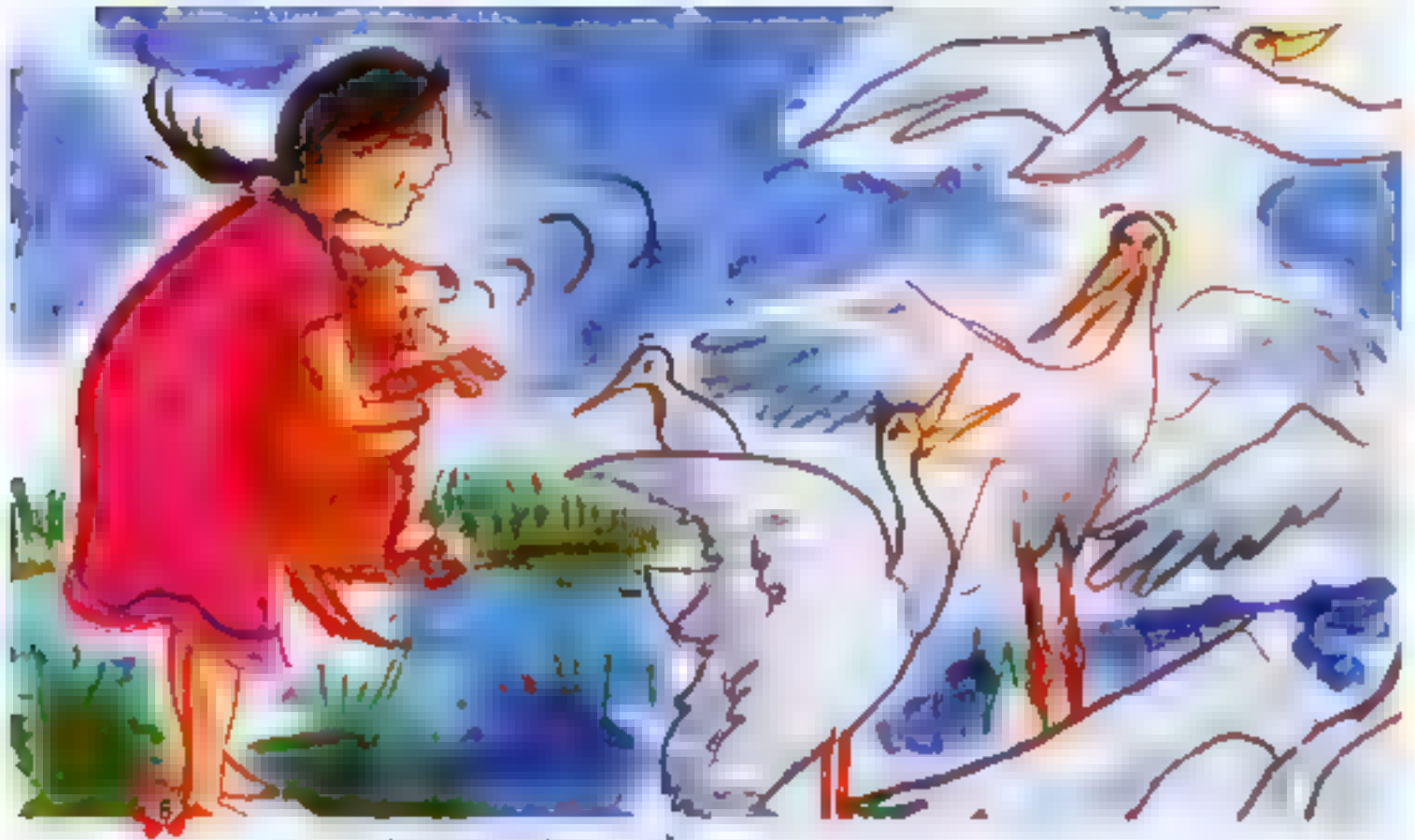
लेकिन मोती भौंकती ही रही।
वह दौड़कर बगुलों पर झपटी
काजल ने उसे गोद में उठा लिया।

माधव और काजल उसको घर छोड़ने चल दिए।
तालाब के उस तरफ़ उन्हें कुछ घोंसले दिखे।
बगुलों ने तालाब के किनारे के पेड़ों पर घोंसले बनाए थे।
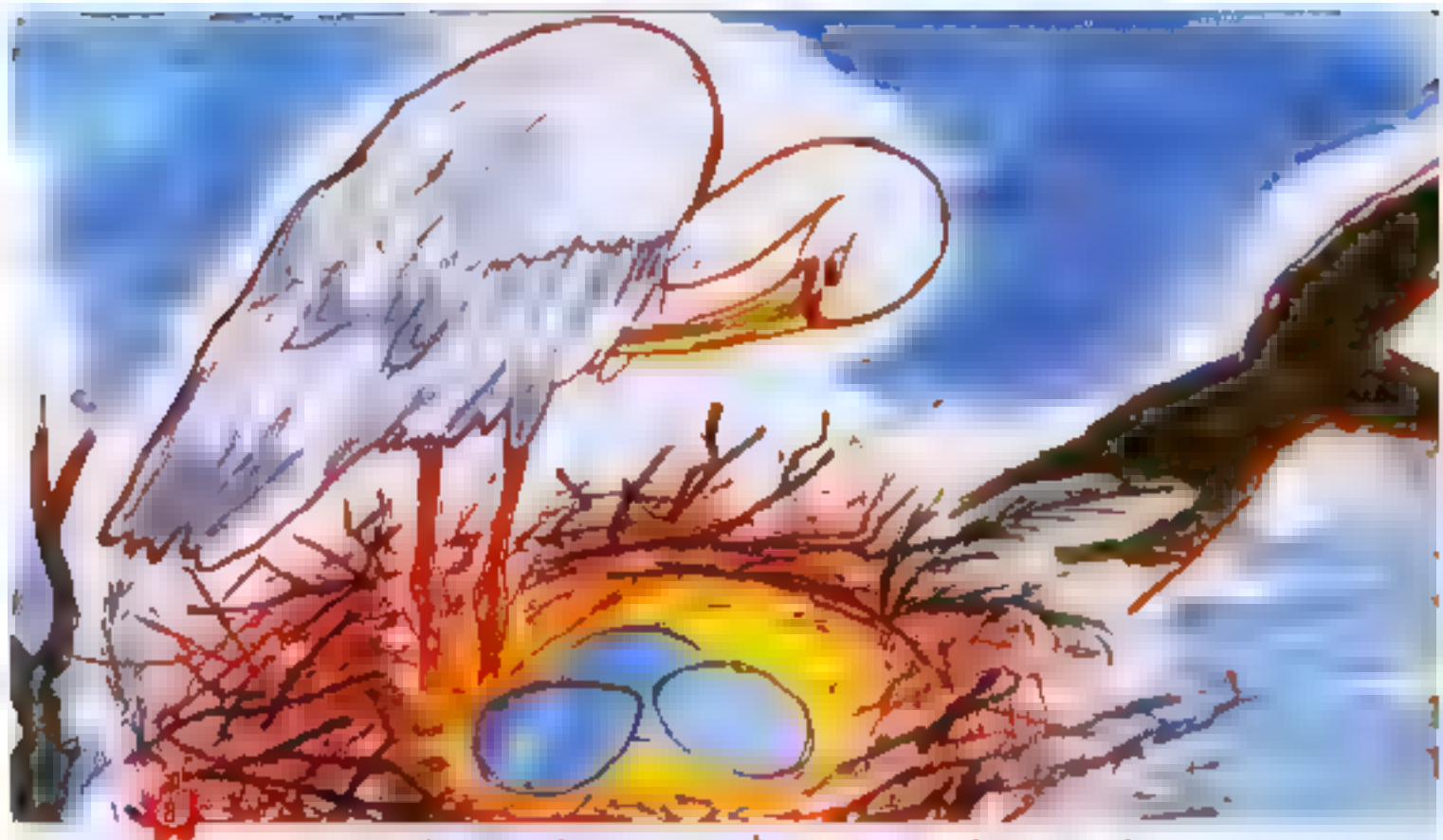
घोंसलो में तिनके,घास और पख लगे हुए थे।
बगुलों के घोंसलों में अंडे भी थे।
काजल और माधव दूर से अंडों को देखते रहे

दोनों रोज़ अडो को देखने लगे।
हर एक घोंसले में तीन या चार अंडे थे।
अंडे हल्के नीले रंग के और छोटे बड़े थे।
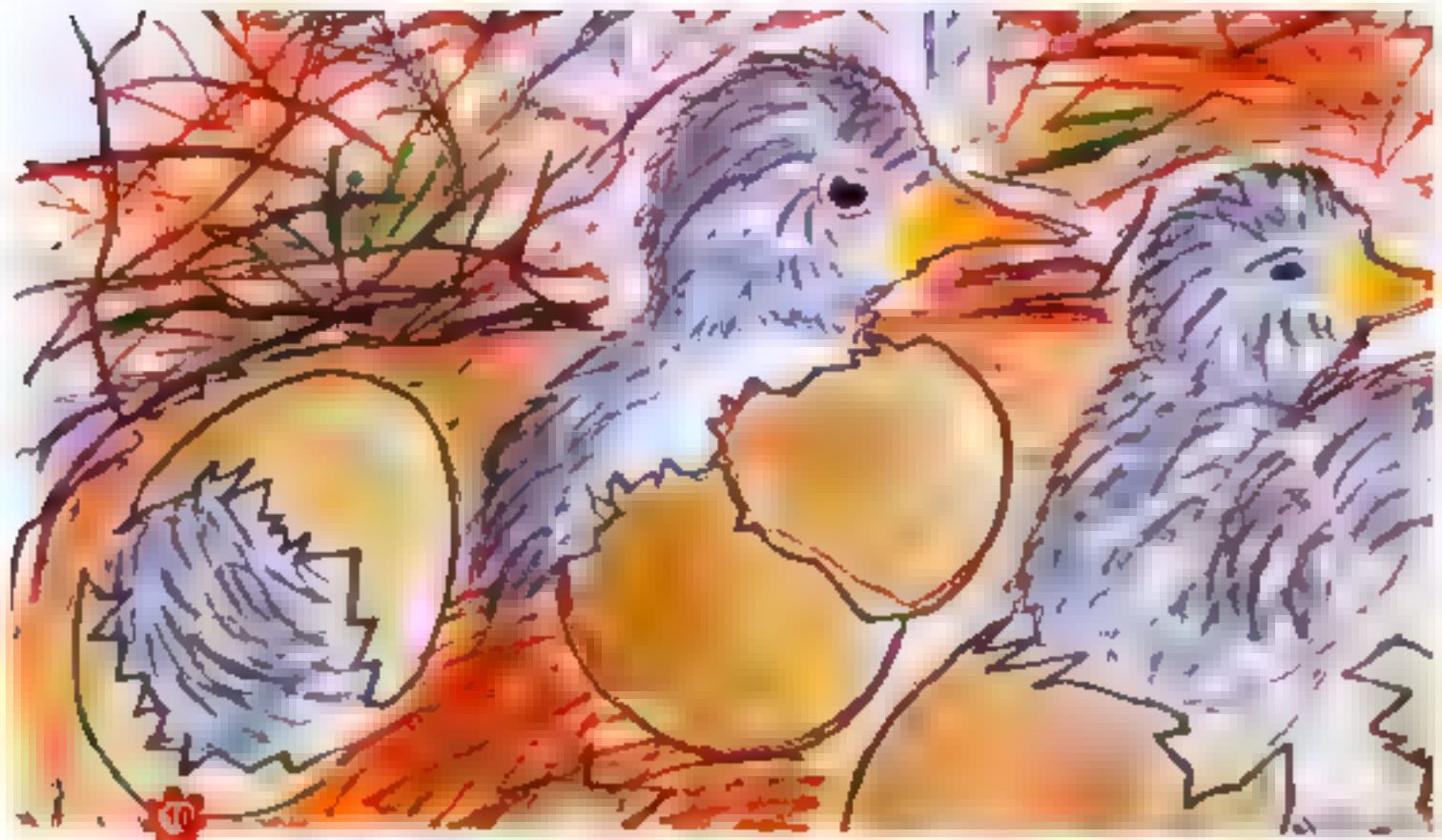
थोड़े दिनों बाद कुछ अंडों का रग मटमैला हो गया।
उनमें से छोटे-छोटे बगुले निकल आए।
छोटे बगुले आवाज़ निकालते और पंख फड़फड़ाते थे।
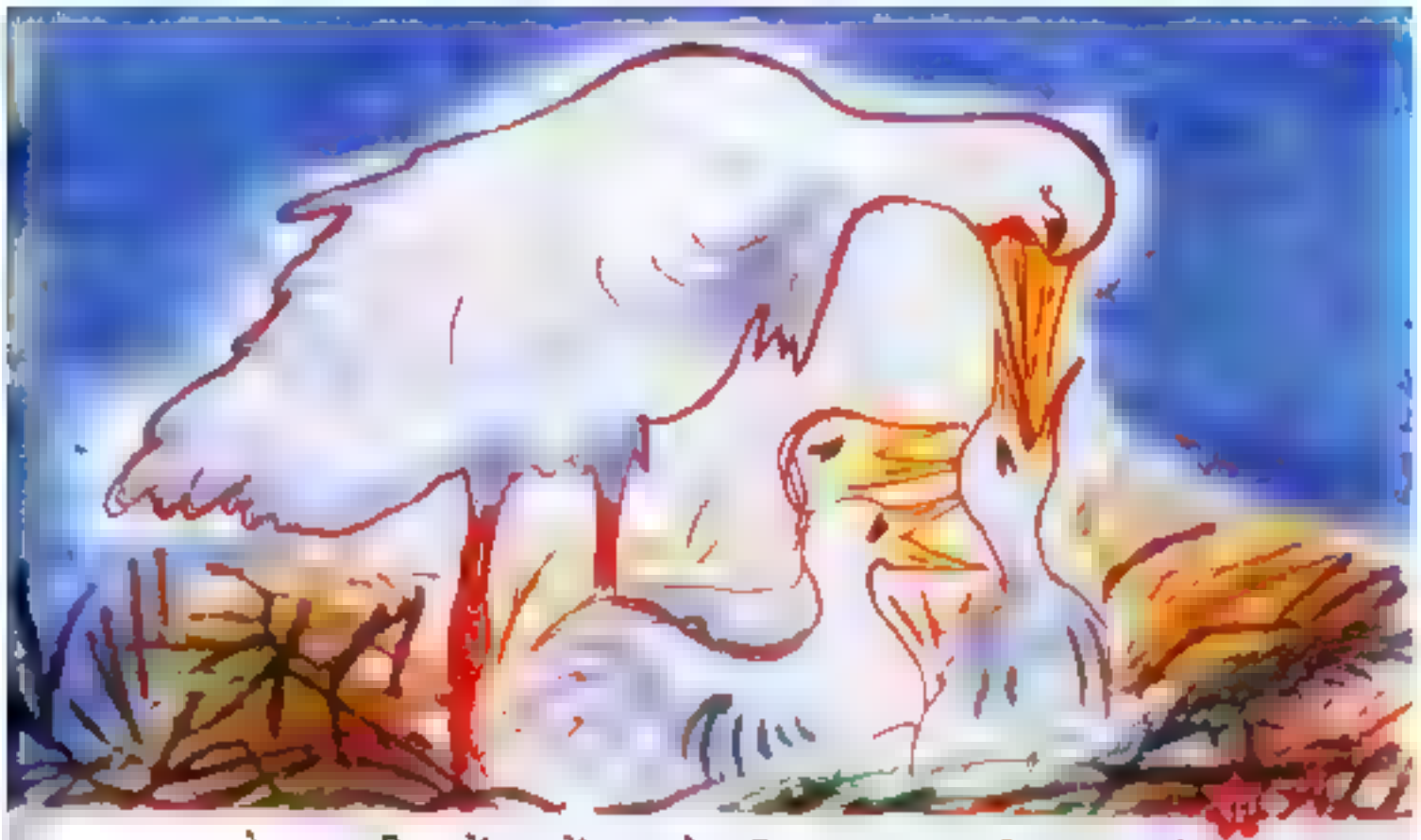
बगुले अपनी चोंच में उनके लिए खाना लेकर आते।
वे बच्चों की चोंच में खाना डालते थे।
काजल और माधव को यह देखने में मज़ा आता था।

छोटे बगुले अब घोंसलों से बाहर भी आते थे।
तालाब के किनारे खूब सारे छोटे छोटे बगुले दिखने लगे।
काजल और माधव छोटे बगुलों के पीछे भागते।

धीरे-धीरे छोटे बगुले बड़े होने लगे।
वे बड़े बगुलों के साथ तालाब में भी बैठने लगे।
वे तालाब में मछली और मेंढ़क भी पकड़ने लगे थे।

एक दिन सारे बगुले वापस अपने घर चले गए।
काजल और माधव ने सबको उड़कर जाते हुए देखा।
उन्हे पता था कि बगुले अगले साल फिर आएँगे।

उस दिन मोनी फिर तालाब पर आ गई।
काजल ने उसे भगाया नहीं
मोनी उन दोनों के साथ ही घूमती रही।

तभी उनकी नज़र तालाब में नहाती भैंसों पर गई।
काजल और माधव भैंसों पर जाकर बैठ गए,
दोनो ने भैंसों की पीठ पर चॉक से अपना नाम भी लिखा।

रू. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (सजिल्द सैट)
978-8, 7450-88, 2

पापा
बबली
मम्मी

एक दिन बबली के घर में सफ़ाई हो रही थी। सारे घर का सामान आँगन में निकला हुआ था। रसोई का सामान भी आँगन में ही था।

रसोई के सामान में बहुत सारे डिब्बे निकले थे।
बबली डिब्बों के ढेर के पास बैठ गई।
बबली ने अपने लिए एक नीला डिब्बा उठा लिया।

बबली ने डिब्बे को हिलाकर देखा।
डिब्बा हिलाने पर छन्न-छन्न की आवाज़ आई।
बबली ने डिब्बे को खूब बजाया।

बबली सारे घर में डिब्बा बजाती घूमी।
बबली सोचने लगी कि डिब्बे में क्या होगा।
उसने डिब्बा खोलकर देखा

डिब्बे में चावल के दाने थे।
बबली ने डिब्बे को बंद कर दिया।
पहले की तरह उसे बजाती रही।

बबली डिब्बे को अपने साथ लेकर सोई।
रात को बबली के बिस्तर पर एक चूहा आया।
चूहा डिब्बे के सारे चावल खा गया।

बबली ने सुबह देखा कि डिब्बा खुला पड़ा था।
चावल के दाने गायब थे।
उसने माँ से और चावल माँगे।

माँ ने चावल देने से मना कर दिया।
माँ बोली चावल खेलने की चीज़ नही है।
चावल तो खाने के लिए होता है।

बबली बहुत उदास हो गई।
वह छत पर जाकर बैठ गई।
वहाँ धुले हुए कपड़े सूख रहे थे।

बबली की नज़र सलवार पर पड़ी।
सलवार का नाड़ा लटक रहा था।
बबली को एक तरकीब सूझी।

बबली ने नाड़ा खींचकर निकाल लिया।
उसने नाड़े का एक सिरा डिब्बे से बाँध दिया।
नाड़े का दूसरा सिरा डिब्बे के दूसरी तरफ़ बाँध दिया।

डिब्बे से एक ढोलक बन गई।
बबली ने ढोलक अपने गले में पहन ली।
वह ढोलक बजा-बजा कर छत पर नाची।
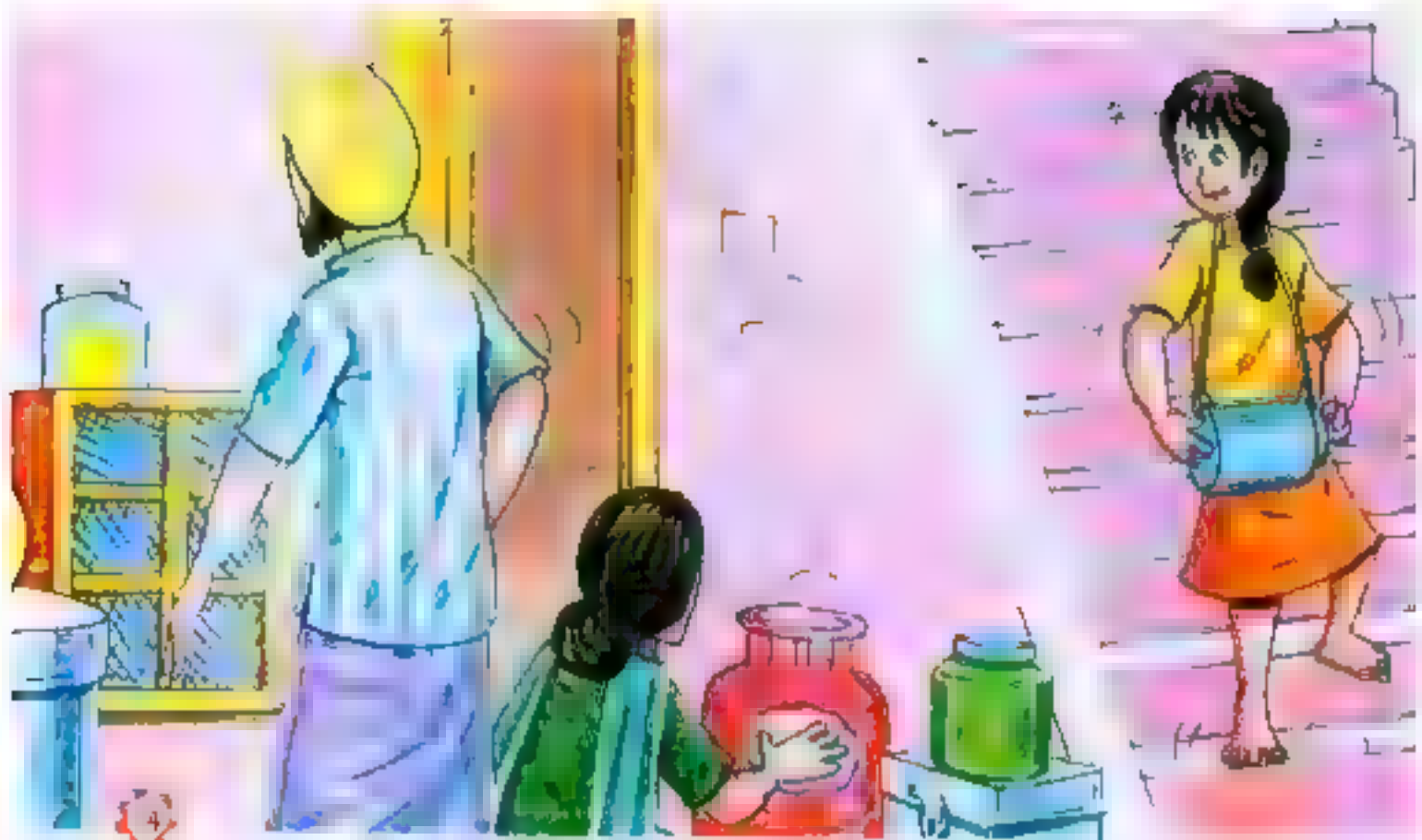
बबली ढोलक बजाते हुए नीचे उतरी।
नीचे अभी भी सफ़ाई हो रही थी।
सामान अभी भी आँगन में ही पड़ा हुआ था।

माँ डिब्बों को साफ़ कर रही थी।
पापा डिब्बों को अंदर ले जाकर रख रहे थे।
जीत सामान में कुछ ढूँढ़ रहा था।

सारे लोग बबली की ढोलक की आवाज़ सुनने लगे।
ढप-ढप-ढप-ढप-ढप ढप-ढप
बबली गाना भी गा रही थी।
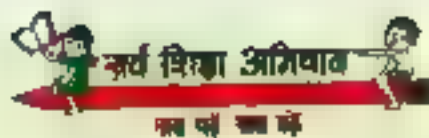
रु 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पढ़ना है समझना
झूला

झूला
बबली
जीत

एक दिन जीत और बबली टायर से खेल रहे थे।
उनके पास एक काले रंग का चौड़ा सा टायर था।
दोनों अपनी-अपनी डंडी से उसे चला रहे थे।

बबली बोली कि वह टायर बहुत तेज़ दौड़ाती है।
गोल-गोल दौड़ता हुआ टायर कितना अच्छा लगता है।
जीत बोला कि उसे तो झूले पर मज़ा आता है।

यह सुनकर बबली का मन झूला झूलने को करने लगा।
जीत को भी झूला झूलने की इच्छा हुई।
दोनों मिलकर झूला ढूँढ़ने लगे।

दोनों ने दूर दूर तक झूला ढूँढ़ा।
पर झूला कहीं नहीं मिला ।
वे सोचने लगे कि क्या करें।

उस मैदान में बहुत सारे पेड़ थे।
कई पेड़ों की डालियाँ बहुत नीचे आ गई थीं।
दोनों को एक तरकीब सूझी।

जीत और बबली डाली पर लटक कर झूलने लगे।
दोनों को खूब मज़ा आया।
लेकिन वे ज़्यादा देर तक नहीं झूल पाए।

बबली के दोनो हाथ छिल गए थे।
जीत की हथेलियों में जलन हो रही थी।
दोनों हाथ झाड़कर नीचे बैठ गए।

वहाँ एक लोहे का पाइप लगा हुआ था।
बबली की नज़र उस पाइप पर पड़ी।
उसने जीत को वह पाइप दिखाया।

जीत और बबली भागकर पाइप के पास पहुँच गए।
दोनों पाइप से लटककर झूलने लगे।
दोनों को खूब मज़ा आया।

लेकिन जीत और बबली ज़्यादा देर नहीं झूल पाए।
जीत के हाथ में दर्द हो रहा था।
बबली भी हाथ पकड़कर बैठ गई।
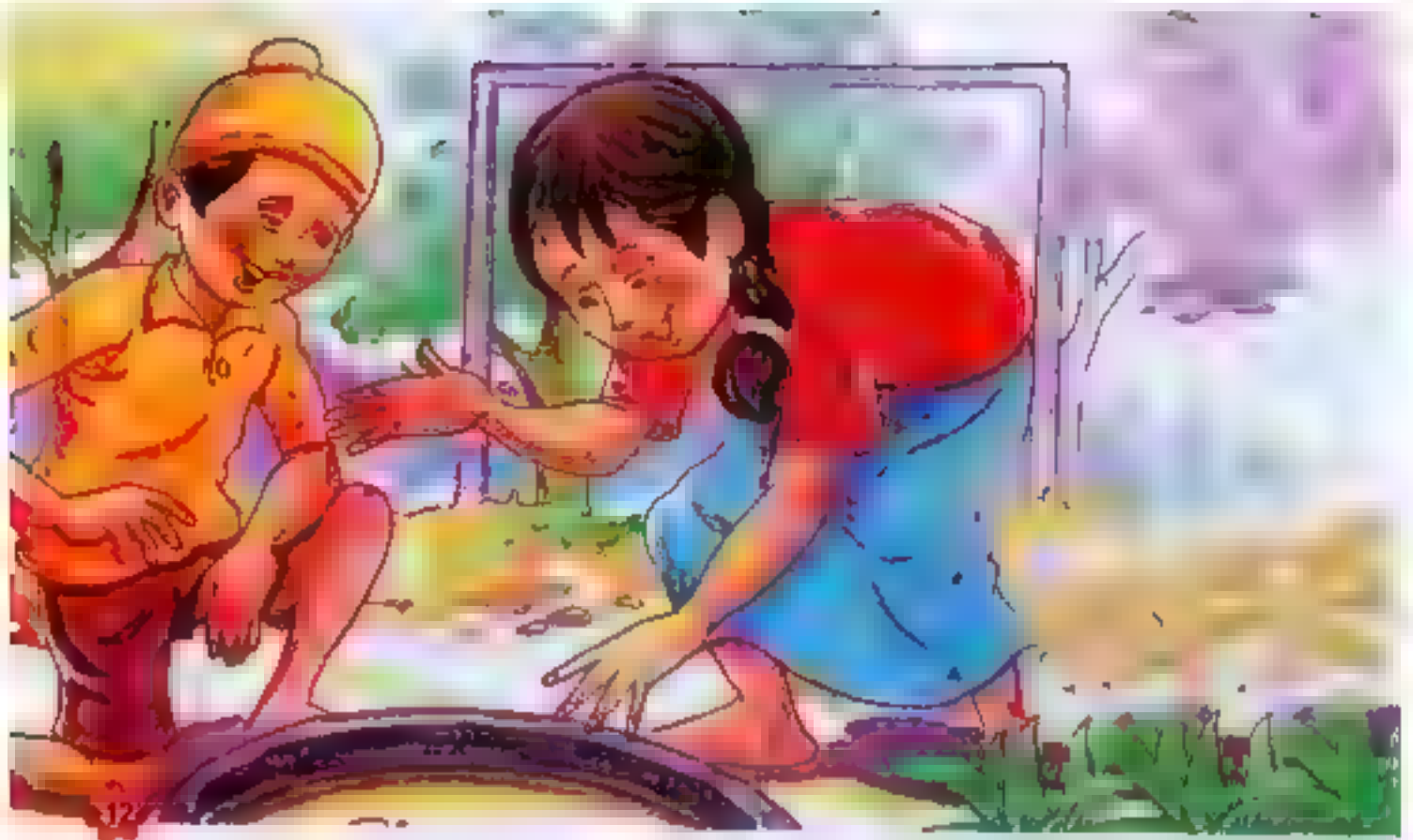
बबली को एक और तरकीब सूझी
वह बोली कि अपने टायर से झूला बना लेते हैं।
उसमें बैठकर झूला झूलेगे।

जीत को यह बात पसंद आ गई।
वह बोला कि वह टायर पेड़ पर लटकाएगा।
बबली बोली की वह टायर को लटकाएगी।
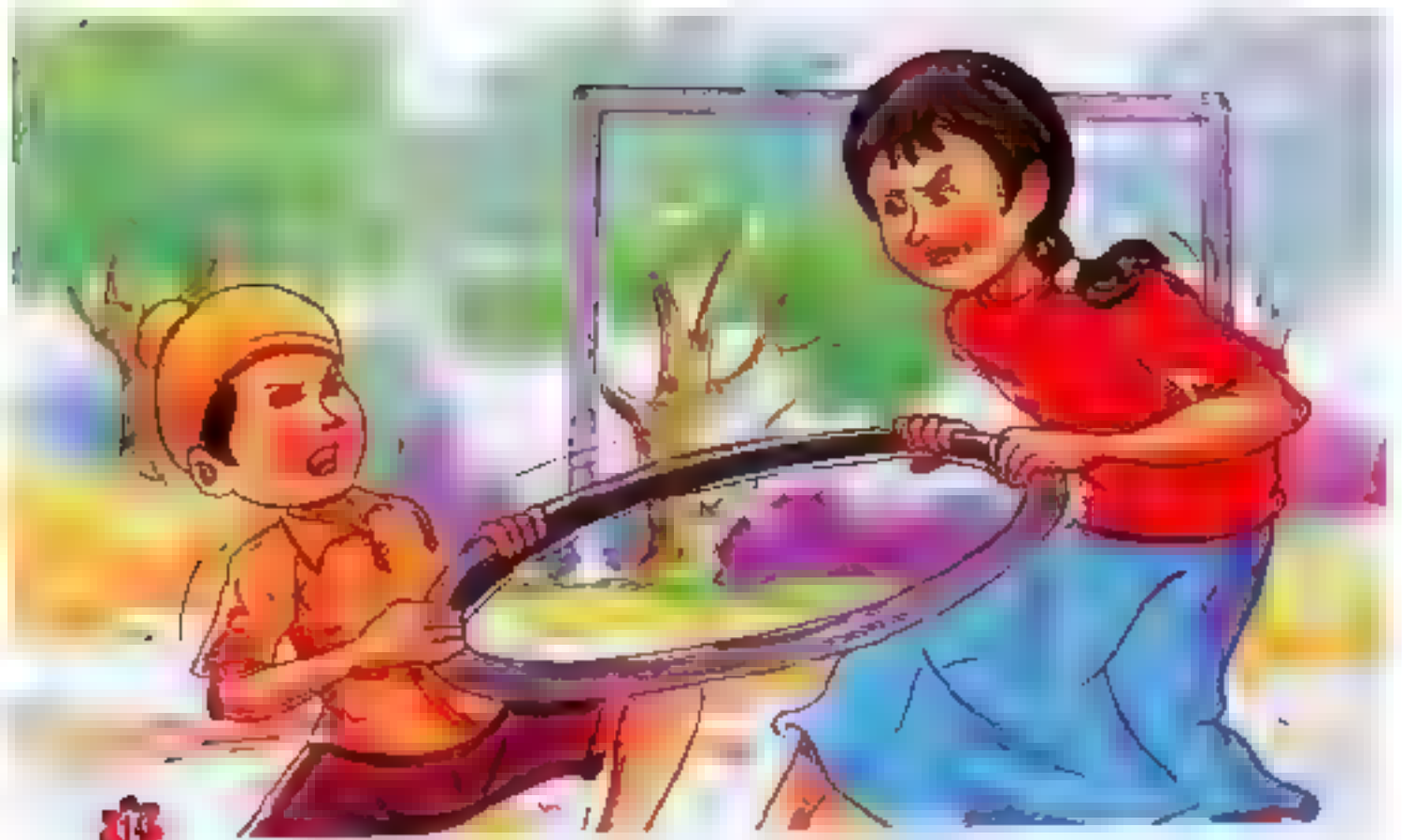
बबली ने टायर अपने हाथ में ले लिया।
जीत ने उससे टायर छीनने की कोशिश की।
दोनों में छीना-झपटी होने लगी।

बबली ने टायर खींचा और जोर से हवा में उछाल दिया।
टायर काफ़ी दूर तक उछला।
उछला हुआ टायर एक पेड़ की डाली पर लटक गया।

जीत दौड़कर टायर के पास पहुँच गया।
वह उछलकर टायर में बैठ गया।
बबली टायर और जीत को धीरे-धीरे झुलाने लगी।

2012

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

मिली

मिली के बाल

मिली

मम्मी

मिली के बाल लंबे थे।
मम्मी उसके बालों में दो चोटियाँ बनाती थीं।
मम्मी को मिली के बाल चोटी में गुँथे हुए पसंद थे।

मम्मी मिली के बालों में रोज़ तेल लगाती थीं।
वह तेल लगाकर रोज़ मिली की दो चोटियाँ बना देतीं।
मिली को चोटी बनवाना पसंद नहीं था।
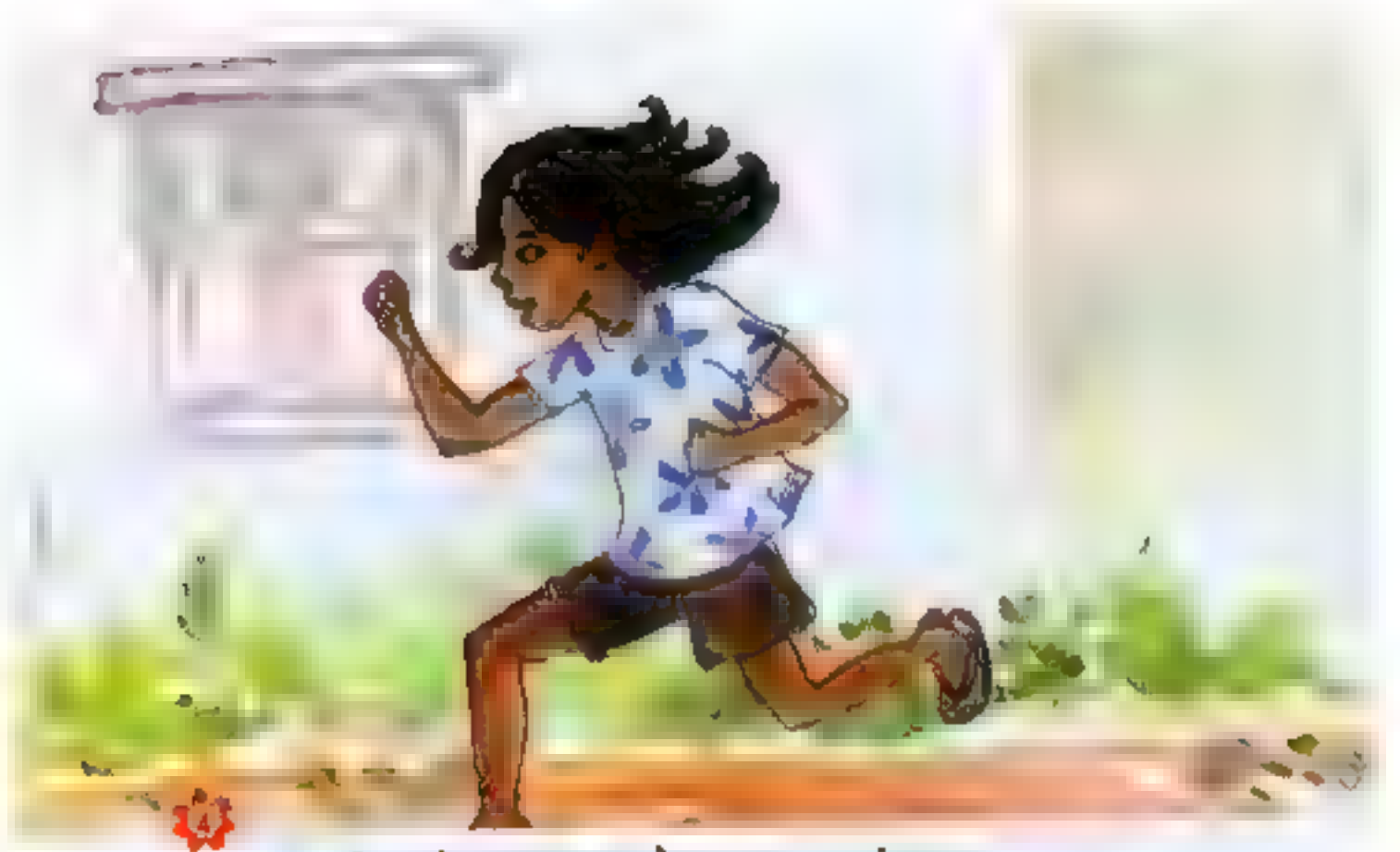
मिली को बाल खुले रखना पसंद था।
उसे फैले फैले बाल अच्छे लगते थे।
वह उँगली से बालों के लच्छे बनाती रहती थी।

मम्मी चोटी गूँथतीं तो मिली परेशान हो जाती।
वह बहुत कसकर चोटी गूँथती थीं।
मिली को बहुत दर्द होता था।

मिली को लगता कि उसके बाल टूट जाएँगे।
चोटी बनवाते समय मिली चिल्लाती थी।
वह बार-बार मम्मी का हाथ हटाती।

मिली कई बार चोटी खोल ही देती थी।
वह खुले बालों में घूमती रहती।
मम्मी बहुत गुस्सा करती थीं।

मम्मी फीता बाँधतीं तो मिली फीता खोल देती।
वह फीते के धागे निकाल कर हवा में उड़ाती।
मिली फीते से फूल भी बनाती.

मम्मी चिमटी लगाती तो मिली चिमटी निकाल देती।
मिली चिमटी का कीड़ा बनाकर खेलती रहती।
वह चिमटी के कीड़े में फीता बाँधकर भागती फिरती।

मिली बाल खुले रखना चाहती थी।
मम्मी हमेशा चोटी बनाना चाहती थीं।
दोनों का हमेशा झगड़ा होता था।

मिली मम्मी से परेशान थी ।
मम्मी मिली से परेशान थीं।
दोनों एक-दूसरे से परेशान थीं।

एक दिन मिली सुबह से गायब थी।
मिली के पापा भी घर पर नहीं थे
मम्मी ने दोनो को बहुत ढूँढा।

मिली पापा के साथ बाज़ार गई थी।
बाज़ार में काफी भीड़ थी।
वे दोनों एक दुकान पर गए।

मिली और पापा दोपहर में बाज़ार से लौटे।
मिली मम्मी के पास भागकर गई।
वह बोली कि लो गूँथ लो मेरी चोटियाँ।

मिली ने बाल छोटे छोटे कटवा लिए थे।
मम्मी ने मुस्कराकर उसके बालों में हाथ फेरा।
उन्होंने मिली को गले लगा लिया।

अगले दिन मम्मी मिली के बालों के लिए कुछ लाईं।
वह रोज़ की तरह मिली के बालों में तेल मलने बैठ गईं।
मिली ने भी आराम से तेल मलवा लिया।
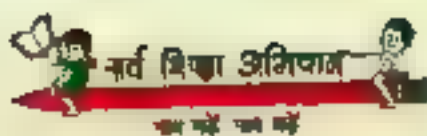
रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

तोसिया का सपना

नानी

तोसिया

एक दिन तोसिया ने सपना देखा।
तोसिया बहुत सपने देखती है।
वह उठकर सपनों के बारे में बात भी करती है।

तोसिया को सपना आया कि दुनिया के सारे रंग उड़ गए हैं। कहीं कोई रंग नहीं बचा।
उसने देखा कि सब कुछ सफ़ेद सफ़ेद हो गया है।

तोसिया उठी और सपने को याद करने लगी।
वह एकदम से घबरा गई।
तोसिया सोचने लगी कि क्या सचमुच रंग गायब हो गए हैं।

तोसिया रसोई में गई।
वहाँ बहुत सारे रंग बिरंगे मसाले रखे हुए थे।
लाल मिर्च, जीरा, हल्दी, धनिया, मेथी।

तोसिया उठकर बाहर बगीचे में गई।
वहाँ रंग बिरंगे फूल खिले हुए थे।
गेंदा चमेली, सदाबहार, गुलाब, सूरजमुखी।

तोसिया ने देखा कि उसके कपड़ों में रंग हैं।
मम्मी पापा के कपड़ों में भी रंग हैं।
घर में भी खूब सारे रग दिख रहे थे।

तोसिया मम्मी के साथ बाज़ार चल पड़ी।
वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी सब्ज़ियाँ थीं।
गाजर, बैंगन, टमाटर, सेम, मटर।

बाज़ार में पतंग की दुकान भी थी।
दुकान में खूब सारी रंग बिरंगी पतंगें थीं।
काली, पीली, नीली, हरी, नारंगी।
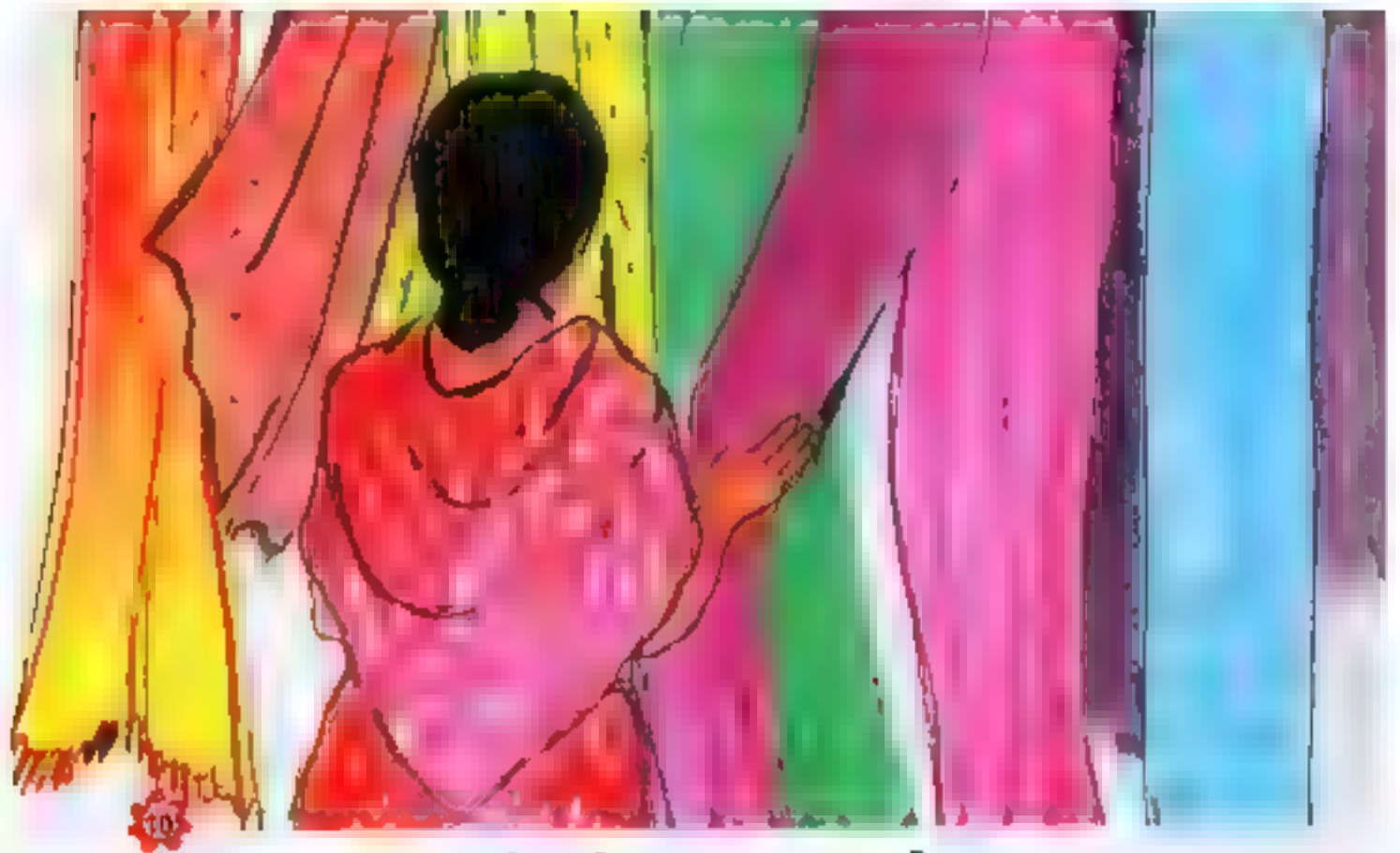
मम्मी चुन्नी की दुकान पर गई।
वहाँ खूब सारी रग बिरंगी चुन्नियाँ थीं।
गुलाबी, बैंगनी, फिरोजी, आसमानी, भूरी।

बाज़ार में गुब्बारेवाला खड़ा हुआ था।
उसके पास खूब सारे रंग बिरंगे गुब्बारे थे।
नीले, पीले, हरे, लाल, गुलाबी।

तोसिया ने खूब सारे रंग देखे।
वह खुश हो गई कि रंग गायब नहीं हुए हैं।
वह रंगों को गिनने लगी।

तोसिया घर आकर दोपहर को सो गई।
उसने उठकर देखा कि नानी की सहेलियाँ आई हुई हैं।
उन सबके बाल सफ़ेद-सफ़ेद हैं।
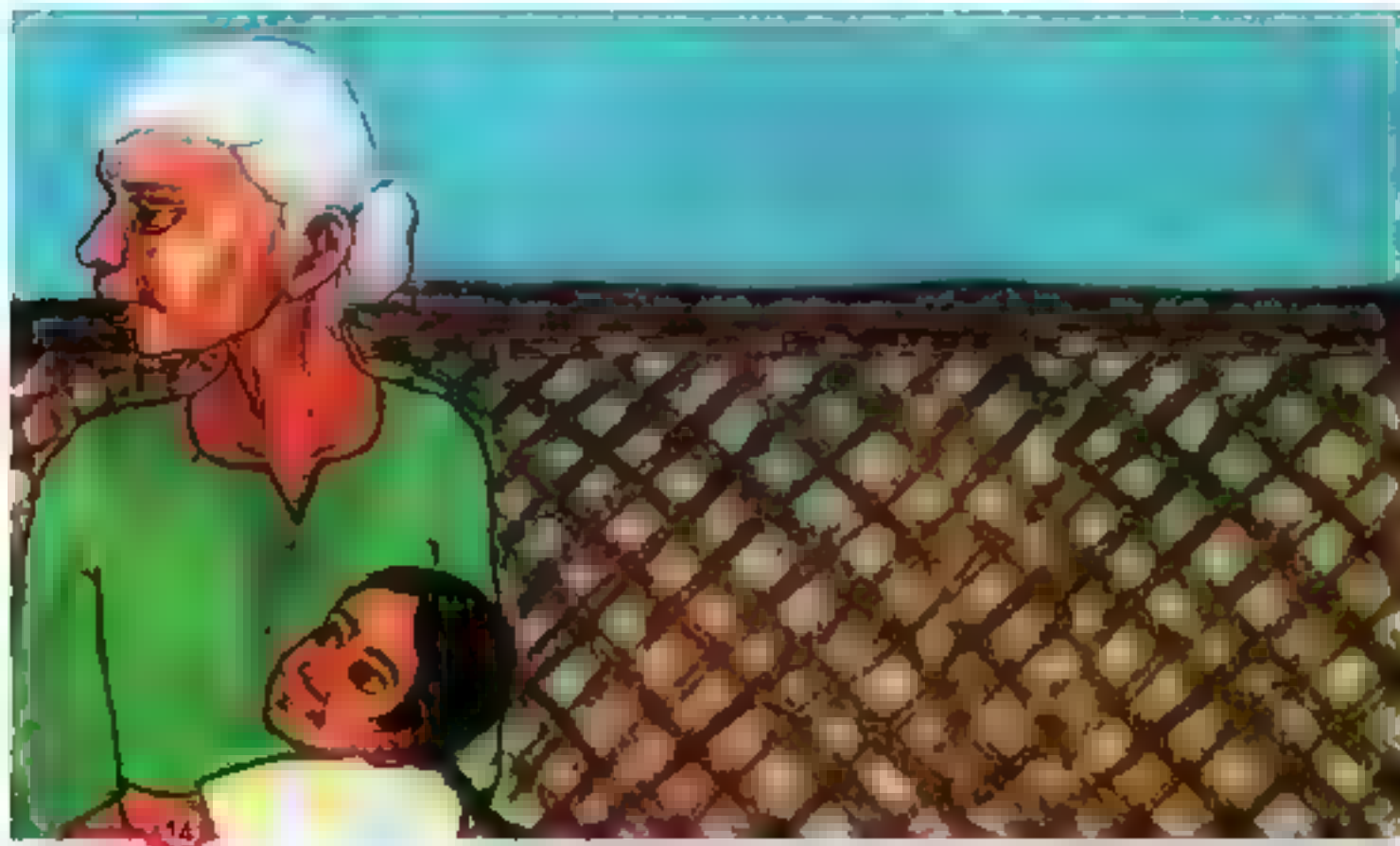
तोसिया को एक बात याद आई।
वह रात को नानी के साथ सोई थी।
इसलिए सपने में सब सफ़ेद-सफ़ेद दिखा होगा।
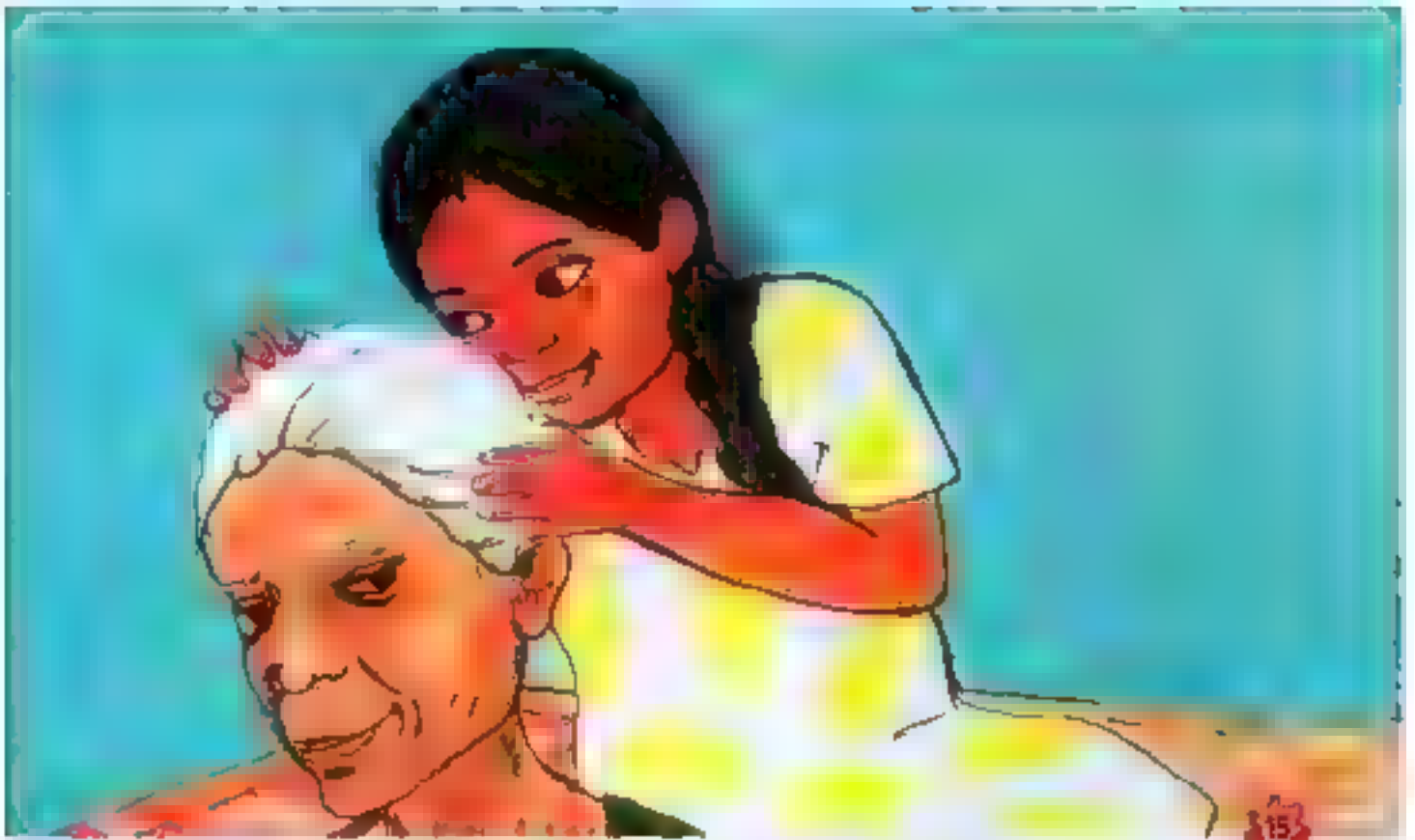
तोसिया नानी के बालों को गौर से देखने लगी।
वह नानी के बालों को छू छूकर देखने लगी।
तोसिया सोचने लगी कि नानी के बाल सफ़ेद क्यों हैं।
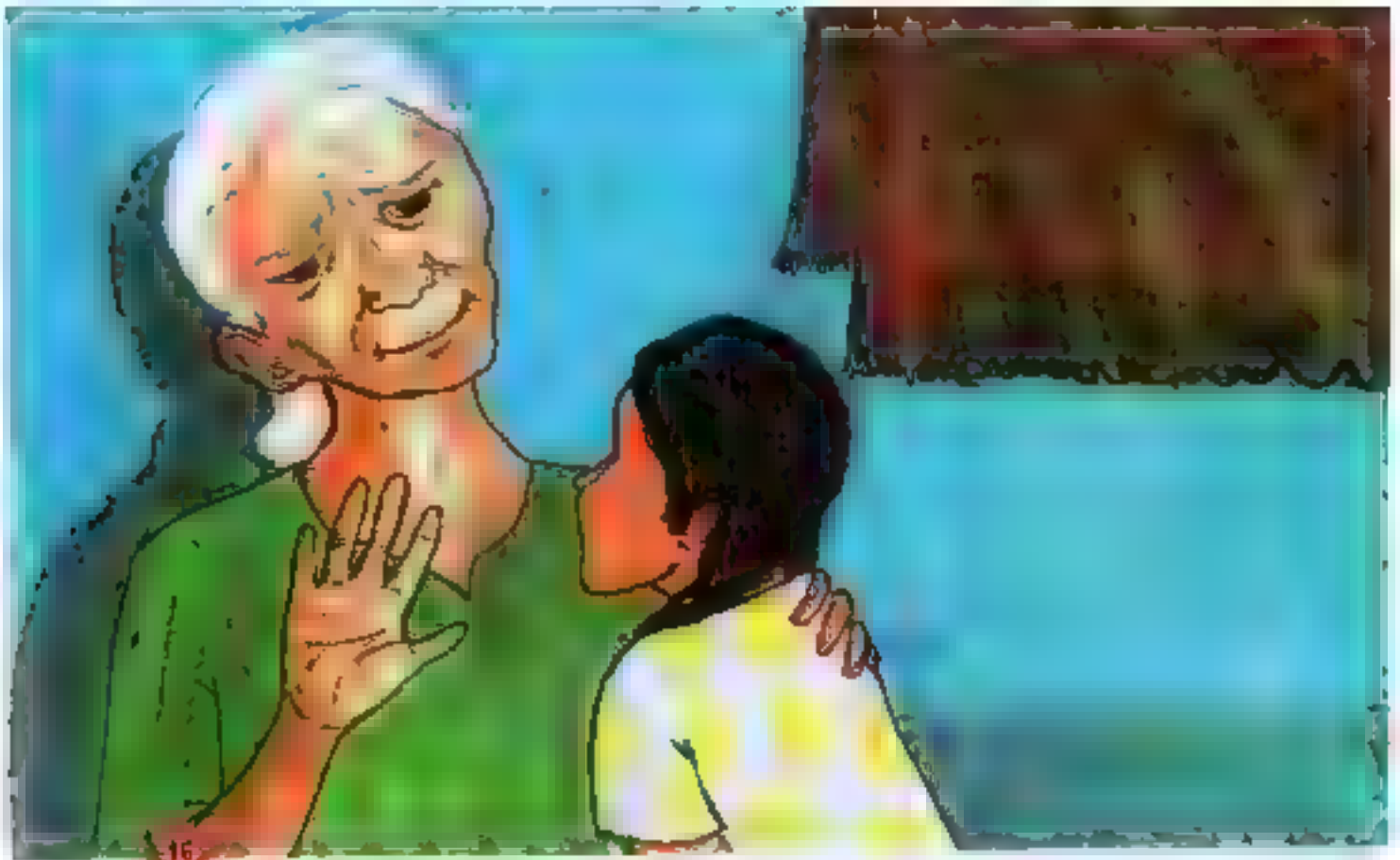
उसने नानी से पूछा कि उनके बालों का रंग कहाँ गया।
नानी बोलीं कि पहले उनके बाल भी काले थे।
फिर उनके बालों का रंग तोसिया के बालों में चला आया।

सर्व शिक्षा अभियान
2084
रु. 10,00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

चाय
पढ़ना है समझना

चाय
मदन
जमाल

एक दिन जमाल को जुकाम हो गया।
वह सुबह से छींक रहा था।
उसकी नाक भी बह रही थी।
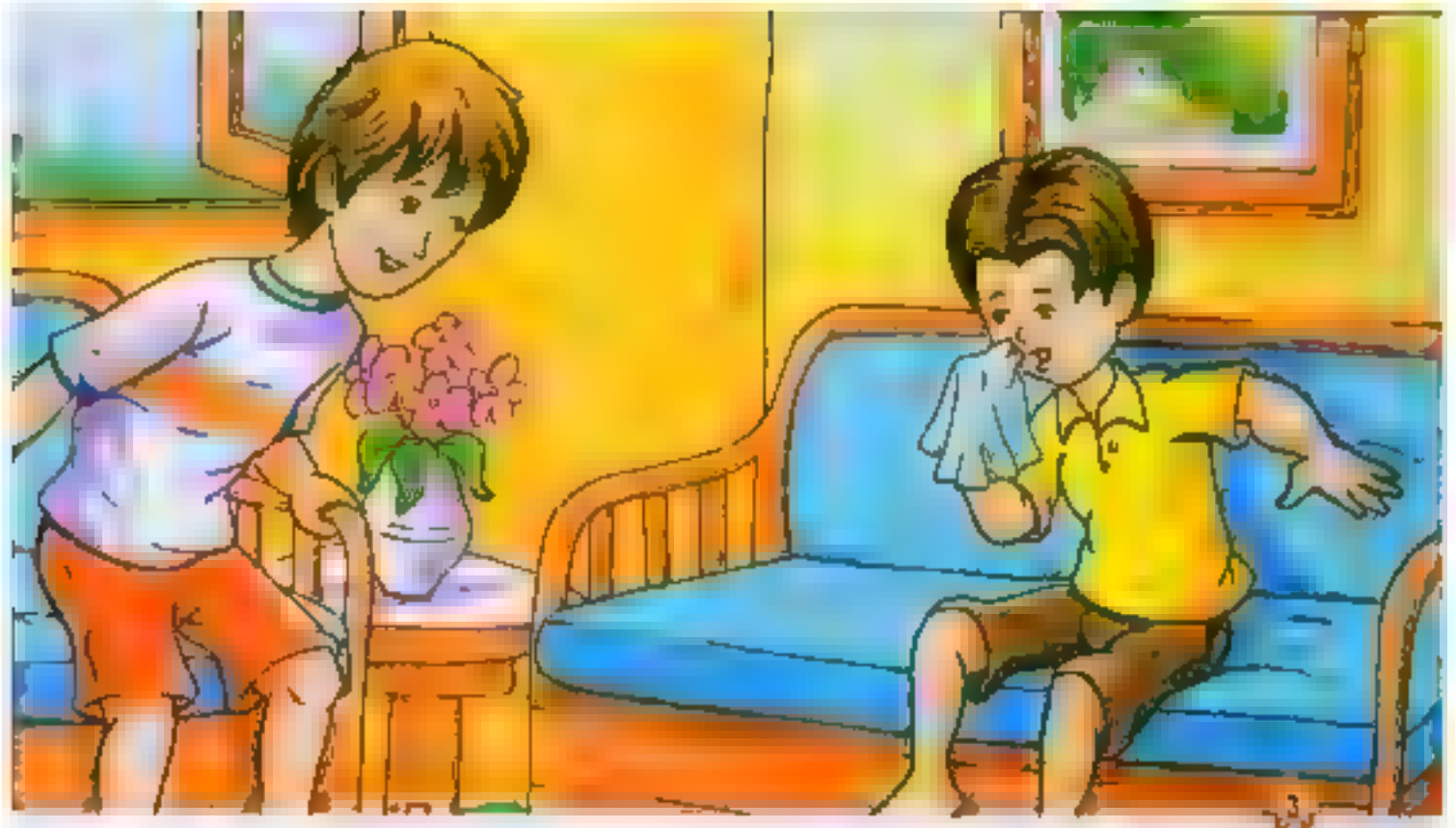
जमाल का मन चाय पीने का हुआ।
रोज़ की तरह मदन उसके घर पर ही था।
जमाल ने उससे कहा कि चाय पीने का मन हो रहा है।

मदन फ़ौरन चाय बनाने चल पड़ा।
उस दिन मदन पहली बार चाय बना रहा था।
उसने पहले कभी चाय नहीं बनाई थी।

मदन ने पतीले में दो प्याले पानी डाला।
उसने पानी मे दो लौंग डालीं।
फिर मदन ने पानी उबलने रख दिया।

मदन ने खूब सारा अदरक डाला।
पानी में लौंग और अदरक खूब देर तक उबाले।
मदन उनको उबलते हुए देखता रहा।

फिर उसने पतीले में आधा प्याला दूध डाला।
मदन ने उबलते हुए पानी में दो चम्मच चीनी डाली.
उसने पानी में दूध डालकर खूब देर उबाला दिया।

इसके बाद खूब सारी चाय की पत्ती डाली।
मदन ने पत्ती डालकर चाय को खूब उबाला।
चाय का रंग खूब गाढ़ा हो गया था।

मदन ने चाय दो गिलासों में छानी।
उसने दोनों गिलासों में चाय बराबर डाली।
चाय थोड़ी कम थी।

मदन ने चाय के गिलास एक थाली में रख लिए।
वह बड़े प्यार से जमाल के लिए चाय लेकर आया।
उसने बड़े प्यार से जमाल को चाय दी।

जमाल की नाक अब भी बह रही थी।
उसने चाय का गिलास हाथ में लिया।
जमाल ने नाक पोंछते हुए चाय का एक घूँट पीया।

जमाल ने सारी चाय थूक दी।
चाय बहुत कड़वी थी।
वह बोला कि चाय है या कड़वी दवा।
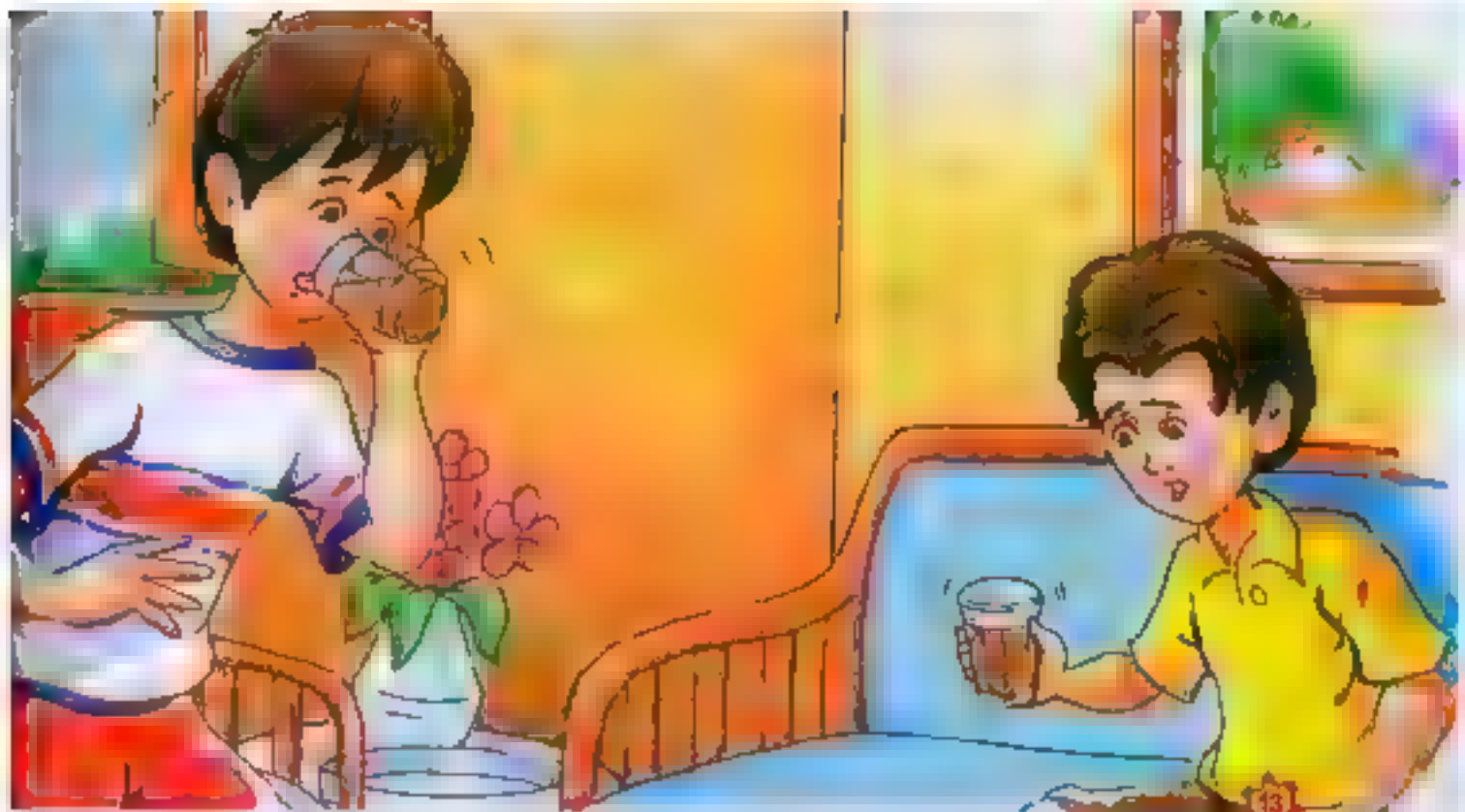
मदन ने भी चाय पीकर देखी।
चाय मे चीनी कम थी।
अदरक और पत्ती बहुत ज़्यादा डल गई थी।

मदन ने दोनों की चाय वापस पतीले मे डाली।
उसने चाय मे चीनी और दूध डाला।
चाय को फिर से उबलने रख दिया।

अब चाय का रंग हल्का हो गया था।
मदन ने चम्मच से निकाल कर चाय चखी।
चाय अब अच्छी हो गई थी।

वह जमाल के लिए दोबारा चाय लेकर आया
जमाल को इस बार चाय अच्छी लगी।
उसने मदन की चाय भी अपने गिलास में डाल ली।
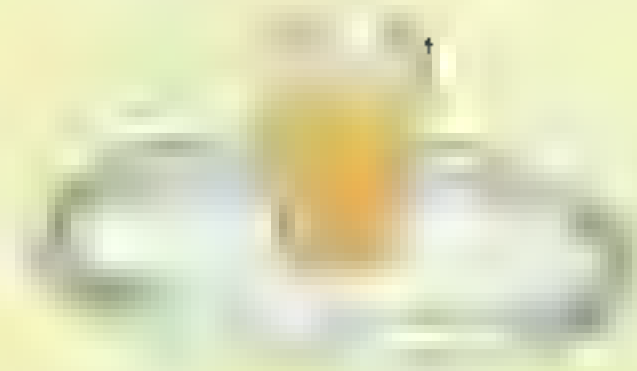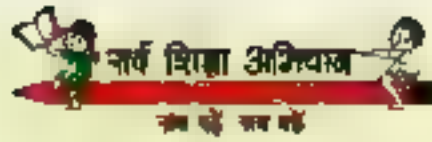
2085

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

गोलगप्पे
पढ़ना है समझना

गोलगप्पे

मदन

जमाल
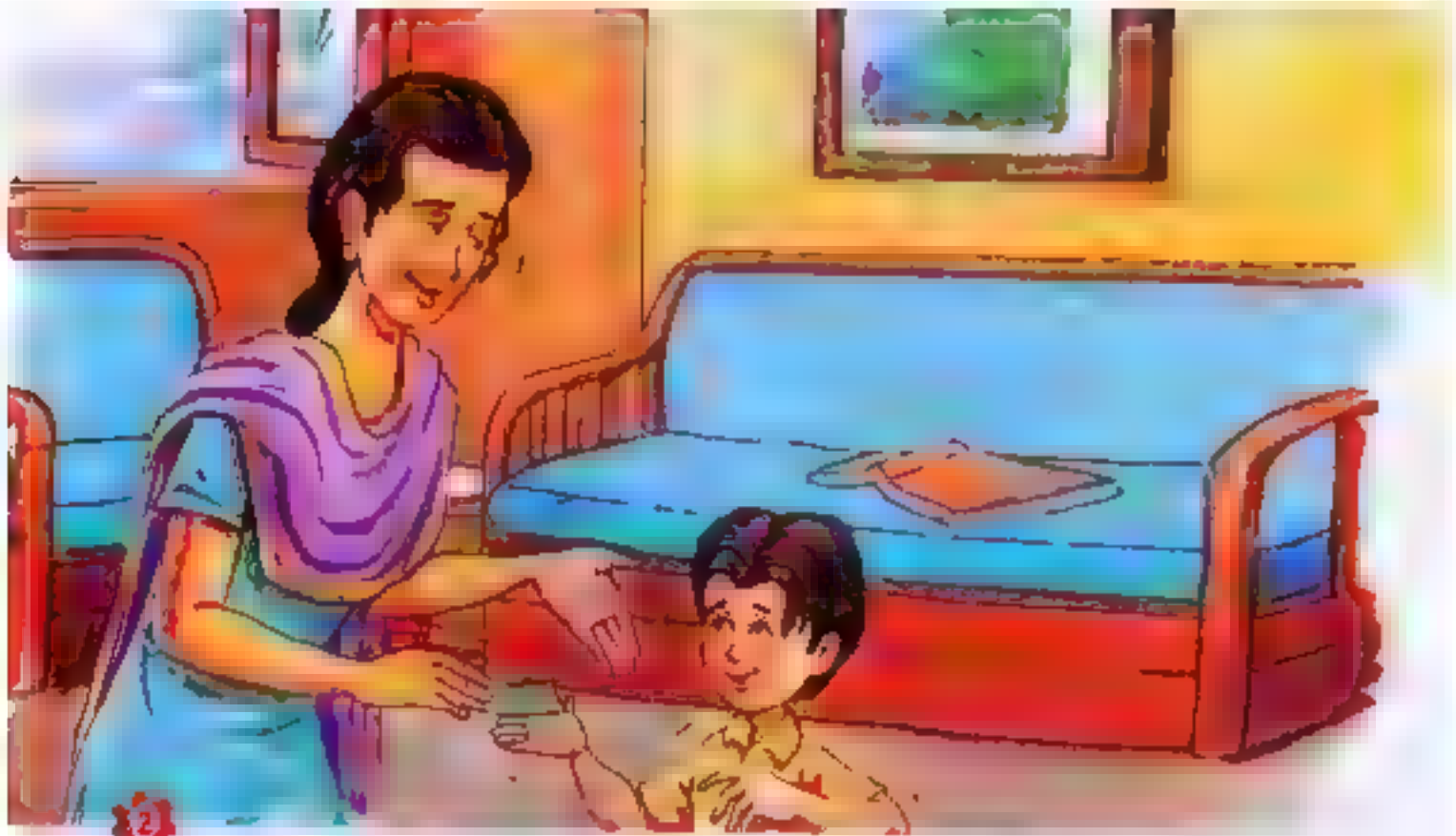
एक दिन मम्मी ने जमाल को पाँच रुपये दिए।
जमाल ने सब्ज़ी धोने में मम्मी की मदद की थी।
मम्मी जमाल से बहुत खुश थीं।

वह मदन को लेकर बाज़ार गया।
बाज़ार में गोलगप्पे की एक दुकान थी।
दोनों हमेशा वहीं गोलगप्पे खाते थे।

गोलगप्पे की दुकान पर मदन ने दो दोने माँगे।
गोलगप्पे वाला दूसरे लोगों को खिला रहा था।
जमाल खाते हुए लोगों को देखने लगा।

जमाल का मन गोलगप्पे खाने के लिए मचल रहा था।
उसे सौंठ चाटने का मन कर रहा था।
जमाल के मुँह में पानी आ रहा था।

गोलगप्पे वाले ने उनको एक-एक दोना दिया।
जमाल ने सौंठ वाले गोलगप्पे माँगे।
मदन ने कहा कि उसे सौंठ नहीं चाहिए।

गोलगप्पे बहुत बड़े बड़े थे।
जमाल ने गोलगप्पा खाने के लिए बहुत बड़ा मुँह खोला।
उसका पूरा मुँह गोलगप्पे और पानी से भर गया।
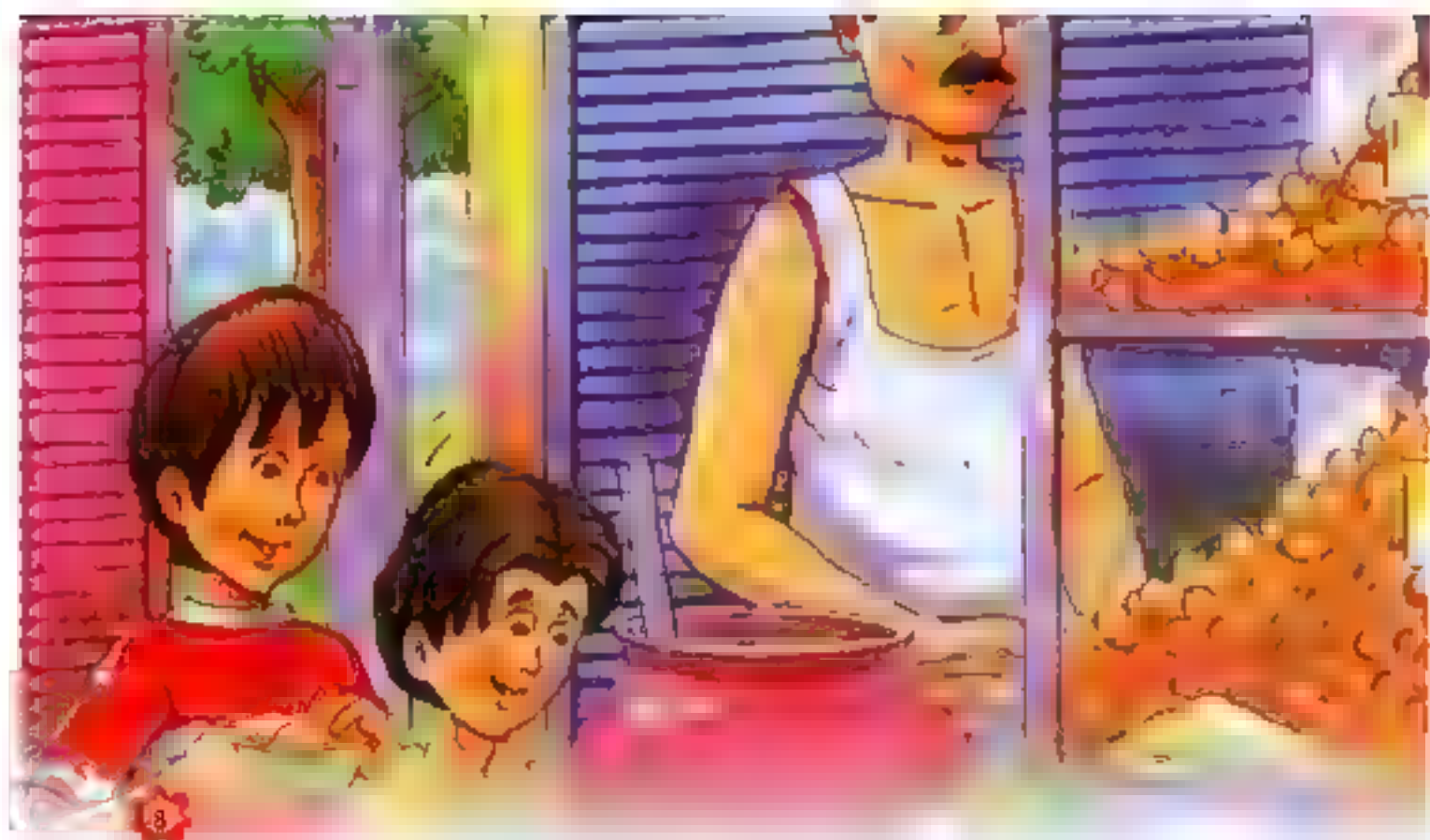
कुरकुरे गोलगप्पे से जमाल के मुँह में आवाज़ हुई।
उसके बाद मुँह में खट्टा-मीठा पानी घुल गया।
जमाल ने ज़ोर से चटखारा लिया।
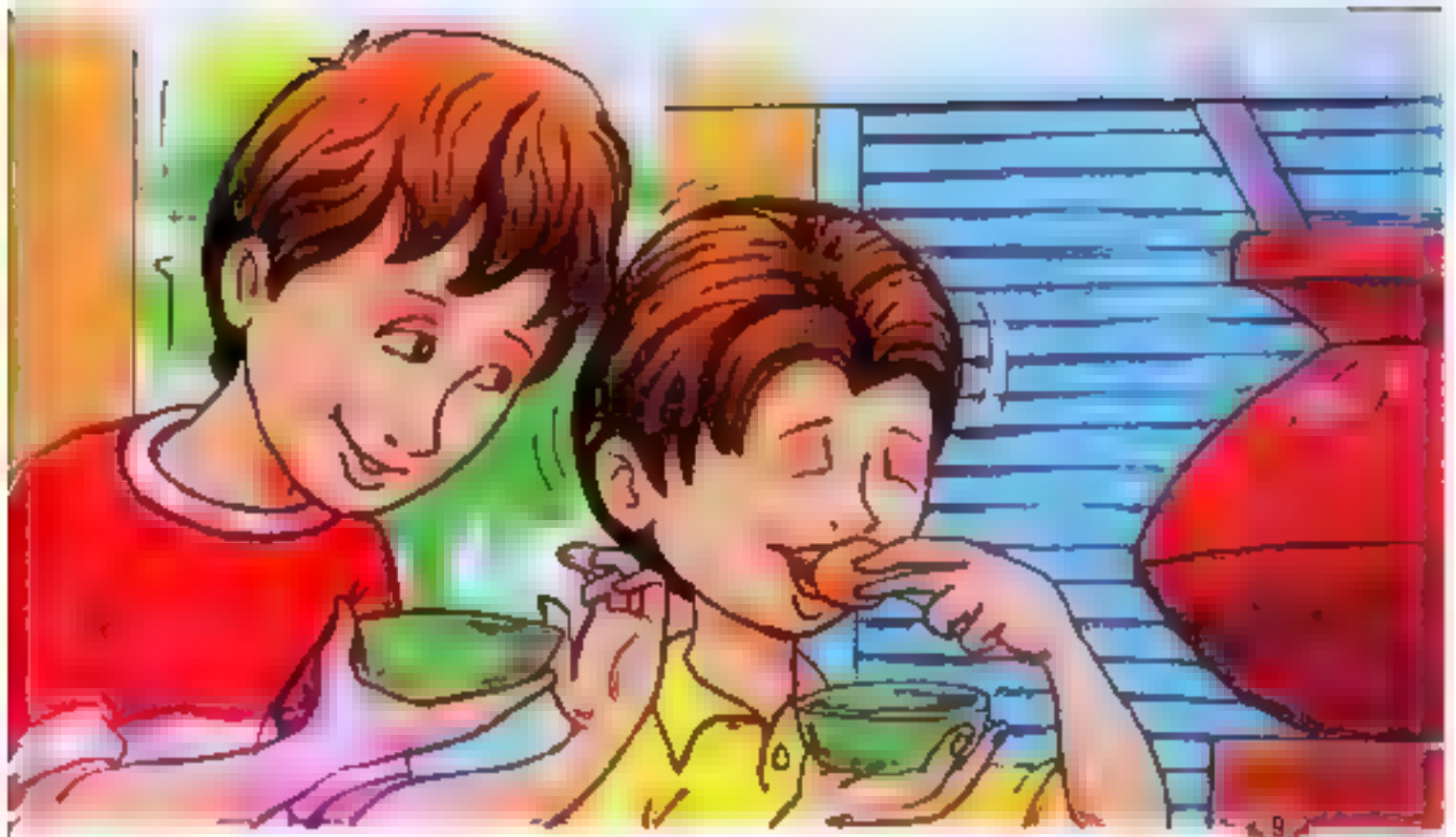
गोलगप्पा मुँह में डालते ही उसकी आँखें बद हो जाती थी।
जमाल पानी का स्वाद लेने लगता था।
उसे खट्टा, मीठा, तीखा मिला-जुला पानी पसंद था।

मदन को खट्टा-खट्टा पानी बहुत अच्छा लग रहा था।
उसे पानी के तीखेपन में मज़ा आ रहा था।
गोलगप्पा खाते ही उसकी आँखें भी बंद होती थीं।
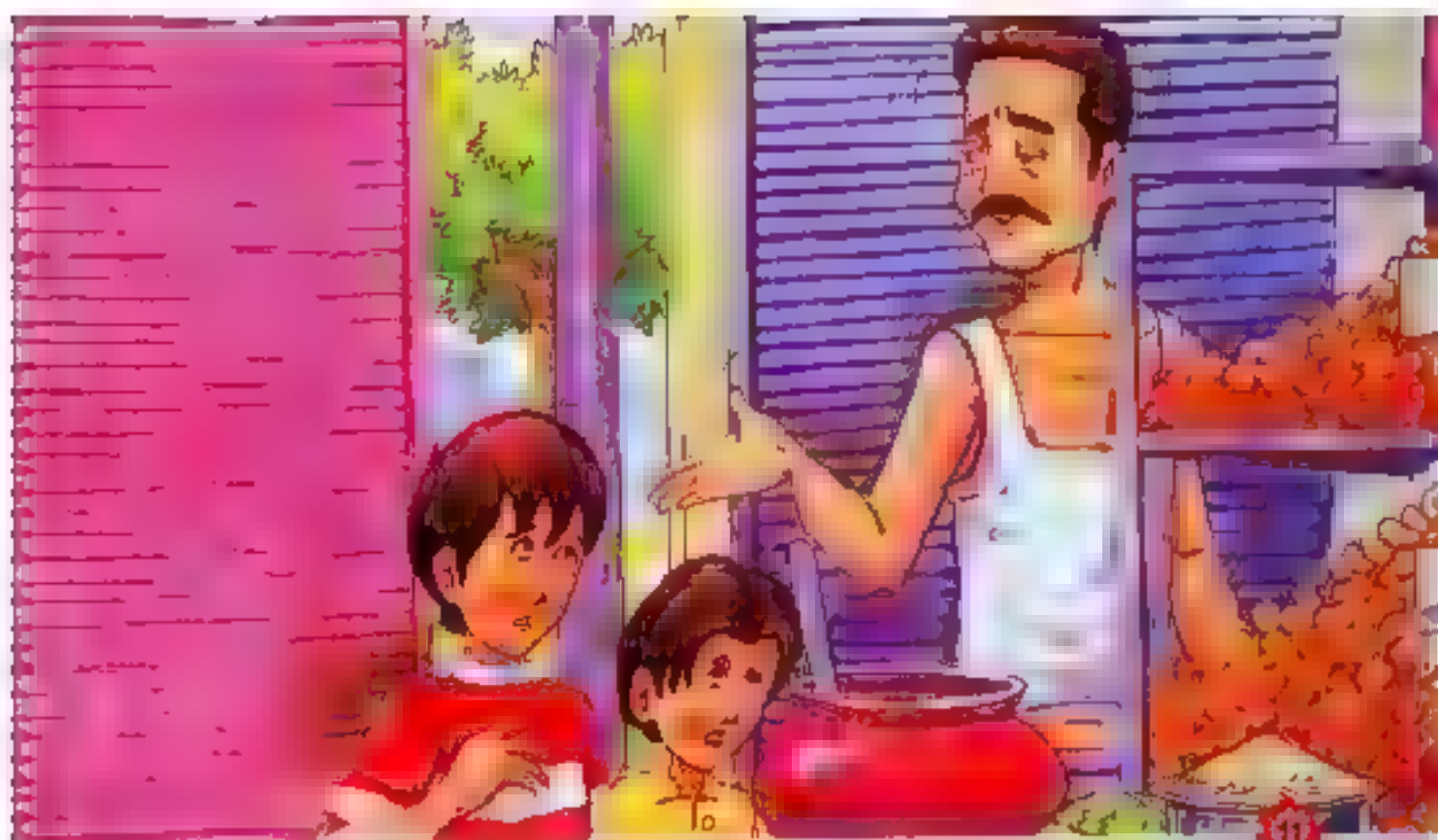
पाँच गोलगप्पे खाने के बाद जमाल थोड़ा रुका।
वह पैसों के बारे में सोचने लगा।
उसके पास सिर्फ़ पाँच रुपये थे।
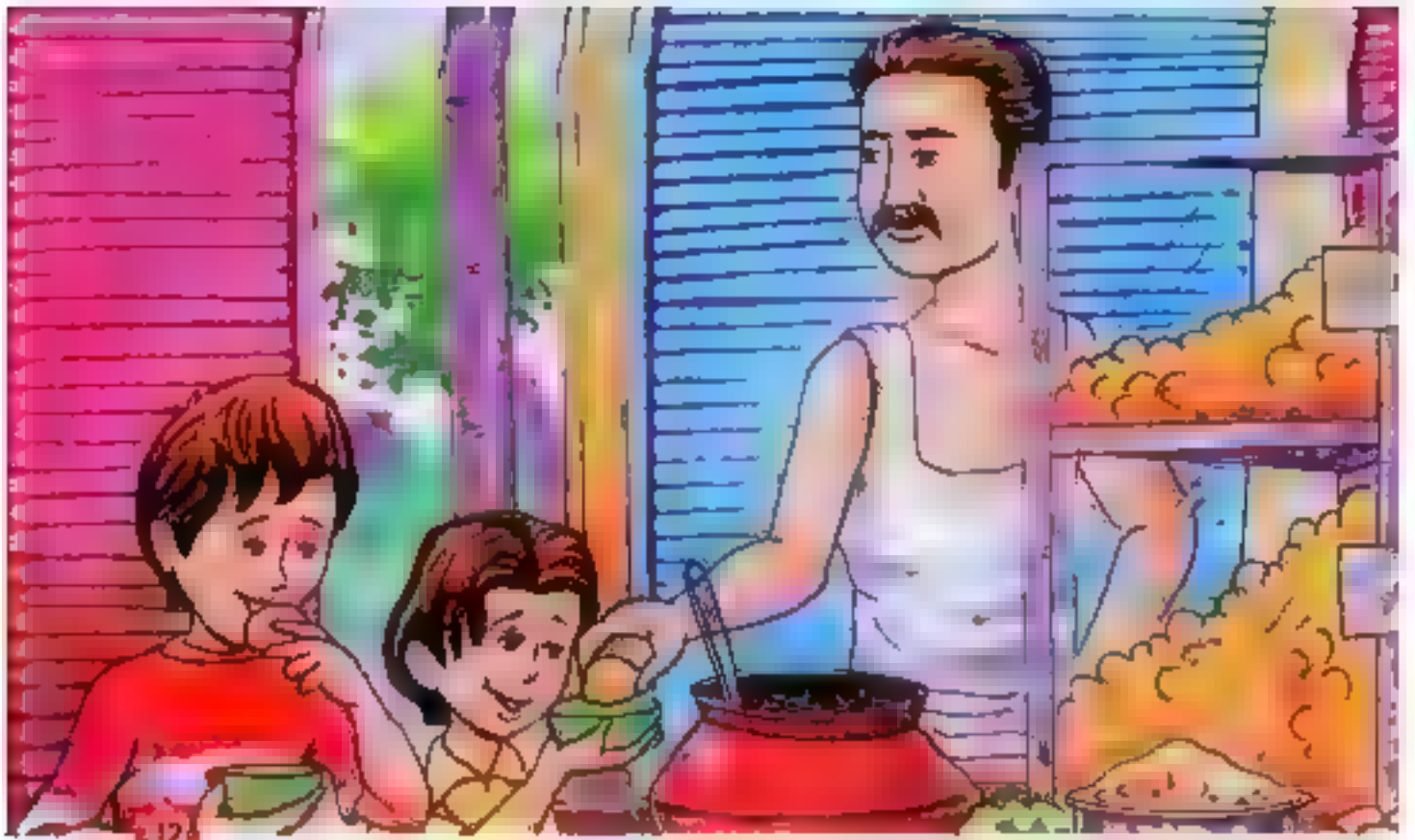
इतने मे गोलगप्पे वाले ने एक और गोलगप्पा बढ़ाया।
जमाल से मना नहीं किया गया।
वह फिर गोलगप्पे खाने लगा
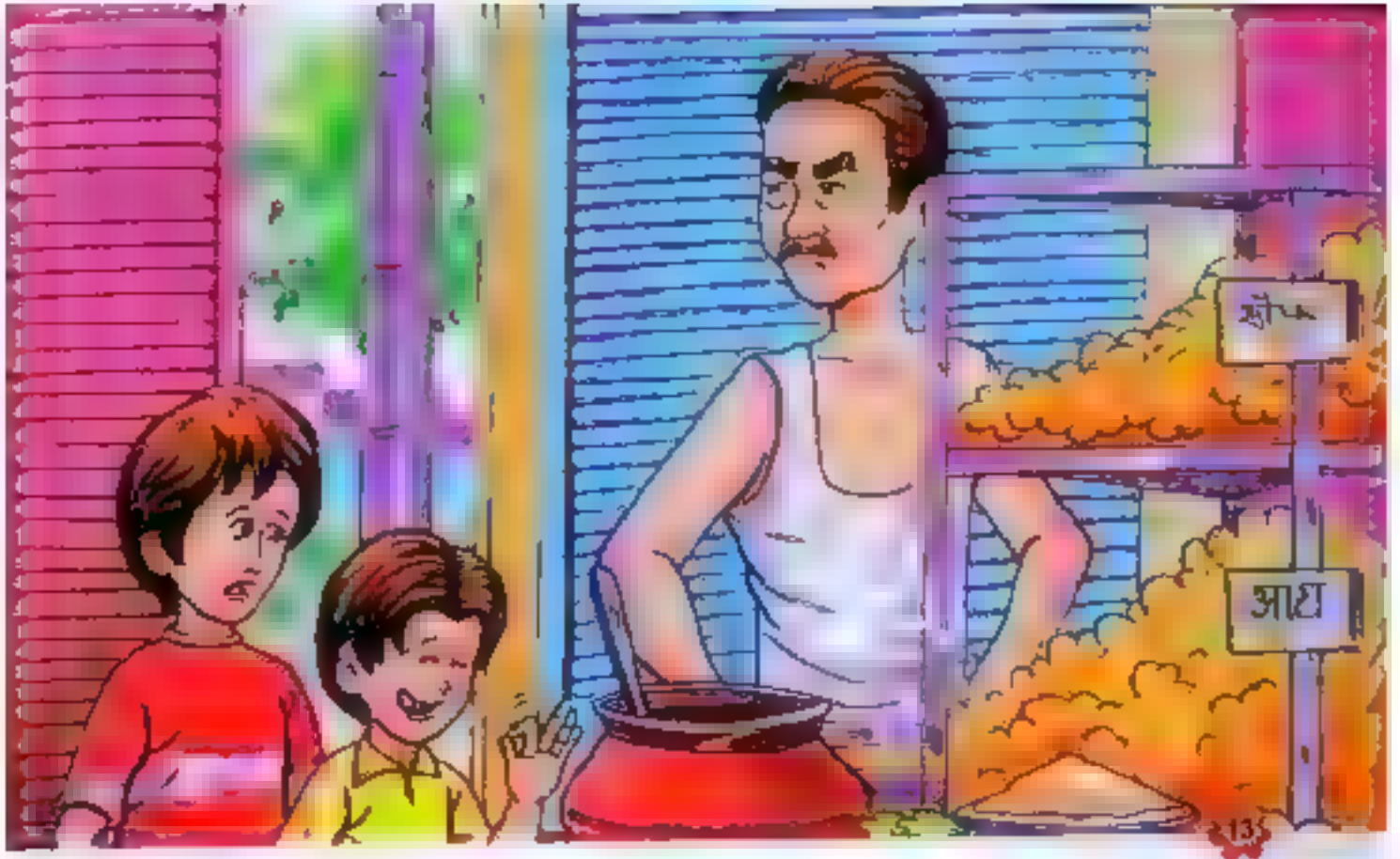
मदन ने जमाल की तरफ़ देखा।
उसने आँखों से पैसे के बारे में इशारा किया।
जमाल चटखारे लेने में लगा हुआ था।

मदन से भी रुका नहीं गया।
वह भी गोलगप्पे खाता गया।
उसने गोलगप्पे वाले से पानी में खट्टा बढ़ाने को कहा।
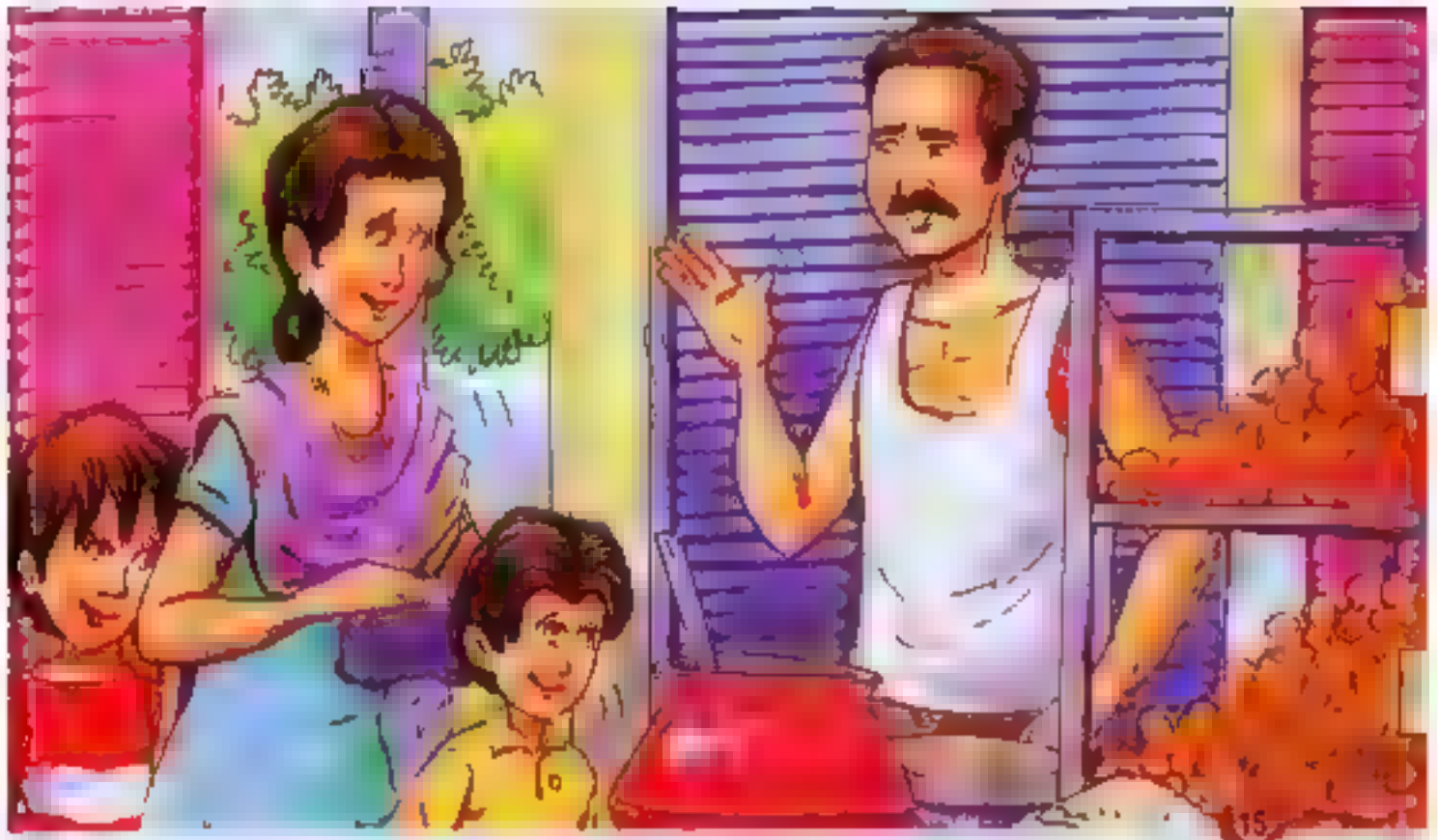
दोनों ने खूब सारे गोलगप्पे खाए।
जमाल को खूब मिर्च लग रही थी।
मदन को उससे भी ज़्यादा मिर्च लग रही थी।
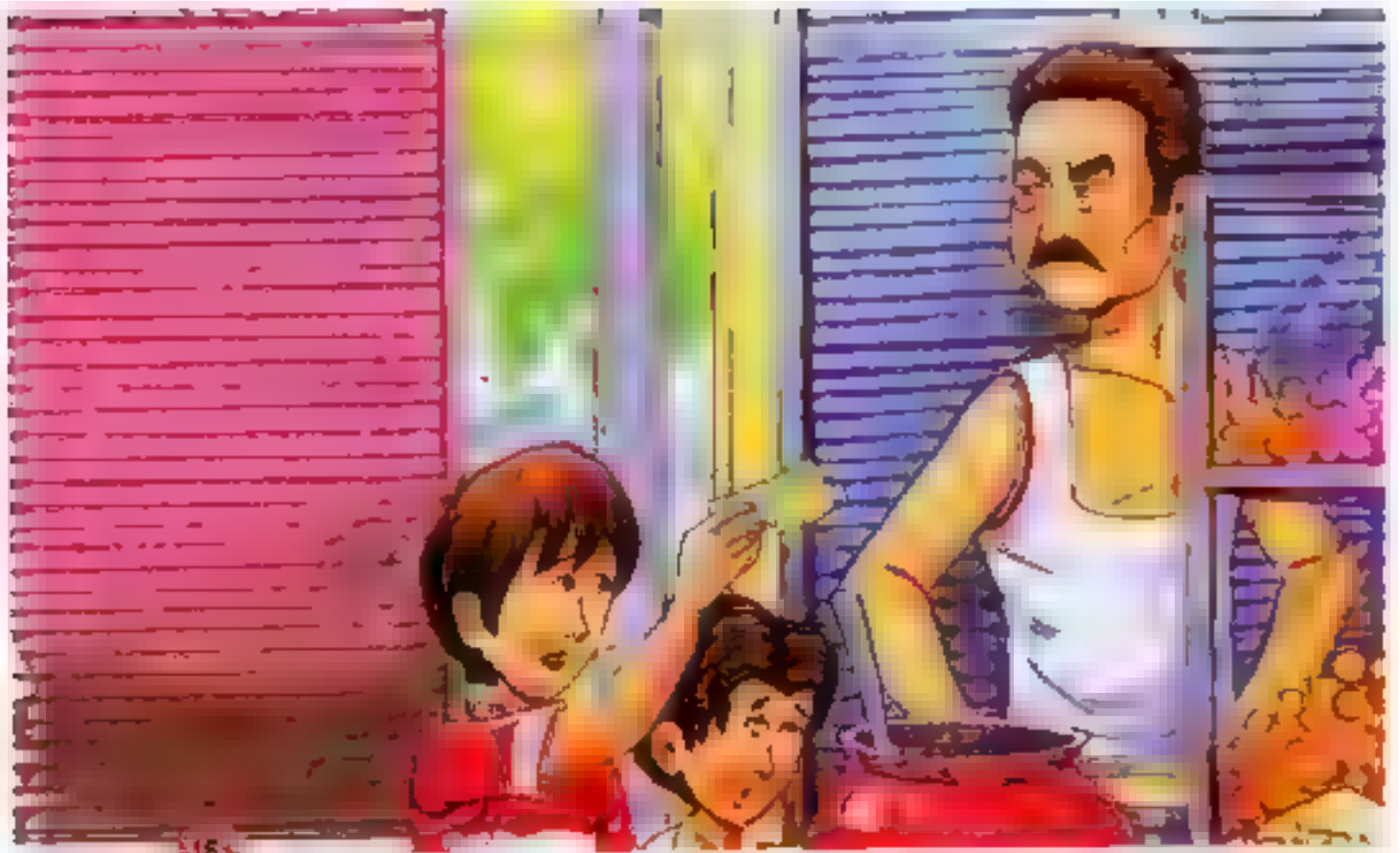
उन्होंने गोलगप्पे वाले को पाँच रुपये दिए।
दो रुपये कम पड़ गए।
गोलगप्पे वाले ने कहा – अगली बार दे देना।

2086

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (पूरा सेट)
978-81-7450-887-4

पीलू की गुल्ली
पढ़ना है समझना

पीलू की गुल्ली

एक दिन रानी के घर में सुबह से हलचल थी।
सुबह से ही आवाज़ें आ रही थीं।
आवाज़ों से रानी की नींद खुल गई।
उसने रमा को भी जगा दिया।

रानी उठकर आँगन में आ गई।
आँगन मे बहुत चहल-पहल थी।
सब अपने-अपने काम में लगे हुए थे।
वह सबको देखने लगी।
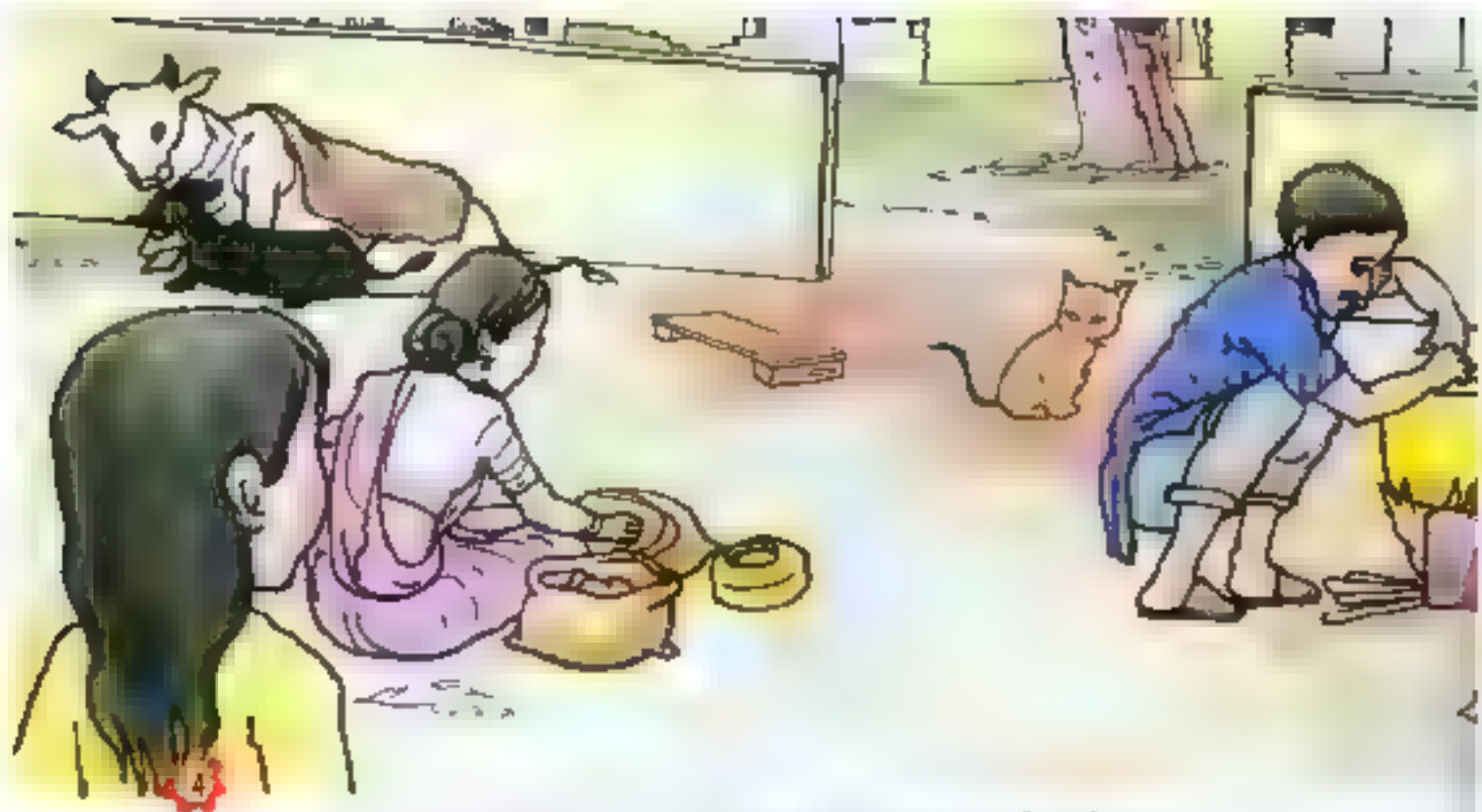
पापा चूल्हे पर पतीला चढ़ा रहे थे।
पतीले में पानी और दाल चावल थे।
मम्मी दो बोरे लेकर बैठी हुई थीं।
वह बोरों में से गुड़ निकाल रही थीं।

रानी ने देखा कि पीलू गाय को बछिया हुई है।
वह पीलू के बगल में ही बैठी हुई थी।
पीलू गाय अपनी बछिया को चाट रही थी।
बछिया भी प्यार से अपना मुँह चटवा रही थी।

रानी भागकर बछिया के पास गई।
बछिया काले रंग की थी।
मम्मी भी रानी के पास आ गईं।
वह पीलू को गुड़ खिलाने लगीं।

रानी ने बछिया को छू कर देखा।
वह बहुत चिकनी चिकनी थी।
बछिया के बाल चमक रहे थे।
उसकी पूँछ छोटी-सी थी।
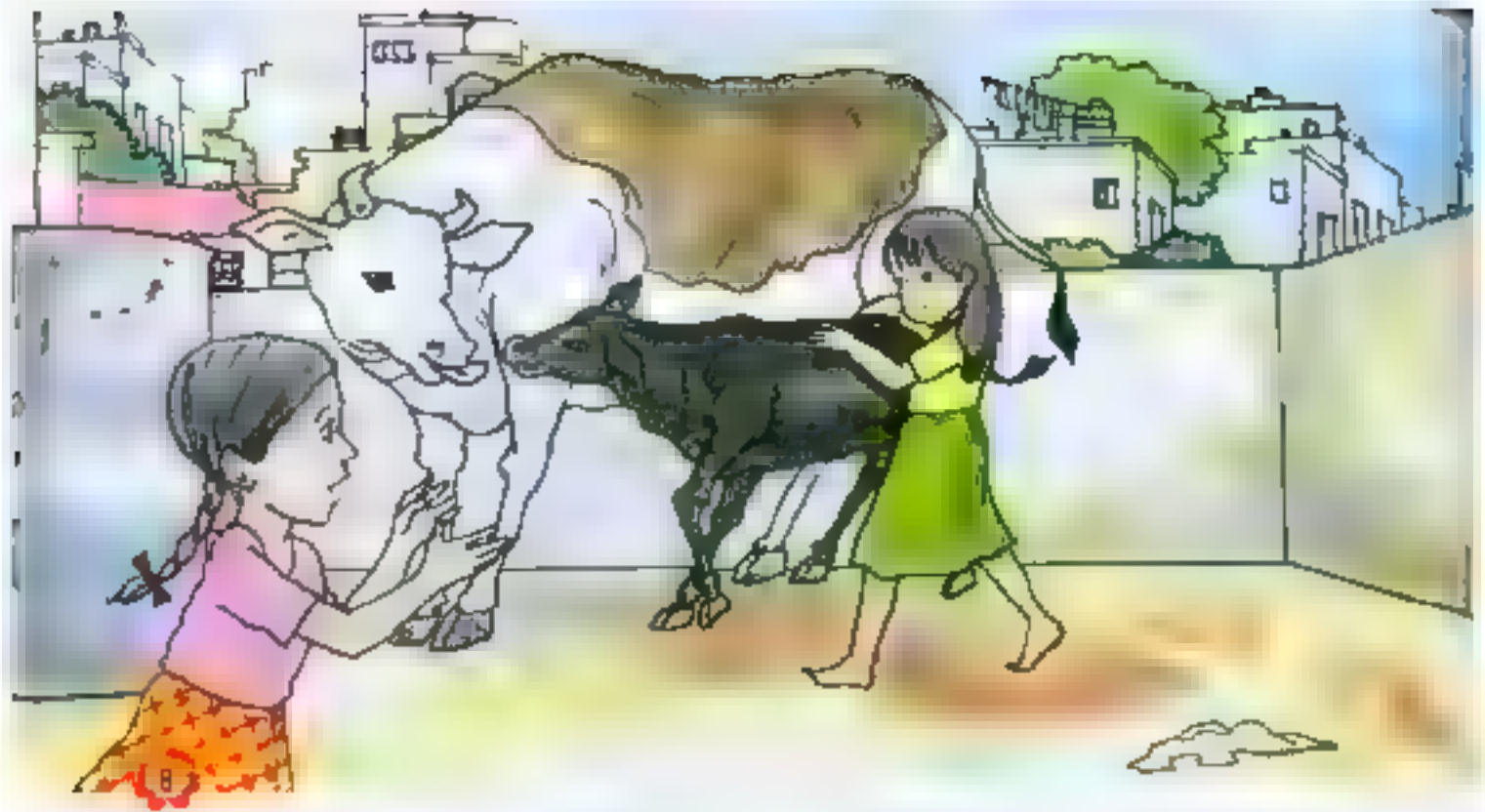
बछिया बार बार खड़ी होने की कोशिश कर रही थी।
वह लड़खड़ा कर बैठ जाती थी।
रानी ने उसकी कमर सहलाई।
रमा भी वहाँ आ गई।
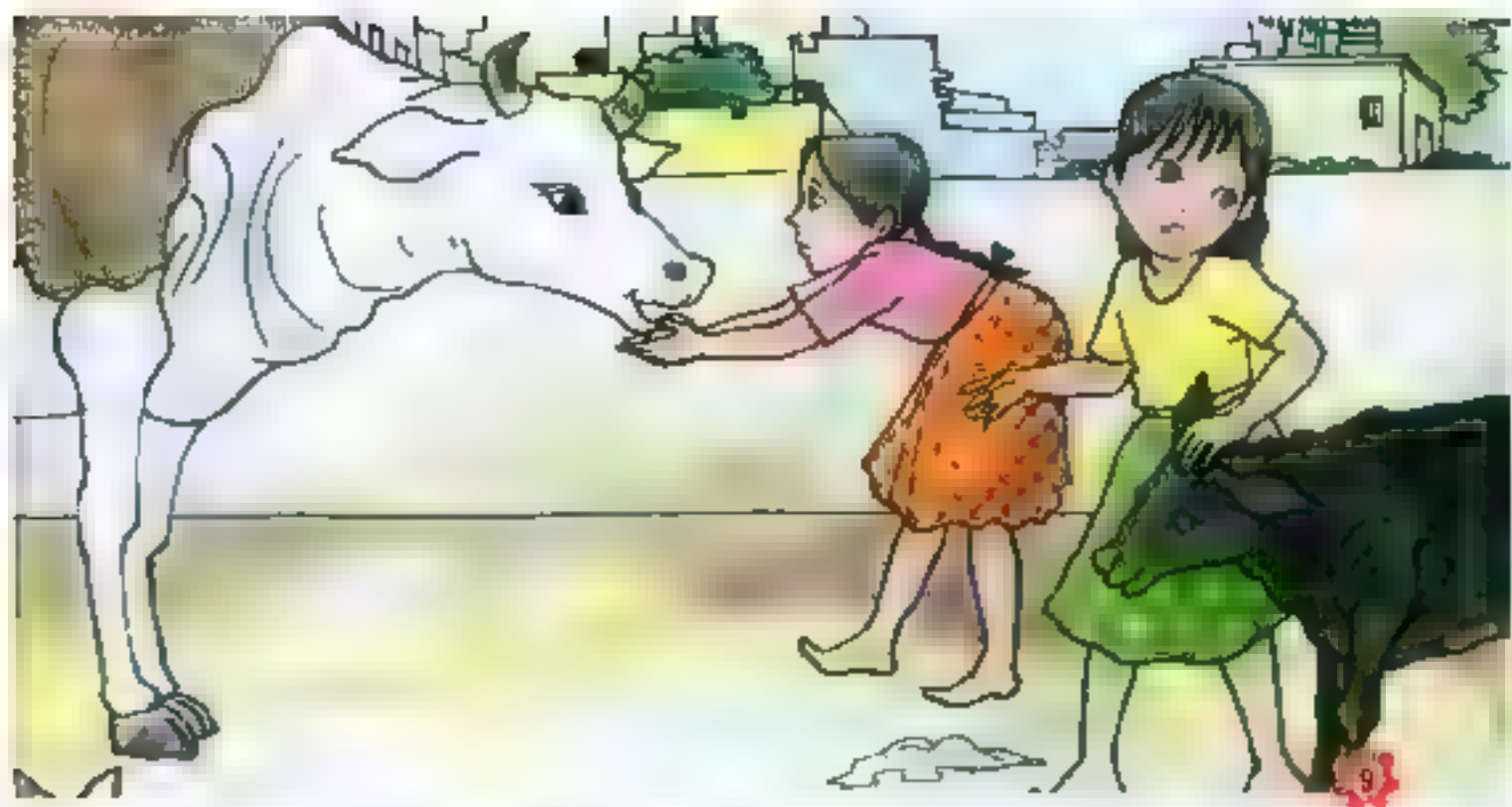
रमा ने पीलू को गुड़ दिया।
रमा भी बछिया को छू छूकर देखने लगी।
रमा और रानी बहुत खुश थीं।
उन्हे बछिया को देखकर बहुत मजा आ रहा था।

रमा और रानी ने बछिया का नाम गुल्ली रखा।
उन्होंने मम्मी को उसका नाम बताया।
वे वापस गुल्ली के पास आकर बैठ गईं।
वे गुल्ली के पास से हटना नहीं चाह रही थीं।
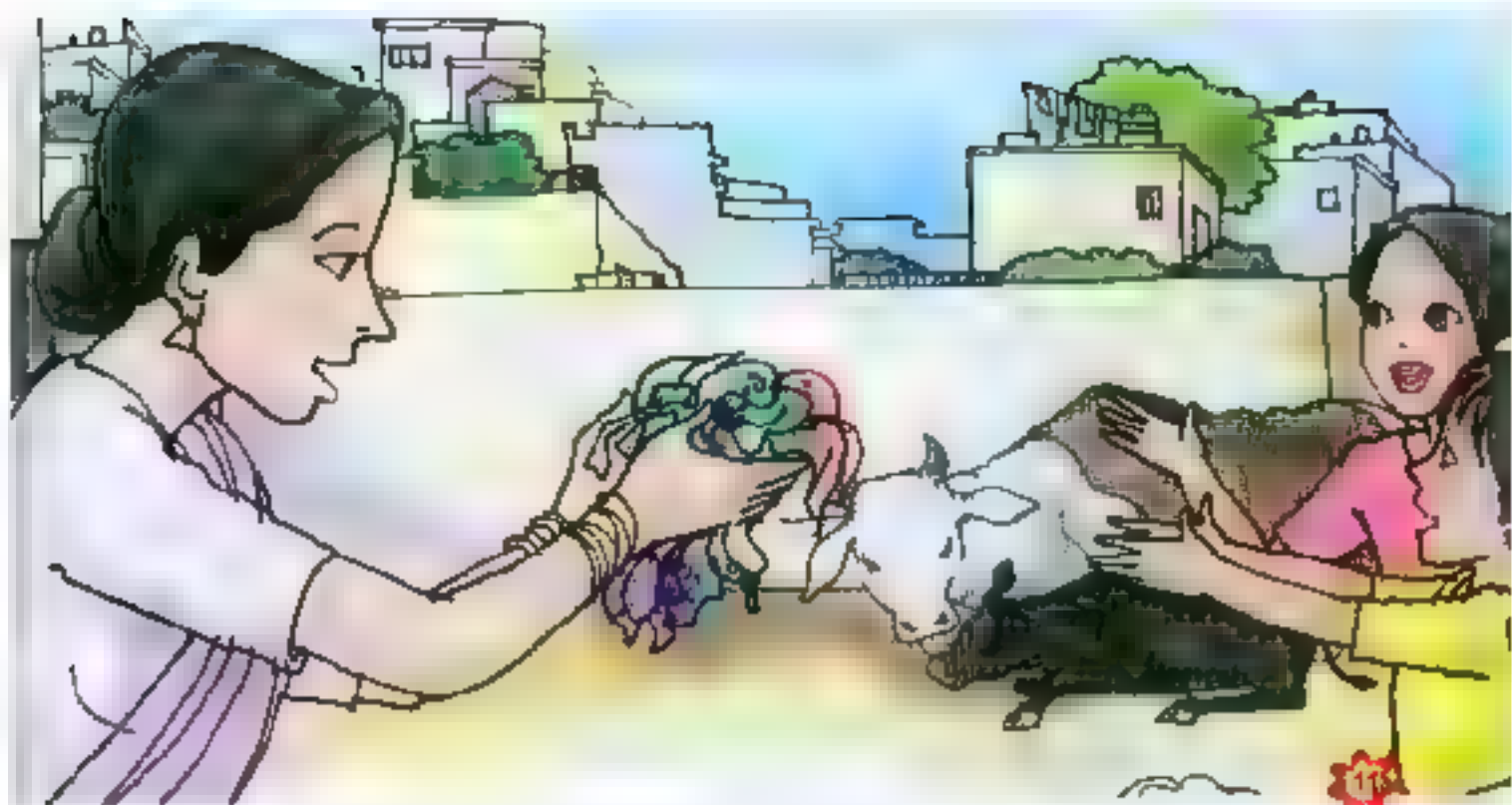
मम्मी ने रमा और रानी को कुछ कतरनें दीं।
उन्होंने गुल्ली के लिए रस्सी बनाने को कहा।
गुल्ली को बाँधने वाली रस्सी नरम होनी चाहिए।
दोनों बैठकर रस्सी बुनने लगी।
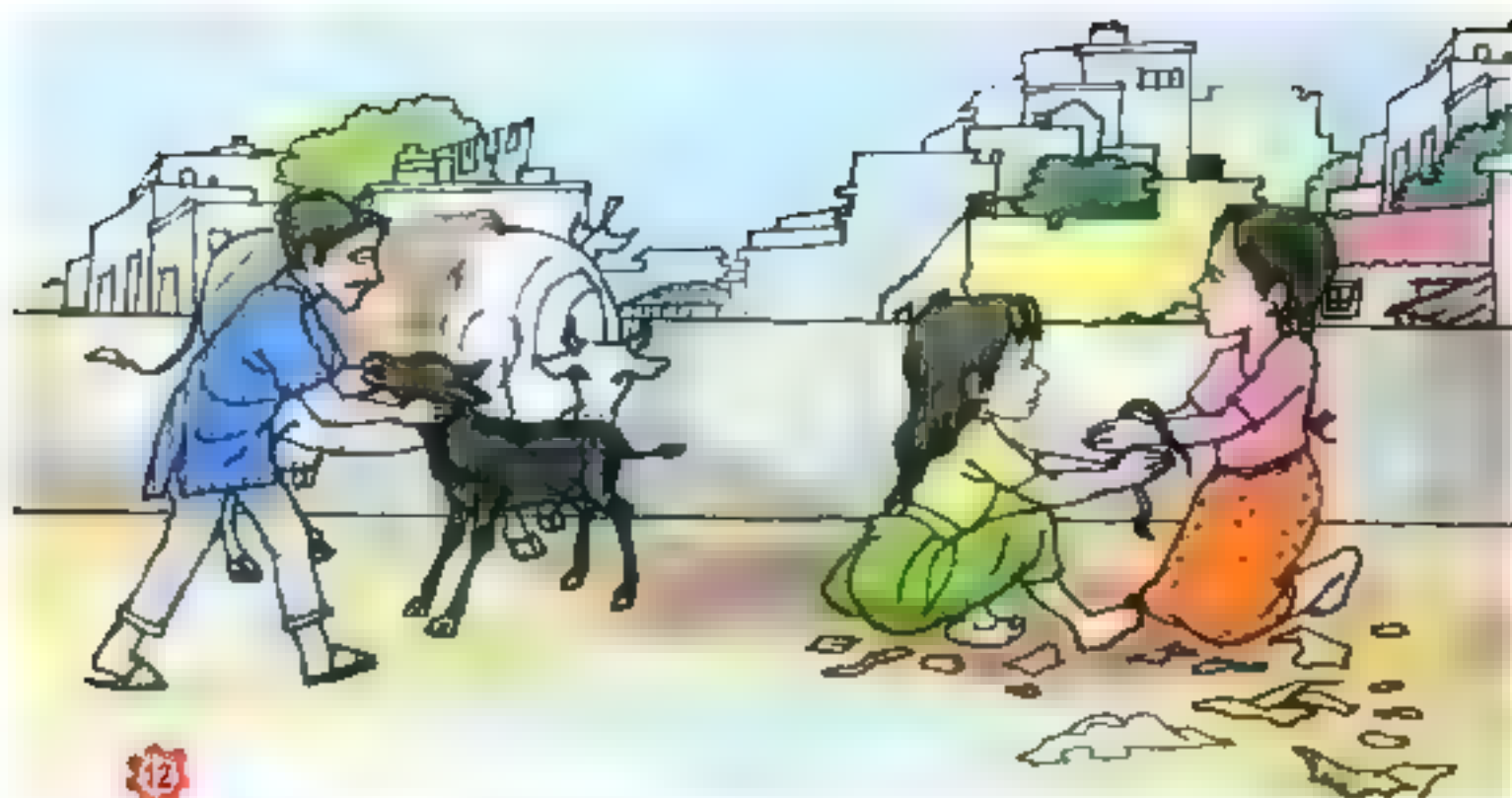
रमा ने देखा बाबा गुल्ली को धीरे धीरे खींच रहे थे।
उन्होंने गुल्ली का मुँह पीलू के थनों पर लगा दिया।
गुल्ली दूध पीने लगी।
पीलू चुपचाप खड़ी हुई थी।
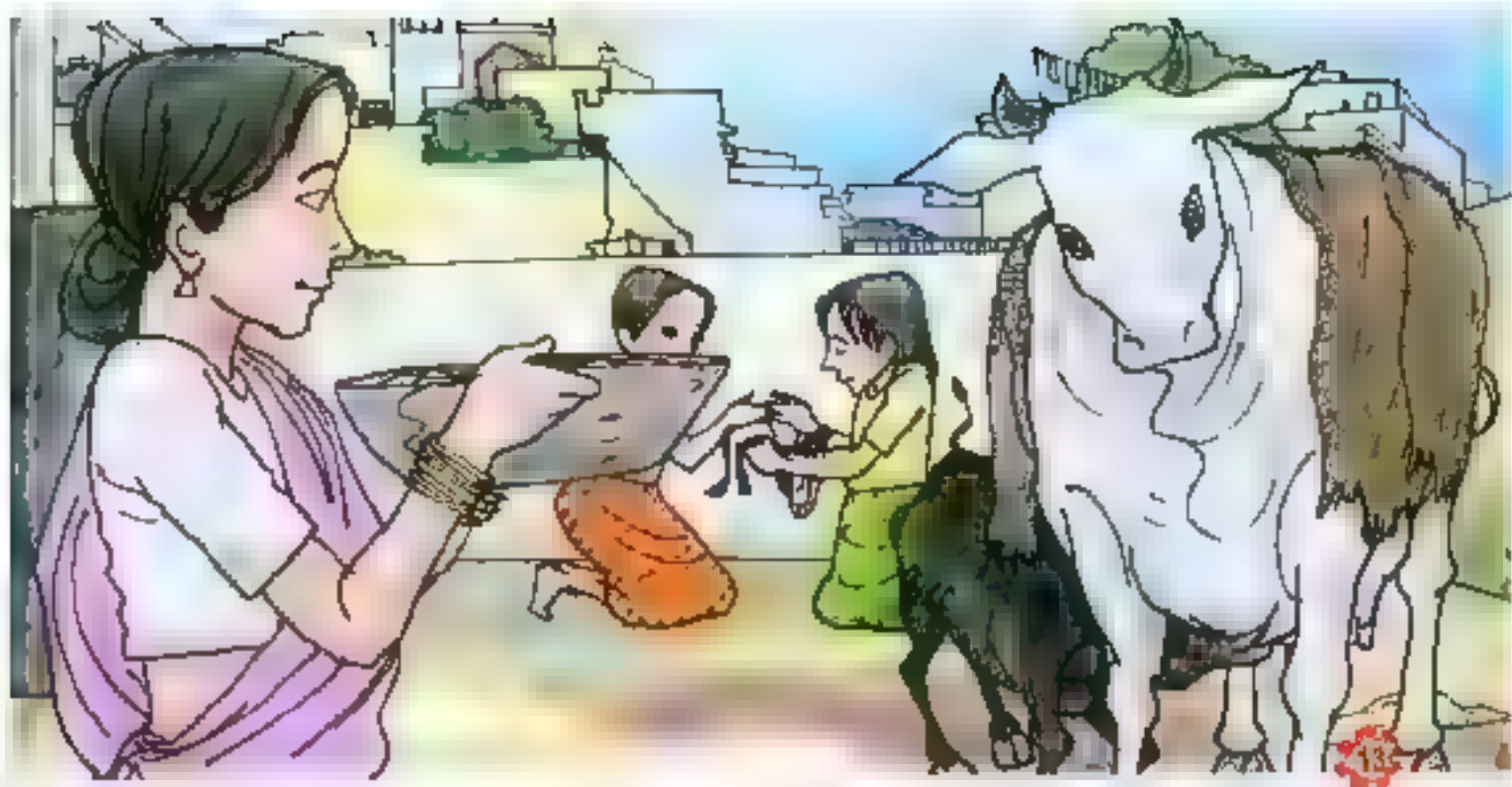
गुल्ली दूध पीती जा रही थी।
उसकी पूँछ इधर उधर मटक रही थी।
इतने में मम्मी पीलू के लिए काढ़ा ले आईं।
पीलू काढ़ा पीने लगी।

14
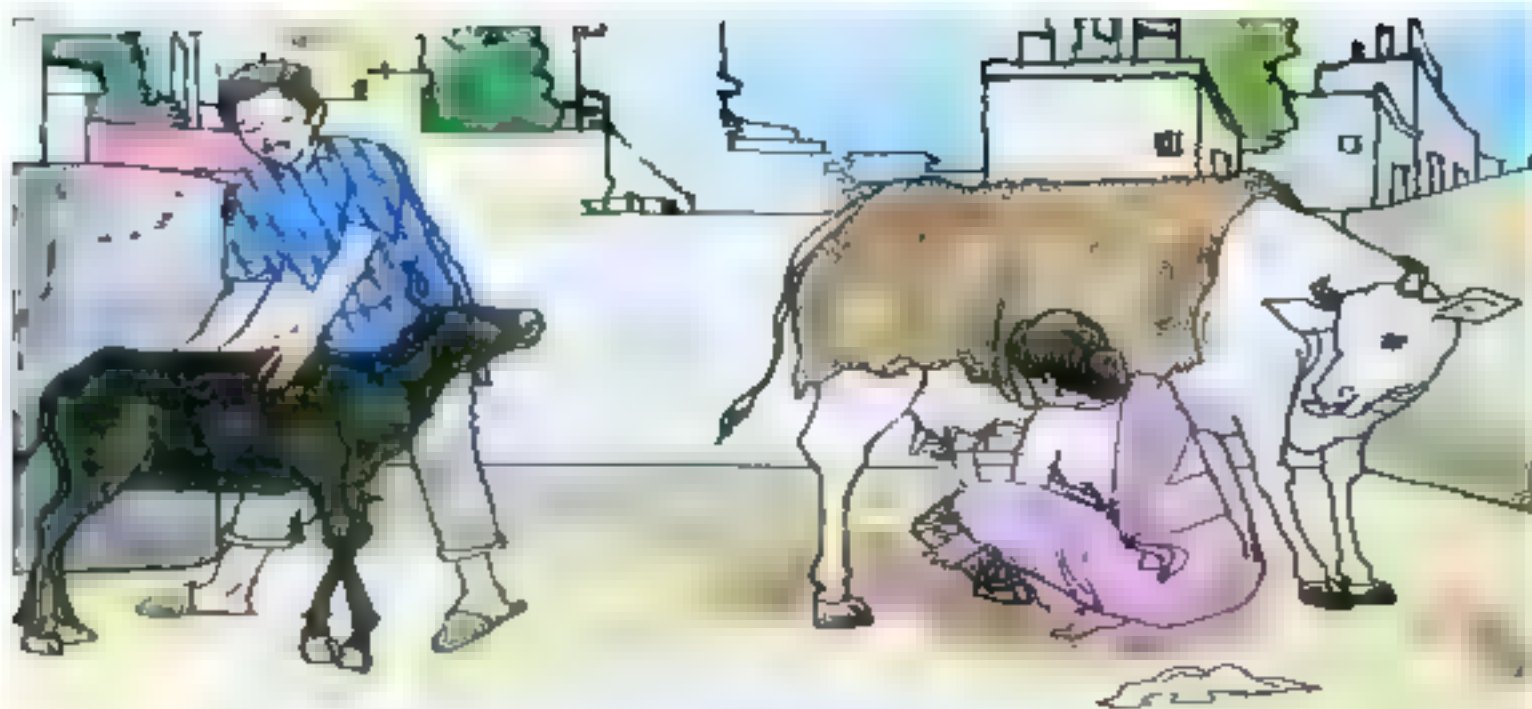
थोड़ी देर में पापा ने गुल्ली को अलग कर लिया।
फिर मम्मी पीलू का दूध दुहने लगीं।
उस दिन पीलू का दूध कुछ अलग-सा था।
दूध पीला-पीला और फटा-फटा था।
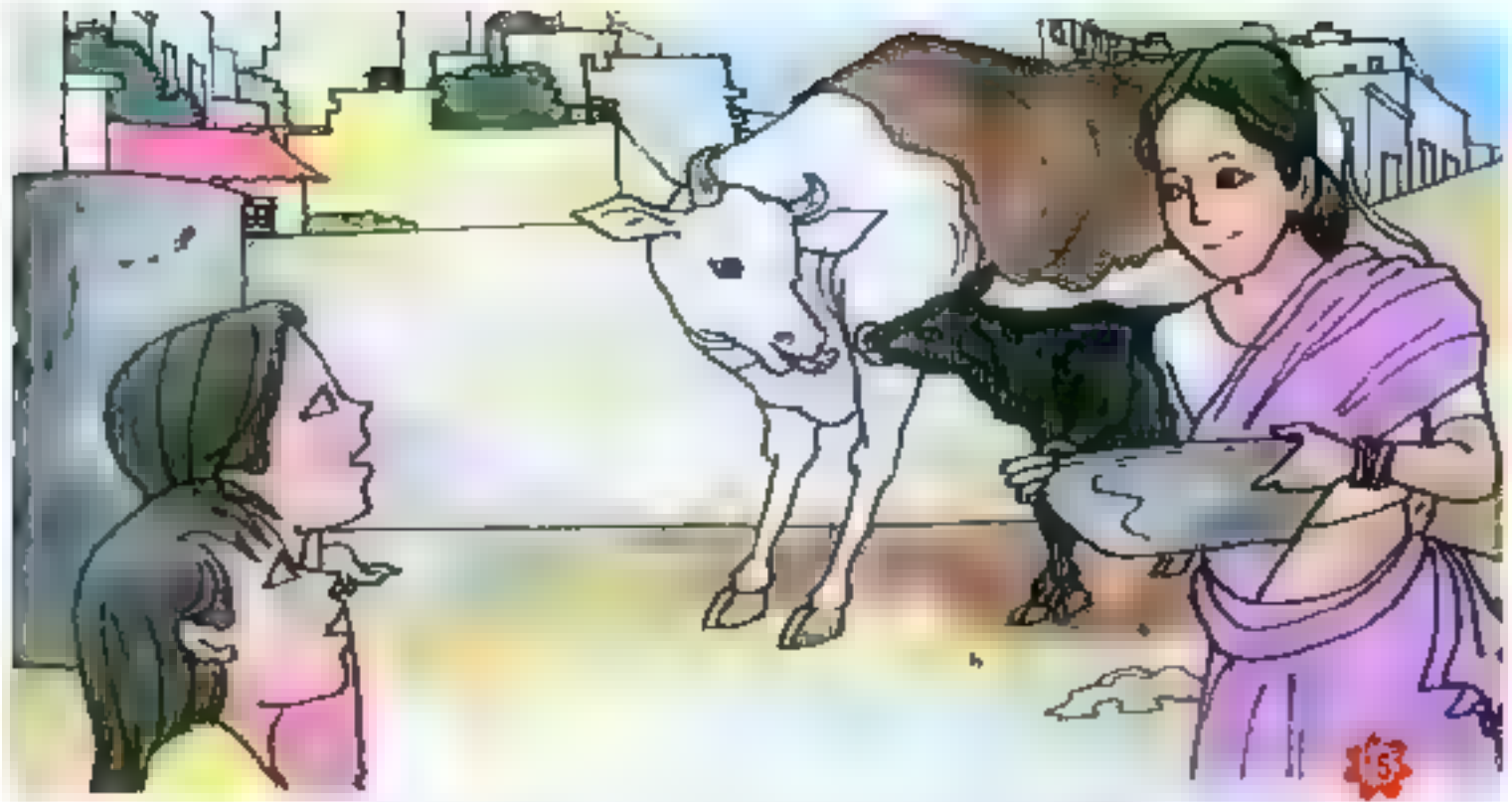
रमा और रानी मम्मी के पास पहुँची।
उनका मन स्कूल जाने को नहीं था।
मम्मी उनकी बात मान गईं।
लेकिन मम्मी ने एक शर्त रखी।
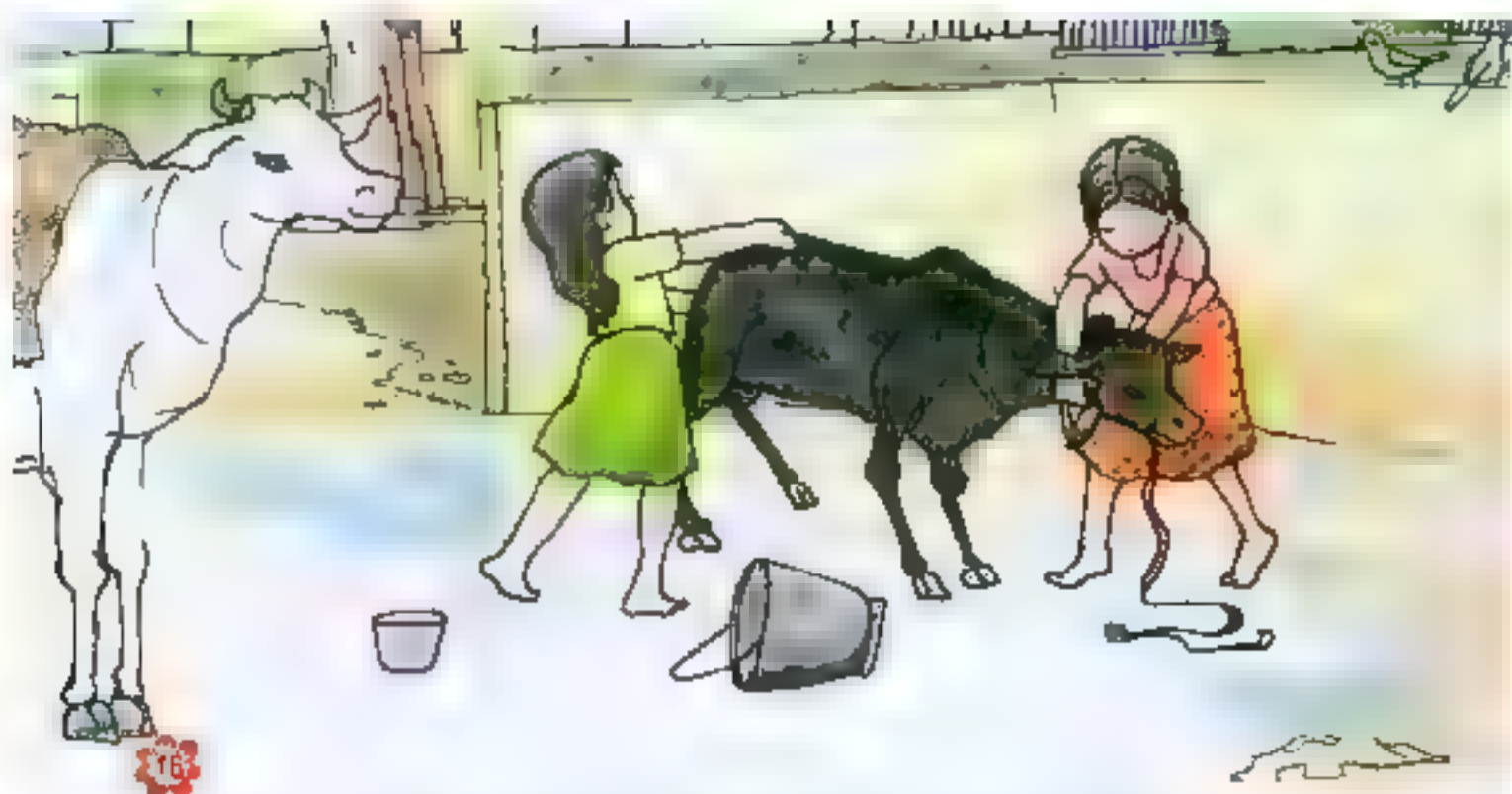
मम्मी ने कहा कि उन्हें गुल्ली को नहलाना पड़ेगा।
यह सुनकर दोनों खुश हो गईं।
रमा और रानी ने धीरे-धीरे गुल्ली को नहलाया।
उन्होंने गुल्ली को नहलाकर नरम रस्सी से बाँध दिया।

2087

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

नानी का चश्मा

नानी का चश्मा

यह रमा की नानी हैं।
रमा की नानी हर समय चश्मा लगाती हैं।
नानी को किताबें पढ़ना पसंद है।
नानी रोज़ सुबह अखबार पढ़ती हैं।
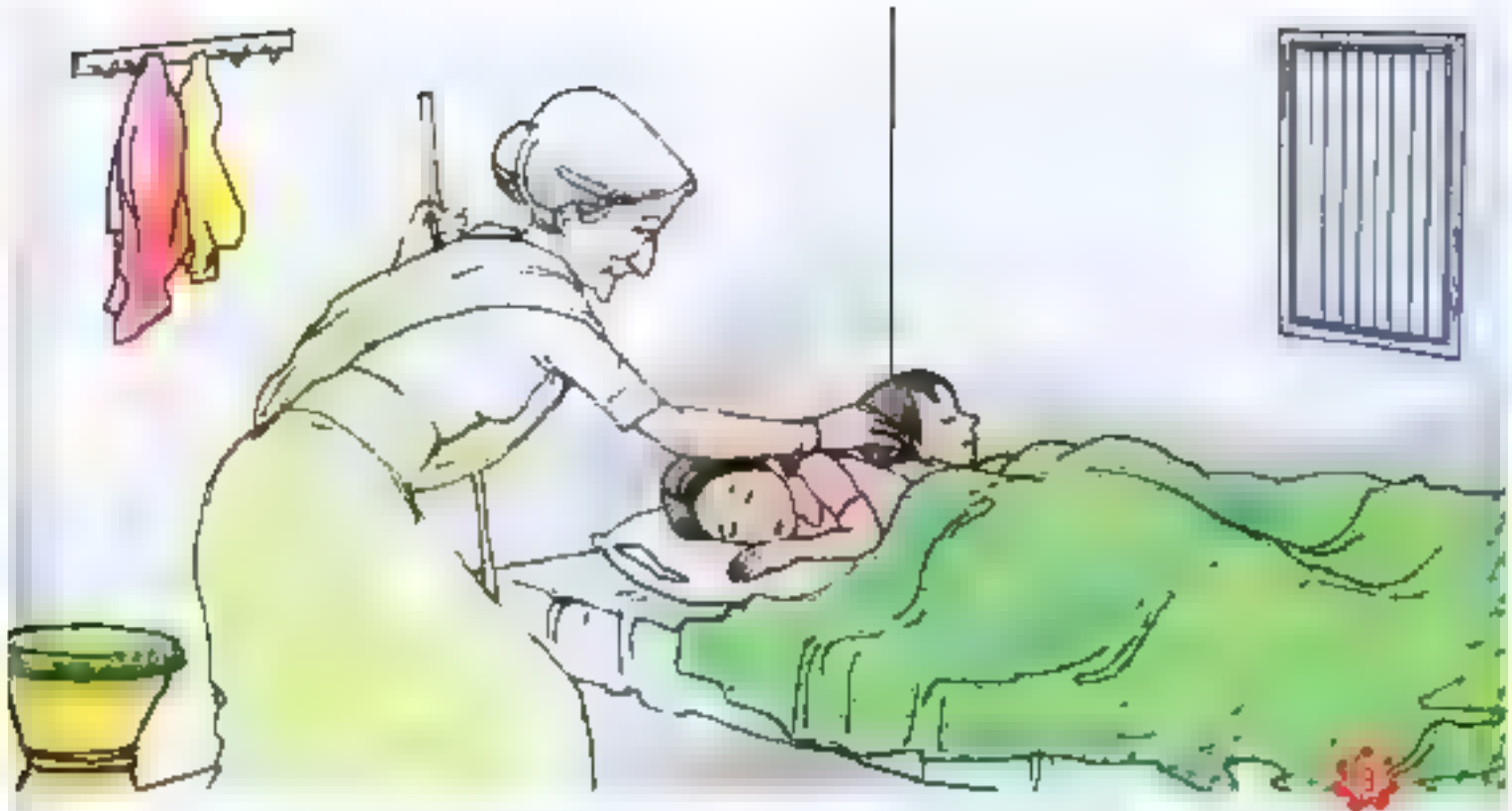
एक दिन नानी रमा को सुबह सुबह उठाने लगीं।
नानी को अपना चश्मा नहीं मिल रहा था।
नानी को चश्मे के बिना मुश्किल हो रही थी।
वह अपनी ज़रूरी चीज़ें नहीं ढूँढ़ पा रही थीं।
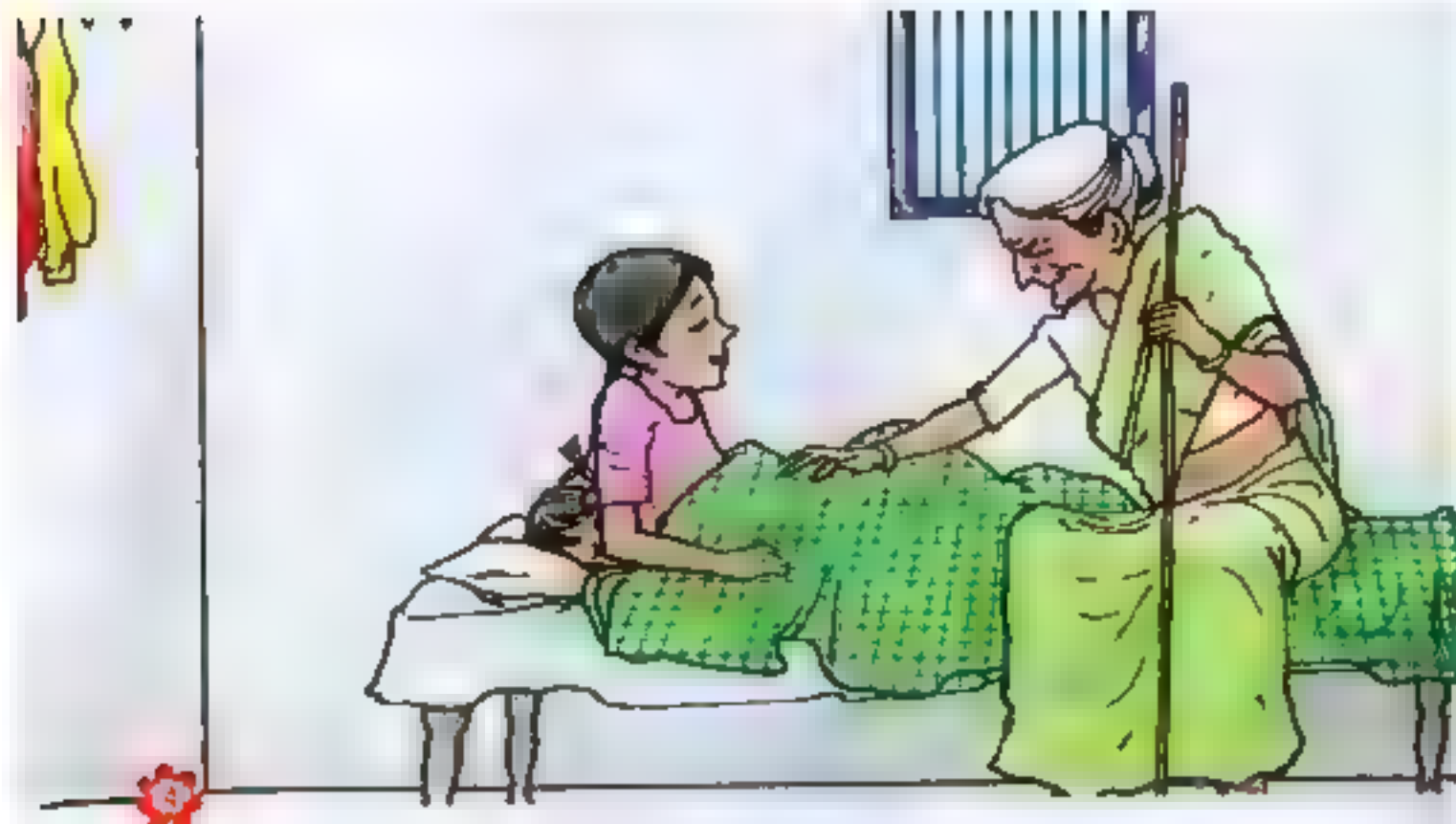
रमा बहुत गहरी नींद में थी।
वह उठ नहीं रही थी।
नानी ने रमा को बहुत प्यार से उठाया।
उन्होंने रमा को चश्मा ढूँढ़ने के लिए कहा।
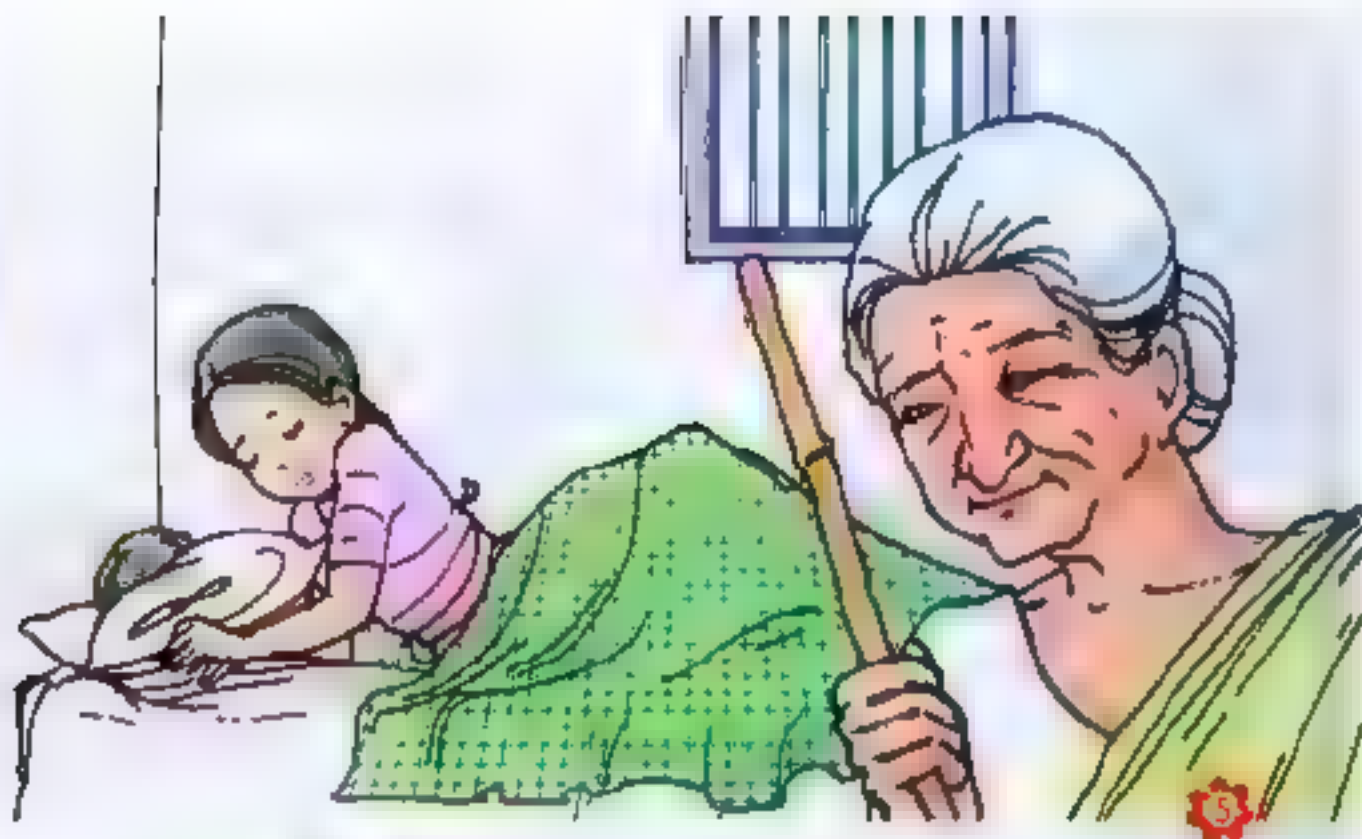
रमा नींद में ही चश्मा ढूँढ़ने लगी।
उसने तकियों के नीचे चश्मा ढूँढ़ा।
नानी चश्मे को कई बार वहाँ रख देती हैं।
चश्मा तकियो के नीचे नहीं मिला।
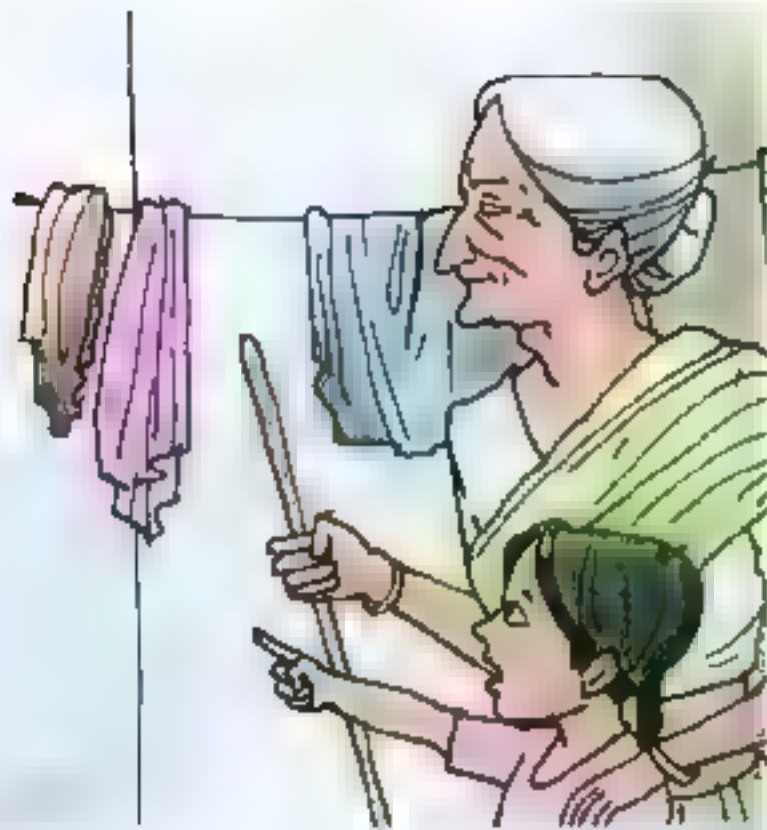
नानी ने रमा से समय पूछा।
रमा बोली कि छोटी सुई पाँच पर और बड़ी चार पर है।
साढ़े पाँच बजने वाले थे।
नानी को अखबार पढ़ना था और सैर करने जाना था।

रमा ने नानी की मेज़ पर किताबों के बीच में चश्मा ढूँढ़ा। नानी मेज़ पर बैठकर अखबार और किताबें पढ़ती हैं। वह अक्सर किताबों के बीच में चश्मा छोड़ देती हैं। चश्मा मेज़ पर नहीं था।
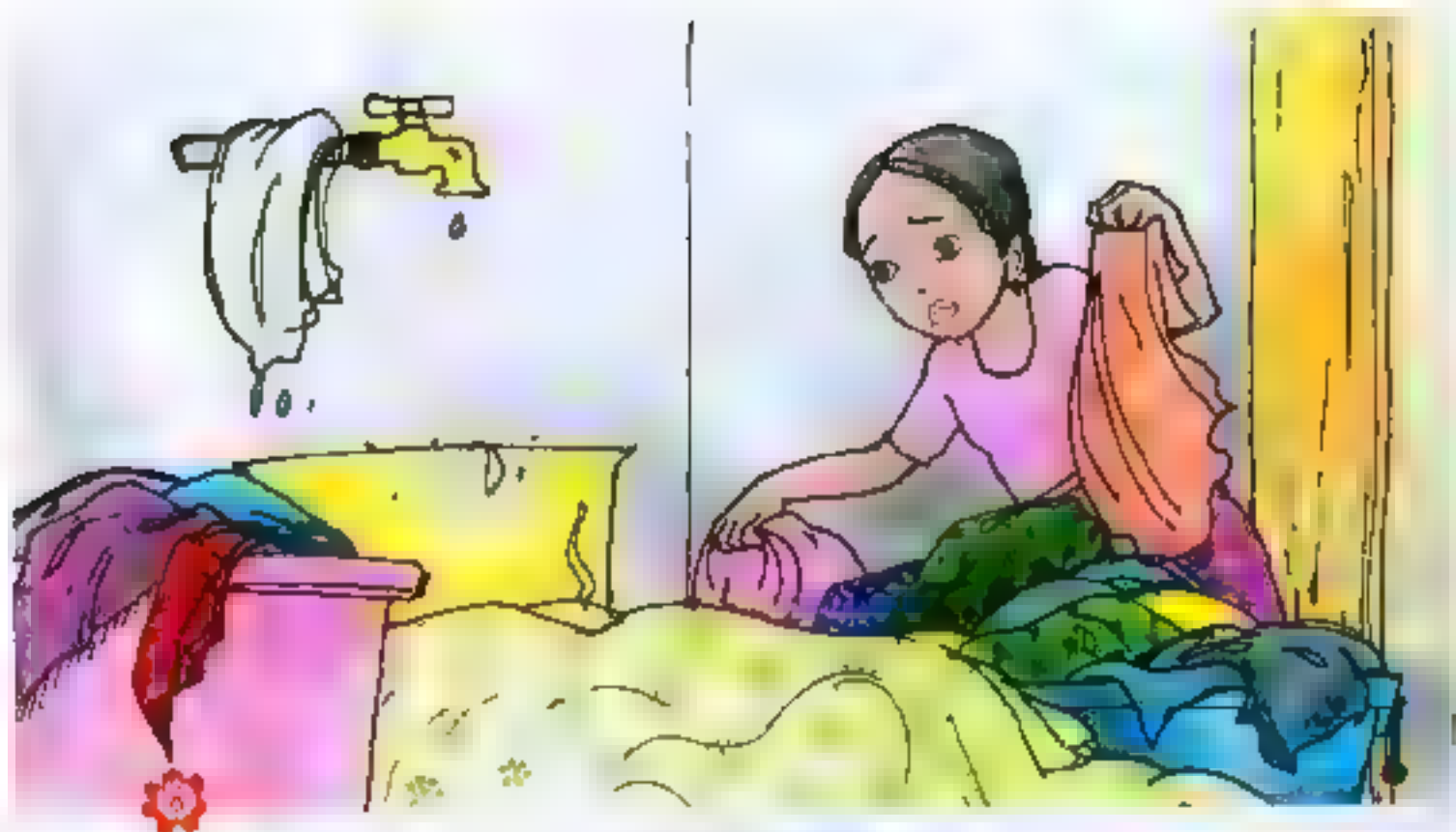
रमा ने चश्मा गुसलखाने में ढूँढ़ा
गुसलखाने में बहुत सारे कपड़े पड़े हुए थे।
नानी कभी-कभी चश्मा गुसलखाने में छोड़ देती हैं।
चश्मा गुसलखाने में भी नहीं था।
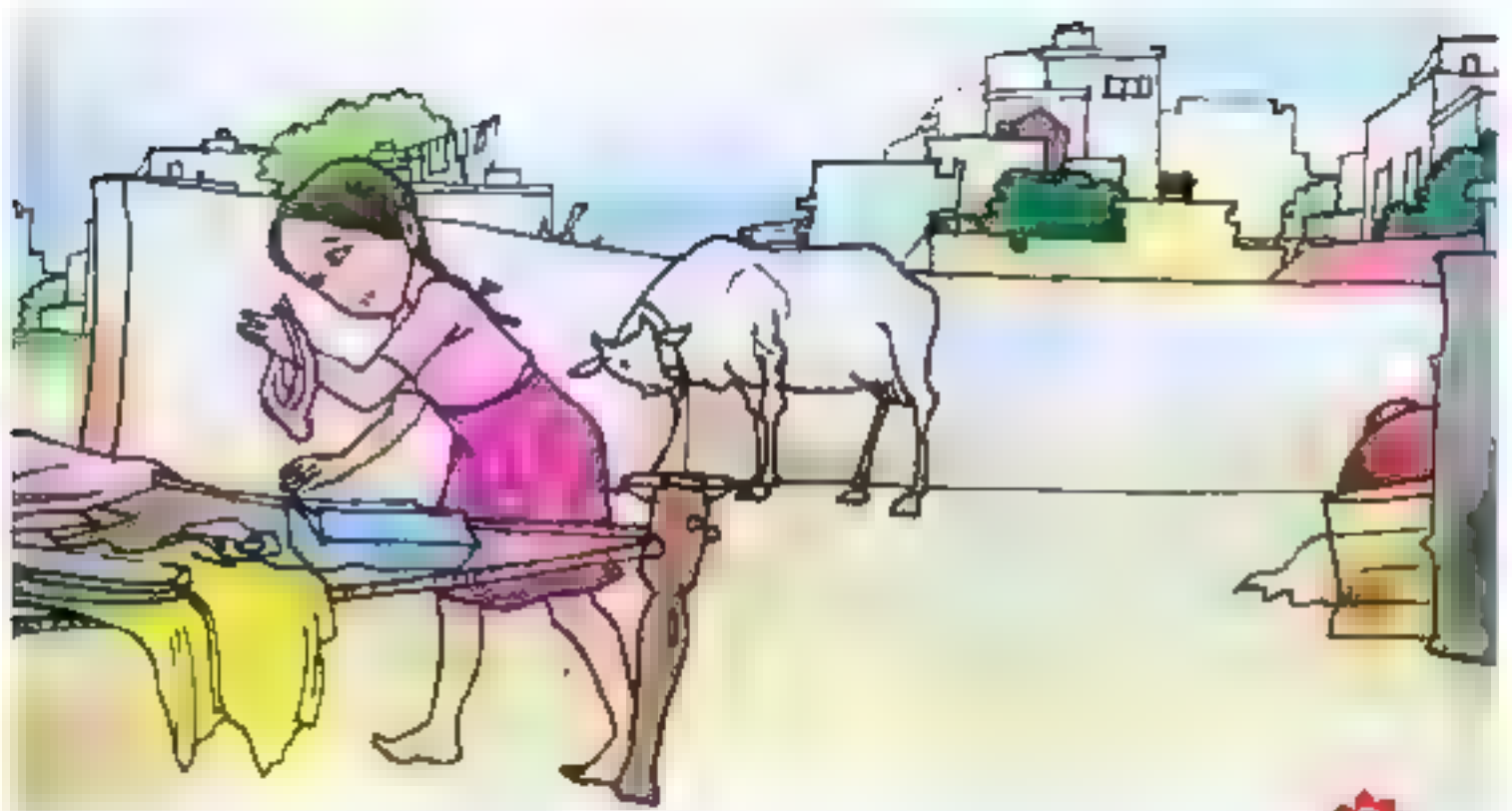
रमा ने चश्मा आँगन में ढूँढ़ा।
आँगन में बहुत सारा सामान पड़ा हुआ था
नानी अक्सर आँगन की चारपाई पर चश्मा छोड़ देती हैं।
चश्मा चारपाई पर भी नहीं मिला।
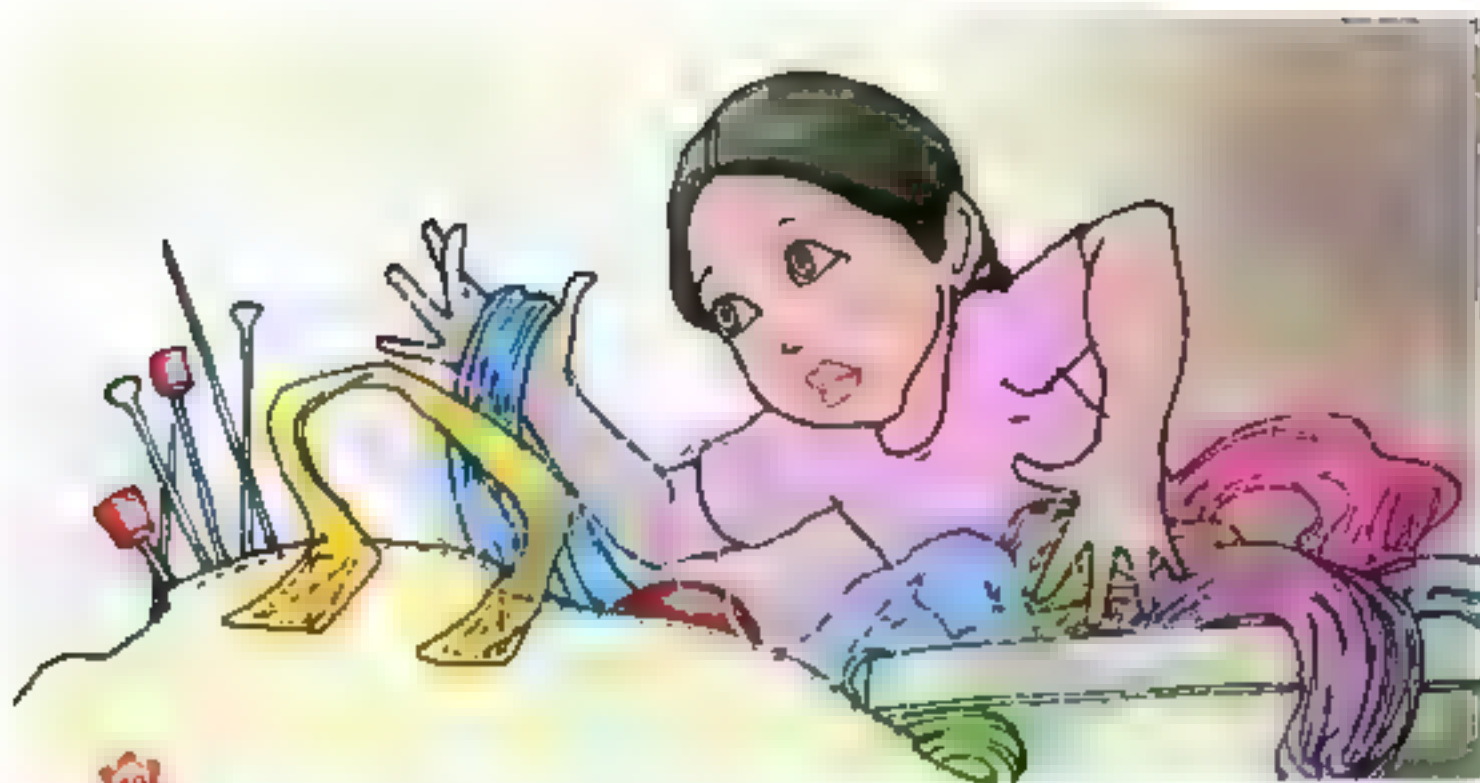
रमा ने चश्मा नानी के ऊन के थैले मे ढूँढ़ा।
थैले में ऊन के बहुत सारे गोले थे।
उसमें आधे बुने हुए स्वेटर भी थे।
चश्मा थैले मे भी नही था।

रमा ने चश्मा शीशे के पास ढूँढ़ा।
वहाँ पर कंघियाँ और तेल की शीशियाँ रखी हुई थीं।
नानी अक्सर कंघी करते समय चश्मा उतार देती हैं।
चश्मा शीशे के पास भी नहीं था।
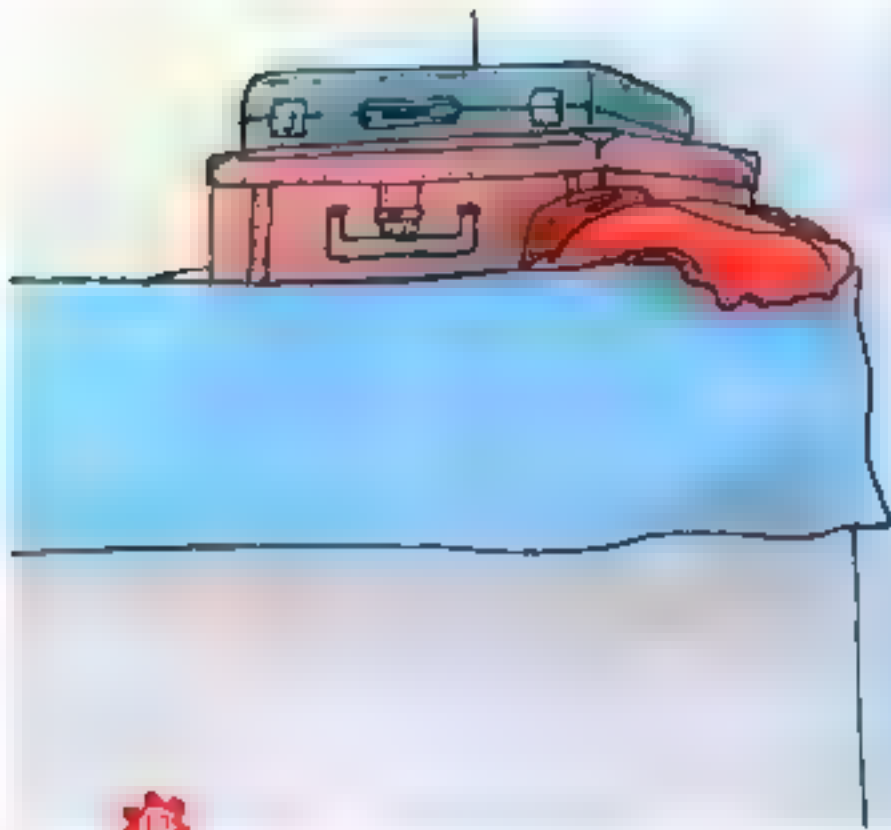
रमा ने चश्मा अलमारी में ढूँढ़ा।
अलमारी में नानी की साड़ियाँ थीं।
नानी कई बार अलमारी में चश्मा छोड़ देती हैं।
चश्मा अलमारी में भी नहीं था।
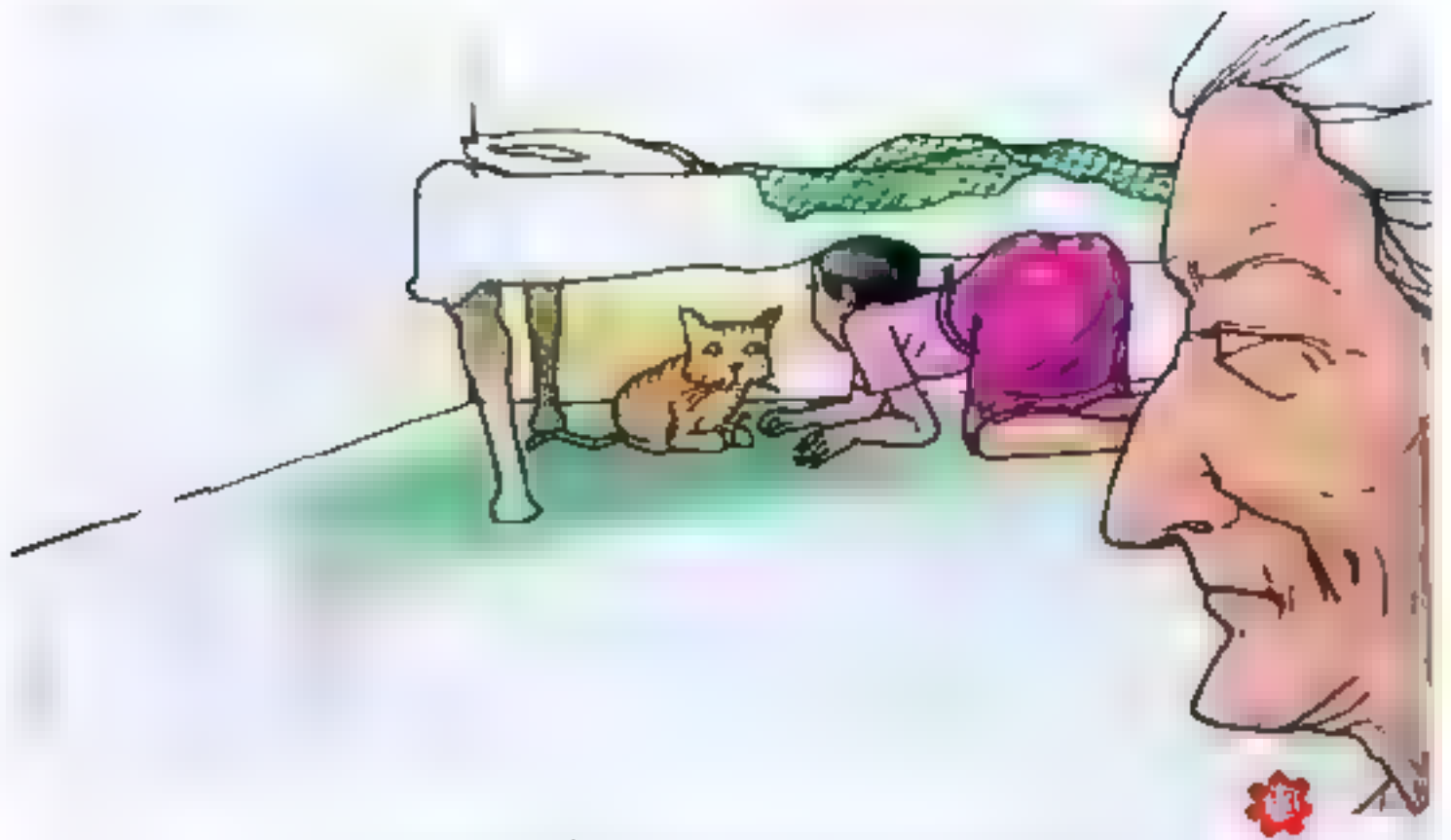
रमा चश्मा ढूँढ़ने पलंग के नीचे घुसी।
पलंग के नीचे मुनमुन बैठी हुई थी।
मुनमुन के पैरों के बीच में कुछ था।
वह ठीक से दिख नही रहा था।
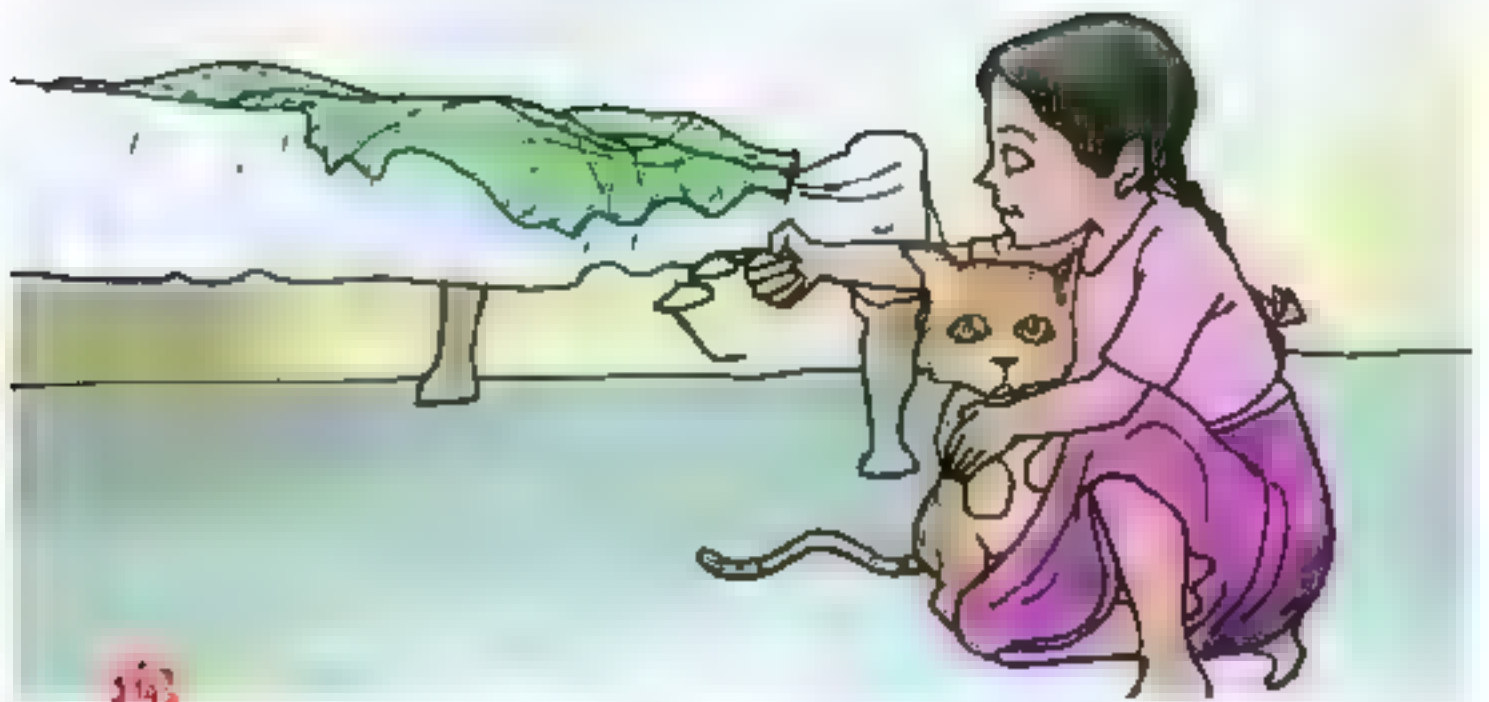
रमा ने मुनमुन को बाहर निकाला।
मुनमुन के साथ नानी का चश्मा भी आ गया।
रमा ने फौरन चश्मा उठा लिया।
वह चश्मा लेकर नानी के पास भागी।
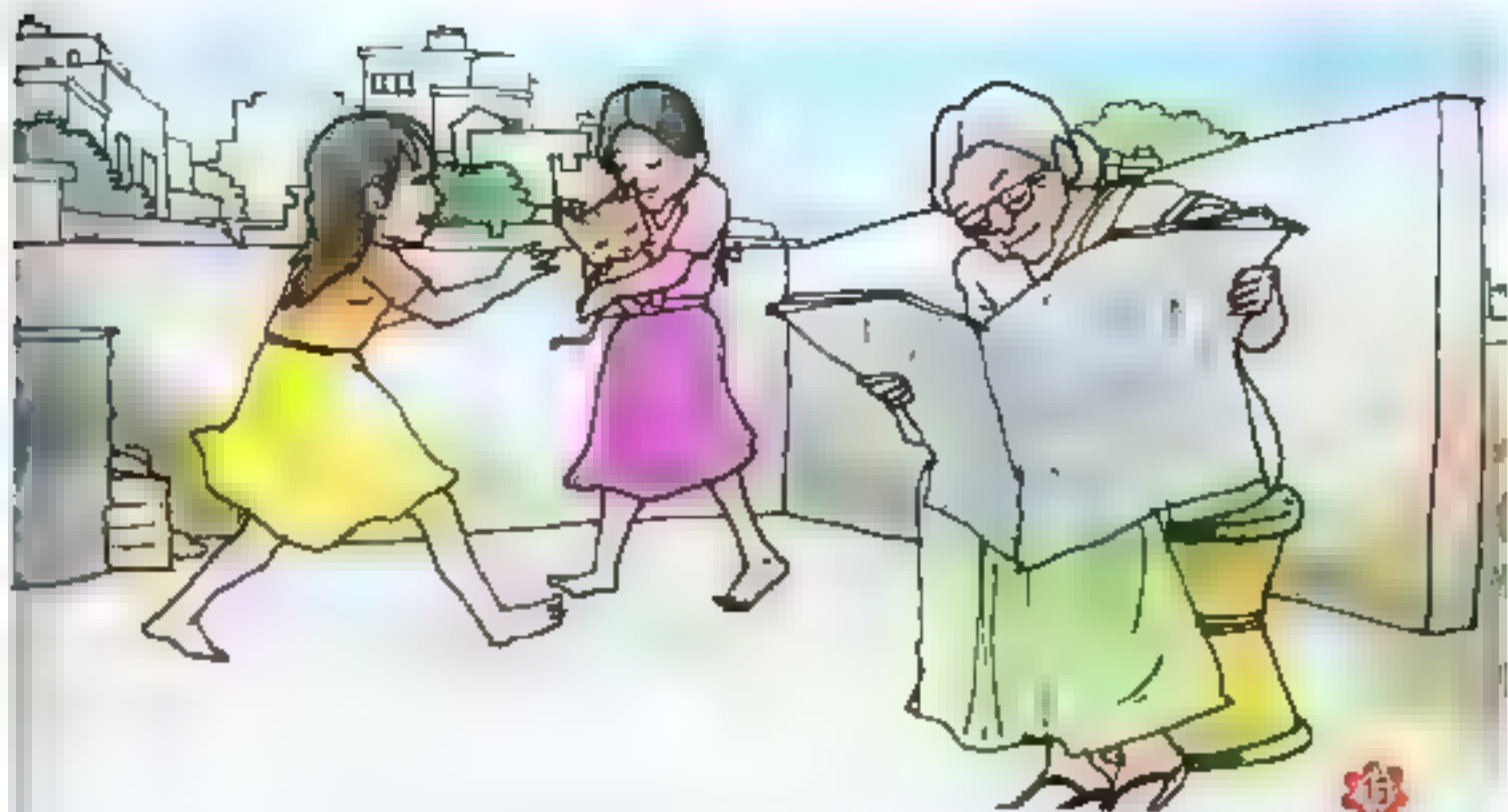
नानी चश्मा देखकर बहुत खुश हो गईं।
उन्होंने चश्मा लगा लिया।
वह अखबार पढ़ने बैठ गईं।
नानी बहुत देर तक अखबार पढ़ती रहीं।
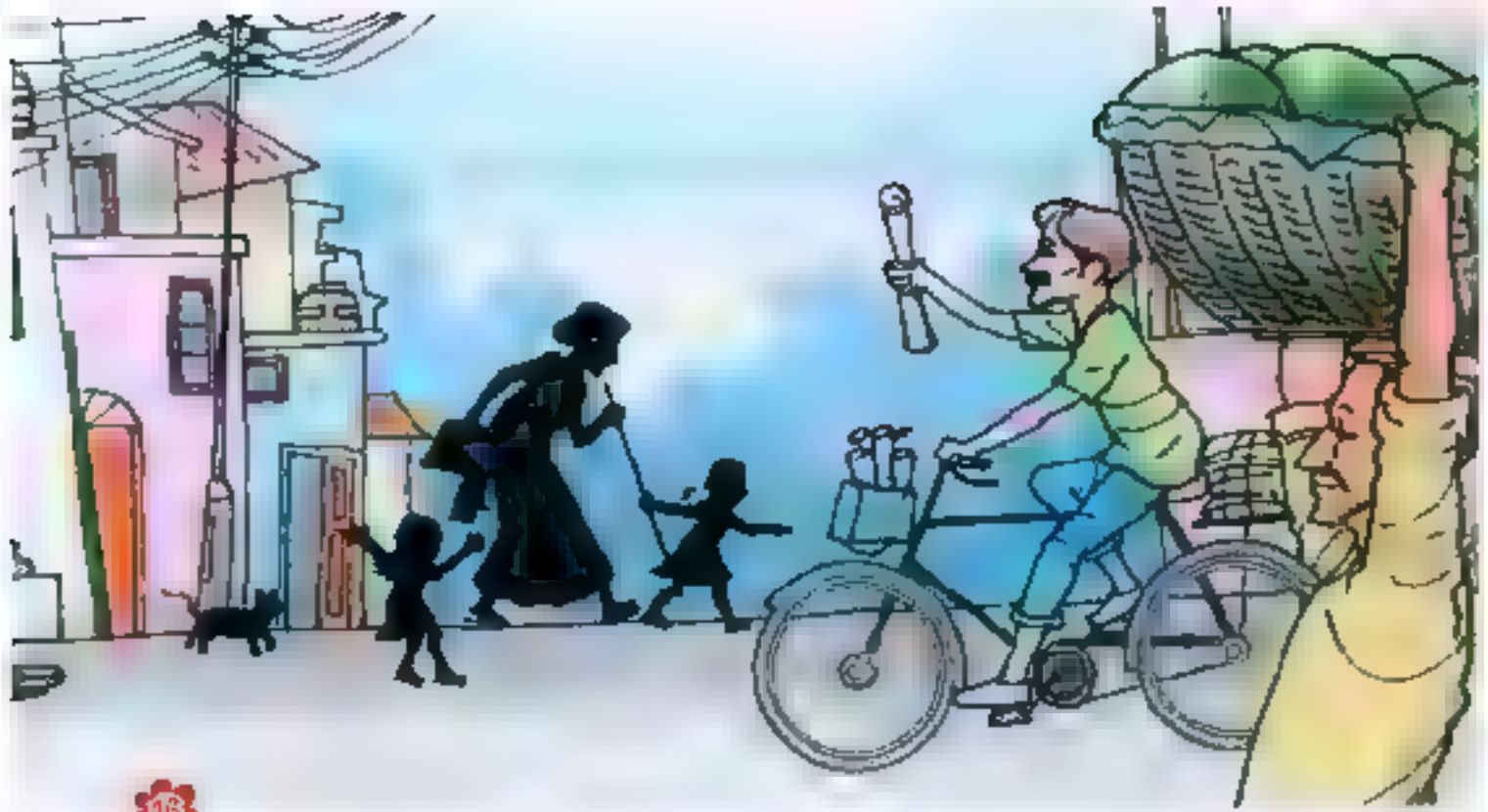
नानी ने रमा को सैर के लिए बुलाया।
रमा ने चश्मा मुनमुन को लगा दिया।
मुनमुन चश्मा लगाकर बड़ी सुंदर लग रही थी।
फिर तीनों सैर के लिए निकल गए।

2068

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

चुन्नी
और मुन्नी
पढ़ना है समझना

चुन्नी और मुन्नी

माधव और काजल के घर मे दो छिपकलियाँ रहती थीं।
एक छिपकली सफ़ेद रंग की थी।
दूसरी छिपकली काले रंग की थी।
दोनों छिपकलियाँ घर की दीवारों पर चिपकी रहती थीं।

माधव और काजल को छिपकलियाँ अच्छी लगती थीं।
उन्होंने छिपकलियों के नाम भी रख दिए थे।
वे सफ़ेद छिपकली को चुन्नी कहते थे।
काली छिपकली का नाम मुन्नी था।
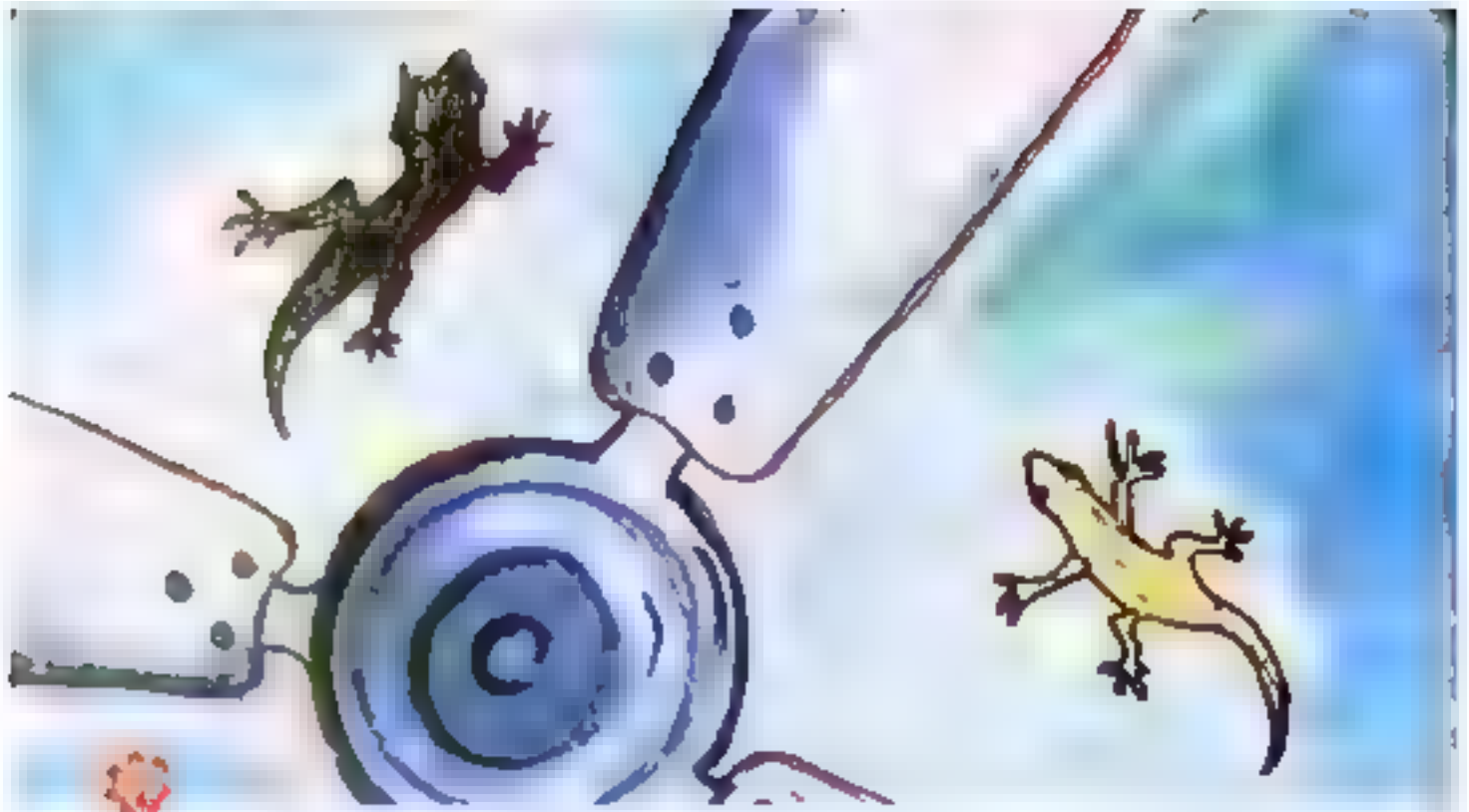
चुन्नी और मुन्नी पूरे घर की दीवारों पर घूमती रहती थीं।
वे एक दूसरे के पीछे भागती रहती थीं।
वे कभी कभी छत पर उल्टी चिपकी दिखाई देती थीं।
काजल और माधव काम छोड़कर उन्हें देखते रहते थे।

कभी कभी चुन्नी और मुन्नी गायब हो जाती थी।
काजल उन्हे पूरे दिन ढूँढ़ती रहती थी
माधव भी उन्हें ढूँढ़ नहीं पाता था।
चुन्नी मुन्नी कहीं कोने में घुस जाती थी।
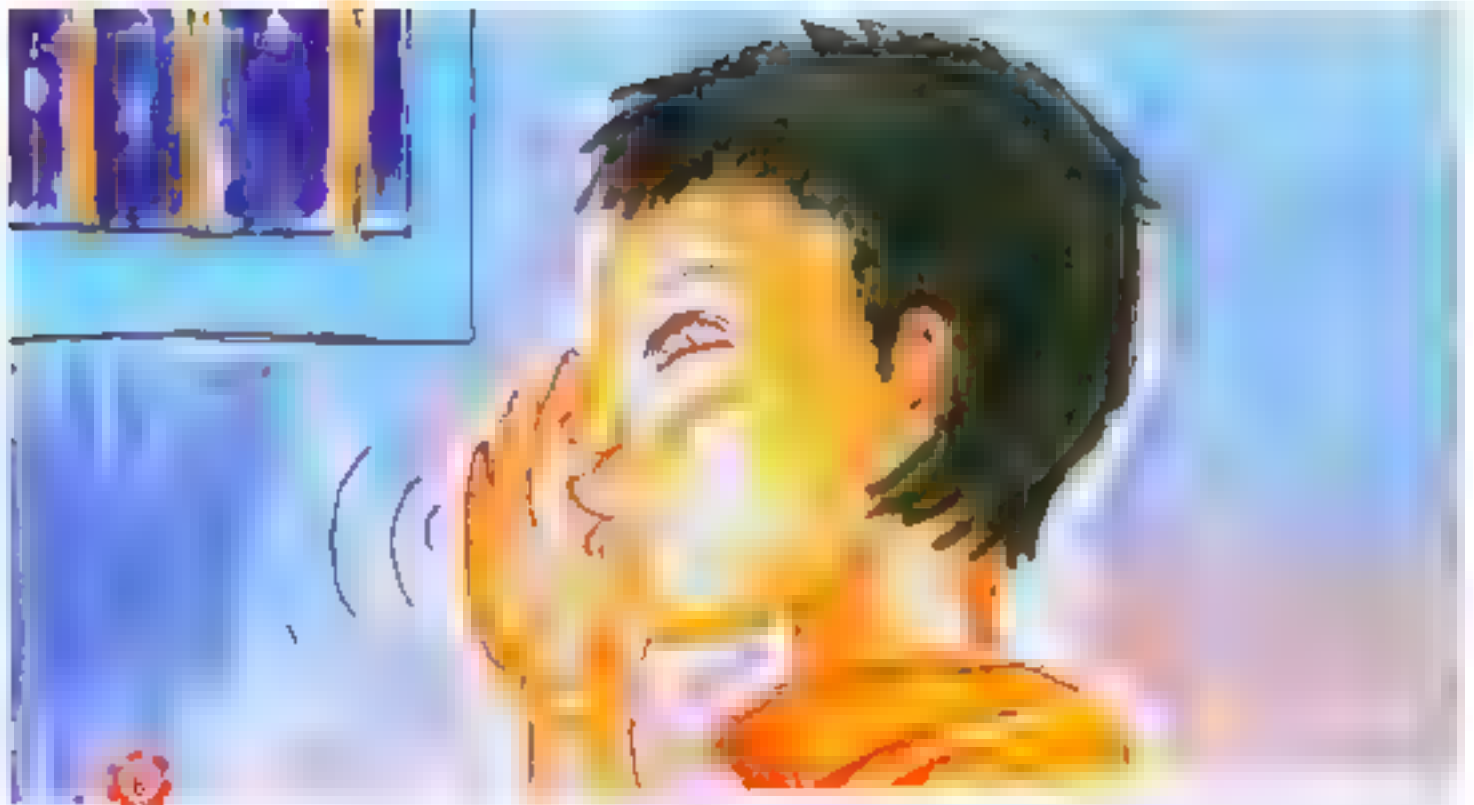
चुन्नी और मुन्नी रात को आवाज़ें निकालती थीं।
माधव को लगता जैसे वह उससे बात कर रही हों।
माधव कई बार उनसे बात करने की कोशिश करता था।
वह चुन्नी और मुन्नी की तरह आवाज़ निकालता था।

चुन्नी और मुन्नी कई बार बहुत नीचे आ जाती थीं।
वे ज़मीन पर भी दौड़ती थीं।
काजल ने उनको रसोई में भी देखा था।
वह रसोई के डिब्बों के पीछे घुस जाती थीं।

चुन्नी और मुन्नी कीड़े मकोड़े खाती थीं।
वे अक्सर तिलचट्टे को पकड़े हुए दिखती थीं।
चुन्नी तिलचट्टे को मुँह में दबा लेती।
मुन्नी मच्छर पकड़ती और चट कर जाती।
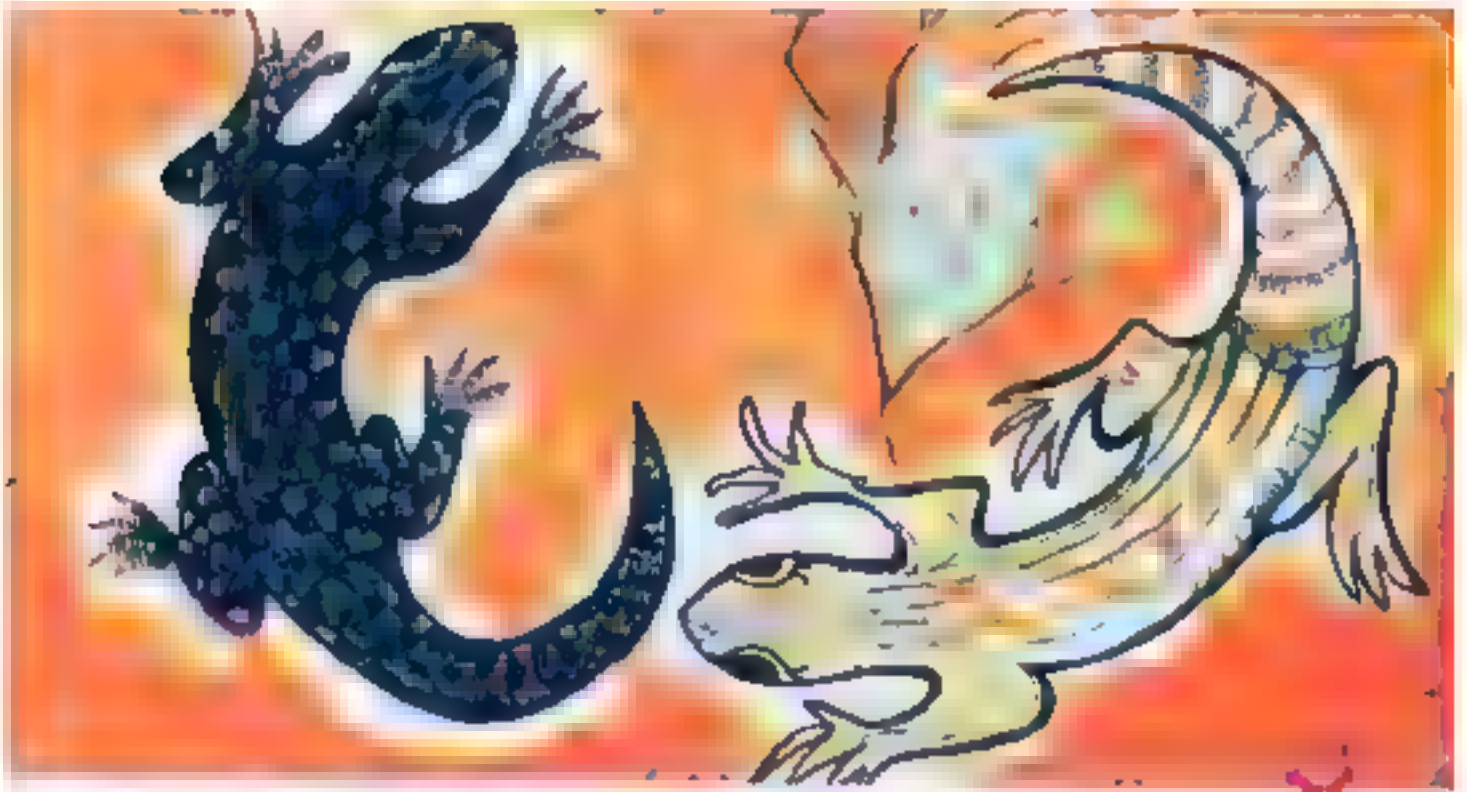
चुन्नी एक दिन मुन्नी के पीछे भाग रही थी।
काजल को लगा कि जैसे पकडम पकड़ाई खेल रही हो।
मुन्नी सरपट दीवार पर भागी जा रही थी।
चुन्नी उसके पीछे पीछे थी।

अचानक चुन्नी और मुन्नी अलग हो गईं।
काजल ने देखा कि मुन्नी की पूँछ गायब थी।
चुन्नी के मुँह में मुन्नी की पूँछ थी।
मुन्नी की पूँछ कट गई थी।

काजल ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी।
माधव दौड़कर आया।
काजल बहुत घबराई हुई थी।
उसने बताया कि चुन्नी ने मुन्नी की पूँछ खा ली।
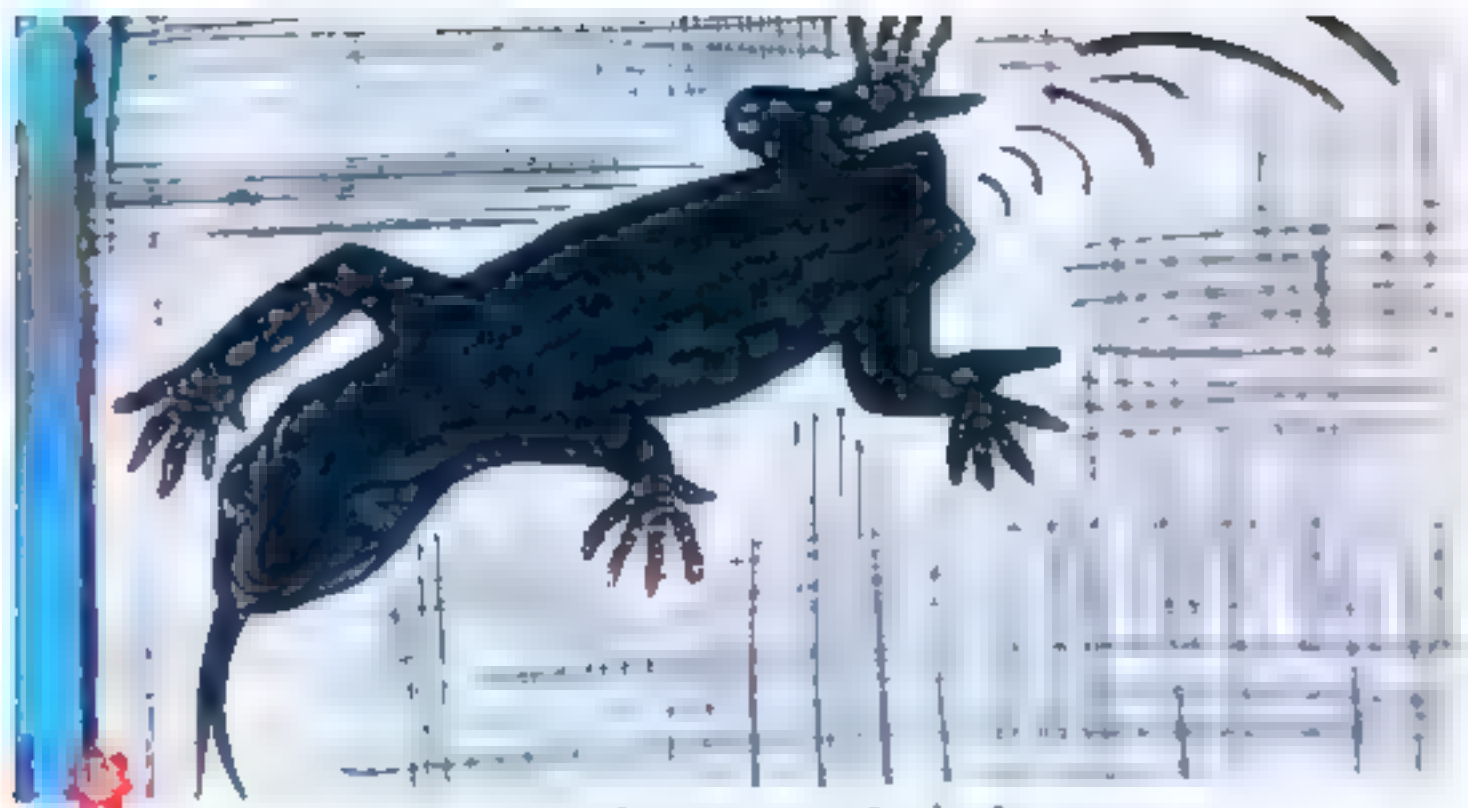
माधव ने बिना पूँछ की मुन्नी देखी।
दोनों बहुत दुखी हो गए।
मुन्नी फिर भी इधर उधर दौड़ रही थी।
चुन्नी कहीं छुप गई थी।

रात को माधव मुन्नी की पूँछ के बारे मे सोचता रहा।
काजल भी मुन्नी की पूँछ के बारे मे सोच रही थी।
दोनो को चुन्नी पर बहुत गुस्सा आ रहा था।
वे मुन्नी के बारे में बातें करते हुए सो गए।
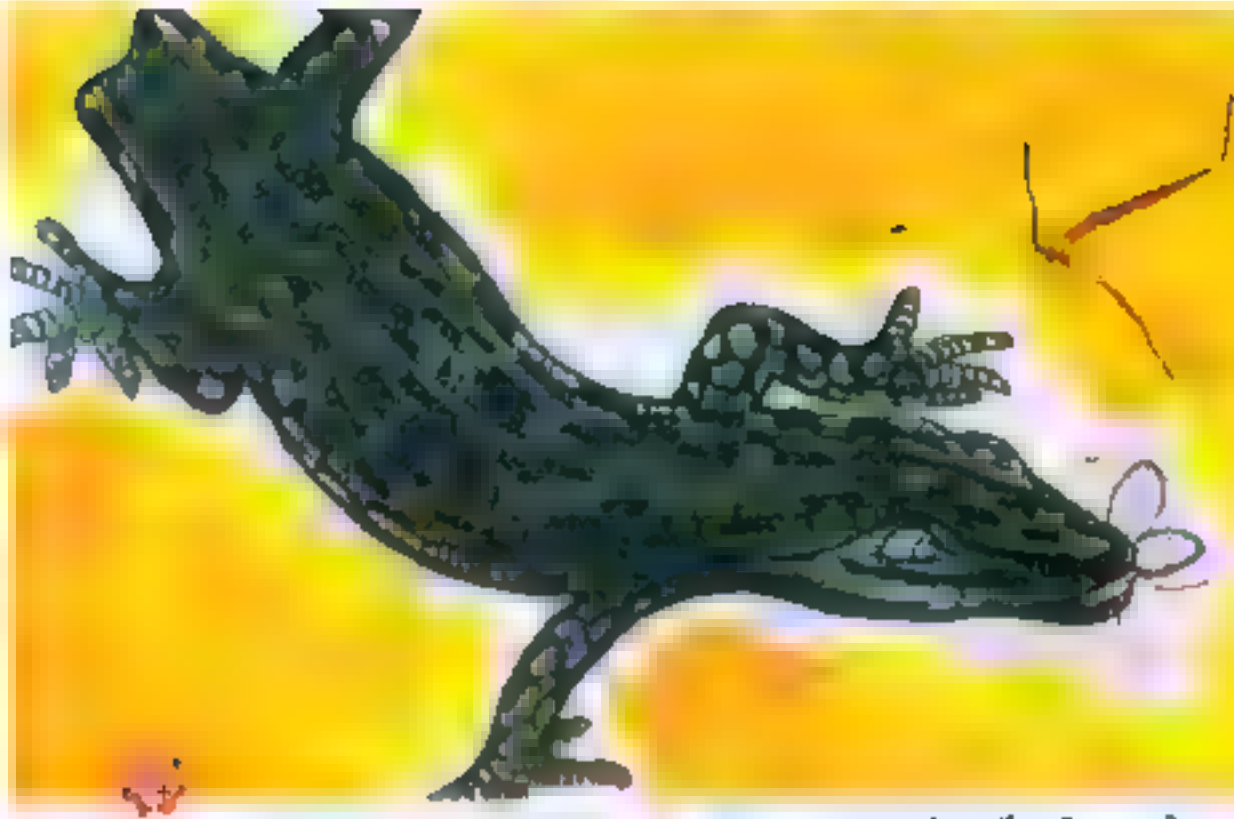
सुबह उठते ही दोनों मुन्नी को ढूँढ़ने लगे।
मुन्नी रसोई की दीवार पर थी.
वह रोज़ की तरह मच्छर खा रही थी।
चुन्नी छत पर उल्टी चिपकी हुई थी।

काजल और माधव रोज़ मुन्नी को देखते रहते थे।
वे चुन्नी से अभी भी नाराज़ थे।
एक दिन मुन्नी बहुत नीचे आकर तिलचट्टा पकड़ रही थी।
माधव की नज़र उस पर पड़ी।

माधव ने देखा मुन्नी की नई पूँछ आ गई थी।
वह काजल को बुलाकर लाया।
काजल ने भी मुन्नी की छोटी सी पूँछ देखी।
दोनों समझ गए कि छिपकली की नई पूँछ आ जाती है।
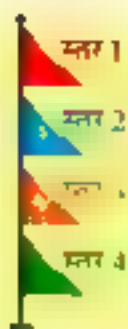
2089

रू. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (सजिल्द सेट)
987-81-7450-890-4

पढ़ना है समझना
मिमी के लिए
क्या लूँ?

मिमी के लिए क्या लूँ?
माधव
मिमी
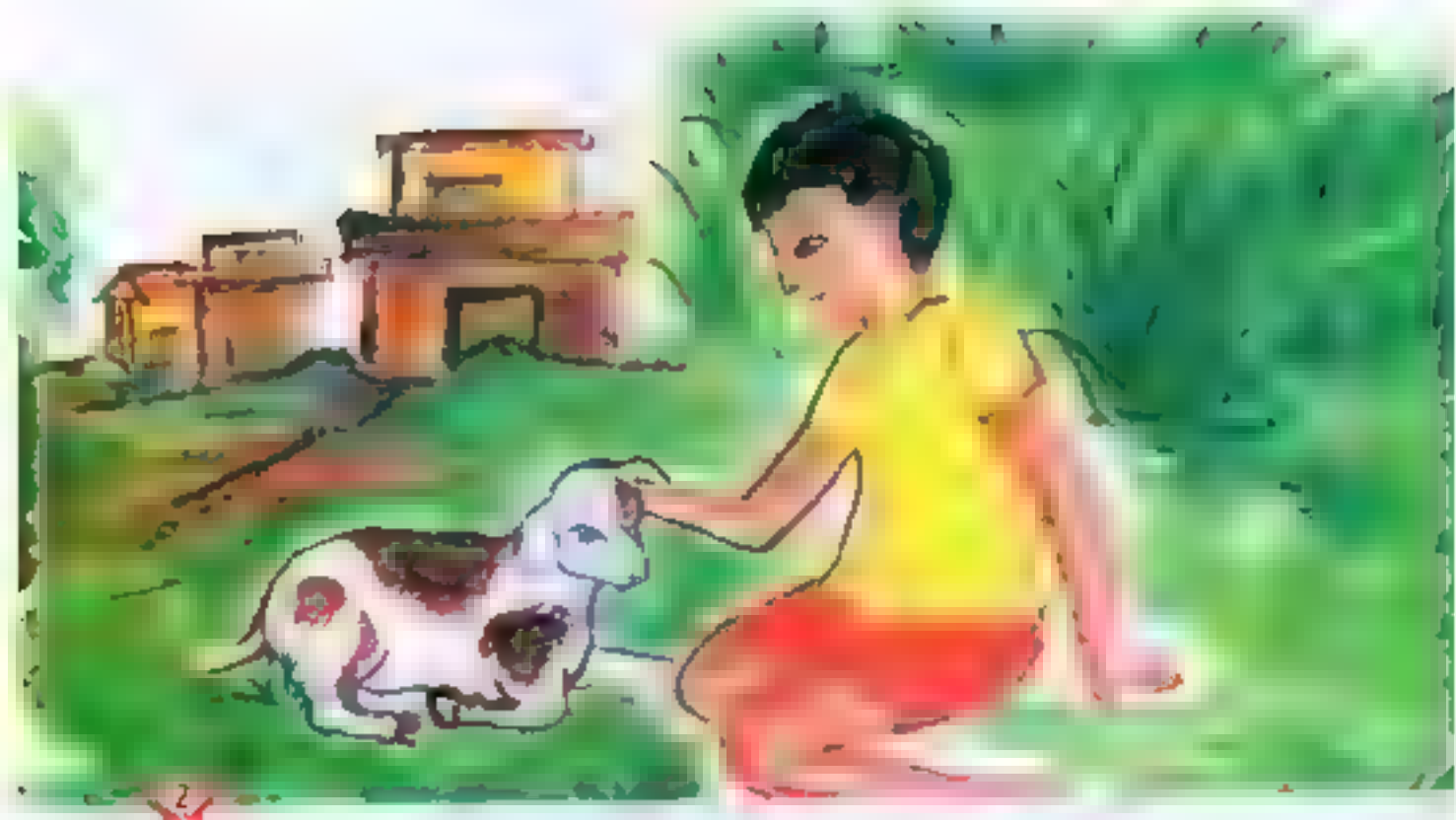
माधव के पास एक बकरी थी।
उस बकरी का नाम मिमी था।
माधव मिमी को बहुत प्यार करता था।
मिमी भी माधव के आस पास ही घूमती रहती थी।

मिमी का रंग सफ़ेद और भूरा था।
उसके कान बड़े बड़े थे।
मिमी के बाल बहुत चमकते थे।
मिमी की आँखें बड़ी प्यारी थी।

मिमी बहुत मुलायम थी।
माधव दिनभर उसे सहलाता रहता था।
वह उसे अपनी गोद में लिए फिरता था।
माधव को मिमी के मुलायम-मुलायम कान बहुत पसंद थे

मिमी पूरे एक साल की हो गई थी।
मिमी का जन्मदिन आया।
माधव उसका जन्मदिन मनाना चाहता था।
वह मिमी के लिए एक तोहफ़ा खरीदना चाहता था।

माधव ने मम्मी से तोहफ़े के लिए पैसे माँगे।
मम्मी ने बीस रुपये दे दिए।
माधव ने मिमी को नहला धुलाकर तैयार किया।
वह मिमी को लेकर बाज़ार की तरफ़ निकल पड़ा।
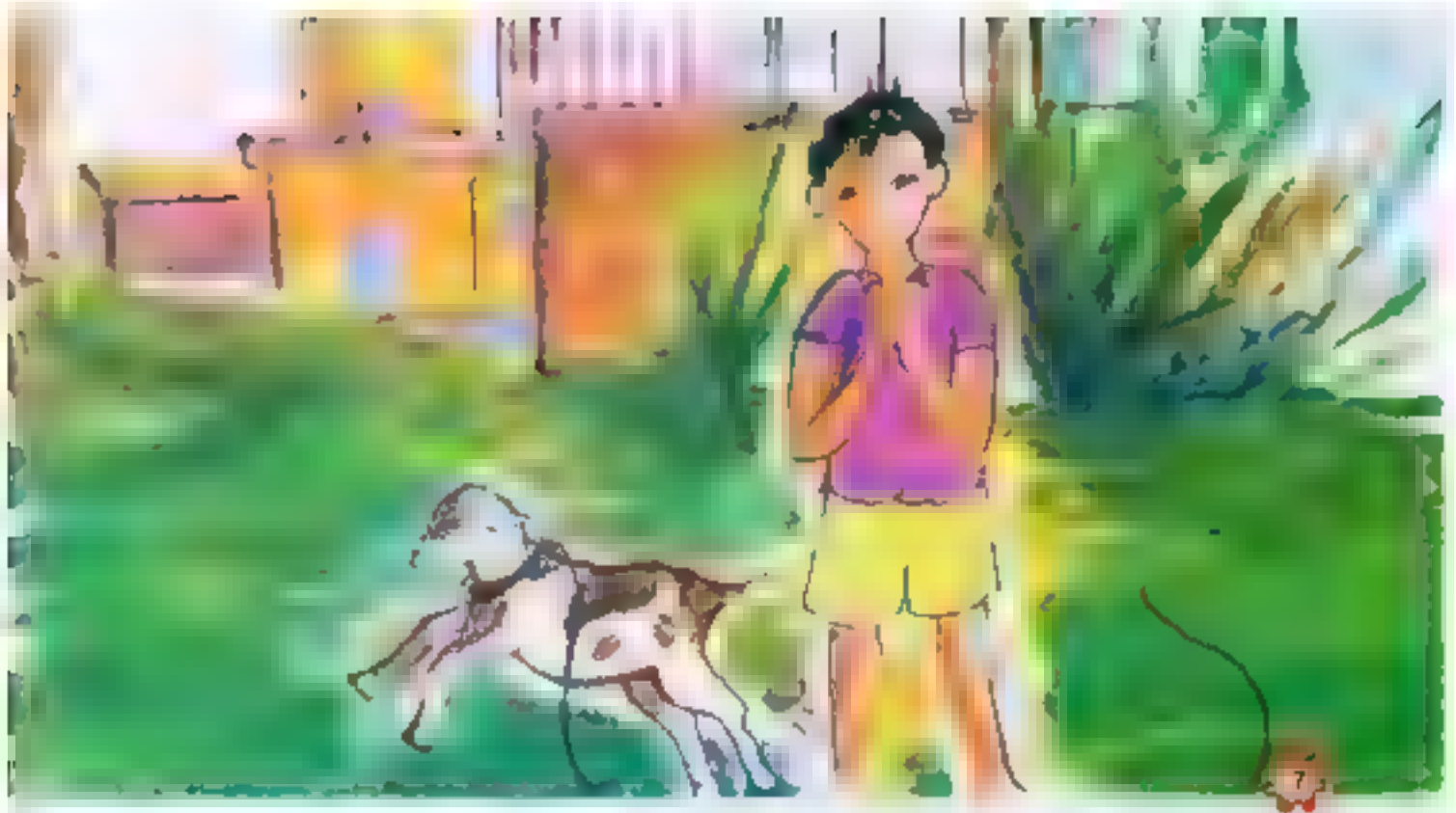
माधव ने मिमी की रस्सी पकड़ रखी थी।
थोड़ी देर बाद माधव ने रस्सी खोल दी।
मिमी फ़ौरन इधर उधर उछलने लगी।
माधव को मिमी का उछलना-कूदना बहुत पसंद था।

बाज़ार में सबसे पहली दुकान हलवाई की थी।
दुकान में खूब सारी मिठाइयाँ थीं।
हलवाई के पास खूब सारे लड्डू और रसगुल्ले थे।
उसके पास बहुत सारा दूध, दही और शरबत भी था।

तभी माधव की नज़र दूसरी तरफ़ की मिठाइयों पर पड़ी।
वहाँ रसगुल्ले, जलेबी और पेड़े रखे हुए थे।
माधव सोचने लगा कि मिमी के लिए क्या ले।
एक दोना जलेबी कैसी रहेगी?

अगली दुकान कपड़ों की थी।
दुकान पर बहुत सारे लोग कपड़े खरीद रहे थे।
वहाँ कमीज़ें, कुर्ते और पाजामे लटके हुए थे।
कुछ कपड़े शीशे की अलमारियों में रखे हुए थे।

माधव कमीज़ों की तरफ़ देखने लगा।
उसने पीली, नीली, हरी और गुलाबी कमीज़ें देखीं।
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।
लाल छींट वाली कॉलर की कमीज़ कैसी रहेगी?

अगली दुकान बर्तनो की थी।
दुकान पर खूब सारे बर्तन थे।
वहाँ बहुत सारे बर्तन स्टील के थे।
कुछ बर्तन पीतल के भी थे।

माधव सारे बर्तनों को देखने लगा।
वहाँ थालियाँ, कटोरियाँ, चम्मचें और गिलास रखे हुए थे।
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।
दूध के लिए एक कटोरा कैसा रहेगा?

अगली दुकान लुहार की थी।
उसकी दुकान पर तरह-तरह की चीज़ें थीं।
वहाँ तवे, कड़छी, जंज़ीरे और खूब सारी कीलें थीं।
लुहार गर्म-गर्म भट्टी पर कुछ बना रहा था।

माधव ने चारों तरफ़ नज़र घुमाई।
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।
उसकी नज़र घुँघरुओं पर पड़ी।
माधव ने मिमी के लिए घुँघरू ले लिए।

माधव ने मिमी के दोनो पैरों मे घुँघरू पहना दिए।
घुँघरू लाल रंग के सुंदर से धागे में बँधे हुए थे।
मिमी कूदती-फाँदती माधव के साथ चल दी।
सब लोग उसके घुँघरुओं की छुन छुन सुनने लगे।

चलो पीपनी
बनाएँ

चलो पीपनी बनाएँ
बबली
मदन
नाज़िया
जीत

2

एक दिन बबली बहुत ख़ुश थी।
वह सारे घर में पी-पी करती घूम रही थी।
उसने अपने लिए एक पीपनी बनाई थी।
पीपनी में से बड़े ज़ोर की आवाज़ निकलती थी।

नाज़िया और मदन उसके घर आए थे।
मदन का मन पीपनी बजाने को कर रहा था।
उसने बबली से पीपनी माँगी।
बबली ने पीपनी देने से मना कर दिया।

मदन बोला कि मुझे पीपनी बनाना सिखा दो।
नाज़िया भी पीपनी बनाना सीखना चाहती थी।
बबली सिखाने के लिए मान गई।
वह सबको लेकर घर के बाहर गई।

बबली ने सबसे आम की गुठलियाँ ढूँढने के लिए कहा।
बाहर आम के बहुत सारे छोटे-छोटे पौधे दिख रहे थे।
कई पौधे गुठलियां में से निकले हुए थे।
सब आम की गुठलियाँ ढूँढने में जुट गए।

बबली ने समझाया कि आम की कैसी गुठली चाहिए।
गुठली में से छोटा-सा पौधा निकला होना चाहिए।
सबसे पहले नाज़िया को आम की वैसी गुठली मिली।
फिर मदन और जीत को भी गुठलियाँ मिल गईं।

बबली ने सबसे गुठलियाँ धोने के लिए कहा।
आँगन में एक बाल्टी में पानी रखा हुआ था।
सबने बाल्टी में डालकर अपनी गुठली साफ़ की।
सबको इकट्ठे बाल्टी में हाथ डालने में बड़ा मजा आया।

बाल्टी का पानी गंदा हो गया था।
सबने फिर नल पर अपनी गुठली धोयी।
नल की धार मे गुठली का सारा कचरा निकल गया।
सबकी गुठलियाँ एकदम साफ़ हो गईं।

बबली ने फिर गुठली का छिलका निकालने को कहा।
उसने एक गुठली का छिलका निकाल कर दिखाया।
सबने अपनी-अपनी गुठली के छिलके निकाल लिए।
छिलकों के अंदर से एक और गुठली निकल आई।

सब अंदर की गुठली को ध्यान से देखने लगे।
गुठली में से आम की खुशबू आ रही थी।
हर गुठली में से छोटा सा पौधा निकला हुआ था।
सबने धीरे-से उस पौधे को अलग किया।

बबली ने सबसे गुठलियाँ घिसने के लिए कहा।
बबली ने समझाया कि गुठली को धीरे से घिसना चाहिए।
गुठली तब तक घिसो जब तक दो फाँकें न दिखने लगें।
बबली ने एक गुठली घिसकर दिखाई।

सब पत्थर पर अपनी गुठलियाँ घिसने लगे।
मदन ने अपनी गुठली बहुत धीरे घिसी।
नाज़िया ने अपनी गुठली ज़ोर ज़ोर से घिसी।
जीत ने भी गुठली घिस ली।

सबकी गुठलियों में दो फाँकें दिखने लगीं।
बबली ने बताया कि पीपनी बन गई थी।
उसने सबकी पीपनी हाथ में लेकर देखी।
बबली ने मदन की पीपनी थोड़ी और घिसी।

बबली ने पीपनी में फूँकने के लिए कहा।
मदन अपनी पीपनी पी-पी करके बजाने लगा।
वह पी-पी करते हुए भागा।
नाज़िया की पीपनी तो बजी ही नहीं।

बबली ने नाज़िया से दूसरी गुठली लाने के लिए कहा।
नाजिया एक और गुठली लेकर आयी।
उसने अपनी गुठली को धोया और घिसा।
इस बार नाज़िया की पीपनी बज गई।

नाज़िया ने खूब ज़ोर से पीपनी बजायी।
मदन भी ज़ोर ज़ोर से पीपनी बजा रहा था।
जीत की पीपनी भी बज रही थी।
सबने खुश होकर अपनी-अपनी पीपनी बजायी।
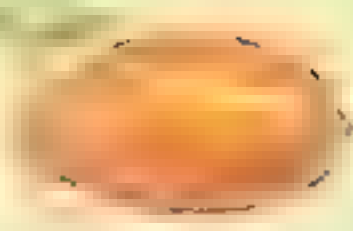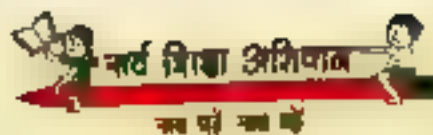
2091

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

तबला
पढ़ना है समझना

तबला

यह जीत के पापा हैं।
इनके पास एक तबला है।
जीत के पापा बहुत अच्छा तबला बजाते हैं।
जीत को पापा का तबला बजाना बहुत पसंद है।

जीत का मन भी तबला बजाने को करता है।
पापा तबले को हमेशा अलमारी में बंद रखते हैं।
पापा कहते हैं कि वह जीत को तबला बजाना सिखाएँगे।
उसके बाद जीत को तबला मिलेगा।
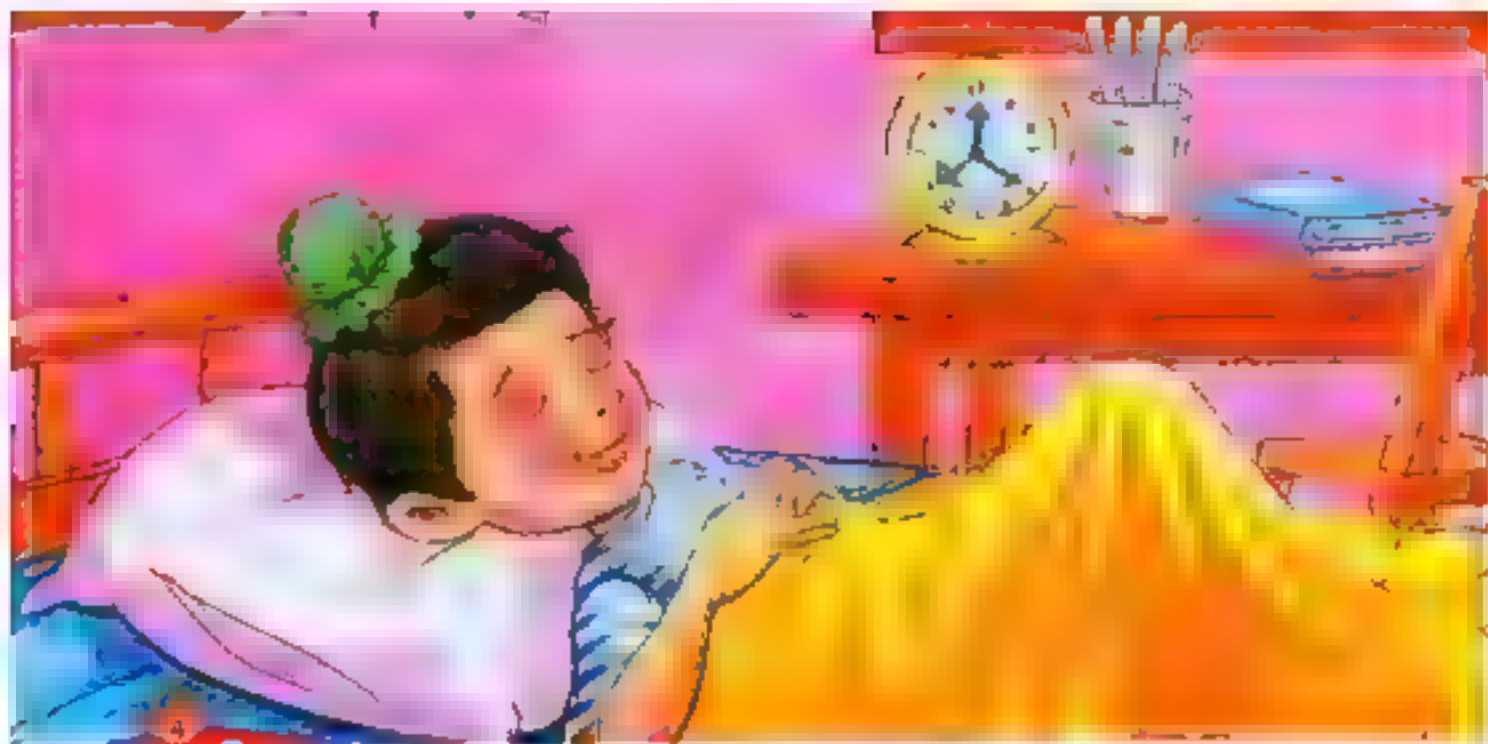
जीत के स्कूल की छुट्टियाँ हो गई थीं।
वह बहुत खुश था।
जीत ने सोचा कि वह रोज़ सुबह देर तक सोएगा।
उसे सुबह जल्दी उठकर नहाना भी नहीं पड़ेगा।

कुछ दिनों तक जीत खूब सोया।
वह दिनभर खेलता था।
कहानियों की किताबें पढ़ता था।
रात को जल्दी सो जाता था।

इन सबसे जीत का मन जल्दी ही ऊब गया।
पापा ने देखा कि जीत ऊबा हुआ लग रहा था।
पापा ने उसे अपना पुराना तबला दे दिया।
जीत तबला पाकर बहुत खुश हुआ।

पापा ने जीत को तबला सिखाना शुरू किया।
उन्होंने जीत को तबले की पहली ताल सिखाई।
जीत दिनभर यह ताल बजाता रहा।
ना घी घी-ना, ना घी-घी ना

जीत रात को तबला अपने पास रखकर सोया।
वह सपने में भी पहली ताल बजाता रहा।
जीत नींद में पहली ताल बोलता भी रहा।
ना–घी घी–ना, ना घी घी–ना

सुबह होते ही जीत पापा के पास तबला लेकर बैठ गया।
पूरे घर में तबले की ना-धी-धी-ना गूँज रही थी।
जीत की कलाई में दर्द होने लगा।
इसके बावजूद जीत तबला बजाता रहा।

पापा ने जीत को तबले की एक और ताल सिखा दी।

धा-धिन धा, धा-धिन-धा

जीत के मज़े आ गए।

वह रात तक बारी-बारी से दोनो तालें बजाता रहा।

सुबह होते ही जीत का मन हुआ कि तबला बजाए।
उसने रात को तबला बरामदे में छोड़ा था।
तबला बरामदे में नहीं था।
जीत गाने लगा ना-धी धी ना, ना-धी धी-ना।

जीत आँगन में गया।

उसे लगा पापा ने तबला धूप दिखाने के लिए रखा होगा।

तबला आँगन मे नहीं था।

तभी जीत को तबला बजने की आवाज़ सुनाई दी।

आवाज़ छत पर से आ रही थी।
जीत छत पर गया।
वहाँ मम्मी, पापा और बबली बैठे हुए थे।
बबली तबला बजा रही थी।

पापा बबली को भी पहली ताल सिखा रहे थे।
ना-घी-घी ना, ना-घी-घी-ना।
बबली ताल गा रही थी और उसे बजा रही थी।
मम्मी भी बबली का तबला बजाना देख रही थीं।

जीत बबली से लड़ने लगा।
वह बोला कि तबला उसका है।
जीत ने बबली से तबला छीनने की कोशिश की।
बबली बोली कि तबला उसका भी है।

पापा ने दोनों की लड़ाई रोकी।
पापा बोले कि तबला दोनों के लिए है।
बबली सुबह तबला बजाना सीखेगी।
जीत शाम को तबला बजाना सीखेगा।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 4
सर्व शिक्षा अभियान
2092
रु. 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

मिली की
साइकिल

मिली की साइकिल

एक दिन मिली खेल रही थी।
उसने कुछ बच्चों को साइकिल चलाते हुए देखा।
मिली का मन भी साइकिल चलाने को हुआ।
मिली ने मम्मी पापा से एक साइकिल माँगी।

अगले दिन पापा ने मिली को एक साइकिल ला दी।
साइकिल थोड़ी पुरानी थी पर अच्छी हालत में थी।
मिली उसे देखकर बहुत खुश हुई।
लाल रंग की साइकिल पर नीली गद्दी थी।

मिली ने मम्मी से साइकिल सिखाने के लिए कहा।
मम्मी मिली को साइकिल चलाना सिखाने लगीं।
वे दोनों सुबह जल्दी उठकर एक खुले मैदान में गईं।
मिली ने साइकिल सीखना शुरू कर दिया।

मम्मी ने मिली को साइकिल की गद्दी पर बैठाया।
मिली ने साइकिल का हैंडल दोनों तरफ़ से पकड़ लिया।
मिली ने धीरे-धीरे पैडल मारे।
मम्मी हैंडल और गद्दी से साइकिल को पकड़े रहीं।

थोड़ी देर मे मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।
मिली साइकिल के भार को सँभाल नहीं पायी।
वह साइकिल से गिर गई।
उसके हाथ मे थोड़ी सी चोट लग गई।
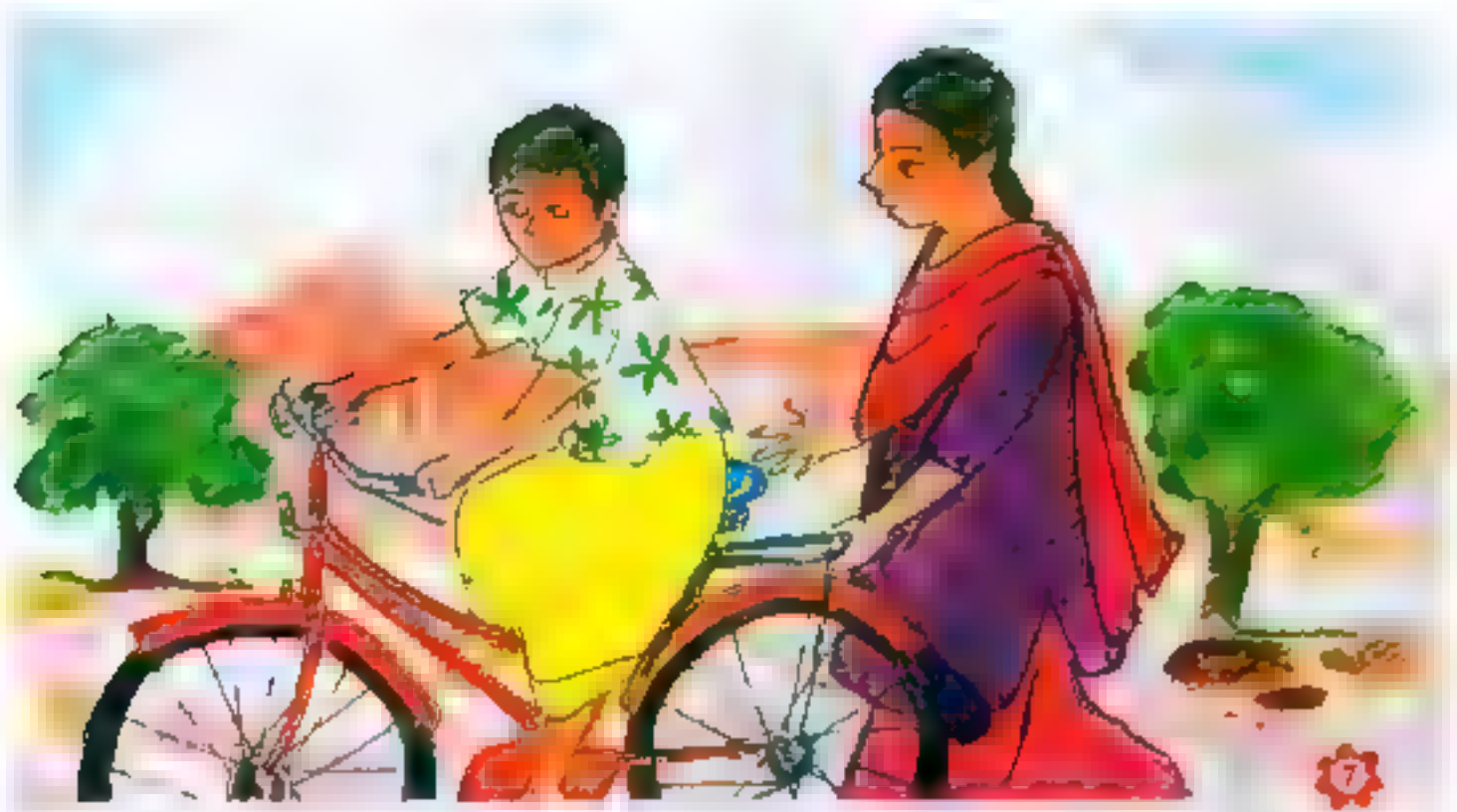
मिली थोड़ी देर तक रोई फिर साइकिल चलाने लगी।
मिली दोबारा साइकिल पर बैठी।
मम्मी ने साइकिल सँभाली।
मिली धीरे धीरे साइकिल चलाती रही।

अगले दिन दोनों फिर सुबह मैदान में पहुँच गईं।
आज मम्मी ने साइकिल पीछे से पकड़ी।
मिली की साइकिल चारों तरफ़ डगमगा रही थी।
मिली ऐसे ही काफ़ी देर तक साइकिल चलाती रही।

उस दिन मिली ने शाम को भी साइकिल चलाना सीखा।
मिली अकेले ही साइकिल को हाथ से खींचती रही।
उसने साइकिल पर चढ़ने की काफ़ी कोशिश की।
मिली अकेले साइकिल पर चढ़ नहीं पाई

अगले दिन सुबह मिली की साइकिल डगमगाई नहीं।
वह मम्मी की मदद से साइकिल पर चढ़ गई।
मम्मी साइकिल के पीछे-पीछे चल रही थीं।
मिली साइकिल को धीरे-धीरे चलाती रही।
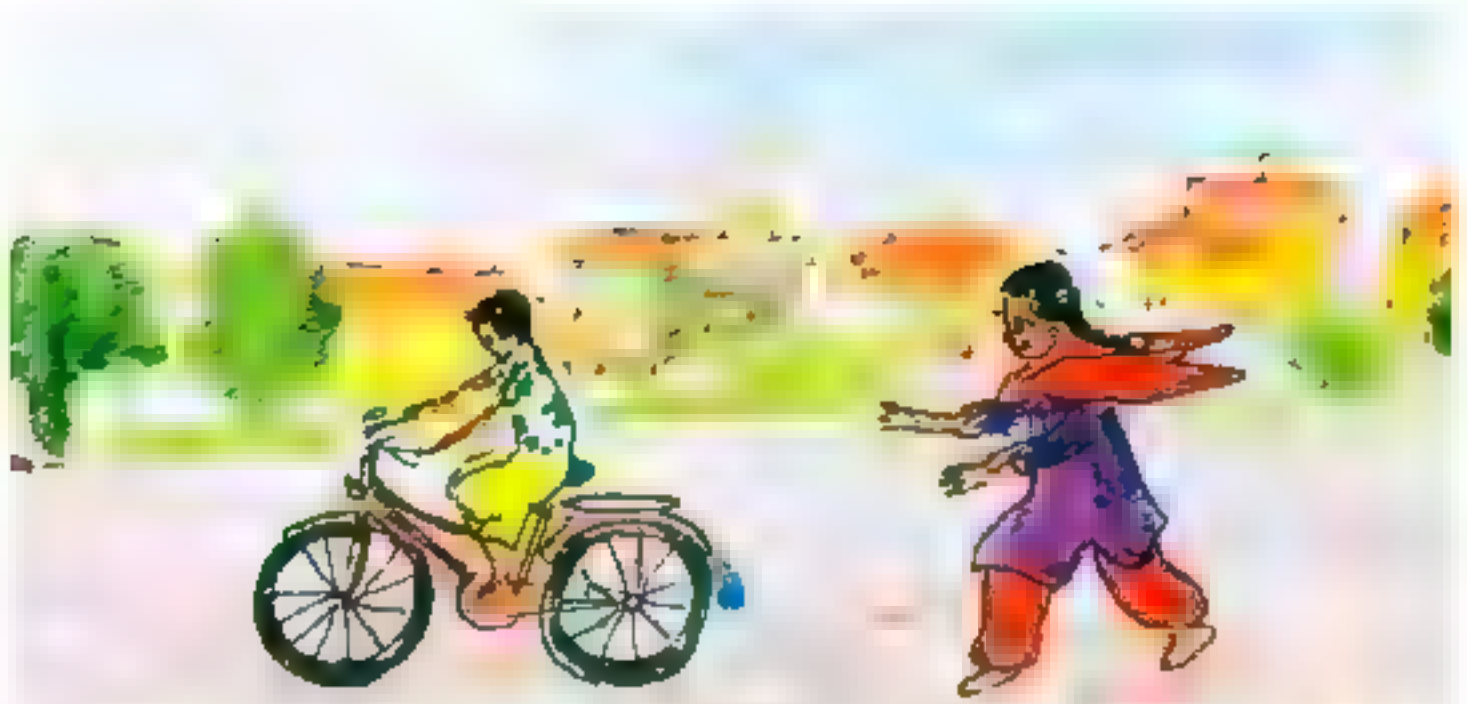
थोड़ी देर बाद मिली साइकिल को दौड़ाने लगी।
मम्मी उसके पीछे-पीछे भागीं।
थोड़ी देर बाद मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।
कुछ दूर जाकर मिली साइकिल से गिर गई।

मिली को साइकिल चलाना आ गया था।
मिली साइकिल पर अपने आप चढ़ नहीं पाती थी।
मिली अपने-आप साइकिल से उतर भी नहीं पाती थी।
मिली को साइकिल से चढ़ना-उतरना सीखना था।

मिली दिनभर साइकिल के बारे मे सोचती रहती थी।
उसके हाथ हैंडल की तरह चलते रहते थे।
वह रात को भी सपने में साइकिल चलाती थी।
सुबह होते ही साइकिल लेकर निकल पड़ती थी।

मिली सीधी सीधी साइकिल चला लेती थी।
उसे साइकिल से उतरने चढ़ने में मुश्किल होती थी।
वह साइकिल से उतरते समय गिर जाती थी।
मिली को साइकिल ऊँची लगती थी।
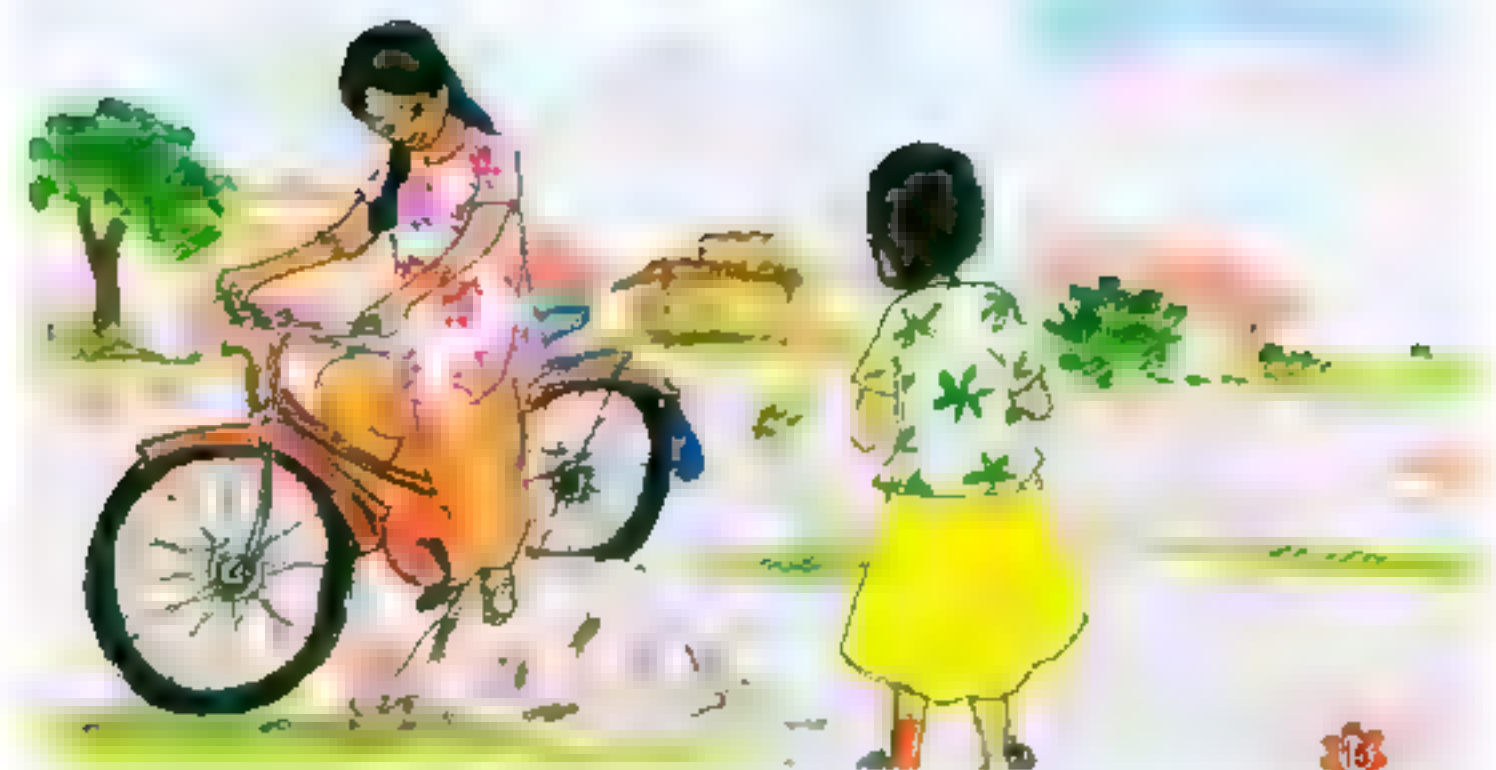
साइकिल पर बैठकर मिली के पैर नीचे नहीं टिकते थे।
मिली कई बार गिर चुकी थी।
इसके बावजूद वह खुश रहती थी।
उसने तोसिया को यह बात बताई।

तोसिया ने उसे एक बड़ा सा पत्थर दिखाया।
मिली पत्थर पर पैर रखकर साइकिल पर चढ़ गई।
अब तो मिली के मज़े आ गए।
दोनों स्कूल भी साइकिल से जाने लगी।
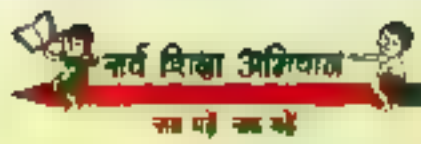
2093

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पक्का आम

पका आम

तोसिया

तोसिया के स्कूल में एक आम का पेड़ था।
उस पर बहुत आम लगते थे।
स्कूल के सभी बच्चे उसके आम खाते थे।
कभी कभी आम के पेड़ पर बंदर भी आते थे

उस पेड़ के आम कभी पक ही नहीं पाते थे।
बच्चे कच्चे आम ही खा जाते थे
तोते भी हरे आम कुतरते रहते थे।
तोसिया भी कच्चे आम पर नमक लगाकर खाती थी
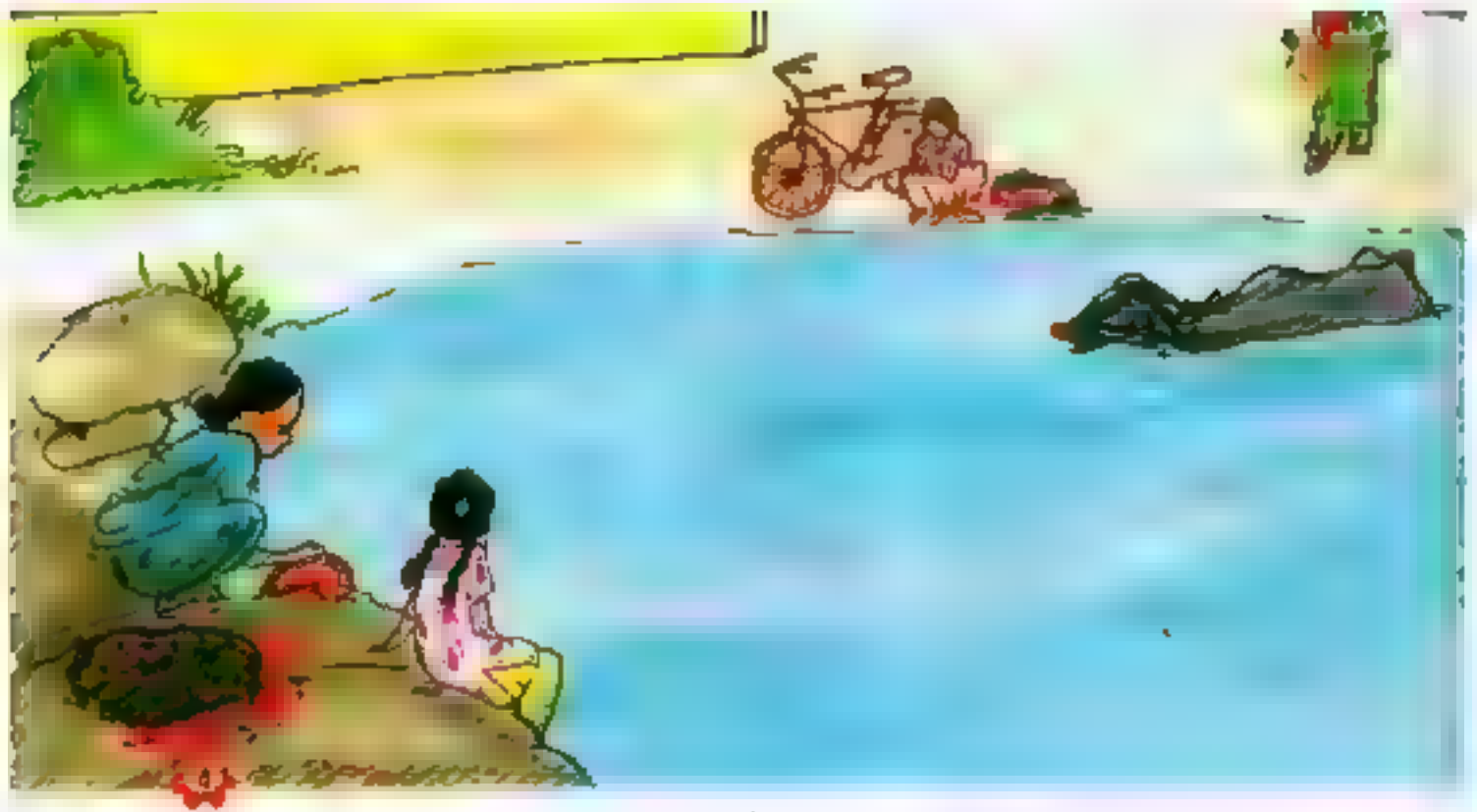
स्कूल के पीछे एक छोटा सा तालाब था।
तालाब के किनारे एक बड़ी सी चट्टान थी।
तोसिया की माँ उस चट्टान पर कपड़े धोती थी।
तोसिया भी अपनी माँ के साथ वहाँ आती थी
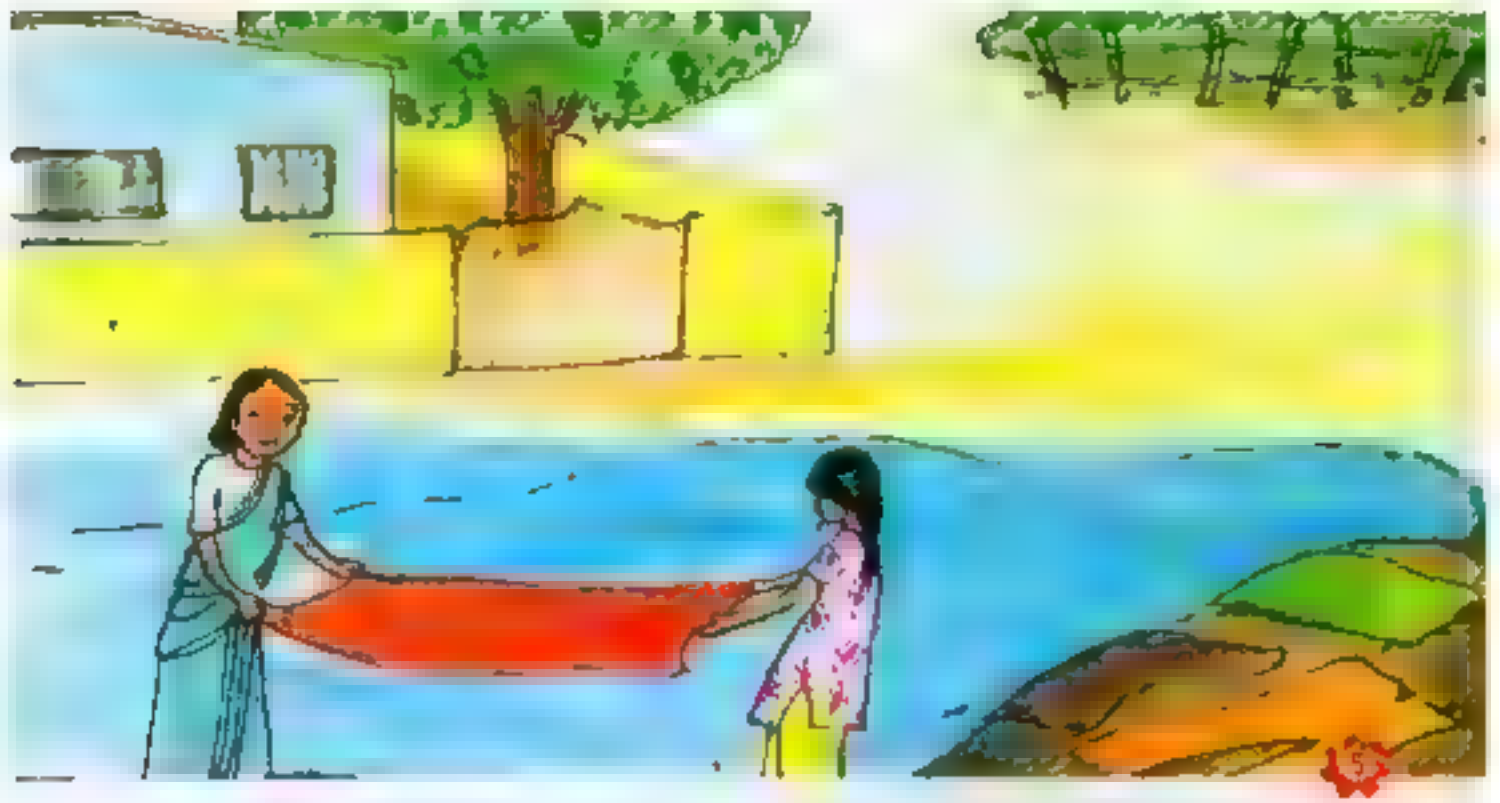
एक दिन तोसिया माँ के साथ तालाब पर आई।
तोसिया ने माँ के साथ कपड़े धुलवाए
उसने माँ के साथ कपड़े चट्टान पर सूखने के लिए डाले।
कपड़े सुखाते समय उसकी नज़र आम के पेड़ पर गई।

6

तोसिया ने देखा सबसे ऊँची डाली पर एक आम था।
वह आम बिल्कुल पका हुआ था।
आम पत्तों के बीच में छुप गया था।
उसे न तोतों ने देखा था न बच्चो ने।
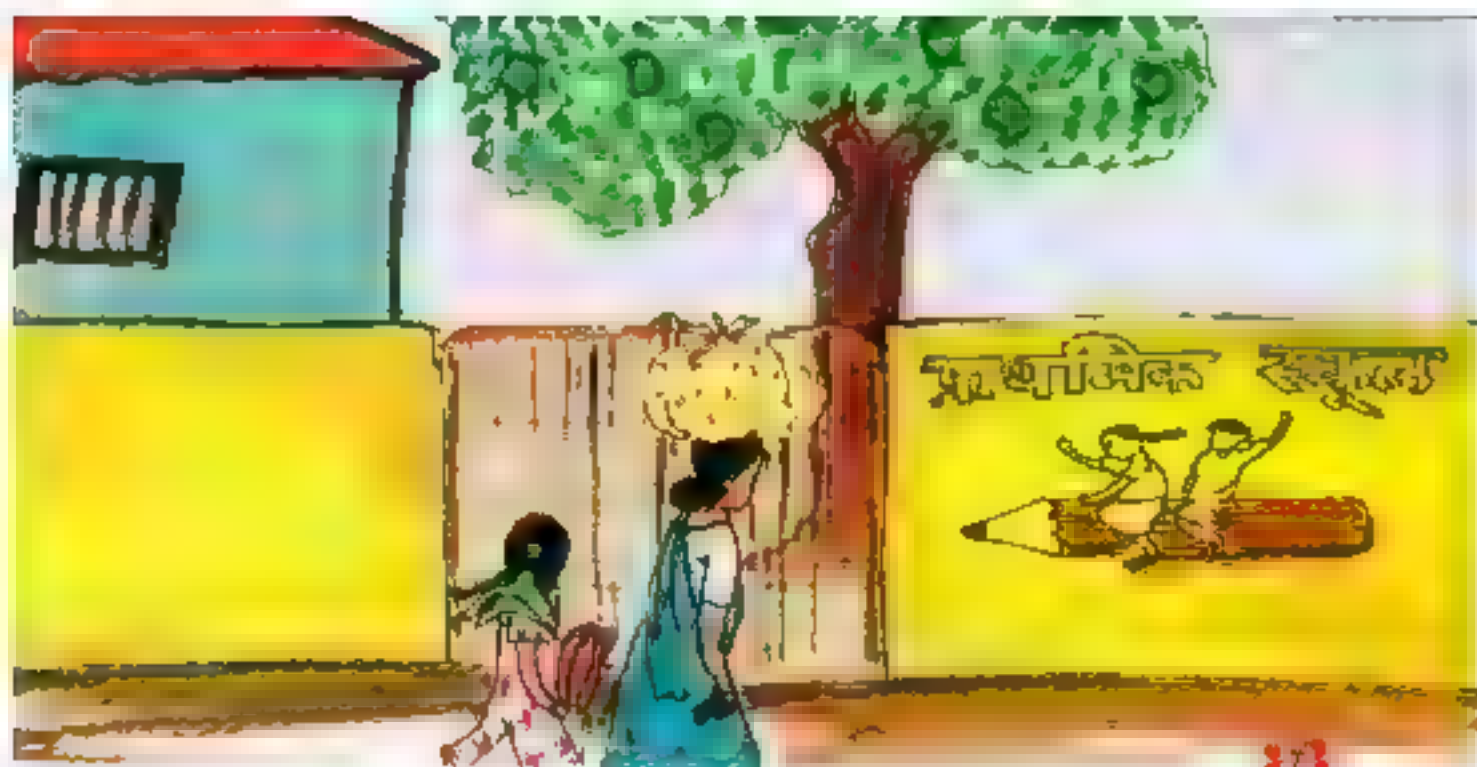
उस दिन तेज़ धूप थी इसलिए कपड़े जल्दी सूख गए।
तोसिया ने माँ के साथ कपड़े उठवाए।
फिर वे दोनो घर की तरफ़ चल पड़ीं।
तोसिया चलते-चलते आम को ही देख रही थी।

घर मे सबने दोपहर का खाना खाया।
खाना खाकर सब सो गए।
तोसिया चुपचाप घर से निकल कर बाहर आ गई।
उसने चप्पल नहीं पहनी जिससे कि आवाज़ न आए।

तोसिया नंगे पैर स्कूल पहुँची।
तोसिया ने स्कूल के फ़ाटक पर चढ़ने की कोशिश की।
फ़ाटक का लोहा बहुत गरम हो गया था।
तोसिया फ़ाटक पर चढ़ नहीं पाई।
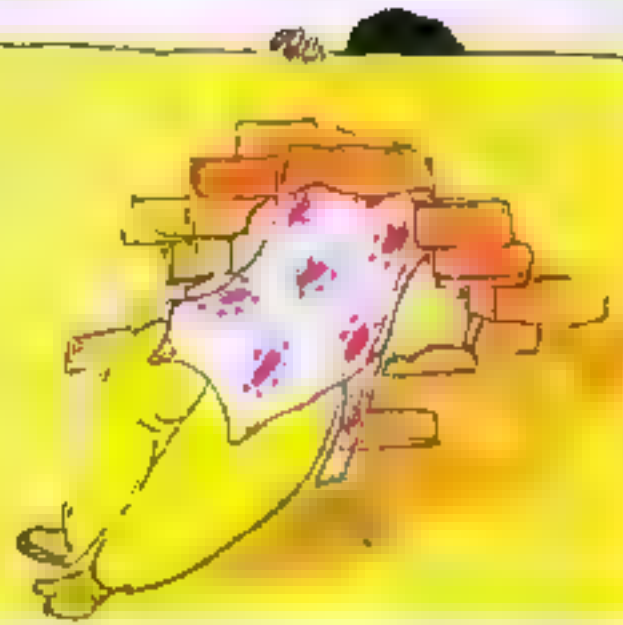
तोसिया स्कूल की चारदीवारी के साथ-साथ चली।
वह उस कोने मे पहुँची जहाँ कुछ ईंटें निकली हुई थी।
तोसिया उन ईंटों के सहारे दीवार पर चढ़ी।
वह आसानी से दीवार के उस पार कूद गई।

स्कूल में सन्नाटा था।
सारे कमरों पर ताला लगा हुआ था।
तोसिया भाग कर आम के पेड़ के पास पहुँची।
उसे पेड़ पर चढ़ना अच्छी तरह आता था।

तोसिया तने को पकड़ कर ऊपर चढ़ी
वह एक डाल से दूसरी डाल पर चढ़ रही थी।
तोसिया डाल पर अपने पैर जमा कर रखती थी।
आखिर तोसिया सबसे ऊँची डाल पर पहुँच ही गई।
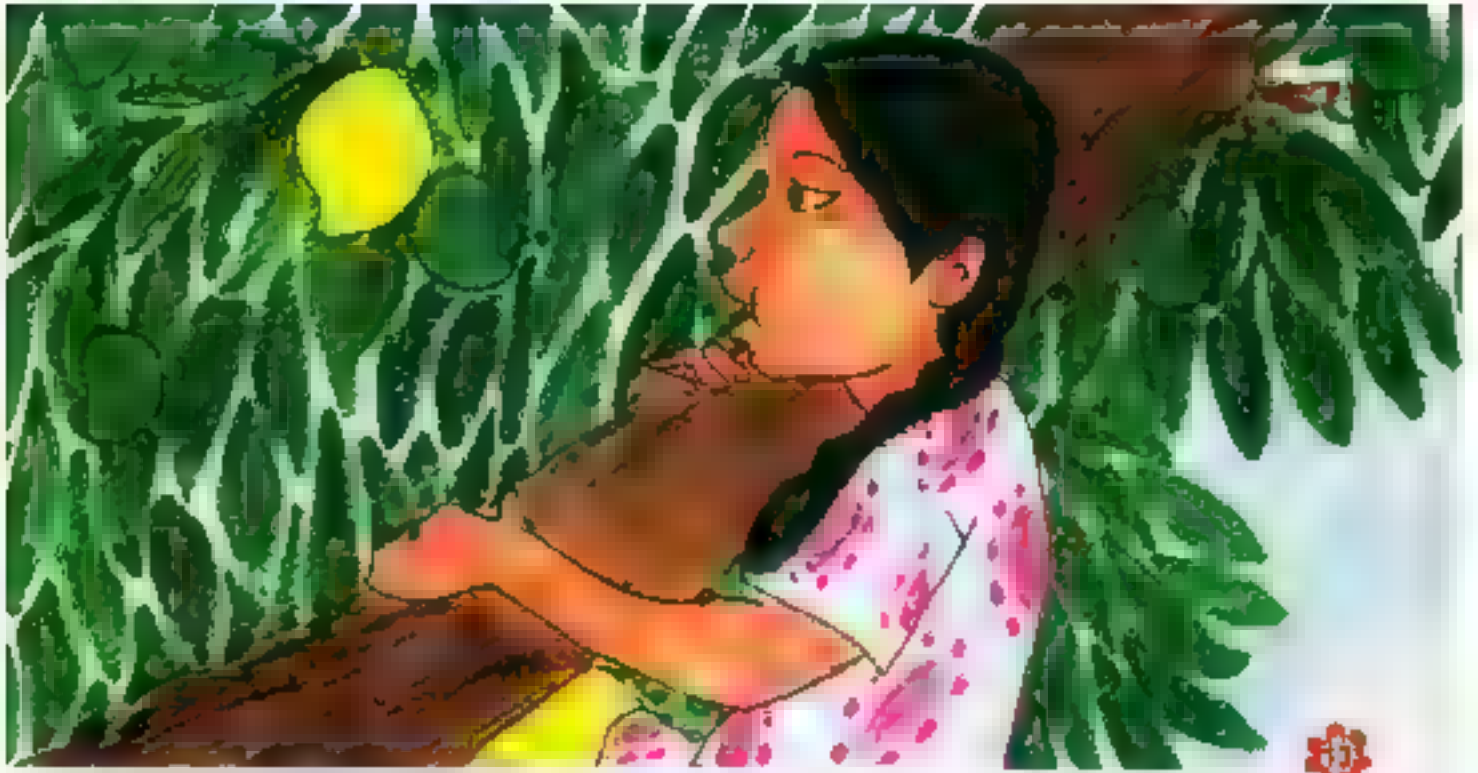
पका हुआ आम तोसिया की आँखों के सामने था।
आम काफ़ी बड़ा और पीला था।
तोसिया ने चारो तरफ़ देखा।
तालाब के किनारे कोई भी नहीं था।

तोसिया ने हाथ बढ़ाकर आम तोड़ लिया।
नाक के पास लाकर उसे सूँघा।
तोसिया थोड़ी देर तक डाल पर ही बैठी रही
उसे आम की खुशबू अच्छी लग रही थी।

तोसिया सावधानी से पेड़ से नीचे उतरी।
वह पेड़ की छाया में बैठ गई।
तोसिया ने आराम से चूस-चूसकर आम खाया।
उसने आम की गुठली भी चूसी।

तोसिया स्कूल की दीवार फाँदकर बाहर आ गई।
वह दौड़कर घर पहुँची।
घर में सब सो रहे थे।
तोसिया भी हाथ धोकर सो गई।

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND

पढ़ना है समझना
गेहूँ

गेहूँ

जमाल

मम्मी

पापा

एक दिन जमाल की मम्मी ने गेहूँ धोए।
गेहूँ खूब सारे थे।
गेहूँ पानी में धुलकर खूब चमक रहे थे।
जमाल ने मम्मी के साथ गेहूँ धुलवाए।

मम्मी ने गेहूँ आँगन में सुखा दिए।
उन्होंने जमीन पर दो चादरें बिछाईं।
दोनों चादरों पर गेहूँ फैला दिए।
जमाल ने भी मम्मी के साथ गेहूँ फैलवाए।

मम्मी थककर सो गईं।
जमाल के तो मज़े आ गए।
उसने गीले गेहूँ के दानों से पहाड़ बनाए।
एक चादर पर गेहूँ के पाँच पहाड़ बने।

जमाल ने कुछ दाने मुँह में डाले।
उसने गेहूँ के गीले दाने चबाए।
खूब चबाए।
खूब चबाए।

जमाल बिजूका भी बना।
वह दोनों हाथ फैलाकर खड़ा हो गया।
तीन चिड़ियाँ गेहूँ के दाने खाने के लिए आईं।
जमाल ने चिड़ियों को देखा पर भगाया नहीं।

जमाल ने गेहूँ में से अपना नाम भी लिखा।
उसने पहले अपना नाम हिंदी में लिखा।
फिर जमाल ने अपना नाम अँग्रेज़ी में लिखा।
उसने अपने मम्मी-पापा का नाम भी लिखा।

जमाल ने गेहूँ के कुछ दाने हथेलियों में रगड़े।
खूब रगड़े।
खूब रगड़े।
उसकी हथेलियाँ लाल हो गईं।
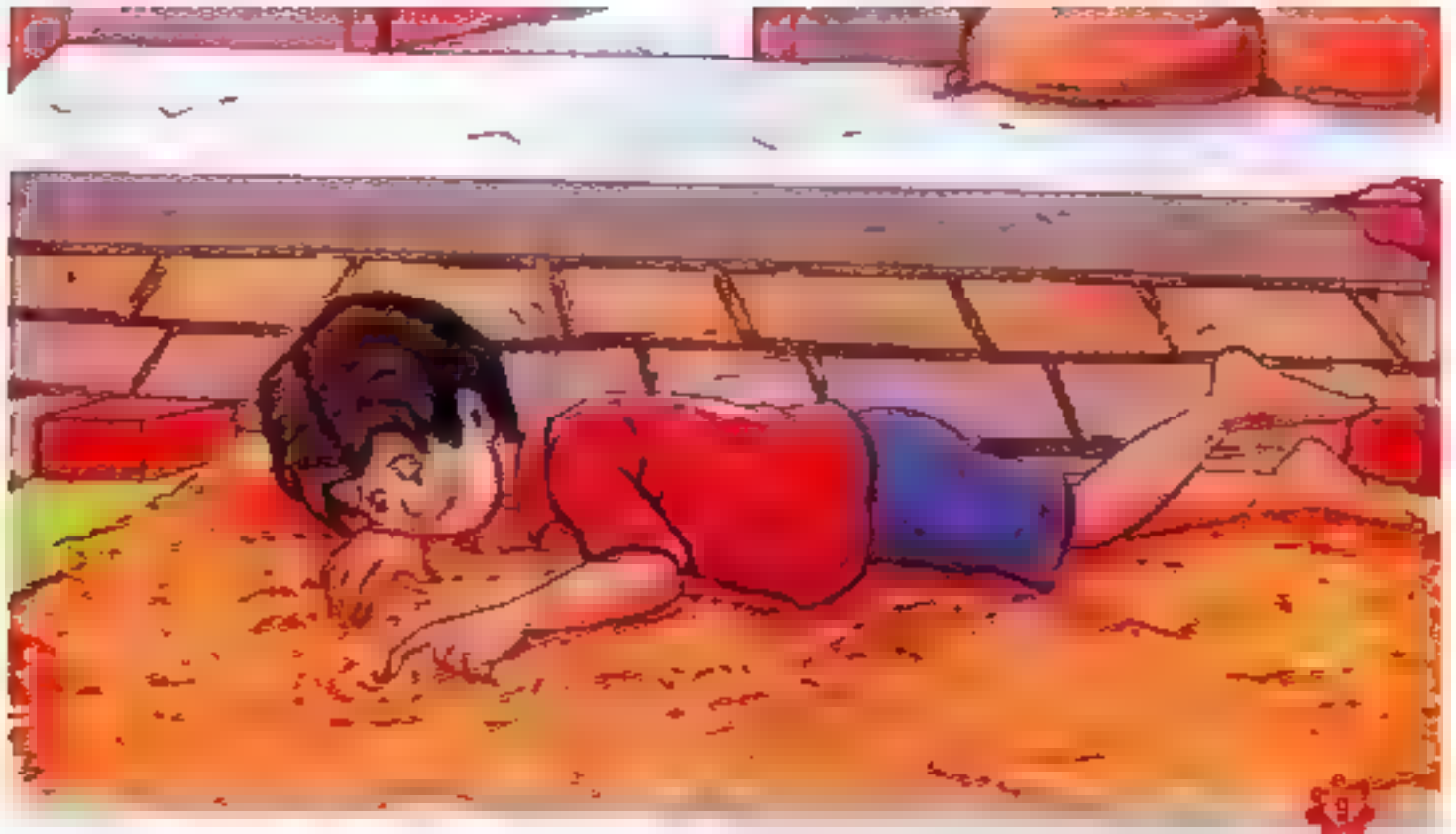
जमाल थक कर वहीं लेट गया।
वह लेटकर भी गेहूँ पर उँगली फेरता रहा।
जमाल को गेहूँ में उँगली फेरते-फेरते नींद आ गई।
वह सो गया।

मम्मी ने जमाल को गोद में उठाया।
उसे ले जाकर बिस्तर पर सुला दिया।
जमाल गहरी नींद में था।
वह सोता ही रहा।
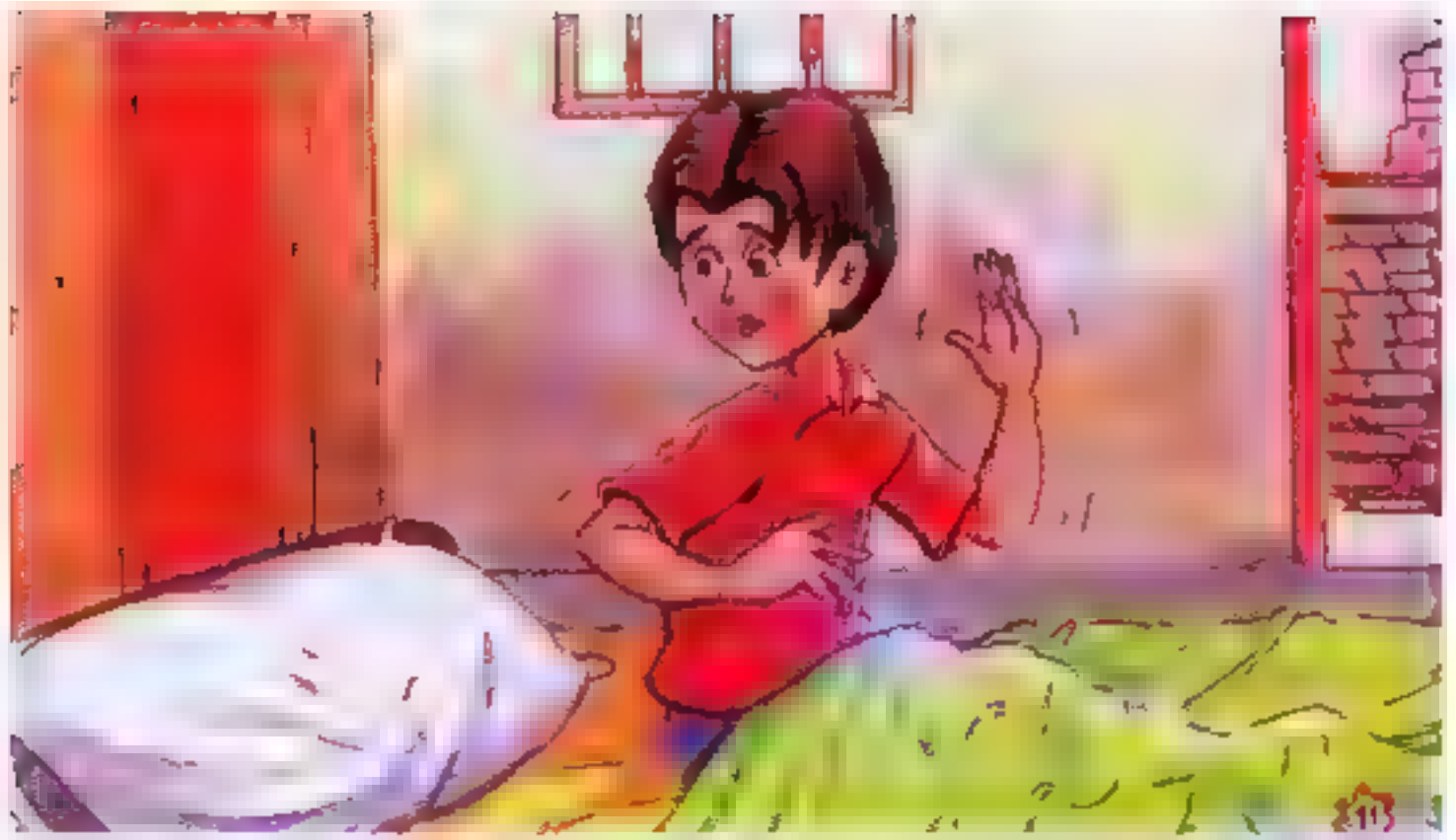
जमाल की आँख खुली तो वह बिस्तर पर था।
उसने उठ कर आस-पास गेहूँ ढँढ़े।
जमाल तो कमरे के अंदर था।
गेहूँ आँगन में थे।
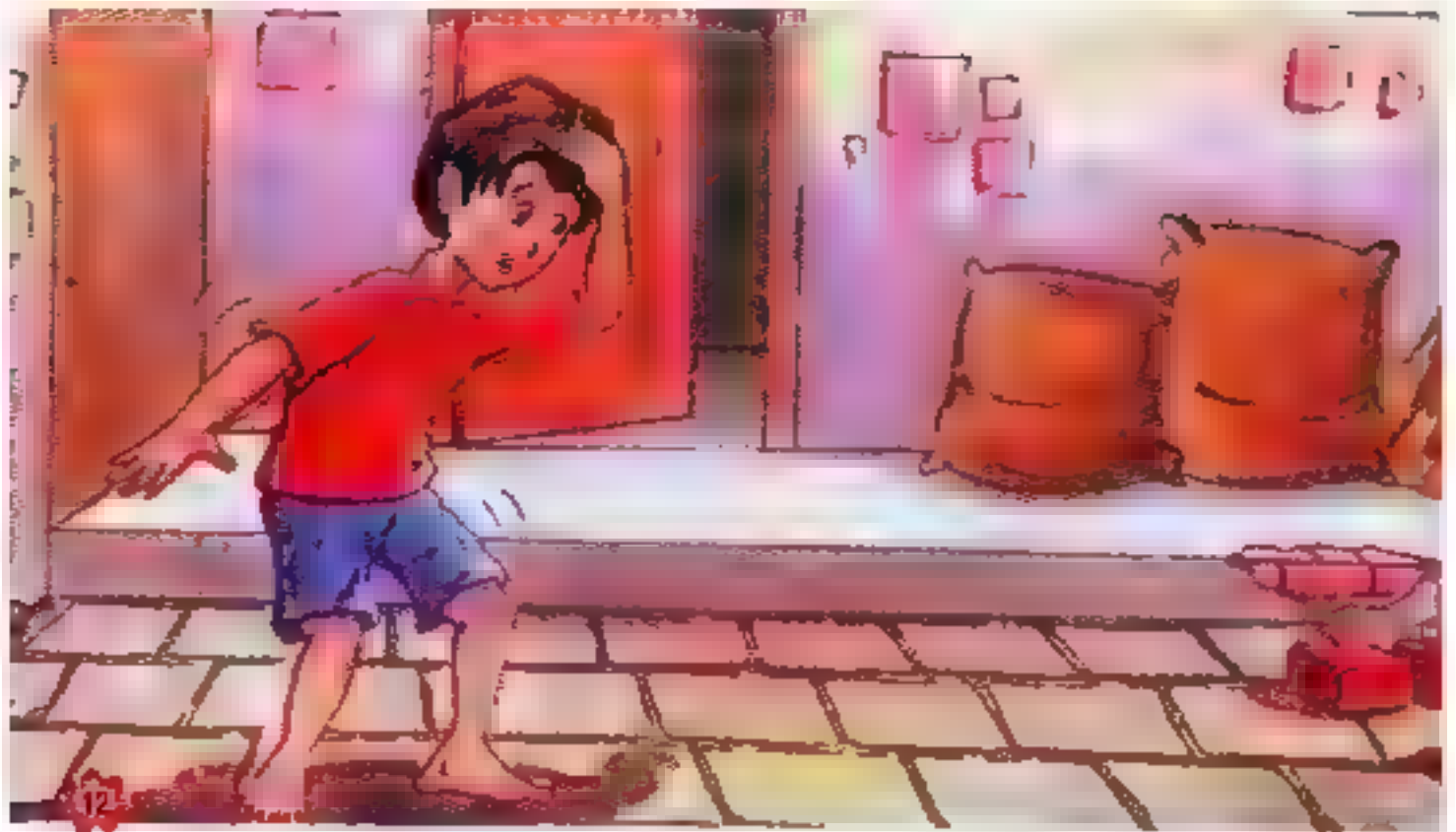
जमाल भागकर आँगन में गया।
वह गेहूँ ढूँढ़ने लगा।
पर गेहूँ तो वहाँ थे ही नहीं।
दोनों चादरें भी गायब थीं।

जमाल मम्मी के पास गया।
मम्मी गेहूँ बीन रही थीं।
पापा भी गेहूँ बीन रहे थे।
जमाल फिर गेहूँ से खेलने लगा।

मम्मी पापा ने गेहूँ एक कनस्तर मे भरे।
पापा ने कनस्तर पकड़ा।
मम्मी ने उसमें गेहूँ डाले।
जमाल ने भी कनस्तर मे गेहूँ डलवाए।
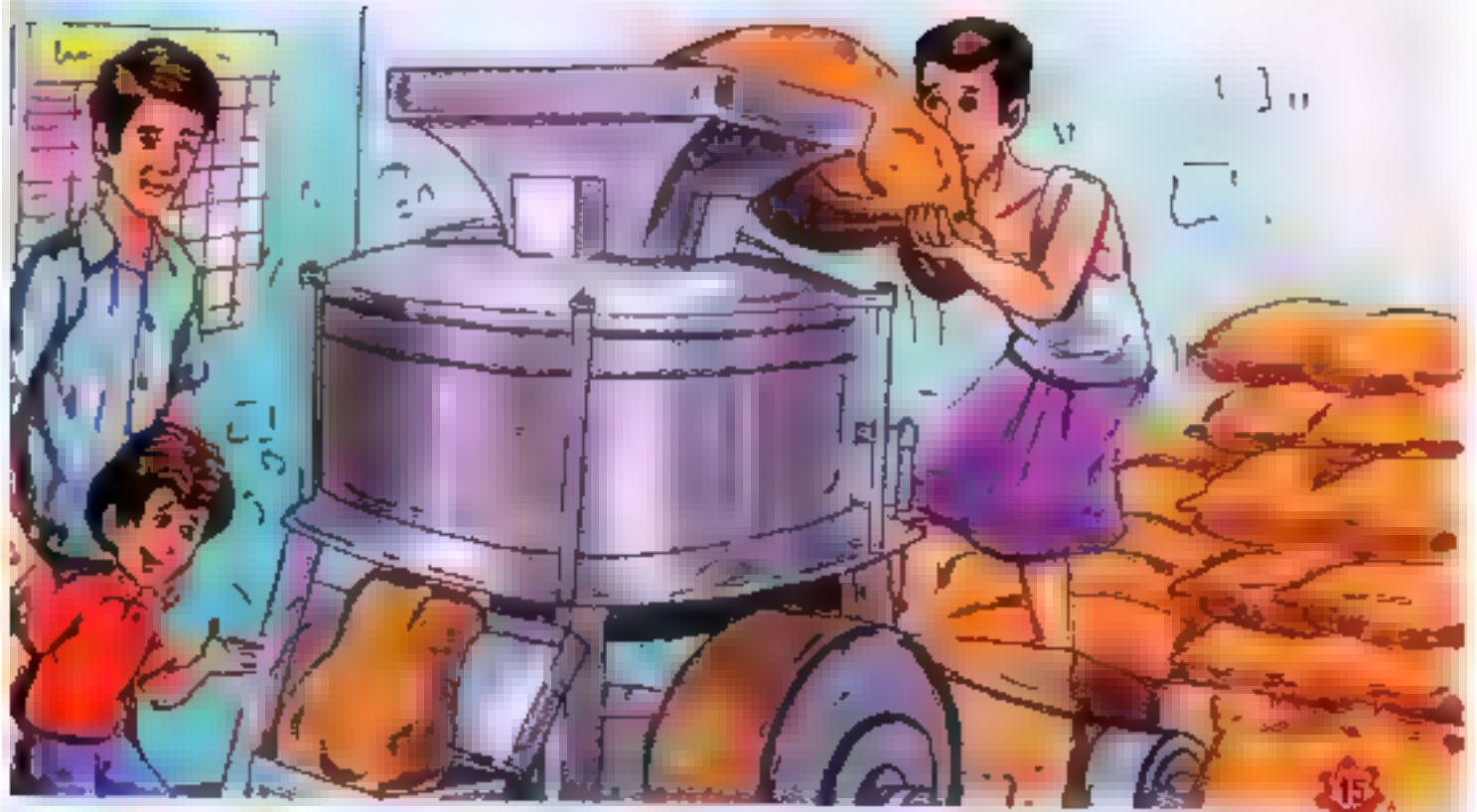
पापा फिर गेहूँ पिसवाने गए।
जमाल भी उनके साथ गया।
उसने आटे की चक्की चलते हुए देखी।
जमाल को आटे की खुशबू बहुत अच्छी लगी।

जमाल और पापा आटा लेकर घर लौटे।
उन्होंने आटे का कनस्तर रसोई में रखा।
मम्मी ने ताजा-ताजा आटा गूँधा और रोटियाँ सेंकीं।
जमाल ने गरम गरम रोटियाँ खाईं।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 4
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
2095
रु. 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

भुट्टा
पढ़ना है समझना

भुट्टा

मदन

जमाल

पापा के दोस्त

दोस्त की पत्नी

एक दिन जमाल और मदन घर में अकेले थे।
घर के सब लोग बाज़ार गए हुए थे।
जमाल और मदन घर-घर खेल रहे थे।
जमाल मम्मी बना था और मदन पापा।
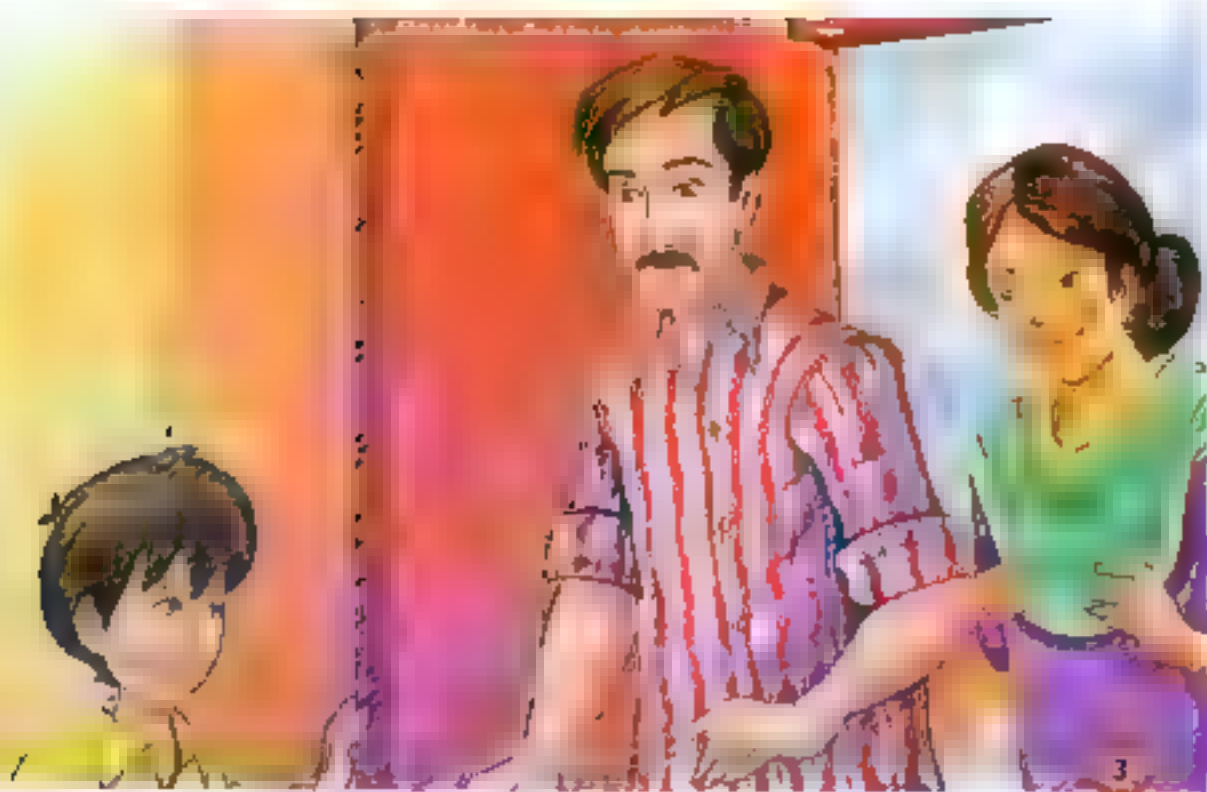
तभी घर की घंटी बजी।
मदन ने दरवाज़ा खोला।
पापा मम्मी से मिलने कोई आया था।
मदन ने उन्हें अंदर बैठाया।

जमाल ने उनको पानी लाकर दिया।
वे जमाल के पापा के दोस्त थे।
उनके साथ उनकी पत्नी भी आई थीं।
उन्होंने जमाल से मम्मी-पापा के बारे में पूछा।

जमाल ने बताया कि सब बाज़ार गए हुए हैं।
मदन बोला कि पापा सब्ज़ी लेकर जल्दी ही लौट आएँगे।
पापा के दोस्त और उनकी पत्नी इंतज़ार करने लगे
वे आराम से पैर फैलाकर बैठ गए।

जमाल और मदन रसोई में आ गए।
जमाल चाय बनाने लगा।
मदन खाने के लिए कुछ ढूँढ़ने लगा।
मदन को डिब्बों में कुछ नहीं मिला ।

मदन की नज़र टोकरी में रखे भुट्टों पर पड़ी।
उसने चारों भुट्टे उठा लिए।
मदन ने सोचा कि भुट्टे भूने जाएँ।
जमाल चाय बनाने में ही लगा हुआ था।

मदन भुट्टों को छीलने लगा।
उसने भुट्टों के छिलके और बाल निकाले।
जमाल ने चाय को प्यालों में छाना।
उसने मदन के हाथ में भुट्टे देखे।

जमाल ने पूछा कि भुट्टों का क्या करोगे।
मदन ने कहा कि वह भुट्टे भूनने जा रहा है।
जमाल ने उससे भुट्टे छीन लिए।
वह बोला कि भुट्टे उबालकर खाएँगे।

जमाल और मदन में भुट्टों को लेकर लड़ाई हो गई।
मदन भुट्टे भूनना चाहता था।
जमाल भुट्टे उबालना चाहता था।
बनी हुई चाय एक तरफ़ रखी थी।

मदन ने दो भुट्टे जमाल को दे दिए।
उसने जमाल से कहा कि जो करना है कर लो।
जमाल ने भुट्टों के दो-दो टुकड़े कर दिए
वह भुट्टों को उबालने लगा।

मदन चाय देने बाहर चला गया।
जमाल ने एक पतीले में पानी भरा।
उसने भुट्टों के टुकड़े पतीले में डाले।
पतीले को गैस पर चढ़ा दिया।

मदन रसोई में वापस आया।
वह दूसरी गैस पर भुट्टा भूनने लगा।
जमाल उबलते हुए भुट्टों को हिलाता रहा।
उसने पतीले में थोड़ा नमक भी डाला।

मदन का भुट्टा चट-चट आवाज़ कर रहा था।
मदन उसको उलट पलट कर भून रहा था।
भुट्टा भुनकर भूरा काला हो गया था।
जमाल अपने उबलते हुए भुट्टो को हिला रहा था।

मदन ने अपना दूसरा भुट्टा भुनने रख दिया।
उसने अपने पहले भुट्टे पर नींबू और नमक लगाया
जमाल ने भी अपने भुट्टे पतीले में से निकाल लिए।
उसने अपने भुट्टों पर मसाला लगाया।

दोनों अपने अपने भुट्टे लेकर आए।
पापा के दोस्त ने भुना हुआ भुट्टा खाया।
उनकी पत्नी ने उबला हुआ भुट्टा खाया।
उन्होंने जमाल और मदन के भुट्टों की खूब तारीफ़ की।

2006

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

तोता
पढ़ना है समझना
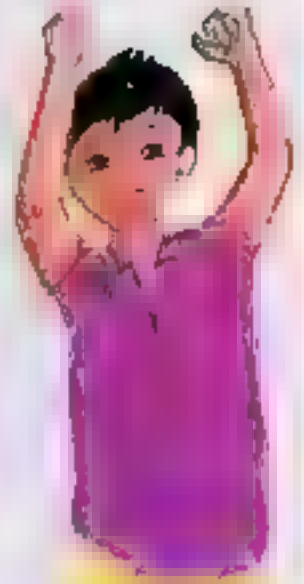
तोता
काजल
तोता
माधव

एक दिन माधव आँगन में कुल्ला कर रहा था।

उसकी नज़र चौकी पर बैठे एक तोते पर पड़ी।

माधव ने काजल को तोता दिखाया।

तोता धीरे-धीरे चल रहा था।

वह उड़ नहीं पा रहा था।

माधव और काजल उसको पास से देखने लगे।
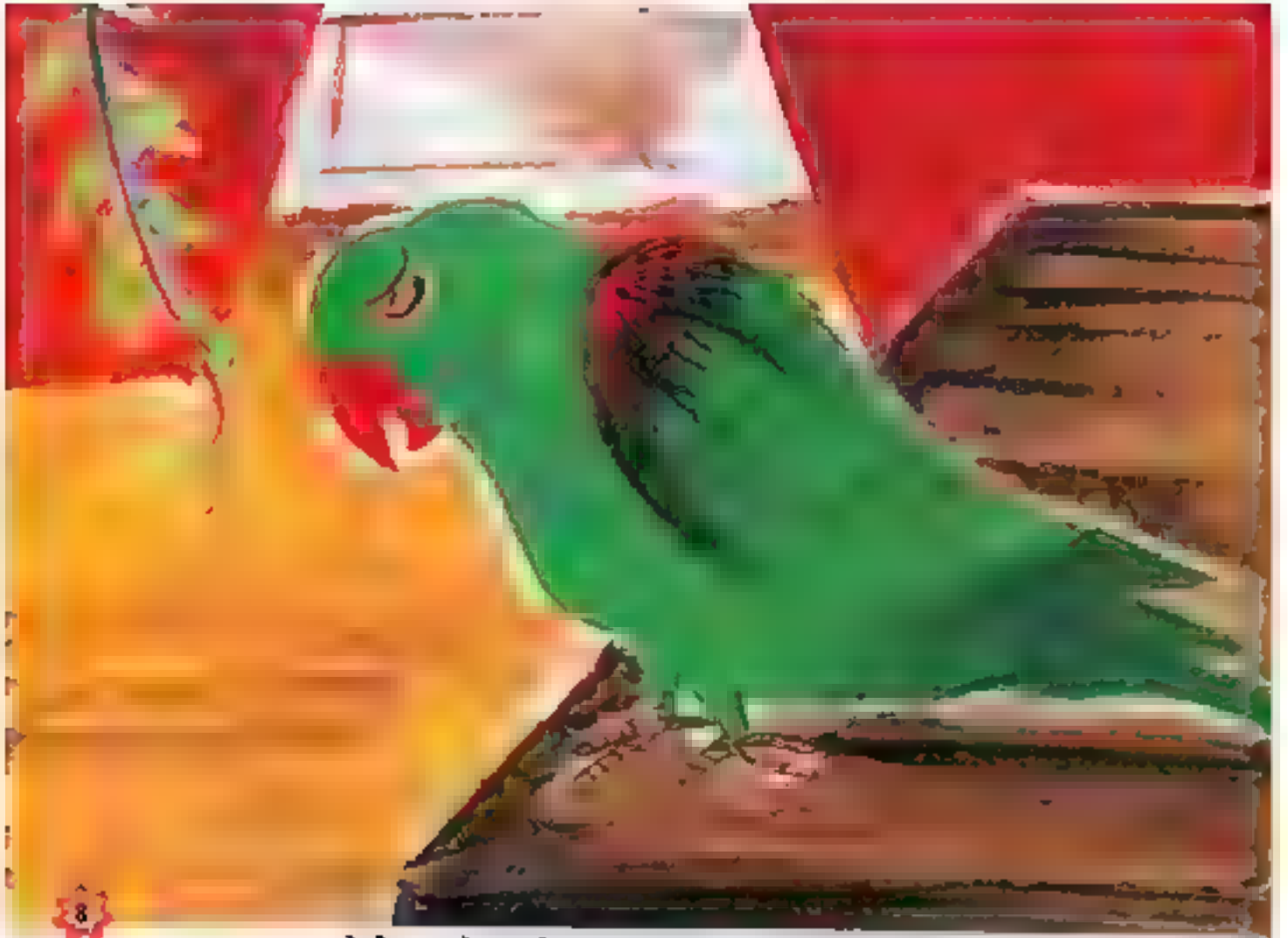
तोते को चोट लगी हुई थी।

माधव तोते के लिए पानी और अमिया ले आया।
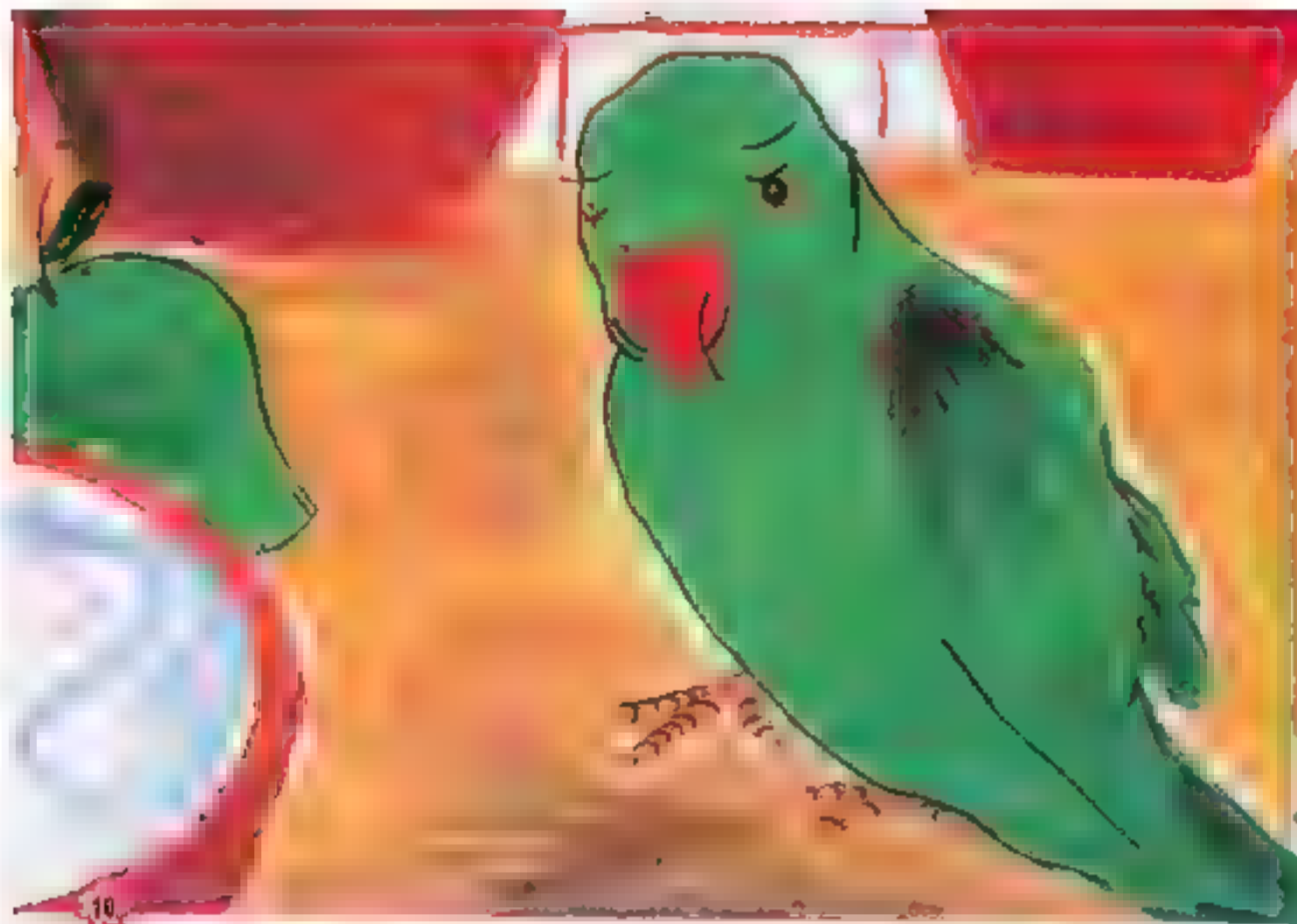
तोता इतना डरा हुआ था कि उसने कुछ नहीं खाया।

वह धीरे-धीरे चल कर गमलों के पीछे छिप गया।

काजल ने पानी और अमिया वहीं सरका दिए।
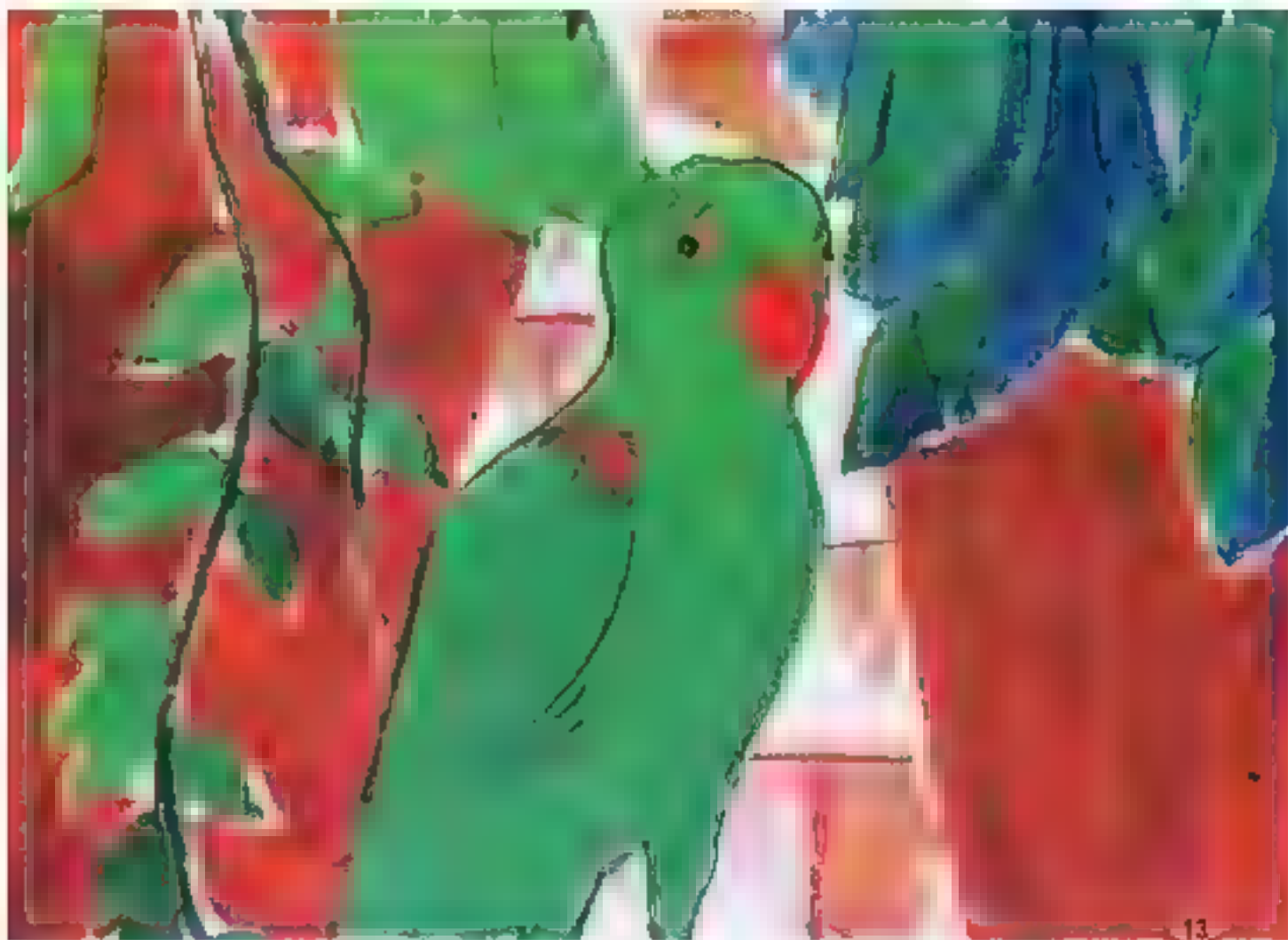
तोते ने फिर भी कुछ नहीं खाया।

माधव और काजल सीढ़ियों के पीछे छिप गए।

तोते ने धीरे से अमिया खाई और पानी पी लिया।

यह देख कर काजल और माधव खुश हो गए।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4
सर्व शिक्षा अभियान
2097
रु.10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING